वार्षिक रिपोर्ट

2007 - 2008

विदेश मंत्रालय

भारत सरकार

द्वारा प्रकाशित:
नीति नियोजन और अनुसंधान विभाग, विदेश मंत्रालय, नई दिल्ली

यह वार्षिक रिपोर्ट इस वेबसाइट पर भी उपलब्ध है:
www.mea.gov.in

रूपरेखा एवं मुद्रण:
साइबरआर्ट इनफारमेशंस प्रा. लि.
1517 हेमकुन्ट चैम्बरस, 89 नेहरू प्लेस, नई दिल्ली 110 019
ईमेल: cyberart_infos@yahoo.com
वैबसाइट: www.cyberart.co.in

विषय सूची

प्रस्तावना और सारांश

1. भारत के पड़ोसी देश 1
2. दक्षिण पूर्व एशिया और प्रशांत 19
3. पूर्व एशिया 31
4. यूरेशिया 36
5. खाड़ी, पश्चिम एशिया और उत्तरी अफ्रीका 42
6. अफ्रीका (सहारा से दक्षिण) 55
7. यूरोप 69
8. अमरीका 82
9. संयुक्त राष्ट्र संघ एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगठन 89
10. बहुपक्षीय आर्थिक संबंध 101
11. तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग तथा विकास में भागीदारी 108
12. निवेश और प्रौद्योगिकी संवर्धन 111
13. नीति आयोजना और अनुसंधान 113
14. प्रोतोकोल 114
15. कोंसली, पासपोर्ट और वीजा सेवाएं 120
16. प्रशासन और स्थापना 123
17. समन्वय 127
18. विदेश प्रचार 129
19. विदेश सेवा संस्थान 135
20. राजभाषा नीति का कार्यान्वयन और विदेशों में हिंदी का प्रचार-प्रसार 138
21. भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद 140
22. भारतीय विश्व कार्य परिषद 143
23. विकासशील देशों के लिए अनुसंधान और सूचना प्रणाली 144
24. पुस्तकालय 147

परिशिष्ट

परिशिष्ट **I**	वर्ष 2007-08 के दौरान मुख्यालय और विदेश स्थित मिशनों में संवर्ग संख्या (इनमें वाणिज्य मंत्रालय बजट से प्रदान किए गए पद और बाह्य-संवर्ग पद इत्यादि शामिल हैं)।	151
परिशिष्ट **II**	विदेश मंत्रालय में विविध ग्रुपों में की गई भर्ती और अप्रैल से नवम्बर, 2007 तक अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति/अन्य पिछड़ी जाति (ओबीसी) वर्गों से भरी गईं आरक्षित रिक्तियाँ।	152
परिशिष्ट **III**	30 नवम्बर 2007 को अधिकारियों (भारतीय विदेश सेवा के कनिष्ठ वेतनमान का ग्रेड 1) की भाषावार-तालिका	153
परिशिष्ट **IV**	पुरुष-महिला आंकड़े	154
परिशिष्ट **V**	1 जनवरी से 31 दिसंबर 2007 तक विभिन्न पासपोर्ट कार्यालयों में प्राप्त आवेदन पत्रों और तत्काल सेवा सहित जारी किए गए पासपोर्टों विविध आवेदन पत्रों और प्रदत्त सेवाएं एवं राजस्व (जिनमें तत्काल सेवा योजना के तहत राजस्व भी सम्मिलित है) और पासपोर्ट कार्यालयों के व्यय के आंकड़ों को दर्शाने वाला ब्यौरा	155
परिशिष्ट **VI**	विदेश मंत्रालय का वर्ष 2007-2008 में वित्त	156
परिशिष्ट **VII**	वर्ष 2007-08 (संशोधित प्राक्कलन) में मुख्य क्षेत्रवार आबंटन	157
परिशिष्ट **VIII**	भारत के सहायता कार्यक्रमों के मुख्य गंतव्य	158
परिशिष्ट **IX**	व्यय के मुख्य शीर्षों के संबंध में परिणामी बजट(2006-07)	159
परिशिष्ट **X**	नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक की विदेश मंत्रालय संबंधी रिपोर्ट से उद्घृत अंश	163
परिशिष्ट **XI**	वर्ष 2007 में भारत द्वारा अन्य देशों के साथ संपन्न अथवा नवीकृत की गयी संधियां/ अभिसमय/करार	167
परिशिष्ट **XII**	1 जनवरी से दिसम्बर, 2007 तक की अवधि के दौरान जारी किए गए पूर्ण अधिकार के दस्तावेज	183
परिशिष्ट **XIII**	1 जनवरी से दिसम्बर, 2007 तक की अवधि के दौरान जारी अनुसमर्थन/अधिमिलन दस्तावेज	186
परिशिष्ट **XIV**	जनवरी, 2008 तक नीति नियोजन तथा अनुसंधान प्रभाग द्वारा आंशिक अथवा पूर्ण रुप से वित्त पोषित की गई संस्थाओं /गैर सरकारी संगठनों द्वारा संचालित/आयोजित सम्मेलन/संगोष्ठियां/अध्ययन परियोजनाएं	189
परिशिष्ट **XV**	आई टी ई सी/एस सी ए ए पी भागीदार देशों की सूची	191
परिशिष्ट **XVI**	आई सी डब्ल्यू ए द्वारा आयोजित सेमिनार/सम्मेलन/व्याख्यान/बैठक	193
परिशिष्ट **XVII**	आरआईएस द्वारा आयोजित संगोष्ठिया	196

संक्षिप्तियाँ

प्रस्तावना और सारांश

भारत की विदेश नीति का उद्देश्य इस क्षेत्र में शांति और स्थिरता के परिवेश को बढावा देना तथा विश्व में भारत के त्वरित सामाजिक-आर्थिक विकास को समर्थ बनाना एवं हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा को संरक्षण प्रदान करना है। इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए भारत ने अपने सभी पड़ोसी देशों के साथ मैत्रीपूर्ण एवं सहयोगपूर्ण संबंध बनाने और विश्व की प्रमुख शक्तियों के साथ संबंध को सुदृढ़ करने के जोरदार प्रयत्न किए हैं। भारत के आर्थिक कूटनीति ने ऊर्जा सुरक्षा को यथोचित महत्ता प्रदान की है जो कि हमारी अर्थव्यवस्था की सुनिश्चित उच्च विकास दर के लिए महत्वपूर्ण है।

देश के सर्वोत्तम राष्ट्रीय हितों का अनुसरण करते हुए निर्णय लेने की स्वायत्तता, पंचशील अथवा शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के पांच सिद्धान्तों के प्रति वचनबद्धता तथा अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में साम्य व्यवहार भारत की विदेश नीति की विशिष्टताएं रही हैं।

अपने पड़ोसी देशों के साथ घनिष्ठ और अच्छे पारस्परिक राजनीतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक संबंधों को भारत सर्वोच्च प्राथमिकता देता रहा है क्योंकि वह शांतिपूर्ण, स्थिर एवं समृद्ध पड़ोसी देश में विश्वास करता है। सार्क का अध्यक्ष होने के नाते भारत ने सार्क की प्रक्रियाओं को गतिशील बनाने के लिए अन्य सदस्यों के साथ मिलकर कार्य किया। अप्रैल, 2007 में नई दिल्ली में आयोजित चौदहवें सार्क शिखर सम्मेलन में घोषणात्मक अवस्था से आगे क्रियान्वयन अवस्था तक जाकर ठोस क्षेत्रीय पहल संबंधी कार्रवाइयों पर जोर देने का निर्णय लिया गया। इस शिखर सम्मलेन में बेहतर अन्तः क्षेत्रीय संपर्क विशेषकर भौतिक, आर्थिक तथा लोगों का लोगों से संपर्क कायम करने की आवश्यकता को स्वीकार किया गया। सार्क मंत्रिपरिषद की बैठक में सार्क परिवहन मंत्रियों और सार्क वित्त मंत्रियों द्वारा चिन्हित सामाजिक क्षेत्र एवं भौतिक संपर्क से जुड़ी कई परियोजनाओं को क्रियान्वित करने पर सहमति व्यक्त की गई। उन्होंने शीघ्र ही सार्क विकास कोष को चालू करने पर भी सहमति व्यक्त की। अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रीय पहलकदमियां दक्षिण एशियाई विश्वविद्यालय तथा सार्क खाद्यान्न बैंक की स्थापना से संबंधित हैं।

सम्प्रभुता-संपन्न समानता एवं पारस्परिक सम्मान के आधार पर भारत अपने दक्षिण एशियाई पड़ोसियों के साथ घनिष्ठ, मैत्रीपूर्ण एवं परस्पर लाभप्रद राजनीतिक संबंध बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। यह नेपाल के लोगों को नई लोकतांत्रिक व्यवस्था में उनके राजनीतिक रूपांतरण का समर्थन करता है। एक घनिष्ठ एवं हितैषी पड़ोसी देश होने के नाते भारत बंगलादेश में पूर्ण लोकतंत्र की बहाली का समर्थक है। जब से भूटान लोकतांत्रिक संवैधानिक राजतंत्र में रूपान्तरित हुआ है, तभी से ही भारत-भूटान के आर्थिक विकास एवं राजनीतिक स्थिरता के लिए कार्यरत है। श्रीलंका के नृजातीय मसले के संबंध में भारत का विश्वास है कि इसका कोई सैन्य समाधान नहीं है और इसके लिए यह आवश्यक है कि संयुक्त-श्रीलंका की रूपरेखा के भीतर ही शांतिपूर्ण बातचीत के माध्यम से ऐसा राजनीतिक समाधान ढूंढा जाए जो सभी समुदायों को स्वीकार्य हों। भारत अफगानिस्तान के पुनर्निर्माण तथा एक बहुजनवादी एवं समृद्ध समाज बनाने में अफगान सरकार तथा वहां के लोगों की मदद करता आ रहा है। भारत पाकिस्तान के साथ शान्ति, मैत्री तथा अच्छे पड़ोसी संबंधों के प्रति भी वचनबद्ध है तथा तद्नुसार पाकिस्तान के साथ संस्थागत वार्ता करता आ रहा है।

भारत चीन लोक गणराज्य के साथ अपने द्विपक्षीय संबंधों को अत्यधिक महत्व देता है जिसके साथ शांति और समृद्धि के लिए हमारी सामरिक एवं सहयोगपूर्ण साझेदारी है। इस साझेदारी को जनवरी, 2008 में हमारे प्रधानमंत्री की सफल चीन यात्रा के दौरान और बढ़ावा तथा एक वैश्विक आयाम मिला है।

गहन सभ्यतामूलक एवं लोगों का लोगों से संपर्कों की वजह से भारत और ईरान के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक संबंध समान रूप से काफी मजबूत हैं। ये व्यापार, निवेश तथा क्षेत्रीय सहयोग पर बल देने के साथ समकालीन संबंध के सूचक हैं। नियमित आदान-प्रदान के जरिए भारत-ईरान द्विपक्षीय संबंधों में वर्ष 2007-08 के दौरान गति बनी रही।

भारत ने पूर्व एशिया, पश्चिम एशिया, मध्य एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमरीका के देशों के साथ भी अपना राजनीतिक एवं आर्थिक सहयोग बढ़ाना जारी रखा है। हमारे विदेशी आर्थिक संबंधों के प्रभावी संचालन एवं अपनी पूर्वोन्मुखी नीति को आगे बढ़ाने के लिए प्रधानमंत्री ने छठें भारत-आसियान शिखर सम्मेलन तथा पूर्व एशिया शिखर सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। पश्चिम एशिया तथा मध्य एशिया के देशों के साथ उच्चस्तरीय यात्राओं का आदान-प्रदान भी होता रहा है। इस

प्रकार के आदान-प्रदान में मई, 2007 में विदेश मंत्री की लीबिया की यात्रा शामिल थी। नवम्बर, 2007 में अन्नापोलिस में अंतर्राष्ट्रीय फिलिस्तीन शांति सम्मेलन में अपनी भागीदारी से भारत ने फिलिस्तीन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई और अगले महीने पेरिस में हुए फिलिस्तीन संबंधी दाताओं के सम्मेलन में भी उसने यह बात दोहराई। भारत ने गाजा और वेस्ट बैंक में हुई घटनाओं तथा विशेषकर निर्दोष नागरिकों के विरूद्ध हिंसा के प्रयोग पर चिन्ता व्यक्त की।

अफ्रीका और लैटिन अमरीका के देशों के साथ भारत की बढ़ती हुई संलग्नता को अक्तूबर, 2007 में प्रधानमंत्री की नाइजीरिया यात्रा, पिछले वर्ष प्रीटोरिया में दूसरे आईबीएसए शिखर सम्मेलन में भागीदारी तथा ब्राजील और मैक्सिको के राष्ट्रपति की क्रमशः जून और सितम्बर, 2007 में भारत की यात्राओं से और अधिक बल मिला।

भारत ने अन्य विकसित एवं विकासशील देशों के साथ अपने आर्थिक सहयोग को बढ़ाते हुए विश्व की प्रमुख शक्तियों के साथ अपने संबंधों में पर्याप्त सुधार किया है। विगत कुछ वर्षों में अमरीका के साथ भारत के संबंधों में बदलाव आया है। अब भारत-अमरीकी सहयोग का दायरा काफी बढ़ गया है जिसमें उच्च प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष, कृषि, शिक्षा तथा व्यापार एवं आर्थिक संपर्क शामिल हैं और अमेरिका तथा अन्य हितैषी देशों के साथ असैनिक नाभिकीय सहयोग की भी आशा है। रूस के साथ भारत के संबंध समय पर खरे उतरे हैं तथा नवम्बर, 2007 में हमारे प्रधानमंत्री की मास्को यात्रा से रूस के साथ भारत की सामरिक भागीदारी और मजबूत हुई है। भारत-रूस-चीन त्रिपक्षीय विदेश मंत्रियों की वार्ता सार्थक रही है। यूरोपीय संघ (ईयू) के सदस्य राज्यों के साथ सामूहिक एवं व्यक्तिगत रूप से भारत के संबंध नई दिल्ली में आयोजित आठवें भारत-यूरोपीय संघ शिखर सम्मेलन तथा पिछले वर्ष के दौरान यूके, फ्रांस, जर्मनी तथा इटली सहित यूरोपीय संघ (ईयू) के पृथक-पृथक राज्यों के साथ कई शिखर-स्तरीय संपर्कों से आगे बढ़े हैं।

संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत, संयुक्त राष्ट्र सुधार विशेषकर सुरक्षा परिषद को अधिक लोकतांत्रिक, प्रतिनिधिमूलक तथा जवाबदेह बनाने के लिए और महासभा को जीवंत बनाने पर जोर देता रहा है। भारत विकासशील विश्व की चिंताओं को ध्यान में रखते हुए विभिन्न वैश्विक मसलों पर अंतर्राष्ट्रीय बहस में भी सक्रिय भूमिका निभाता रहा है। जलवायु परिवर्तन, जिसका प्रभाव विकासशील देशों पर विषम तरीके से पड़ा है, के विषय पर भारत रचनात्मक ढंग से अंतर्राष्ट्रीय समुदाय से इसका समर्थन करते हुए जुड़ा हुआ है कि विकासशील देशों के लिए महत्वपूर्ण स्वच्छ प्रौद्योगिकी उपलब्ध एवं सुलभ करायी जाए यहां तक कि इसने विश्व को यह आश्वस्त किया है कि आर्थिक संवृद्धि के मार्ग पर चलते हुए भारत का अपना प्रति व्यक्ति जीएचजी उत्सर्जन विकसित देशों के उत्सर्जन से अधिक नहीं होगा।

भारत की आर्थिक कूटनीति विदेशी निवेश को आकर्षित करने तथा अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में अपनी पहुंच बढ़ाने के उपाय करती रही ताकि देश में आर्थिक संवृद्धि को बढ़ावा मिल सके। भारत की विदेश नीति देश की ऊर्जा सुरक्षा को संबल प्रदान करने के लिए भी है, उदाहरण के लिए विदेश स्थित ऊर्जा परिसंपत्तियों के अधिग्रहण में हमारे निगमित इकाइयों के प्रयासों को समर्थन दिया गया है। इस बात से आश्वस्त होकर कि क्षेत्रीय सहयोग देश की आर्थिक संवृद्धि के लिए लाभकारी है, भारत ने आसियान, पूर्व एशिया शिखर सम्मेलन, आईबीएसए, जी-15,जी-8, आदि आर्थिक समूहों से अपनी संलग्नता भी बनाई हुई है। हम आसियान देशों के साथ और घनिष्ठ आर्थिक एकीकरण पर निरंतर बल देते रहे। भारत-आसियान मुक्त व्यापार करार (एफटीए) तथा थाइलैण्ड तथा बिम्सटेक के साथ एफटीए पर बातचीत जारी रही। मलेशिया के साथ एफटीए की व्यवहार्यता पर संयुक्त अध्ययन पूरा हो गया।

पड़ोसी देश

अफगानिस्तानः राष्ट्रपति करजई के नेतृत्व में अफगानिस्तान ने लोकतांत्रिक एवं बहुजनवादी स्वरूप में आन्तरिक स्थिरता की ओर प्रगति की है।

आन्तरिक सुरक्षा स्थिति में गिरावट, अफगानिस्तान में हमारे कार्मिकों, स्थापना तथा परियोजनाओं पर बढ़ता हुआ तालिबानी प्रभाव और हमले चिन्ता के विषय बने हुए हैं। भारत ने विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय एवं द्विपक्षीय मंचों पर अफगानिस्तान में सुरक्षा स्थिति की ओर समूचे अंतर्राष्ट्रीय प्रयासों का ध्यान दिलाया है। अफगानिस्तान की सरकार तथा जनता को एक स्थिर, लोकतांत्रिक तथा बहुलबादी समाज के निर्माण में मदद करने के प्रयास में भी भारत आगे रहा। अफगानिस्तान की सरकार के साथ घनिष्ठ राजनीतिक परामर्श और उस देश के नेतृत्व के साथ नियमित उच्च-स्तरीय संपर्क का काफी महत्व रहा। वर्ष 2001 के बाद से बने हुए भारत-अफगानिस्तान के द्विपक्षीय संबंधों में गति कायम रही। राष्ट्रपति करजई ने 3 से 4 अप्रैल, 2007 तक नई दिल्ली में आयोजित 14वें सार्क शिखर सम्मेलन में एक उच्च-स्तरीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया जहां अफगानिस्तान को सार्क के एक पूर्ण सदस्य के रूप में स्वीकार किया गया। सार्क में अफगानिस्तान के शामिल होने से अफगानिस्तान के इतिहास तथा दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग प्रक्रिया दोनों में ही एक नए अध्याय की शुरूआत हुई। अफगानिस्तान के विदेश मंत्री ने दिसम्बर, 2007 में नई दिल्ली में सार्क मंत्री परिषद की बैठक में भाग लिया। भारत से जल संसाधन मंत्री, भारतीय सांस्कृतिक

संबंध परिषद (भा0सां0सं0प0) के उपाध्यक्ष और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार ने क्रमशः जुलाई, सितम्बर और अक्तूबर, 2007 में अफगानिस्तान की यात्रा की।

अफगानिस्तान के पुनर्निर्माण एवं पुनर्रचना में भारत की प्रत्यक्ष द्विपक्षीय प्रतिबद्धता 750 मिलियन अमरीकी डालर की है। कई हजार भारतीय अफगानिस्तान के विकास कार्य में लगे हुए हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य, विद्युत, दूरसंचार तथा प्रसारण, अवसंरचना से लेकर संस्थागत क्षमता निर्माण, शासन के सुदृढ़ीकरण तथा खाद्यान्न सहायता तक के समूचे क्षेत्रों में व्याप्त परियोजनाओं के लिए इन निधियों की व्यवस्था की गई है। इस अवधि के दौरान पूरी हुई कुछ महत्वपूर्ण परियोजनाओं में फरयाब प्रांत में विद्युत पारेषण परियोजना के क्रियान्वयन का पर्यवेक्षण एवं उपकरणों की आपूर्ति, छः प्रान्तों में 26 नलकूपों की खुदाई, काबुल में पांच सार्वजनिक शौचालय परिसर और 100 ग्रामों का सौर विद्युतीकरण शामिल है। अगस्त, 2005 में अफगानिस्तान की अपनी यात्रा के दौरान भारत के प्रधानमंत्री द्वारा घोषित 500 भा0सां0सं0परि0 की छात्रवृत्तियों की योजना तथा अफगान राष्ट्रिकों के लिए प्रति वर्ष 500 आईटेक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का क्रियान्वयन संतोषजनक ढंग से किया जा रहा है और साथ ही अन्य परियोजनाओं की दोनों देशों के बीच घनिष्ठ एवं मैत्रीपूर्ण संबंधों को लोकप्रिय स्तर पर प्रदर्शन में बड़ी ही महत्वपूर्ण भूमिका है।

द्विपक्षीय व्यापार में जबरदस्त वृद्धि देखने को मिली है। वर्ष 2007-08 (अप्रैल-अक्तूबर) के पहले छह महीनों में कुल व्यापार वर्ष 2006-07 की इसी अवधि के 550 करोड़ रूपए की तुलना में 742.5 करोड़ रूपए का हुआ। वर्ष 2006-07 में कुल व्यापार 978.3 करोड़ रूपए का था।

बांग्लादेशः भारत ने बांग्लादेश में शांतिपूर्ण, विश्वसनीय, स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनावों के माध्यम से लोकतंत्र की पूर्ण बहाली की आवश्यकता पर बल देते हुए कामचलाऊ सरकार से संबंध बनाए रखा। बांग्लादेश के मुख्य सलाहकार डॉ0 फखरूद्दीन अहमद ने 2-4 अप्रैल, 2007 के दौरान नई दिल्ली में 14वें सार्क शिखर सम्मेलन में भाग लिया। बांग्लादेश में आये चक्रवात "सिद्र" से हुई तबाही के पश्चात बांग्लादेश के लोगों के साथ भारत की एकता को व्यक्त करने के लिए विदेशमंत्री ने 1 दिसम्बर, 2007 को ढाका की यात्रा की तथा पुनर्वास के लिए वहां के गांवों को अपनाने तथा निर्यात के लिए 5,00,000 टन चावल की छूट देने की घोषणा की। सार्क मंत्रिपरिषद की बैठक में भाग लेने के लिए बांग्लादेश के विदेश सलाहकार डॉ0 इफ्तेखार अहमद चौधरी ने 7-8 दिसम्बर, 2007 को नई दिल्ली की यात्रा की। सरकारी स्तर पर नियमित बैठकें आयोजित होती रहीं। भारतीय उग्रवादी समूहों द्वारा बांग्लादेश के भू-क्षेत्र का इस्तेमाल, आतंकवादी गतिविधियों को समर्थन तथा भारत में अपराधों में बांग्लादेश के राष्ट्रिकों की संलग्नता सहित भारत की चिन्ता के मुद्दों को बांग्लादेश सरकार के साथ उठाया गया है। दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार में निरन्तर वृद्धि हो रही है और यह 10,200 करोड़ रूपए का रहा (2006-07)। 16 सितम्बर, 2007 को भारत ने 8 मिलियन बने बनाए पोशाकों को बांग्लादेश से भारत को शुल्क मुक्त निर्यात करने के संबंध में बांग्लादेश के साथ एक समझौता ज्ञापन संपन्न किया। कोलकाता और ढाका के बीच नियमित ट्रेन सेवा शुरू करने की तैयारी में जुलाई, 2007 में इन दो शहरों के बीच एक यात्री ट्रेन प्रायोगिक तौर पर दो बार चलाई गई। स्थिर, समृद्ध तथा लोकतांत्रिक बांग्लादेश देखने की अपनी स्थायी वचनबद्धता के नाते भारत ने उसकी मदद के लिए बांग्लादेश को नकद सहायता तथा खाद्यान्न सहायता सहित लगभग 100 करोड़ रूपए की द्विपक्षीय सहायता तथा तत्काल राहत उपलब्ध कराई ताकि वह वर्ष के दौरान आई विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं से हुई तबाही से निपट सके।

भूटानः समीक्षाधीन अवधि के दौरान भारत और भूटान के संबंध निरन्तर उत्साहवर्द्धक एवं सौहार्दपूर्ण बने रहे। गहन परामर्श, परिपक्वता, संपूर्ण विश्वास तथा आपसी समझ इन संबंधों की विशेषता रही। दोनों देशों के बीच सर्वोच्च स्तरों पर नियमित यात्राओं की परम्परा तथा विचारों के आदान-प्रदान के अनुरूप भूटान नरेश ने फरवरी, 2007 में भारत की यात्रा की। विदेश मंत्री ने जुलाई, 2007 में भूटान की यात्रा की। इन यात्राओं से हमारे आर्थिक एवं राजनीतिक संबंधों में और मजबूती आयी।

भारत, भूटान का सबसे बड़ा व्यापारिक एवं सहयोग भागीदार बना रहा। भूटान की नौवीं पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत सहमत भारत से सहायता प्राप्त परियोजनाओं के क्रियान्वयन में संतोषजनक प्रगति हुई। भारत सरकार की सहायता से निर्मित भूटान की 1020 मेगावाट की ताला जल विद्युत परियोजना का पूर्ण वाणिज्यिक प्रचालन शुरू हुआ। जलविद्युत ऊर्जा के क्षेत्र में अत्यन्त सफल एवं परस्पर लाभप्रद सहयोग को आगे बढ़ाते हुए 1095 मेगावाट की पुनात्सांगछु जलविद्युत परियोजना के क्रियान्वयन करार पर विदेश मंत्री तथा उनके भूटानी समकक्ष द्वारा हस्ताक्षर किए गए।

लोकतांत्रिक संवैधानिक राजतंत्र के रूप में रूपान्तरण के दौरान भूटान को सहायता प्रदान करने के लिए भारत वचनबद्ध रहा है। भूटान की दसवीं पंचवर्षीय योजना के लिए भारत की सहायता के पैकेज को अंतिम रूप देने के लिए बातचीत पहले से ही चल रही है।

चीनः भारत-चीन संबंध भारत की विदेशी नीति की एक उच्च प्राथमिकता है। चीन भारत का सबसे बड़ा पड़ोसी देश है जिसके साथ निरन्तर क्रियाकलापों का एक लंबा इतिहास रहा है। समीक्षाधीन वर्ष के दौरान द्विपक्षीय संबंधों के विकास की गति निरंतर बनी

रही। प्रधानमंत्री ने जनवरी, 2008 में चीन की यात्रा की। भारत से होने वाली अन्य द्विपक्षीय यात्राओं में वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री, उपाध्यक्ष, योजना आयोग तथा पंचायती राज, युवा कार्य तथा खेल मंत्री और 100 सदस्यों वाले युवा प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करने वाले डोनर की यात्राएं शामिल थीं। चीन से मदाम लीयू यान्डोंग, संयुक्त मोर्चा कार्य विभाग मंत्री तथा 100 सदस्यीय एक युवा प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करने वाले हू चुनहुआ, अध्यक्ष अखिल चीन युवा संघ ने भारत की यात्रा की। द्विपक्षीय व्यापार में आर्थिक संबंधों का निरंतर विकास हुआ जो कि अप्रैल-अक्तूबर, 2007 के दौरान पहुंचकर 80909.74 करोड़ रूपए हो गया। चीन हमारा सबसे बड़ा दूसरा व्यापारिक साझेदार बना है। चीन के लिए भारत निर्यात का एक महत्वपूर्ण बाजार बना जिससे भारत को चीन से होने वाले निर्यात में बड़ी तेजी से वृद्धि हुई है। दोनों देशों ने द्विपक्षीय संबंधों को एक मजबूत, विविधतापूर्ण तथा आपसी लाभप्रद नींव पर स्थापित करने की महत्ता महसूस की है। पर्यटन वर्ष 2007 के जरिए भारत-चीन मैत्री से संबद्ध गतिविधियां, क्षेत्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय एकजुटता के आधार पर नियमित उच्च स्तरीय क्रियाकलाप तथा सीमापार नदियों पर विशेषज्ञ स्तरीय तंत्र की बैठक, वार्षिक रक्षा वार्ता और निःशस्त्रीकरण और परमाणु अप्रसार पर वार्ता तंत्र जैसे अपेक्षाकृत नवीन वार्ता तंत्रों के साथ-साथ विभिन्न क्षेत्रों में सतत् आदान-प्रदान इस वर्ष की मुख्य-मुख्य बातें थीं। दोनों देश जलवायु परिवर्तन तथा ऊर्जा सुरक्षा जैसे वैश्विक मुद्दों पर क्षेत्रीय तथा बहुपक्षीय मंचों से भी सहयोग को आगे बढ़ाते रहे हैं। आज भारत और चीन के संबंधों का क्षेत्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय महत्व है जिसे प्रधानमंत्री की चीन यात्रा के दौरान हस्ताक्षरित "21वीं शताब्दी की साझी दृष्टि" के रूप में अभिव्यक्ति मिली है।

ईरानः उच्च स्तरीय आदान-प्रदान तथा संयुक्त आयोग एवं वार्षिक विदेश कार्यालय परामर्श/सामरिक वार्ता जैसे नियमित संस्थागत तंत्रों के माध्यम से ईरान सरकार के साथ हमारे नियमित संपर्क बने हुए हैं। उच्च-स्तरीय विचार-विमर्शों से ऊर्जा, व्यापार और वाणिज्य, निवेश, संस्कृति तथा पारगमन में द्विपक्षीय सहयोग एवं साथ ही आपसी हित के क्षेत्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय मसलों पर सहयोग को आगे बढ़ाने में मदद मिली है। पिछले वर्ष की तुलना में द्विपक्षीय व्यापार वर्ष 2006-07 में 55 प्रतिशत बढ़ा। क्षेत्र में परस्पर समृद्धि, शांति तथा स्थिरता के लिए मैत्री संबंधों को सुदृढ़ करने के लिए दोनों सरकारों ने सर्वोच्च स्तरों पर परस्पर वचनबद्धता को दुहराया है।

मालदीवः भारत और मालदीव के बीच द्विपक्षीय संबंध गहरे एवं मैत्रीपूर्ण बने हुए हैं। उच्च-स्तरीय आदान-प्रदान के जरिए इस संबंध की गरिमा बनी हुई है। राष्ट्रपति मॉमून अब्दुल गयूम स्वयं 6-12 फरवरी, 2008 तक भारत की राजकीय यात्रा पर आए। इसके पूर्व, राष्ट्रपति गयूम ने अप्रैल, 2007 में नई दिल्ली में आयोजित सार्क शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए अप्रैल 2007 में भारत की यात्रा की। नवनियुक्त विदेश मंत्री अब्दुल्ला साहिद ने अक्तूबर, 2007 में तथा साथ ही दिसम्बर, 2007 में सार्क मंत्रिपरिषद की बैठक के लिए भारत की यात्रा की। विदेश सचिव ने द्विपक्षीय विचार-विमर्श के लिए 27-29 जनवरी, 2008 तक मालदीव की यात्रा की। उन्होंने मालदीव के विदेश मंत्री तथा रक्षा मंत्री से मुलाकात के अलावा मालदीव के राष्ट्रपति गयूम से भी भेंट की। वाणिज्य राज्य मंत्री जयराम रमेश ने 29-31 जनवरी, 2008 तक मालदीव की यात्रा की।

भारत ने मई, 2007 में तूफानी लहरों से मालदीव में हुई तबाही के परिणामस्वरूप 10 करोड़ रूपए की नकद सहायता प्रदान की तथा अपने द्विपक्षीय सहायता कार्यक्रम के अंतर्गत विभिन्न क्षेत्रों में मालदीव के राष्ट्रिकों को प्रशिक्षण सुविधाएं भी उपलब्ध करता रहा। 50 करोड़ रूपए से अधिक की भारतीय सहायता से मालदीव में आतिथ्य एवं पर्यटन अध्ययन संकाय, एक होटल प्रबंधन प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना करने संबंधी एक परियोजना पर निर्माण कार्य सितम्बर, 2007 में शुरू हुआ तथा इसके 2008 के अंत तक/ 2009 के आरंभ में पूरी हो जाने की आशा है।

वर्ष 2005 और 2006 के दौरान भारत का निर्यात क्रमशः 368.72 करोड़ रूपए तथा 384.10 करोड़ रूपए का हुआ जबकि भारत का आयात क्रमशः 4.48 करोड़ रूपए तथा 5.53 करोड़ रूपए का हुआ।

म्यांमाः वर्ष के दौरान भारत-म्यांमा संबंध विभिन्न स्तरों पर कई द्विपक्षीय यात्राओं से सुदृढ़ हुआ। स्वर्गीय प्रधानमंत्री जनरल सो वीन की राजकीय अन्त्येष्टि में शामिल होने के लिए संस्कृति और पर्यटन मंत्री अम्बिका सोनी ने 14 अक्तूबर, 2007 को म्यांमा की यात्रा की। इसके पहले सितम्बर, 2007 में पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री मुरली देबड़ा ने म्यांमा तेल और गैस उद्यम के साथ तेल और प्राकृतिक गैस आयोग विदेश लि0 के बीच तीन गहरे समुद्र ब्लाकों के लिए उत्पादन सहभागिता संविदा (पीएससी) पर हस्ताक्षर करने के लिए ने पी ता की यात्रा की। म्यांमा की ओर से ले0 जनरल थिहा थूरा तिन औंग मिंट ओओ, क्वार्टर मास्टर जनरल तथा सदस्य एसपीडीसी ने अप्रैल, 2007 में भारत की यात्रा की तथा म्यांमा के विदेश मंत्री यू न्यान विन ने जनवरी, 2008 में भारत की यात्रा की। अंतर्राष्ट्रीय बैठकों के साथ-साथ प्रधानमंत्री तथा विदेश मंत्री स्तर की बातचीत भी जारी रही। तामू-कलेवा-कालेम्यो सड़क के पुनः समतलीकरण सहित सीमा पार की अवसंरचना वाली परियोजनाओं पर कार्य तथा कलादन बहुविध पारगमन परिवहन परियोजना पर बातचीत जारी रही जिनका उद्देश्य भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र को

लाभान्वित करना तथा द्विपक्षीय व्यापार में सुधार लाना दोनों ही है। भारत और म्यांमा के बीच जोखाथ्यार (मिजोरम), रिह (म्यांमा) पर द्वितीय सीमा व्यापार स्थल के विकास हेतु भारत म्यांमा में रिह-टिडिम, रिह-फालम सड़कों के विकास के बारे में भी विचार कर रहा है। आर्थिक मोर्चे पर वर्ष 2006-07 के दौरान भारत को म्यांमा से 2934 करोड़ रूपए का निर्यात हुआ और म्यांमा को भारत से 640 करोड़ रूपए का निर्यात हुआ। भारत ने म्यांमा के भीतर राष्ट्रीय सुलह एवं राजनीतिक सुधार की प्रक्रिया को समर्थन देना जारी रखा।

नेपालः भारत ने नेपाल को एक लोकतांत्रिक,स्थिर, शांतिपूर्ण तथा समृद्ध राष्ट्र बनने में समर्थन देना जारी रखा। भारत ने 10 अप्रैल, 2008 को निर्धारित संविधान सभा के निर्वाचनों के जरिए नई संवैधानिक व्यवस्था को शीघ्र लागू करने में समर्थन देने की दृष्टि से नेपाल सरकार तथा प्रमुख राजनीतिक दलों के साथ गहन परामर्श कायम किए हुए हैं।

द्विपक्षीय संबंध और सुदृढ़ हुए हैं जिसकी विशिष्टता थी व्यापक संपर्क एवं उच्च-स्तरीय यात्राएं। इसकी मुख्य बातें सार्क शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए अप्रैल, 2007 में नेपाल के प्रधानमंत्री जी0पी0 कोइराला तथा विदेश मंत्री श्रीमती सहाना प्रधान की भारत यात्रा थी। सार्क मंत्रिपरिषद की बैठक में भाग लेने के लिए विदेश मंत्री श्रीमती प्रधान ने दिसम्बर, 2007 में भी भारत की यात्रा की।

सरकार ने अवसंरचना, शिक्षा, स्वास्थ्य, ग्रामीण तथा सामुदायिक विकास के क्षेत्रों में विकास परियोजनाएं शुरू करके नेपाल सरकार के विकास प्रयासों में योगदान दिया। एकीकृत जांच चौकियों के विकास और सीमापार सड़क तथा भारत-नेपाल सीमा पर रेल संपर्कों के निर्माण सहित सीमा अवसंरचना को सुदृढ़ करना इन सरकारों की उच्च प्राथमिकता थी।

पाकिस्तानः हालांकि पाकिस्तान में घरेलू राजनीतिक अव्यवस्था के कारण भारत-पाकिस्तान संबंधों में प्रगति की स्थिति अत्यन्त मंद रही, फिर भी समग्र वार्ता एवं संयुक्त आयोग से द्विपक्षीय संबंध सुदृढ़ एवं गहन होते रहे। वर्ष 2004 में शुरू हुई वार्ता प्रक्रिया 6 जनवरी, 2004 को पाकिस्तान के राष्ट्रपति द्वारा दी गई इस वचनबद्धता पर आधारित है कि किसी भी तरीके से आतंकवाद के समर्थन के लिए पाकिस्तान के नियंत्रणाधीन किसी भू-क्षेत्र का इस्तेमाल करने की अनुमति नहीं दी जाएगी। वर्ष के दौरान इस वार्ता प्रक्रिया के परिणामस्वरूप "नाभिकीय हथियारों से संबंधित दुर्घटनाओं के जोखिम को कम करने" संबंधी करार पर हस्ताक्षर हुए, किसी भी देश के ट्रकों को दूसरे देश के अधिनामित स्थलों तक बाघा/अटारी सीमा पार करने तथा सर क्रीक का संयुक्त सर्वेक्षण पूरा करने तथा एक-दूसरे के देश की अपनी-अपनी अवस्थितियां दर्शाने वाले मानचित्रों के आदान-प्रदान करने पर सहमति हुई। वार्ता के पिछले दौर में स्थापित किए गए परिवहन संपर्क सफलतापूर्वक चलते रहे जिससे लोगों की आवाजाही सुगम हुई तथा द्विपक्षीय व्यापार को बढ़ावा मिला। द्विपक्षीय व्यापार में हुई जबरदस्त वृद्धि का पता इस बात से चलता है कि वर्ष 2005-06 में हुआ 3846.45 करोड़ रूपए का कुल व्यापार वर्ष 2006-07 में बढ़कर 7563.49 करोड़ रूपए का हो गया। व्यापार में संवृद्धि की यह उच्च दर वर्ष 2007-08 में भी बनी रही है। अप्रैल से अक्तूबर, 2007 तक की अवधि में कुल व्यापार का मूल्य 4598.46 करोड़ रूपए था।

उच्च-स्तरीय द्विपक्षीय यात्राओं से वार्ता प्रक्रिया को और गति मिली। 13-14 जनवरी, 2007 को विदेश मंत्री प्रणब मुखर्जी ने पाकिस्तान की यात्रा की। 4 अप्रैल, 2007 को सार्क शिखर सम्मलेन में भाग लेने के लिए पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शौकत अजीज ने नई दिल्ली की यात्रा की। पाकिस्तान के पूर्ववर्ती विदेश मंत्री खुर्शीद महमूद कसुरी ने भारत-पाकिस्तान संयुक्त आयोग की बैठक की सह-अध्यक्षता के लिए 20-21 फरवरी, 2007 को तथा विदेश मंत्री इनामुल हक ने सार्क मंत्रिपरिषद की बैठक में भाग लेने के लिए 7-8 दिसम्बर, 2007 को नई दिल्ली की यात्रा की।

कैदियों तथा मछुआरों से संबंधित मानवीय मुद्दों पर उच्च प्राथमिकता एवं ध्यान देने की जरूरत बनी रही। कैदियों पर एक न्यायिक समिति का गठन तथा पाकिस्तान में गुम हुए रक्षा कार्मिकों के संबंधियों का दौरा इस संबंध में किए गए महत्वपूर्ण उपाय हैं।

भारत के लिए पाकिस्तान में तथा सीमा पार के आतंकवाद की अवसंरचना तथा हमारी अन्य जटिलताएं गंभीर चिन्ताएं बनी रहीं। सितम्बर, 2006 में हवाना में संपन्न शिखर बैठक में इस संबंध में निर्णय के बाद गठित संयुक्त आतंकवाद-रोधी तंत्र की 2007-08 में दो बैठकें हुईं। यदि कारगर ढंग से इसका क्रियान्वयन किया जाए तो यह तंत्र एक उपयोगी साधन हो सकेगा।

श्रीलंकाः भारत-श्रीलंका संबंध राजनीतिक,आर्थिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में घनिष्ठ बने रहे। राष्ट्रपति महिन्द्र राजापक्सा ने दो बारः सार्क शिखर सम्मेलन के लिए अप्रैल, 2007 में तथा हिन्दुस्तान टाइम्स नेतृत्व शिखर सम्मेलन के लिए अक्तूबर, 2007 में नई दिल्ली की यात्रा की। विदेश मंत्री रोहित बोगोल्लामा ने कई बार भारत की यात्रा की अभी पीछे दिसम्बर, 2007 में नई दिल्ली में सार्क मंत्रिपरिषद की बैठक में भाग लेने के लिए उन्होंने भारत की यात्रा की। भारत से खाद्य और कृषि मंत्री शरद पवार ने मई, 2007 में तथा लक्ष्मण कादिर गामर अंतर्राष्ट्रीय संबंध एवं सामरिक अध्ययन संस्थान में व्याख्यान देने के लिए नवम्बर, 2007 में वित्त मंत्री पी0 चिदम्बरम ने श्रीलंका की यात्रा की। इन यात्राओं

के दौरान जो बातचीत हुई उनमें भारत ने अपने इस विश्वास को व्यक्त किया कि श्रीलंका की नृजातीय समस्या का कोई सैन्य समाधान नहीं है और इसका एकमात्र तरीका श्रीलंका के सभी समुदायों को स्वीकार्य बातचीत के माध्यम से हल किया गया राजनीतिक समाधान है। अप्रैल-सितम्बर, 2007 की अवधि में द्विपक्षीय व्यापार वर्ष 2006 की इसी अवधि के दौरान 5200 करोड़ रूपए की तुलना में 6400 करोड़ रूपए का रहा और व्यापक आर्थिक साझेदारी करार (सीईपीए) पर बातचीत आगे बढ़ी। वर्ष 2007 में भारत श्रीलंका में चौथा सबसे बड़ा निवेशक था। भारत ने मानव संसाधन विकास के क्षेत्र में श्रीलंका को सहायता देनी जारी रखी। त्रिंकोमाली में एनटीपीसी द्वारा 500 मेगावाट के कोयला आधारित विद्युत संयंत्र की स्थापना, राइट्स और इरकान द्वारा कोलंबो-मतारा रेलवे का पुनरूद्धार तथा श्रीलंका के उपनगरीय क्षेत्र डिकोया में 150 बिस्तरो वाले अस्पताल के निर्माण के संबंध में प्रगति हुई।

दक्षिण-पूर्व एशिया और प्रशान्त

आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड तथा दक्षिण प्रशान्त देशों सहित दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के साथ भारत के संबंध वर्ष 2007-08 में और सुदृढ़ बने रहे। भारत की पूर्वोन्मुखी नीति के कार्यान्वयन में निरंतर प्रगति देखने को मिली, जिसका लक्ष्य दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के साथ तालमेल कायम करना है। वर्ष 2007-08 की महत्वपूर्ण घटनाओं में फिलीपीन्स की राष्ट्रपति तथा थाइलैण्ड, वियतनाम तथा कम्बोडिया के प्रधानमंत्रियों की राजकीय यात्राएं शामिल थीं। इन यात्राओं की वजह से कई करारों पर हस्ताक्षर हुए जिनसे दक्षिण पूर्व एशिया के देशों के साथ अपेक्षाकृत घनिष्ठ संबंधों के संस्थागत स्वरूप को बल मिला।

इस अवधि के दौरान यात्राओं के आदान-प्रदान, प्रशिक्षण के आदान-प्रदान, पोत यात्राओं तथा भारत और दक्षिण पूर्व एशिया के देशों के रक्षा उद्योगों के बीच सहयोग के जरिए सिंगापुर, मलेशिया, थाइलैण्ड और वियतनाम के साथ हमारे द्विपक्षीय रक्षा संबंध और मजबूत हुए। दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के साथ कायम की गई द्विपक्षीय रूपरेखा के माध्यम से आतंकवाद एवं संगठित अपराधों का मुकाबला करने में सहयोग सुदृढ़ हुआ।

दक्षिण-दक्षिण सहयोग के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के अनुसार भारत कम्बोडिया, लाओस और वियतनाम को सस्ते ऋण एवं अनुदान भी देता रहा है। चालू वर्ष के दौरान वियतनाम के लिए 45 मिलियन अमरीकी डालर, लाओस के लिए 17 मिलियन अमरीकी डालर तथा कम्बोडिया के लिए 35 मिलियन अमरीकी डालर के ऋणों को मंजूरी मिली।

सांस्कृतिक क्षेत्र में हमने भारत और दक्षिण पूर्व एशिया के देशों के मध्य मधुर संबंधों को ठोस बनाने के प्रयास किये। हमारी कूटनीति के इस पहलू को सांस्कृतिक आदान-प्रदान, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) द्वारा कम्बोडिया और लाओस में मंदिरों के जीर्णोद्धार के जरिये तथा अंतः सरकारी करार के माध्यम से नालन्दा में एक अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना करने के प्रस्ताव के जरिए आगे बढ़ाया गया। प्रस्तावित विश्वविद्यालय प्रतिष्ठित एवं समकालीन अध्ययन का एक केन्द्र होगा और समूचे दक्षिण पूर्व एशियाई तथा पूर्व एशियाई क्षेत्र के विद्वानों एवं छात्रों को एकजुट करना इसका उद्देश्य होगा।

पूर्व एशिया

हाल के वर्षों में भारत-जापान संबंधों में एक महत्वपूर्ण एवं गुणात्मक बदलाव आया है जो कि हमारे सफल नियमित शिखर-स्तरीय आदान-प्रदान से संभव हुआ है। वर्ष 2006 में हमारे प्रधानमंत्री की जापान यात्रा के दौरान स्थापित संयुक्त भारत-जापान सामरिक तथा वैश्विक भागीदारी से दोनों ही संबंधों की भावी दिशा निर्धारित करने तथा इस दिशा में एक विस्तृत कार्य योजना तैयार करने की दृष्टि प्राप्त हुई है। सामरिक और वैश्विक साझेदारी सहयोग के पांच स्तम्भों अर्थात् राजनीतिक, रक्षा तथा सुरक्षा सहयोग, व्यापक आर्थिक साझेदारी, विज्ञान और प्रौद्योगिकी पहल, लोगों का लोगों के साथ आदान प्रदान तथा क्षेत्रीय/बहुपक्षीय मंचों पर सहयोग पर आधारित है। अगस्त, 2007 में जापानी प्रधानमंत्री अबे की भारत की राजकीय यात्रा से सामरिक और वैश्विक साझेदारी के नए आयामों के लिए रोड मैप पर हस्ताक्षर के साथ ही इस साझेदारी को और मजबूत करने के लिए रोड मैप तैयार करने में मदद मिली। इस रोड मैप का एक महत्वपूर्ण घटक आर्थिक क्रियाकलापों को उन्नत करने तथा सुरक्षा एवं रक्षा के क्षेत्रों में आदान-प्रदान का गुणात्मक उन्नयन करने के लिए सभी स्तरों पर सामरिक वार्ता को आगे बढ़ाना है।

भारत तथा कोरिया गणराज्य के बीच संबंध अधिक गहन तथा विविधतापूर्ण हुए हैं। राजनीतिक स्तर पर ये संबंध उत्कृष्ट एवं किसी प्रकार के क्षोभ से रहित हैं। उच्चस्तरीय यात्राओं में वृद्धि, वाणिज्यिक संबंधों का सुदृढ़ीकरण तथा कला और संस्कृति के क्षेत्र में संपर्कों ने भारत-कोरिया द्विपक्षीय संबंधों को बल प्रदान किया है। द्विपक्षीय संबंधों में आर्थिक क्रियाकलापों का एक प्रमुख स्थान है। भारत में निवेश के लिए कोरिया गणराज्य एक महत्वपूर्ण देश के रूप में उभरा है। साझा हितों के मुद्दों पर क्षेत्रीय और बहुपक्षीय मंचों पर बढ़ते हुए रक्षा एवं सुरक्षा संबंध और सहयोग गतिशील द्विपक्षीय संबंधों के महत्वपूर्ण पहलू हैं।

मंगोलिया के साथ भारत के पारम्परिक रूप से मैत्रीपूर्ण एवं सौहार्दपूर्ण संबंधों में विगत वर्षों में निरंतर सुधार हुआ है। भारत ने उच्चतर शिक्षा, कृषि, सूचना तथा संचार प्रौद्योगिकी एवं मानव संसाधन विकास में मंगोलिया को तकनीकी तथा आर्थिक सहयोग देना जारी रखा।

यूरेशिया

इस वर्ष के दौरान भारत ने रूस के साथ अपनी सामरिक साझेदारी कायम रखी तथा इसे और आगे बढ़ाया। प्रधानमंत्री ने रूसी परिसंघ के राष्ट्रपति के साथ वार्षिक शिखर बैठक में भाग लेने के लिए नवम्बर, 2007 में मास्को की यात्रा की। संबंधित क्षेत्रों में सहयोग को बढ़ावा देने के लिए उच्च-स्तरीय यात्राओं का आदान-प्रदान हुआ जिसमें भारत की ओर से विदेश, रक्षा, वाणिज्य एवं उद्योग तथा पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्री तथा रूस की ओर से संघीय अंतरिक्ष अभिकरण के अध्यक्ष तथा रूसी सुरक्षा परिषद के कार्यकारी सचिव की यात्राएं शामिल थीं। विभिन्न क्षेत्रों में विशेषकर रक्षा, आर्थिक सहयोग और विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के संबंध में द्विपक्षीय करार संपन्न हुए। संयुक्त नौसैनिक एवं हवाई अभ्यास क्रमशः अप्रैल तथा सितम्बर, 2007 में संचालित किए गए। भारत और रूसी परिसंघ के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना की यह 60वीं वर्षगॉठ थी। भारत ने भारत-रूस-चीन त्रिपक्षीय विदेश मंत्रियों की वार्ता प्रक्रिया में भाग लिया।

भारत विभिन्न स्तरों पर यूरेशियाई देशों के साथ सहयोग को विस्तृत एवं गहन बनाने में लगा रहा। विशेषकर बेलारूस के राष्ट्रपति ने भारत की यात्रा की, वाणिज्य राज्य मंत्री ने अजरबैजान तथा उज्बेकिस्तान की यात्रा की तथा कृषि राज्य मंत्री ने कई सरकारी स्तरीय यात्राओं के अतिरिक्त आर्मेनिया की यात्रा की। द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत बनाने के लिए संसदीय यात्राएं, व्यापारिक शिष्टमंडल, सांस्कृतिक महोत्सव, संगोष्ठियां और विकास सहयोग कार्यक्रम तथा परियोजनाएं शुरू की गईं। आर्मेनिया, अजरबैजान, बेलारूस, जार्जिया, कजाखस्तान, किर्गिज गणराज्य, ताजिकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, उक्रेन तथा उज्बेकिस्तान के साथ भारत के राजनयिक संबंधों की स्थापना की पन्द्रहवीं वर्षगांठ मनाने के लिए संबंधित देशों के साथ कार्यक्रम आयोजित किए गए। भारत ने अगस्त और नवम्बर, 2007 में क्रमशः शंघाई सहयोग संगठन के राज्याध्यक्षों एवं शासनाध्यक्षों की बैठकों में प्रेक्षक के रूप में भाग लिया।

खाड़ी, पश्चिम एशिया और उत्तरी अफ्रीका

खाड़ी क्षेत्र के देशों के साथ अपने घनिष्ठ और मैत्रीपूर्ण संबंधों को और संवर्धित करने के उद्देश्य से भारत ने सभी क्षेत्रों में क्रियाकलापों की गति बनाए रखी। इस वर्ष मार्च 2007 में बहरीन के युवराज, मार्च 2007 में संयुक्त अरब अमीरात के उप राष्ट्रपति और प्रधान मंत्री तथा दुबई के शासक और दिसंबर 2007 में ओमान सल्तनत के मंत्रिपरिषद के उप प्रधान मंत्री की यात्राएं हुईं। बहरीन, संयुक्त अरब अमीरात और यमन के साथ संयुक्त आयोग/समिति की बैठकें हुईं। भारत ने मई 2007 में आयोजित द्विपक्षीय संयुक्त आयोग की बैठक के दौरान ईराक के साथ सहयोग बढ़ाने की इच्छा को दोहराया और आशा करता है कि यहाँ शीघ्र ही शांति और स्थिरता बहाल होगी। मई 2007 में मुम्बई में भारत-जीसीसी औद्योगिक सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस क्षेत्र के देशों, जो महत्वपूर्ण आर्थिक भागीदार, तेल और गैस आयातों के प्रमुख स्रोत हैं और जिनका इस क्षेत्र की शांति और स्थिरता में साझा हित है, के साथ द्विपक्षीय सहयोग की संस्थागत रूपरेखा को सुदृढ़ करने के लिए अनेक करारों और समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किये गये। इस क्षेत्र में चार लाख से अधिक भारतीय प्रवासी रहते हैं और उनके हित-कल्याण को बढ़ावा देने के लिए अनेक उपायों की पहल की गयी।

भारत ने पश्चिमी एशिया और उत्तरी अफ्रीका के देशों के साथ पारंपरिक रूप से अपने घनिष्ठ और बहुपक्षीय संबंधों को सुदृढ़ बनाये रखा। वर्ष 2006 में जोर्डन के शाह और महारानी की भारत यात्रा से उत्पन्न हुई स्थिति का लाभ उठाकर द्विपक्षीय संबंधों को और महत्व प्रदान किया गया। दोनों पक्षों की ओर से हुई द्विपक्षीय यात्राओं से मिस्र के साथ हमारे घनिष्ठ संबंध और विकसित हुए। वर्ष 2007 में भारत मिस्र के साथ व्यापार करने वाला तीसरा सबसे बड़ा साझेदार के रूप में उभरकर आया। अल्जीरिया में भारत के साथ एक संसदीय मैत्री दल का गठन हुआ और अल्जीरिया के एक संसदीय शिष्टमंडल ने दिसंबर 2007 में भारत का दौरा किया। आर्थिक क्षेत्र में भारतीय कंपनियों ने इस क्षेत्र, विशेषकर अल्जीरिया, जोर्डन, सूडान और लीबिया में सफलतापूर्वक अपने क्रियाकलापों का विस्तार करना जारी रखा। साथ ही वर्ष 2007 में भारतीय कंपनियों ने इस क्षेत्र में कुल मिलाकर 1 बिलियन अमरीकी डालर से अधिक का ठेका प्राप्त किया। इस क्षेत्र के साथ व्यापार में भी अच्छी वृद्धि हुई।

भारत ने वार्ता के आधार पर फिलीस्तीनी मुद्दे के ऐसे समाधान का समर्थन किया जिसके फलस्वरूप एक संप्रभु, स्वतंत्र, व्यवहार्य और संयुक्त फिलीस्तीन राज्य जिसकी सुरक्षित और मान्यताप्राप्त सीमाएं हों और जो इजराइल के साथ शांतिपूर्वक रह सके, के प्रति अपने समर्थन को दोहराया जिसका समर्थन क्वार्टेट रोडमैप और संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद प्रस्ताव 1397 और 1515 में किया गया है। भारत ने स्वदेश के लिए फिलीस्तीनी लोगों के वैध अधिकारों के लिए एक न्यायोचित समाधान प्राप्त करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय समुदाय द्वारा किये जा रहे प्रयासों का समर्थन किया। भारत ने नवम्बर 2007 में आयोजित एनापोलिस शांति सम्मेलन में फिलीस्तीनी आंदोलन के प्रति अपनी वचनबद्धता को दोहराया और तदुपरांत दिसंबर 2007 में पेरिस में आयोजित दाता सम्मेलन में विकास परियोजनाओं और आइटेक कार्यक्रम के अंतर्गत 400 फिलीस्तीनी अधिकारियों के प्रशिक्षण के लिए

फिलिस्तीन को 5 मिलियन अमरीकी डालर की अतिरिक्त राशि देने का वचन दिया।

अफ्रीका

भारत ने अफ्रीकी देशों के साथ पारंपरिक रूप से अपने घनिष्ठ और सौहार्दपूर्ण संबंधों को और गहन बनाया। अक्तूबर 2007 में प्रधान मंत्री डा. मनमोहन सिंह की नाइजीरिया यात्रा के दौरान भारत और नाइजीरिया के बीच एक ऐसी सामरिक भागीदारी बनाने पर सहमति हुई जिसमें द्विपक्षीय राजनैतिक, आर्थिक, व्यापारिक, सुरक्षा, सांस्कृतिक, शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा अंतर्राष्ट्रीय आयाम शामिल होंगे। इस क्षेत्र के देशों से भारत में अनेक उच्चस्तरीय यात्राएं हुईं जिसमें इथोपिया के प्रधान मंत्री मेलेस जेनावी और कोमोरोस संघ के राष्ट्रपति मुहम्मद सांबी की यात्रा शामिल है। नियमित मंत्रिस्तरीय यात्राओं से सहयोग के सहमत क्षेत्रों में नए करारों पर हस्ताक्षर किए गए। संसदीय अध्ययन एवं प्रशिक्षण ब्यूरो द्वारा प्रस्तावित प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के विशेष संदर्भ में संसदीय आदान-प्रदान भी हुए। मंत्रालय के सहायता कार्यक्रम के अंतर्गत लघु विकास परियोजनाओं सहित अन्य कार्यों के जरिए राहत सहायता और क्षमता निर्माण संबंधी समर्थन प्रदान किए गए।

भारत ने न सिर्फ द्विपक्षीय स्तर पर बल्कि क्षेत्रीय और संस्थागत स्तर पर भी इस क्षेत्र के साथ अपने संबंधों को गहन बनाया। इस दिशा में एक और महत्वपूर्ण कदम था 8 अप्रैल 2008 को भारत-अफ्रीका शिखर सम्मेलन/मंच के आयोजन का निर्णय। जुलाई 2007 में इथोपिया की यात्रा के दौरान अफ्रीकी संघ के अध्यक्ष अल्फा ओमर कोनारे के साथ विदेश मंत्री प्रणब मुखर्जी की बैठक से अफ्रीकी संघ के साथ भारत के क्रियाकलाप और भी गहन हुए। भारत अफ्रीकी संघ संयुक्त कार्यकारी दल की दो दौर की वार्ता बैठकें हुईं जिसमें दूसरे दौर की बैठक में अफ्रीका के स्थायी प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया। इकोवास आयोग के अध्यक्ष ने अक्तूबर 2007 में प्रधान मंत्री डा. मनमोहन सिंह की नाइजीरिया यात्रा के दौरान उनसे मुलाकात की तथा भारत और इकोवास के बीच सहयोग को और गहन बनाने की अपनी इच्छा अभिव्यक्त की। भारत ने कोमेसा, एसएडीसी, ईएसी और एसएसीयू जैसे अन्य उप क्षेत्रीय समूहों के साथ भी वार्ता में भाग लेना जारी रखा।

इस अवधि के दौरान इस महाद्वीप में भारत के सार्वजनिक और निजी क्षेत्र की इकाइयों द्वारा निवेश में वृद्धि हुई और अफ्रीका की बहुपक्षीय वित्तपोषित अवसंरचना परियोजनाओं में भारतीय कंपनियों की भागेदारी और बढ़ी। विदेश राज्य मंत्री, आनंद शर्मा ने जोहांसबर्ग, केपटाउन, कंपाला और मापूतो में आयोजित क्षेत्रीय परियोजना भागीदारी सभाओं के लिए भारतीय शिष्टमंडल का नेतृत्व किया। पश्चिम अफ्रीका के लिए क्षेत्रीय सभा का आयोजन आबिदजान में सीआईआई द्वारा किया गया। ये सभाएँ सफल रहीं और दोनों क्षेत्रों के व्यवसाइयों ने भागीदारी संबंधी महत्वपूर्ण करार संपन्न किए जिससे अफ्रीका में अपना ब्रांड बनाने का प्रयास करने वाली भारतीय कंपनियों को भी प्रोत्साहन मिला। मंत्रालय 19-21 मार्च 2008 तक नई दिल्ली में आयोजित होने वाली अगली पैन-अफ्रीकी सभा का समर्थन कर रहा है। विशिष्ट अवसंरचना विकास परियोजनाओं के लिए ऋण भी मुहैया कराए गए।

टीम-9 पहल, जो भारत और पश्चिम अफ्रीका के 9 देशों के बीच एक तकनीकी-आर्थिक सहयोग उपक्रम है, ने पश्चिम अफ्रीका के अनेक महत्वपूर्ण देशों के साथ भारत के संबंधों को गहन बनाने हेतु प्रभावी प्रोत्साहन उपलब्ध कराना जारी रखा है। इकोवास देशों ने इकोवास निवेश एवं विकास बैंक को भारत द्वारा दी गई 250 मिलियन अमरीकी डालर के ऋण का उपयोग करना आरंभ किया और स्वास्थ्य तथा कृषि से लेकर ग्रामीण विद्युतीकरण जैसे क्षेत्रों के लिए 113.5 मिलियन अमरीकी डालर की परियोजनाओं का अनुमोदन किया। पश्चिम अफ्रीकी क्षेत्र के देशों के साथ हमारे संबंधों पर इन पहलकदमियों के प्रभाव की अभिव्यक्ति इस क्षेत्र से भारत को हुई अनेक मंत्रिस्तरीय यात्राओं में हुई।

पैन-अफ्रीकी ई-नेटवर्क परियोजना के क्रियान्वयन के लिए कार्य जारी रहा। दूर-शिक्षा और दूर-चिकित्सा से संबंधित पायलट परियोजना का उद्घाटन विदेश मंत्री श्री प्रणब मुखर्जी द्वारा 4 जुलाई 2007 को आदिस अबाबा, इथोपिया में किया गया। डकार (सेनेगल), जिसे स्थापना स्थल के रूप में चुना गया था, में केन्द्र के निर्माण का कार्य पूरा हो गया। टीसीआईएल ने अफ्रीका में 28 देशों के साथ परियोजना में भागीदारी के लिए पहले ही समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर कर दिये हैं। विभिन्न क्षेत्रों में टीसीआईएल की टीमों के जरिए सर्वेक्षण का कार्य किया जा रहा है।

यूरोप

यूरोपीय संघ के सदस्य राज्य अलग-अलग और सामूहिक रूप से भारत के लिए महत्वपूर्ण हैं। यूरोपीय संघ, जो हमेशा से एक आर्थिक महाशक्ति रहा है, पूर्व की ओर एक राजनीतिक इकाई के रूप में उभरा है जिसमें 27 देश शामिल हैं। यूरोपीय संघ सुधार संधि पर 13 दिसंबर 2007 को लिसबन में 27 सदस्य राज्यों के राज्याध्यक्षों अथवा शासनाध्यक्षों द्वारा हस्ताक्षर किया गया। लिसबन संधि के नाम से प्रसिद्ध इस संधि का उद्देश्य यूरोपीय संघ को आधुनिक संस्थाएं उपलब्ध कराना और वहाँ की कार्य प्रणाली को इष्टतम बनाना है। दिसंबर 2007 में सेंजेन

क्षेत्र का भी विस्तार हुआ और इसमें 12 नए सदस्य देशों में से 9 को शामिल कर लिया गया; शेष 3 नए सदस्य देश अर्थात साइप्रस, बुल्गारिया और रोमानिया के बाद में शामिल होने की संभावना है।

यूरोप के साथ भारत के संबंधों में पर्याप्त वृद्धि हुई है जिसमें क्रियाकलाप के सभी क्षेत्रों को शामिल किया गया है। यूरोपीय संघ भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है और वर्ष 2006 में द्विपक्षीय व्यापार 2,70,000 करोड़ रुपये को पार कर गया। भारत और यूरोपीय संघ महत्वपूर्ण निवेश भागीदार भी हैं और इनके बीच पर्याप्त दोतरफा निवेश हुआ है। यूरोपीय संघ से भारत में किया गया कुल विदेशी प्रत्यक्ष निवेश प्रवाह 10.86 बिलियन अमरीकी डालर का है (अगस्त 1991-फरवरी 2007 तक कुल विदेशी प्रत्यक्ष निवेश प्रवाह का 24%)। यूके, जर्मनी और इटली में भी भारतीय निवेश निरंतर बढ़ रहा है।

भारत और यूरोप ने नई और उदीयमान वैश्विक चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए साझे दृष्टिकोण का विकास करने हेतु मिलकर कार्य किया है। भारत के राष्ट्रपति ने अप्रैल 2007 में स्ट्रासबर्ग का दौरा किया और यूरोपीय संसद को संबोधित किया। यह किसी भारतीय राष्ट्रपति का यूरोपीय संसद का पहला दौरा और संबोधन था। यूरोपीय संघ को सार्क में एक पर्यवेक्षक के रूप में सहयोजित किया गया और इसने 1-4 अप्रैल 2007 तक नई दिल्ली में आयोजित 14वें सार्क शिखर सम्मेलन में भाग लिया। भारत के विदेश मंत्री ने पहली बार मई 2007 में जर्मनी में आयोजित एएसईएम विदेश मंत्रियों की बैठक में भाग लिया। आठवां भारत-यूरोपीय संघ वार्षिक शिखर सम्मेलन 30 नवंबर 2007 को नई दिल्ली में आयोजित किया गया।

ऊर्जा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी तथा संस्कृति जैसे क्षेत्रों में यूरोप के अलग-अलग देशों के साथ भारत के क्रियाकलाप और भी गहन एवं विविधतापूर्ण हुए। यूके, फ्रांस, इटली, नीदरलैंड, जर्मनी और पुर्तगाल के साथ शिखर सम्मेलन स्तरीय क्रियाकलाप हुए। संसद सदस्यों के बढ़ते आदान-प्रदान और सभ्य समाज के बीच बातचीत के अतिरिक्त मंत्री और अधिकारी स्तरों पर यूरोपीय संघ के सदस्य राज्यों के साथ व्यापक बातचीत हुई है। नॉर्डिक और मध्य तथा पूर्वी यूरोप के देशों के साथ पारम्परिक रूप से हमारे घनिष्ठ, मैत्रीपूर्ण और सौहार्दपूर्ण संबंधों को और विविधतापूर्ण तथा गहन बनाने के प्रयास भी किए गए हैं। इनमें से अधिकांश देशों के साथ तीव्र गति से व्यापार बढ़ रहा है; यह व्यापार अब पारम्परिक पण्यों से आगे बढ़कर इंजीनियरिंग सामानों और मूल्य संवर्धित वस्तुओं तक आ पहुँचा है। भारत से होने वाले निवेश में भी लगातार वृद्धि हो रही है। नॉर्डिक देश भी भारतीय स्टॉक बाजार और वित्तीय संस्थानों को निवेश योग्य अपनी विशाल निधियों के लिए सुरक्षित और लाभकारी मान रहे हैं और इन्होंने भारत में निवेश करना आरंभ कर दिया है। पूर्ववर्ती पूर्वी यूरोप में अपेक्षाकृत उच्च विकास दर और एक गतिशील एवं आर्थिक रूप से जीवंत भारत से उत्पन्न नई संभावनाएँ आपसी लाभ के लिए यूरोप के इन भागों के साथ भारत के आर्थिक क्रियाकलापों को और बढ़ावा दे रही हैं।

अमरीका

पिछले 12 महीनों के दौरान भारत-अमरीकी कार्यसूची द्विपक्षीय क्रियाकलाप के परिवर्तित स्वरूप को परिलक्षित करता है जिसमें जुलाई 2005 और मार्च 2006 के समझौतों को परिलक्षित करने वाले सरकारी और निजी क्षेत्र की पहलकदमियों पर आधारित अनेक द्विपक्षीय वार्ताएँ की गईं। इसमें स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि, प्रतिरक्षा, ऊर्जा और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा आतंकवाद, सामूहिक विनाश के हथियारों के प्रसार पर रोक लगाने, आपदा राहत तथा महामारी जैसे साझे हित के वैश्विक मुद्दों पर चर्चा की गई।

जुलाई 2005 और मार्च 2006 के समझौतों को क्रियान्वित करने के लिए असैनिक नाभिकीय सहयोग से संबद्ध भारत-अमरीका द्विपक्षीय सहयोग करार के पाठ को अंतिम रूप देना भारत-अमरीका सहयोग की एक महत्वपूर्ण घटना रही जिससे भारत और पश्चिमी देशों तथा नाभिकीय आपूर्तिकर्ता समूह के अन्य सदस्यों के साथ असैनिक नाभिकीय सहयोग और व्यापार का मार्ग प्रशस्त हुआ। सरकार ने विशेष रूप से भारत के लिए सुरक्षोपाय करार संपन्न किए जाने के लिए दिसंबर 2007 में अंतराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी के साथ बातचीत आरंभ की। नाभिकीय आपूर्तिकर्ता समूह से प्राप्त बिना शर्त छूट और इन उपायों के एकबार पूरा हो जाने के उपरांत अमरीकी सरकार दोनों पक्षों द्वारा असैनिक नाभिकीय सहयोग से संबद्ध द्विपक्षीय करार पर हस्ताक्षर किए जाने, इसे प्रवृत्त किए जाने और इसके क्रियान्वयन से पूर्व अमरीकी कांग्रेस का अनुमोदन प्राप्त करेगी।

वर्ष 2007 में द्विपक्षीय कार्यसूची विविधतापूर्ण हुई और इसमें उच्च प्रौद्योगिकी वाणिज्य, प्रतिरक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष, स्वच्छ एवं प्रभावी ऊर्जा, शिक्षा जैसे प्राथमिक क्षेत्रों में भारत-अमरीका सहयोग को शामिल किया गया जिसके लिए द्विपक्षीय व्यापार एवं आर्थिक संपर्क के उस व्यापक आधार का उपयोग किया गया जो भारत की घरेलू पहलकदमियों और अनेक महत्वपूर्ण क्षेत्रों में इसकी संदर्शी योजनाओं का समर्थन करती है।

कनाडा की नई कंजरवेटिव सरकार के साथ उसकी कार्यसूची में द्विपक्षीय व्यापार और निवेश, जैव प्रौद्योगिकी, शिक्षा, कृषि, आतंकवाद का मुकाबला, असैनिक नाभिकीय सुरक्षा, ऊर्जा प्रभाविता

और पर्यावरण सहित विज्ञान और प्रौद्योगिकी में सहयोग बढ़ाने के साझे उद्देश्यों को प्राथमिकता दी गई है। दोनों देशों के बीच राजनीतिक, आधिकारिक और व्यावसायिक स्तर की यात्राएं एवं सपर्क स्थापित किए गए और दोनों पक्षों ने द्विपक्षीय और बहुपक्षीय क्षेत्र में संवर्धित सहयोग के संभावित क्षेत्रों की पहचान की और इस पर आगे की कार्रवाई की।

लातिन अमरीका और कैरीबियाई देश (एलएसी)

भारत और लातिन अमरीका के देशों के बीच संबंधों में प्रगति जारी रही। अनेक उच्चस्तरीय यात्राओं के आदान-प्रदान से इन देशों के साथ जारी क्रियाकलाप को गति मिली। इन यात्राओं में शामिल थीं जून 2007 में ब्राजील के राष्ट्रपति लुई इनासियो लूला दा सिल्वा और सितंबर 2007 में मेक्सिको के राष्ट्रपति फिलिप काल्डेरोन हिनोजोसा की यात्रा। क्यूबा,ग्वाटेमाला, एल सल्वाडोर तथा ब्राजील के विदेशमंत्रियों ने भी भारत की यात्रा की। भारत से क्यूबा, डोमिनिकन गणराज्य, ग्वाटेमाला, कोलम्बिया और इक्वेडोर की यात्रा की गई। नए बाजारों तक पहुँच बढ़ाने की अपनी पहलकदमियों के अनुसरण में एलएसी क्षेत्र के लिए भारतीय व्यापार मिशनों और वाणिज्यिक शिष्टमंडलों की यात्राओं को सुविधाजनक बनाया गया। भारत के बड़े व्यावसायिक घरानों ने ट्रिनीडाड और टोबैगो, मैक्सिको, ब्राजील, कोलम्बिया और क्यूबा में तेल एवं गैस क्षेत्र में तथा बोलीबिया में लौह अयस्क क्षेत्र में अपने कार्य आरंभ किए। इसी प्रकार सूचना प्रौद्योगिकी और भेषज क्षेत्र की कंपनियां भी अनेक लातिन अमरीकी देशों में सक्रिय हुईं। एलएसी देश इन गतिविधियों का सकारात्मक प्रत्युत्तर दे रहे हैं और दिल्ली में ग्वाटेमाला,कोस्टारिका, निकारागुआ और एल सल्वाडोर के नए आवासीय मिशन खोले जा रहे हैं। भारत ने ग्वाटेमाला में एक नया मिशन खोलने की अपनी मंशा की घोषणा की है।

संयुक्त राष्ट्र संघ एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगठन

भारत ने हमेशा से बहुपक्षीय कूटनीति को समुचित महत्व दिया है और अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत पारंपरिक रूप से संयुक्त राष्ट्र संघ और इससे संबद्ध अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के कार्यकलापों में एक सक्रिय और रचनात्मक भागीदारी निभाता रहा है। भारत की रुचि और उसके ध्यान वाले क्षेत्र की परिधि काफी विस्तृत है जिसमें संयुक्त राष्ट्र प्रणाली में सुधार, अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद का निदान ढूंढना, शांतिरक्षण अभियानों, अन्तर्राष्ट्रीय मानवाधिकार मसलों, पर्यावरण संरक्षण और एक निष्पक्ष एवं न्यायप्रिय अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था शामिल है। भारत इन वैश्विक मुद्दों के प्रति एक सिद्धांतवादी दृष्टिकोण अपनाने की कोशिश करता है जो एक और अधिक समानता वाली और शांतिपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था वाले अपने आदर्शों पर मजबूती से आधारित है जो कि विकासशील विश्व के वैध हितों को यथोचित बल प्रदान करता है।

प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह ने कम्पाला (उगांडा) में 23-25 नवंबर, 2007 तक आयोजित राष्ट्रमंडल शासनाध्यक्षों की बैठक (चोगम) में भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। विदेश मंत्री श्री प्रणब मुखर्जी ने चोगम पूर्व राष्ट्रमंडल विदेश मंत्रियों की 21-22 नवंबर, 2007 को आयोजित बैठक में भाग लिया। विदेश राज्य मंत्री श्री आनन्द शर्मा ने उगांडा के राष्ट्रपति की अध्यक्षता में आयोजित "यूथ डायलॉग" और "स्पोर्ट्स ब्रेकफास्ट" में भारत का प्रतिनिधित्व किया। भारत के उम्मीदवार श्री कमलेश शर्मा का कम्पाला चोगम के दौरान राष्ट्रमंडल के अगले महासचिव के रूप में चयन किया गया।

संयुक्त राष्ट्र महासभा का 23 सितंबर से 2 अक्तूबर, 2007 तक आयोजित 62वें सं0रा0महा सभा सत्र के आम बहस में विदेश मंत्री ने भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। आम बहस में दिए गए उनके वक्तव्य में जलवायु परिवर्तन के मसले पर भारत का दृष्टिकोण, सहस्त्राब्दि विकास लक्ष्यों (एमडीजी) को प्राप्त करने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय ढांचे में व्यापक सुधार की आवश्यकता, व्यापार संबंधी वार्ता का दोहा चक्र और संयुक्त राष्ट्र संघ के व्यापक सुधार सहित कई महत्वपूर्ण मुद्दे शामिल थे। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र लोकतंत्र कोष में भारत सरकार के अतिरिक्त अंशदान के रूप में 10 मिलियन अमरीकी डालर और देने की भी घोषणा की। इसके अलावा विदेश मंत्री ने दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (सार्क) की मंत्रिस्तरीय बैठक की मेजबानी की और गुटनिरपेक्ष आंदोलन, एशिया सहयोग वार्ता, भारत-ब्राजील-दक्षिण अफ्रीका पहल एवं ब्राजील-रूस-भारत-चीन (बीआरआईसी) की मंत्रिस्तरीय बैठकों में कई अन्य बैठकों के साथ-साथ भाग लिया।

15 जून, 2007 को संयुक्त राष्ट्र महासभा ने महात्मा गाँधी के जन्म दिवस 2 अक्तूबर को प्रत्येक वर्ष अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रूप में मनाने के लिए विदेश राज्य मंत्री श्री आनन्द शर्मा द्वारा प्रस्तुत किए गए एक प्रस्ताव "अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस" को सर्वसम्मति से स्वीकार किया जिसका 142 देशों ने समर्थन किया था। पहला अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस संयुक्त राष्ट्र संघ में 2 अक्तूबर, 2007 को मनाया गया जिसमें संसद सदस्या एवं संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (यूपीए) की अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गाँधी ने संयुक्त राष्ट्र महासभा की एक पूर्ण अनौपचारिक बैठक को संबोधित किया जिसमें बड़ी संख्या में पूरे विश्व भर से आए गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। इस अवसर पर अन्य कार्यक्रम भी आयोजित किए गए जिनमें एक गोलमेज बैठक शामिल थी जहां पर प्रख्यात लोगों ने महात्मा गाँधी के आदर्शों एवं दर्शन पर विचारों का आदान-प्रदान किया, एक छायाचित्र प्रदर्शनी, महात्मा

गाँधी पर एक फिल्म का प्रदर्शन और अक्तूबर, 2007 के दौरान यूएनपीए द्वारा उपयोग किए जाने के लिए संयुक्त राष्ट्र डाक प्रशासन (यूएनपीए) द्वारा एक विशेष स्मृति डाक टिकट जारी किया गया।

भारत ने संयुक्त राष्ट्र संघ के सुधार प्रक्रिया में अपनी सक्रिय और रचनात्मक भागीदारी निभाना जारी रखा। वर्ष 2005 में हुए विश्व शिखर सम्मेलन के परिणामी दस्तावेज से उभरने वाली संयुक्त राष्ट्र सुधार कार्यसूची के समुचित कार्यान्वयन के बावजूद ऐसे सुधार अंततः अधूरे रह जाएंगे जब तक कि सुरक्षा परिषद का व्यापक सुधार और विस्तार तथा महासभा को जीवंत नहीं बनाया जाता। सुरक्षा परिषद सुधार के तत्वों एवं विचारों पर अनेक रिपोर्टों और बीच-बीच में हुए परामर्शों के जरिए एक दशक से भी ज्यादा समय से चर्चा की जाती रही है। सुरक्षा परिषद को और अधिक लोकतांत्रिक, प्रतिनिधिक एवं सक्रिय करने के उद्देश्य से अब अन्तर-सरकारी बातचीत शुरू करने का समय है। अफ्रीका, लातीन अमरीका और एशिया के सहभागियों के साथ भारत ने 11 सितम्बर, 2007 को एक प्रस्ताव सदन के पटल पर रखा जिसमें उन सिद्धांतों की व्याख्या की गई है जिन पर सुधार को, यदि उसे सार्थक बनाना है, आधारित होना चाहिए।

उद्योग राज्य मंत्री डा. अश्विनी कुमार ने अल्माटी, कजाख्स्तान में 17-23 मई, 2007 तक एशिया और प्रशांत के लिए संयुक्त राष्ट्र सामाजिक आयोग (यूनेस्कैप) की 60वीं वर्षगांठ के अवसर पर आयोजित 63वें सत्र में भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। पंचायती राज, युवा कार्य एवं खेलकूद तथा पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्री मणि शंकर अय्यर ने महात्मा गाँधी की जयंती पर 2 अक्तूबर, 2007 को प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस मनाने के लिए आयोजित एक विशेष समारोह में बैंकाक स्थित यूनेस्कैप परिसर में महात्मा गाँधी की एक अर्द्धप्रतिमा का अनावरण किया।

भारत ने विकलांग व्यक्तियों के अधिकारों पर 1 अक्तूबर, 2007 को संयुक्त राष्ट्र अभिसमय पर हस्ताक्षर किया और उसका अनुसमर्थन किया।

जलवायु परिवर्तन के मुद्दे ने अब अन्तर्राष्ट्रीय कार्यसूची में केंद्रबिन्दु का रूप ले लिया है। भारत पूरे विश्व में महत्वपूर्ण देशों के साथ गहनता से विचार-विमर्श कर रहा है और समूची मानवजाति के फायदे के लिए व्यवहार्यजनक बुद्धिमत्तापूर्ण हल निकालने के लिए जलवायु परिवर्तन पर बैठकों और सम्मेलन में भाग ले रहा है। मंत्रालय जलवायु परिवर्तन पर अन्तर्राष्ट्रीय वार्ता और चर्चाओं में सक्रियता से भाग लेता रहा है। इसमें यूएनएफसीसीसी, बाली में दिसंबर, 2007 में आयोजित वार्षिक सम्मेलन सहित वार्ता, मुख्य अर्थव्यवस्थाओं की बैठक प्रक्रिया, सितम्बर, 2007 में संयुक्त राष्ट्र उच्चस्तरीय कार्यक्रम तथा संयुक्त राष्ट्र में अन्य बैठक/चर्चा और जी-8- ओ 5 संचालित प्रक्रियाएं शामिल हैं। भारत ने अक्तूबर, 2007 में एशिया-प्रशांत स्वच्छ विकास एवं जलवायु भागीदारी की दूसरी मंत्रिस्तरीय बैठक की भी मेजबानी की।

प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह ने हेइलींगेडाम्म, जर्मनी में जून, 2007 में जी-8- ओ 5 बैठक में भाग लिया जहां जलवायु परिवर्तन पर उनके विचारों की व्यापक सराहना की गई। उन्होंने यह उल्लेख करते हुए जलवायु परिवर्तन पर भारत के दृष्टिकोण को स्पष्ट किया कि रणनीतियों में प्रशमन और बोझ को विधिसंगत बाँटने के अनुकूलन के साथ-साथ खपत और उत्पादन की सतत रूपरेखा प्राप्त करने के उपाय शामिल होने चाहिए। उन्होंने विकासशील देशों के बीच गरीबी को बनाए रखने के बजाए जीएचजी घनत्व के शेष मौजूदा स्तर की मुख्य जिम्मेदारी को ध्यान में रखने की महत्ता पर बल दिया। विकासशील देशों की तीव्र सामाजिक एवं आर्थिक विकास की संभावनाओं के लिए कोई रणनीति समय से पूर्व बन्द नहीं की जानी चाहिए। सामान्य किन्तु भिन्न-भिन्न जवाबदेही के सिद्धांत के साथ-साथ संबंधित देश का सामर्थ्य काफी महत्वपूर्ण है। विकासशील देशों के लिए गुणात्मक लक्ष्य प्राप्त करने का समय नहीं आया है क्योंकि यह उनके विकास प्रक्रियाओं के विपरीत जाएगा। उन्होंने आगे यह भी कहा कि भारत इस बात के प्रति दृढ़संकल्प है कि विकास एवं आर्थिक प्रगति की नीतियों का अनुसरण करते हुए उसके प्रति व्यक्ति जीएचजी उत्सर्जन विकसत देशों के उत्सर्जन से अधिक न हों।

आपदाओं से होने वाले खतरों का प्रशमन करने के उपायों को विकसित करने के उद्देश्य से आपदा जोखिम में कमी पर नवंबर, 2007 में नई दिल्ली में आयोजित द्वितीय एशियाई मंत्रिस्तरीय सम्मेलन में एशिया में आपदा जोखिम में कमी पर दिल्ली घोषणा, 2007 स्वीकार किया गया। आपदा जोखिम में कमी के लिए वैश्विक मंच की जून, 2007 में जेनेवा में आयोजित पहली बैठक में भी भारतीय प्रतिनिधिमंडल ने भाग लिया।

संयुक्त राष्ट्र महासभा की मानवीय सहायता के समन्वय पर हुई चर्चाओं में भारत ने, समूह 77 देशों की ओर से "प्राकृतिक आपदाओं के लिए मानवीय सहायता हेतु अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग, राहत से विकास तक" पर एक वार्षिक संकल्प सभापटल पर रखा।

पूरे विश्व भर में फैली बड़ी संख्या में भारतीय समुदाय के साथ भारत द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय मंचों में उत्प्रवासन से संबंधित मुद्दे को सक्रियता से उठाया गया। भारत ने जुलाई, 2007 में उत्प्रवासन एवं विकास पर ब्रुसेल्स में आयोजित ग्लोबल फोरम (जीएफएमडी) की पहली बैठक में भाग लिया।

बहुपक्षीय आर्थिक संबंध

भारत ने सार्क की अध्यक्षता ग्रहण करते हुए 14वीं सार्क शिखर सम्मेलन की 3-4 अप्रैल, 2007 तक नई दिल्ली में मेजबानी की। यह बिना किसी विवाद वाला सर्वाधिक सहज सम्मेलन था। पहली बार सार्क ने अपने आठवें सदस्य के रूप में अफगानिस्तान को शामिल कर अपनी सदस्यता का विस्तार किया और चीन, जापान, कोरिया गणराज्य, अमरीका और यूरोपीय संघ पांच पर्यवेक्षकों के रूप में इसमें शामिल हुए। उसके बाद ईरान का भी छठें पर्यवेक्षक के रूप में सार्क में स्वागत किया गया। सदस्य राज्यों ने सार्क से घोषणात्मक से अलग हटकर कार्यान्वयन चरण में आने का आग्रह किया। दक्षिण एशियाई विश्वविद्यालय और सार्क खाद्य बैंक की स्थापना पर दो महत्वपूर्ण करारों पर हस्ताक्षर किए गए। सार्क देश, अन्य बातों के साथ-साथ गरीबी उन्मूलन, खाद्य सुरक्षा, व्यापार एवं परिवहन, शिक्षा, संस्कृति तथा आतंकवादरोध के लिए साथ मिलकर एक रोडमैप पर कार्य करने के लिए सहमत हुए। सार्क नेताओं ने जल (बाढ़ नियंत्रण सहित); ऊर्जा;खाद्य एवं पर्यावरण के चार मुद्दों पर वास्तविक प्रगति करने पर भी सहमत हुए।

भारत द्वारा सार्क की अध्यक्षता ग्रहण करने के बाद से विभिन्न सार्क पक्रियाओं में गतिशीलता आई है, जिसका मुख्य कारण गैर पारस्परिक ढंग से अपनी भूमिका निर्वाह करने के हमारे सजग प्रयास हैं। भारत ने, परिवहन (30-31 अगस्त, 2007), वित्त (14-15 सितम्बर, 2007) और सुरक्षा (25-26 अक्तूबर 2007) के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में मंत्रिस्तरीय बैठकों की मेजबानी की। सामाजिक मुद्दों पर और सामाजिक चार्टर के कार्यान्वयन के लिए भारत ने राष्ट्रीय समन्वय समिति बैठक (6-7 सितंबर, 2007) महिलाओं एवं बाल अवैध व्यापार पर सार्क अभिसमय को कार्यान्वित करने के लिए क्षेत्रीय कार्य बल की पहली बैठक और सार्क में सूक्ष्म वित्तपोषण एवं महिला आर्थिक सशक्तिकरण पर सम्मेलन (26-27 जुलाई, 2007) की मेजबानी की। इन सभी बैठकों में ठोस परियोजनाओं की पहचान की गई। सार्क विकास कोष पर एक प्रारूप करार को 29 नवंबर, 2007 को अंतिम रूप दिया गया। निवेशों का संरक्षण एवं संवर्धन पर करार के पाठ, जो कि अब अंतिम रूप दिए जाने के लिए तैयार है, पर बातचीत में काफी प्रगति हुई है। श्रीलंका में वर्ष 2008 में होने वाले अगले शिखर सम्मेलन के दौरान दोनों करारों पर हस्ताक्षर होने की आशा है।

दक्षिण एशियाई विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ-साथ प्रत्येक सार्क देश के एक/दो अस्पतालों को भारत के 3-4 अति विशेषज्ञता प्राप्त अस्पतालों के साथ जोड़ने की एक पायलट परियोजना पर कार्य प्रारंभ हो गया है। रीट्रीट के दौरान चिन्हित मुद्दों (जल, ऊर्जा, खाद्य एवं पर्यावरण) के संबंध में, भारत एक देश के 300 मकानों के लिए सौर ग्रामीण विद्युतीकरण पर एक परियोजना; वर्षा जल संचयन के लिए क्षमता निर्माण, वनों एवं कृषि व्यवसाय का परिरक्षण; और उच्च पैदावार वाले दलहन के लिए संवर्धित नाइट्रोजन निर्धारण हेतु राइजोबियम बैक्ट्रिया के अनुकूलतम उपयोग के भारतीय प्रोतोकोल को बाँटने का प्रस्ताव कर रहा है। अन्य सार्क सदस्य राज्यों के साथ लोगों के लोगों के साथ संपर्कों को संस्कृति, व्यापार एवं पर्यटन के जरिए मजबूत बनाया गया है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि विकास के फायदे सार्क देशों के सभी लोगों तक पहुंच सके।

भारत ने वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ अपने एकीकरण को बढ़ाने के उद्देश्य से और बढते वैश्विक राजनीतिक और सुरक्षात्मक ताने-बाने में कई अन्य गुटों के साथ जैसे कि आसियान, ईएएस, एमजीसी, बिमस्टेक, आईओआर-एआरसी, इब्सा, जी-15, जी-8, ओईसीडी/एपेक, विपो, एसीडी, एआरएफ, एएसईएम, बीआरआईसी के साथ अपनी सक्रिय भागीदारी को भी जारी रखा है। प्रधानमंत्री ने छठें भारत-एशियाई शिखर बैठक, पूर्वी एशिया शिखर बैठक और साथ ही अक्तूबर, 2007 में प्रिटोरिया में आयोजित द्वितीय इब्सा शिखर बैठक में भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। प्रधानमंत्री ने 8 जून, 2007 को जर्मनी में हुई जी-8 शिखर बैठक के आउटरीच देशों की बैठक में भाग लिया।

प्रधानमंत्री द्वारा आसियान शिखर सम्मेलन के दौरान की गई विभिन्न प्रतिबद्धताओं पर ठोस प्रगति करते हुए, भारत ने सीएलएमबी (कम्बोडिया, लाओस, म्यांमा, वियतनाम) से बौद्ध सर्किट की यात्रा के लिए पत्रकारों सहित भारत आए 125 बौद्ध तीर्थयात्रियों की यात्रा की मेजबानी की। इसके साथ ही 10 आसियान सदस्य देशों के 100 छात्र एक सप्ताह के शैक्षिक दौरे पर दिसंबर, 2007 में भारत आए। आसियान देशों के राजनयिकों के लिए वार्षिक विशेष प्रशिक्षण पाठ्यक्रम अगस्त, 2007 में संचालित किया गया।

भारतीय तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग (आइटेक) कार्यक्रम एवं विकास में भागीदारी (डीपी)

तकनीकी सहयोग कार्यक्रम क्षमता निर्माण, प्रौद्योगिकी अंतरण और भारतीय विकास के अनुभव को बाँटने पर बल देते हुए विकासशील विश्व के देशों के साथ भारतीय तालमेल का एक महत्वपूर्ण घटक बन गया है। आइटेक (भारतीय तकनीकी एवं आर्थिक कार्यक्रम) एवं स्केप (अफ्रीका कार्यक्रम के लिए विशेष राष्ट्रमंडल सहायता) कार्यक्रम के अन्तर्गत द्विपक्षीय आधार पर असैनिक एवं रक्षा क्षेत्रों में 156 आइटेक सहभागी देशों के 4700 से अधिक सहभागियों ने प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लिया। डब्ल्यूटीओ और राष्ट्रमंडल जैसे संगठनों के सहयोग से संचालित विशेष कार्यक्रमों में बहुपक्षीय एवं क्षेत्रीय आयाम परिलक्षित

हुए। विविध क्षेत्रों जैसे कि सूचना प्रौद्योगिकी, लेखा-परीक्षण, कृषि और रक्षा के क्षेत्रों में भारतीय विशेषज्ञों को सलाह देने और सहायता करने के लिए प्रतिनियुक्त किया गया। वर्ष के दौरान, पुरातत्व संरक्षण, पर्यटन एवं आतिथ्य, सूचना प्रौद्योगिकी और लघु एवं मध्यम उद्यम के क्षेत्र में विकासशील विश्व के भिन्न-भिन्न हिस्सों में कई परियोजनाएं शुरू की गईं। आपदा प्रभावित क्षेत्रों में दवाओं एवं राहत सामग्री की आपूर्ति कर राहत एवं एकजुटता की पेशकश करने के मानवीय कार्यक्रम को जारी रखा गया।

निवेश और प्रौद्योगिकी संवर्धन (आईटीपी)

विदेश नीति के व्यापक उद्देश्यों को प्राप्त करने के साधन के रूप में आर्थिक कूटनीति की महत्ता को स्वीकार करते हुए यह एक गंभीर केंद्रबिन्दु का क्षेत्र बना रहा। मंत्रालय ने आईटीपी प्रभाग के माध्यम से विदेश निवेश संवर्धन बोर्ड, रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया, व्यापार बोर्ड के साथ-साथ अर्थ-व्यवस्था के सुधार एवं उदारीकरण और निवेश प्रक्रिया को सरल बनाने से संबंधित अन्य विभिन्न नीतिगत बैठकों में भाग लिया। इसके साथ-साथ विदेशों में व्यवसाय और निवेश उद्यम स्थापित करने की इच्छा रखने वाले निजी इकाइयों और भारतीय सरकार को सहायता और सलाह देने की क्षमता विभिन्न माध्यमों के जरिए बढ़ाई गई जिसमें कि संवर्धनात्मक कार्यकलाप और रियायती ऋण श्रृंखला जारी करना शामिल है।

मंत्रालय में एक नई ऊर्जा संरक्षण यूनिट सितम्बर, 2007 में स्थापित की गई और उसे उपयुक्त एवं दीर्घकालिक राजनयिक मध्यस्थता के जरिए भारत की अन्तर्राष्ट्रीय गतिविधियों में सहायता देने के लिए आईटीपी प्रभाग से संबद्ध किया गया है। यह यूनिट हमारी सार्वजनिक एवं निजी दोनों ही क्षेत्रों की निगमित ईकाइयों को विदेशों में ऊर्जा आस्तियां अधिगृहीत करने, नई और उभरती प्रौद्योगिकी को भारत में अंतरित करने और विदेशी कंपनियों के साथ सामरिक भागीदारी निर्मित करने के प्रयासों में भी सहायता करेगी।

नीति आयोजना और अनुसंधान

पीपीआर प्रभाग ने नीति अनुसंधान की विशेषज्ञता प्राप्त करने में लगी संस्थाओं और व्यक्तियों के साथ गहन तालमेल बनाए रखा है और भारत की विदेश नीति एवं अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों पर प्रभाव डालने वाले विषयों के विश्लेषण में लगा रहा और साथ ही मंत्रालय की विदेश नीति के नियोजन, निर्धारण एवं कार्यान्वयन के लिए मूल्यवान आँकड़े प्राप्त करने के उद्देश्य से कई संगोष्ठियां, सम्मेलन एवं शोध अध्ययन आयोजित करने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की है। नीति अनुसंधान एवं विश्लेषण में विशेष रूप से कार्य कर रहे विशेषज्ञों एवं संस्थाओं का एक डाटाबेस भी पीपीआर प्रभाग द्वारा विकसित किया गया है और उसे नियमित आधार पर अद्यतन किया जाता है। मंत्रालय द्वारा वित्तपोषित उल्लेखनीय अध्ययन कार्यों में मंत्रालय द्वारा स्थापित कार्य बल द्वारा किया गया निरस्त्रीकरण एवं अप्रसार पर अध्ययन; आईसीआरआईईआर द्वारा "राष्ट्रीय हित परियोजना" पर एक दो वर्षीय अध्ययन जिसमें 8-10% आर्थिक प्रगति हासिल करने के लिए आवश्यक विदेश नीति उपाय और सेंटर फॉर पब्लिक अफेयर्स द्वारा नेपाल पर एक अध्ययन शामिल है।

प्रभाग ने मंत्रिमंडल के लिए मासिक सार जारी करना और मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट प्रकाशित करना कायम रखा। इसने विदेश स्थित कुछ भारतीय मिशनों एवं केन्द्रों में स्थापित व्यवसाय केन्द्रों के कार्यकरण के साथ-साथ मिशनों द्वारा विषयवस्तु, विषयक्षेत्र एवं रिपोर्ट करने की बारम्बारता की भी समीक्षा की। इसके अलावा प्रभाग ने भारतीय सर्वेक्षण के साथ समन्वय कर भारत की बाहरी सीमाओं को दिखाने वाले नक्शों की जांच से संबंधित कार्यों की भी देखरेख की। मंत्रालय में अंतर्राष्ट्रीय सीमा से संबंधित मामलों पर क्षेत्रीय प्रभागों को तकनीकी सहायता प्रदान करने के लिए एक सीमा प्रकोष्ठ स्थापित किया गया है। इसने भारत की बाहरी सीमा को शामिल करते हुए सीमा पट्टियों वाले नक्शों का डाटाबेस बनाना शुरू कर दिया है।

प्रोतोकोल

भारत का अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय के साथ बढ़ते तालमेल के परिणामस्वरूप भारत में बड़ी संख्या में विदेशी गणमान्य व्यक्तियों के दौरे हुए हैं। अप्रैल-दिसंबर, 2007 की अवधि के दौरान राज्याध्यक्ष/उप राष्ट्रपति/शासनाध्यक्ष/विदेश मंत्री स्तरों के 78 दौरे हुए। दिल्ली में विदेशी आवासीय राजनयिक मिशनों की संख्या वर्ष 2003 के 116 से बढ़कर वर्ष 2007 में 132 हो गई। दिल्ली के राजनयिक मिशनों में विदेशी प्रतिनिधियों की संख्या में भी वर्ष 2007 में 80 पदों की बढ़ोत्तरी हुई है। वर्ष 2007 के दौरान जर्मनी ने बंगलौर में और चीन ने कोलकाता में कोंसलावास खोला; टर्की को एक कोंसलावास मुम्बई में, लिथुआनिया को नई दिल्ली में और जापान को बंगलौर में कौंसलावास खोलने की अनुमति दी गई। इसके अलावा 18 देशों को नई दिल्ली, कोलकाता, मुम्बई, बंगलौर और चेन्नई में मानद प्रधान कोंसुल नियुक्त करने की अनुमति प्रदान की गई। प्रोतोकोल प्रभाग ने वर्ष 2007 के दौरान 28 प्रत्यय पत्र संबंधी समारोह, राजकीय आतिथ्य सत्कार और कई अन्य समारोह आयोजित किए। प्रोतोकोल संबंधी मानदंडों एवं मानकों को सुव्यवस्थित करने का कार्य आकर्षण का केंद्र बना रहा। पात्र विदेशी मिशनों, राजनयिकों एवं कोंसल के अधिकारियों के लिए सेवा कर में छूट का ढाँचा पारस्परिकता के आधार पर कार्यान्वित किया गया।

कोंसली, पासपोर्ट और वीजा सेवाएं

आम लोगों की सुविधा के लिए पासपोर्ट जारी करने की प्रणाली सरल एवं तीव्र बनाने के लिए मंत्रालय ने विकेन्द्रीकरण एवं ऑनलाइन आवेदन प्रस्तुत करने जैसे कई उपाय किये। बहरीन, टोरंटो, क्वालालम्पुर, बर्मिंघम, जद्दा, कोलंबो, कैंडी और बैंकूवर स्थित मिशनों/केंद्रों में पासपोर्ट एवं वीजा जारी करने की प्रणाली को कम्पयूटरीकृत करने का कार्य पूरा हो गया है जबकि ह्यूस्टन, शिकागो, सान फांसिस्को, वाशिंगटन, मास्को और दोहा में यह कार्य चल रहा है। विदेश स्थित 13 मिशन/केन्द्र ने पहले ही वीजा आवेदन संग्रहण कार्य आउटसोर्स कर दिया है। मंत्रालय ने विदेश स्थित 111 भारतीय मिशनों/केंद्रों के संबंध में मशीनों से पठनीय पासपोर्टों के केन्द्रीकृत मुद्रण की परियोजना को भी सफलतापूर्वक कार्यान्वित किया है।

पासपोर्टों की राजनयिक एवं सरकारी श्रेणी में ई-पासपोर्ट जारी करने की एक पायलट परियोजना शुरू की गई है और 2008 के मध्य तक पूरी हो जाने की आशा है। इस पायलट परियोजना से प्राप्त अनुभव के आधार पर सामान्य श्रेणी में ई-पासपोर्ट जारी करना शुरू करने का प्रस्ताव है।

राजनयिक एवं सरकारी पासपोर्ट धारकों के लिए वीजा से छूट संबंधी करार पर क्रोएशिया, साइप्रस, इक्वाडोर, जापान, फिलीपीन और सर्बिया के साथ हस्ताक्षर किए गए। ये करार शीघ्र ही प्रवृत्त होंगे।

वर्ष 2007 में पुर्तगाल, बेलारूस और मैक्सिको के साथ प्रत्यर्पण संधियों पर हस्ताक्षर किए गए। दस्तावेजों के साक्ष्यांकन के लिए मंत्रालय ने अगस्त, 2007 में मानक अभिसमय की शुरूआत की है। अक्तूबर, 1961 के हेग अभिसमय (एपोस्टाइल कन्वेंशन) के अंतर्गत, मंत्रालय द्वारा मानक बनाए गए सार्वजनिक दस्तावेज 92 सदस्य देशों में स्वीकार्य है।

प्रशासन

विदेशों में भारतीय राजनयिकों की उपस्थिति को बढ़ाने के लिए दो केन्द्र नामतः भारत का प्रधान कौंसलावास जुबा, सूडान और भारत का प्रधान कौंसलावास, ग्वागंझू, चीन में अक्तूबर, 2007 में खोले गए। मुख्यालय में निणर्य लेने और नियमों को सुव्यवस्थित करने के लिए ज्यादा से ज्यादा विकन्द्रीकरण करने के लिए कदम उठाए गए हैं। पदों में हुई कटौती के परिणामस्वरूप मानव संसाधनों में अत्यधिक कमी के बावजूद मंत्रालय ने पदों को समाप्त करने से संबंधित सरकार के मितव्ययिता उपायों को पूर्णतः कार्यान्वित किया है।

लिंग समानता मंत्रालय की समग्र नीति का एक महत्वपूर्ण तत्व रहा है और मंत्रालय में महिला अधिकारियों को समान अवसर प्रदान किए जाते हैं। मंत्रालय ने भारतीय विदेश सेवा सहित विकलांग व्यक्तियों की नियुक्ति के लिए उपयुक्त पदों को भी चिन्हित किया है। मंत्रालय में कुल मिलाकर विभिन्न ग्रेडों एवं संवर्गों में 37 विकलांग व्यक्ति तैनात हैं।

हैदराबाद और चेन्नई दोनों में एक-एक शाखा सचिवालय राज्य सरकारों और इन शहरों में स्थित कोंसलावासों, पासपोर्ट कार्यालयों इत्यादि के साथ मुख्यतः संपर्क स्थापित करने के लिए स्थापित किए गए। मंत्रालय का विकास सहभागिता प्रभाग तकनीकी सहयोग प्रभाग के साथ मिला दिया गया है।

भारत की परियोजनाओं में से विदेश मंत्रालय के भावी मुख्यालय जवाहरलाल नेहरू भवन, विदेश मंत्रालय के अधिकारियों के लिए चाणक्यपुरी आवासीय परिसर और एक ट्रांजिट आवासीय परियोजना का निर्माण कार्य प्रगति पर है।

भारत सरकार की राजभाषा नीति का कार्यान्वयन हमेशा से विदेश मंत्रालय की उच्च प्राथमिकता रही है। संसद के समक्ष रखे जाने वाले सभी महत्वपूर्ण दस्तावेज द्विभाषी रूप में तैयार किये जाते हैं। हिन्दी का प्रशिक्षण मंत्रालय के विदेश सेवा संस्थान के प्रशिक्षण कार्यक्रमों का अभिन्न भाग होता है। विदेशी छात्रों को हिन्दी का अध्ययन करने के लिए शिक्षण सामग्री, वित्तीय सहायता और छात्रवृत्ति प्रदान कर हमारे मिशन, विदेशों में हिन्दी के प्रचार-प्रसार की एक सु-नियोजित योजना कार्यान्वित करते हैं। क्षेत्रीय हिन्दी सम्मेलन 24-26 अक्तूबर, 2007 तक बुडापेस्ट में और 9-11 नवम्बर, 2007 तक सियोल में आयोजित किये गये।

मंत्रालय द्वारा 13-15 जुलाई, 2007 तक आंठवा विश्व हिन्दी सम्मेलन न्यूयार्क में भारतीय विद्या भवन, न्यूयार्क के सहयोग से आयोजित किया गया। भिन्न-भिन्न देशों के 850 से अधिक प्रतिनिधियों ने इस सम्मेलन में भाग लिया।

सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 की महत्ता को स्वीकार करते हुए मंत्रालय में एक अलग सूचना का अधिकार (आईटीआई) प्रभाग कार्यरत है। केंद्रीय जन सूचना अधिकारी के रूप में एक संयुक्त सचिव स्तर के अधिकारी और अपीलीय प्राधिकारी के रूप में एक अपर सचिव स्तर के अधिकारी को अधिनामित किया गया है। इसके अलावा, सीपीवी प्रभाग, आईसीसीआर और आईसीडब्ल्यूए में अलग-अलग अपीलीय प्राधिकारी और सीपीआईओ अधिनामित किए गए हैं। मंत्रालय का प्रयास रहा है कि वह सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 के उपबंधों के अनुसार भारतीय नागरिकों को शीघ्रातिशीघ्र सूचना प्रदान करें।

समन्वय

समन्वय प्रभाग ने नई दिल्ली में 5-7 नवंबर, 2007 तक चौथा अंतर्राष्ट्रीय संघवाद सम्मेलन आयोजित करने में अंतर-राज्य

परिषद सचिवालय की सहायता की। इस सम्मेलन में बड़ी संख्या में विदेशी एवं भारतीय गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। प्रभाग ने लोक सभा सचिवालय को 21-30 सितम्बर, 2007 तक नई दिल्ली में 53वें राष्ट्रमंडल संसदीय सम्मेलन और गृह मंत्रालय को 7-8 नवम्बर, 2007 को नई दिल्ली में द्वितीय एशियाई मंत्रीस्तरीय आपदा प्रशमन पर सम्मेलन आयोजित करने में भी सहायता की।

प्रभाग ने विभिन्न यात्राओं के लिए राजनीतिक अनापत्ति हेतु शीघ्र कार्रवाई करने और विदेशी शोध अध्येताओं और भारत में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मलनों, संगोष्ठियों और कार्यशालाओं के विदेशी सहभागियों को शीघ्र वीजा प्रदान करने के लिए नए दिशा निर्देश जारी किये।

विदेश प्रचार

विदेश प्रचार प्रभाग ने विदेश नीति के विभिन्न मुद्दों पर अंतर्राष्ट्रीय एवं घरेलू मीडिया में भारत सरकार के दृष्टिकोण का प्रचार-प्रसार करना जारी रखा। यह प्रेस-कान्फ्रेंसों, नियमित प्रेस ब्रीफिंग के माध्यम से और विदेश मंत्रालय की वेबसाइट और समुन्नत इलैक्ट्रानिक संचारतंत्रों के कारगर प्रयोग के माध्यम से वक्तव्यों का प्रचार-प्रसार करके किया गया।

विदेश प्रचार प्रभाग ने अंतर्राष्ट्रीय पत्रकारों के लिए एक विस्तृत परिचय कार्यक्रम चलाना भी जारी रखा। इसने भारत स्थित बढ़ते विदेशी प्रेस संवाददाताओं के कार्य को सुकर बनाना जारी रखा और राज्याध्यक्षों, शासनाध्यक्षों और विदेश मंत्रियों के स्तर पर आने वाले और जाने वाले दौरों के लिए मीडिया से संबंधित सभी व्यवस्थाएं कीं।

लोक राजनय

मई, 2006 में सृजित लोक राजनय प्रभाग के अधिदेश में, अन्य बातों के साथ-साथ, भारत में और भारत के बाहर के आउटरीच कार्यकलाप के साथ-साथ श्रव्य-दृश्य एवं प्रिंट प्रचार-प्रसार करना शामिल है। इन उद्देश्यों को पूरा करने के लिए प्रभाग ने विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये।

विदेश मंत्री प्रणब मुखर्जी ने 16 जून, 2007 को शिलांग में भारत की पूर्वोन्मुखी नीति पर एक अंतः क्रियाशील सत्र और उसके पश्चात पूर्वोन्मुखी नीति के संदर्भ में उप-क्षेत्रीय सहयोग की चुनौतियों पर 7-9 अक्तूबर, 2007 को गुवाहाटी में एक राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया। यूरोप, यू.के. और अमरीका के भारतीय मूल के सांसदों के लिए एक ब्रीफिंग कार्यक्रम 24-29 अक्तूबर, 2007 तक आयोजित किया गया। प्रभाग ने विदेशों में भारत की छवि को प्रदर्शित करने और बढ़ावा देने के लिए भारत पर 17 वृत्त चित्रों का निर्माण किया। इसके अलावा पहला अंतराष्ट्रीय अहिंसा दिवस और 8वां विश्व हिन्दी सम्मेलन के अवसर पर विशेष रूप से फिल्म का निर्माण किया गया और विश्व भर में प्रदर्शित किया गया। प्रभाग ने उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर के सहयोग से जनवरी, 2008 में भारतीय विदेश नीति पर एक आउटरीच संगोष्ठी का भी आयोजन किया।

विदेश सेवा संस्थान (एफएसआई)

विदेश सेवा संस्थान के नए भवन का औपचारिक रूप से उद्घाटन 14 नवंबर, 2007 को विदेश मंत्री श्री प्रणब मुखर्जी ने किया। जिन्होंने इस अवसर पर संस्थान में जवाहरलाल नेहरू की एक अर्द्धप्रतिमा का भी अनावरण किया। विदेश सेवा संस्थान ने भा0वि0से0 के परिवीक्षार्थियों, राजनयिक संवाददाताओं, मंत्रिमंडल सचिवालय के अधिकारियों और विदेश मंत्रालय के अन्य अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये। वर्ष के दौरान विदेशी राजनयिकों के लिए दो व्यावसायिक पाठ्यक्रम और आसियान देशों के राजनयिकों के लिए एक विशेष पाठ्यक्रम संचालित किया गया। संस्थान ने अन्य देशों के अपने समकक्ष संस्थानों के साथ संस्थागत संपर्क को कायम रखा।

सांस्कृतिक संबंध

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (भा0सां0सं0प0) की स्थापना भारत और अन्य देशों के बीच सांस्कृतिक संबंधों और पारस्परिक समझ-बूझ को स्थापित, पुनर्जीवित और मजबूत बनाने के प्राथमिक उद्देश्य के साथ औपचारिक रूप से वर्ष 1950 में की गई थी।

हाल के वर्षों में प्राप्त गति एवं गतिशीलता के अनुरूप मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों तरह से भा0सां0सं0प0 के उद्देश्यों में पर्याप्त विस्तार हुआ है। परिषद ने काबुल और काठमांडू में दो नए केन्द्र और साथ ही पुणे और वाराणसी में दो नए कार्यालय अपने अधिदेश की बढ़ती मांगों को पूरा करने के लिए स्थापित किये।

जापान में आयोजित वर्ष भर चलने वाला भारत महोत्सव काफी सफल रहा। यह 10 दिसम्बर, 2007 को समाप्त हुआ। इस महोत्सव का असर दक्षिण पूर्व एशिया के सभी देशों पर पड़ा और बहु सांस्कृतिक मंडलियों ने क्षेत्र के प्रायः सभी देशों में भ्रमण किया। भारत में वर्ष 2008 में रूस वर्ष और रूस में वर्ष 2009 में भारत वर्ष आयोजित करने की तैयारी चल रही है।

परिषद ने दिसम्बर, 2007 में प्रथम सार्क सांस्कृतिक महोत्सव का आयोजन किया। यह अपने ढंग का एक अनूठा कार्यक्रम था जिसमें फ्यूजन म्यूजिक, खाद्य, फैशन, वस्त्र एवं हस्तशिल्प, लोकगीत, छात्रों का आदान-प्रदान इत्यादि जैसे कई घटक शामिल थे।

परिषद ने न्यूयार्क में आयोजित 8वें विश्व हिन्दी सम्मेलन के अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया और एक

विशेष प्रकाशन निकाला। 2 अक्तूबर को प्रथम अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस को मनाने के अवसर पर न्यूयार्क स्थित संयुक्त राष्ट्र संघ के मुख्यालय में भा0सां0सं0प0 द्वारा एक प्रदर्शनी भी आयोजित की गई।

परिषद ने अफगानी छात्रों के 500 स्लाट सहित 90 देशों के छात्रों को 1800 छात्रवृत्ति स्लाटों की पेशकश की। इसने विश्व के सभी महाद्वीपों को शामिल करते हुए कई देशों में 60 सांस्कृतिक प्रतिनिधिमंडलों को प्रायोजित किया और भिन्न-भिन्न देशों के पच्चीस से अधिक विदेशी सांस्कृतिक मंडलियों की मेजबानी की।

भारतीय विश्व कार्य परिषद

भारतीय विश्व कार्य परिषद 1943 में स्थापित किया गया था जिसे सितंबर, 2000 में केन्द्र सरकार द्वारा अधिग्रहित कर लिया गया। अप्रैल-नवंबर, 2007 की अवधि के दौरान भारतीय विश्व कार्य परिषद ने व्याख्यान, संगोष्ठी, द्विपक्षीय सामरिक वार्ता एवं पृष्ठभूमि ब्रीफिंग जैसे कई कार्यक्रम आयोजित किए। आईसीडब्ल्यूए ने दो शोध परियोजनाएं भी पूरी कीं और आईसीडब्ल्यूए की पत्रिका "इंडिया क्वार्टर्ली" के तीन अंक निकाले। इस अवधि के दौरान आईसीडब्ल्यूए ने चीन और नाइजीरिया के अपने समकक्ष संगठनों के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया।

विकासशील देशों के लिए अनुसंधान और सूचना प्रणाली (आरआईएस)

एक स्वायत्तशासी नीति विचार केन्द्र के रूप में आरआईएस ने अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक मुद्दों पर नीति अनुसंधान संचालित किया और प्रमुख शिखर बैठकों और अन्य महत्वपूर्ण वार्ताओं में जैसे कि भारत और कोरिया के बीच व्यापक आर्थिक भागीदारी पर वार्ता तथा पूर्वी एशिया व्यापक आर्थिक भागीदारी की ट्रैक-II अध्ययन दल (सीईपीईए) संबंधी वार्ता की तैयारी में विश्लेषणात्मक सहायता प्रदान किया। इसने एशिया के अग्रणी नीति विचार-केन्द्रों के सहयोग से एशियाई आर्थिक समुदाय की प्रासंगिकता और भावी स्थिति पर नीति वार्ता आयोजित करना जारी रखा और अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक मुद्दों एवं विकास सहयोग पर नीतिगत सुसंबद्धता एवं क्षमता-निर्माण के लिए अन्य देशों के नीतिगत विचार-केन्द्रों के साथ नेटवर्क स्थापित किए हैं।

■■

भारत के पड़ोसी देश 1

अफगानिस्तान

तालिबान द्वारा निरंतर किए जा रहे हमलों के कारण अफगानिस्तान की आंतरिक सुरक्षा स्थिति का बिगड़ना अफगानिस्तान के सभी मित्रों और सहयोगियों के लिए चिन्ता का मुख्य कारण रहा है। आत्मघाती और इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस (आईईडी) हमलों में काफी वृद्धि हुई जिसके कारण देश के अनेक भागों में सामान्य जन-जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। सितंबर 2007 में संयुक्त राष्ट्र द्वारा किए गए एक अध्ययन में उल्लेख किया गया है कि वर्ष 2000 के बाद से आत्मघाती हमलों में सात गुना वृद्धि हुई है। सैन्य और असैन्य लक्ष्यों पर तालिबानी हमले से विकास संबंधी गतिविधियों और शासन की समग्र प्रक्रिया को गम्भीर खतरा उत्पन्न हो गया है। अफीम की खेती में निरंतर हो रही वृद्धि, विशेषकर स्वापकों के अवैध व्यापार और अंतर्राष्ट्रीय तथा सीमापार से आतंकवादियों के साथ इनका संबंध, चिन्ता का एक अन्य कारण रहा।

द्विपक्षीय संबंध

द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और अन्य विकास सहायता कार्यक्रम के संबंध में भारत और अफगानिस्तान के बीच घनिष्ठ विचार-विमर्श जारी रहे। राष्ट्रपति हामिद करजई 14वें दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संघ के शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए एक उच्चाधिकार प्राप्त प्रतिनिधिमंडल के नेता के रूप में अप्रैल 2007 में नई दिल्ली आए। 14वें सार्क शिखर सम्मेलन में अफगानिस्तान को औपचारिक रूप से सार्क का 8वाँ सदस्य बना लिया गया। अपनी यात्रा के दौरान राष्ट्रपति करजई ने द्विपक्षीय संबंधों और क्षेत्रीय सहयोग प्रक्रियाओं को सुदृढ़ बनाने में अफगानिस्तान की भूमिका पर चर्चा करने के लिए प्रधान मंत्री डा. मनमोहन सिंह से भी मुलाकात की।

जल संसाधन मंत्री सैफुद्दीन सोज और राज्य सभा के उप सभापति रहमान खान ने 24 जुलाई 2007 को महामहिम स्वर्गीय जहीर शाह की अंत्येष्टि में भाग लिया। सम्मान दर्शाने के विशेष प्रतीक के रूप में राजधानी में सरकारी भवनों और विदेश स्थित मिशनों और केंद्रों में राष्ट्रीय ध्वज आधा झुका रहा।

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के उपाध्यक्ष डा. सैय्यद महदी ने भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के महानिदेशक के साथ सितंबर 2007 में अफगानिस्तान का दौरा किया। इस यात्रा के दौरान अफगानिस्तान के सूचना और सांस्कृति मंत्री तथा भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के उपाध्यक्ष ने संयुक्त रूप से भारतीय सांस्कृतिक केंद्र का उद्घाटन किया। अफगानिस्तान के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार के आमंत्रण पर भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार एम.के. नारायणन ने 30 सितंबर से 1 अक्तूबर 2007 तक काबुल का दौरा किया।

अफगानिस्तान के विदेश मंत्री डा. रांजिन दादफर स्पांता ने दिसंबर 2007 में नई दिल्ली में आयोजित सार्क मंत्रियों की परिषद में भाग लिया। सार्क बैठक के दौरान ही उन्होंने विदेश मंत्री के साथ द्विपक्षीय बैठक भी की जिसमें द्विपक्षीय कार्यसूची की समीक्षा की गई।

अफगानिस्तान को भारतीय सहायता

अफगानिस्तान के राष्ट्रीय पुनर्निर्माण और एक स्थिर लोकतांत्रिक तथा बहुवादी राज व्यवस्था बनाने की प्रक्रिया में वहाँ की सरकार और लोगों को सहायता करने के अंतरराष्ट्रीय प्रयासों में भारत अग्रणी रहा। विदेश मंत्री ने सितंबर 2007 में न्यूयार्क में अफगानिस्तान पर आयोजित उच्चस्तरीय बैठक में भाग लिया। इस बैठक का आयोजन संयुक्त राष्ट्र महासचिव द्वारा किया गया, जिसकी सह अध्यक्षता संयुक्त राष्ट्र महासचिव और अफगानिस्तान के राष्ट्रपति ने की। गृह राज्य मंत्री श्रीप्रकाश जायसवाल ने जुलाई 2007 में रोम में अफगानिस्तान पर विधि सम्मत शासन सम्मेलन में भाग लेने के लिए भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया।

हेरात और जलालाबाद में अपने कोंसलावासों पर आईईडी विस्फोटों, ग्रेनेड द्वारा किए गए हमलों, विभिन्न परियोजनाओं में भारतीय कंपनियों और इसके कार्मिकों पर हुए हमलों सहित अन्य प्रकार के हमलों के बावजूद भारत ने अफगानिस्तान के पुनर्निर्माण के प्रति अपनी वचनबद्धता को अक्षुण्ण रखा। हमारी संस्थापनाओं, कार्मिकों और परियोजनाओं पर हुए हमले चिन्ता के गम्भीर कारण रहे। 3 जनवरी 2008 को जरांज-डेलारम सड़क परियोजना पर हुए आतंकवादी हमलों में दो भारतीय तथा 11 अफगानी विदेशी कार्मिक मारे गए और अनेक घायल हो गए।

अनेक परियोजनाएँ पूर्ण की गईं और अफगानिस्तान सरकार को सौंप दी गईं, जिनमें शामिल हैं- काबुल में गुसलखाना सह

स्वच्छता परिसर, पुनर्निर्मित अमीर गाजी और क्वारगाह जलाशय बाँध, उपकरणों की आपूर्ति तथा फरयाब प्रान्त में विद्युत पारेषण परियोजना का निष्पादन और पर्यवेक्षण, 100 गांवों का सौर विद्युतीकरण, अफगानिस्तान के 22 प्रान्तों में टीवी कवरेज का विस्तार, छः प्रांतों में 26 ट्यूबवेल की खुदाई (हेरात में 9, जावजान में 1, बदगिस में 2, फरयाब में 3, बाल्ख में 6 और काबुल में 5)।

विश्व खाद्य कार्यक्रम के जरिए क्रियान्वित की जा रही अफगानिस्तान के 31 प्रांतों में 1.2 मिलियन स्कूली बच्चों को नित्य प्रोटीन रक्षित बिस्कुटों के वितरण संबंधी स्कूल खाद्य कार्यक्रम में संतोषजनक प्रगति हुई। काबुल में अफगानिस्तान के नये संसद भवन के लिए डिजाइन और आयोजना को अंतिम रूप दे दिया गया। परियोजना की शुरूआत वर्ष 2008 तक हो जाएगी। इसके निर्माण के लिए निविदा आमंत्रित की गई है। संभारतंत्रीय कठिनाइयों और अनेक आतंकवादी हमलों के बावजूद 218 किलोमीटर लम्बे जरांज से डेलारम सड़क, हेरात प्रांत में सलमा बांध तथा पुल-ए-खुमरी से काबुल तक 220 किलोवाट पारेषण लाइन जिसका उप स्टेशन चिंताला में होगा, सहित अन्य बड़े अवसंरचना परियोजनाओं में संतोषजनक कार्य जारी रहा।

वर्ष 2007 के दौरान भारत ने दक्षिण और दक्षिण-पूर्व अफगानिस्तान के गरीब प्रान्तों में स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि, ग्रामीण विकास और व्यावसायिक प्रशिक्षण क्षेत्रों में लघु विकास परियोजनाओं के क्रियान्वयन का शुभारम्भ किया। लघु विकास परियोजना योजना के अंतर्गत 1.69 मिलियन अमरीकी डालर की लागत की विभिन्न परियोजनाओं के लिए 2 अप्रैल 2007 को 16 समझौता ज्ञापन सम्पन्न किए गए। अन्य के साथ-साथ चिह्नित परियोजनाओं में हैं- कृषि क्षेत्र (प्रदर्शन नर्सरियों की स्थापना), लोक स्वास्थ्य (बुनियादी स्वास्थ्य क्लीनिकों की स्थापना) तथा ग्रामीण पुनर्वास एवं विकास (जल केंद्रो/बोरवेलों की स्थापना)। ये परियोजनाएँ नांगरहार, खोस्त, नूरिस्तान, कुनार, पख्तिया, बादक्शां, निमरोज, पक्टीका और काबुल प्रांत में चलाई जाएंगी। 11 समझौता ज्ञापन 1 जुलाई 2007 को सम्पन्न किए गए जिनके द्वारा 5 मिलियन अमरीकी डालर के कुल व्यय से अफगानिस्तान के विभिन्न प्रांतों में 38 स्कूलों का निर्माण किया जाएगा।

काबुल, कांधार, जलालाबाद, मजार-ए-शरीफ तथा हेरात में भारतीय चिकित्सा मिशनों की माँग को देखते हुए उनके कार्यकाल को बढ़ा दिया गया। इंदिरा गाँधी बाल स्वास्थ्य केंद्र के लिए हमारी सहायता जारी रही।

भारत की प्रमुख संस्थाओं और गैर सरकारी तथा कॉरपोरेट सेक्टर के साथ मिलकर महत्वपूर्ण क्षमता विकास परियोजनाओं को अंतिम रूप दे दिया गया जिसमें सेल्फ इम्प्लायड वुमेन एसोसिएशन (एसईडब्ल्यूए) द्वारा काबुल के बाग-ए-जनाना में महिलाओं के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र तथा भारतीय उद्योग परिसंघ की दक्षता विकास परियोजना शामिल है।

सहायता कार्यक्रम के एक भाग के रूप में भारत से अनेक टीमों ने इस वर्ष के दौरान अफगानिस्तान का दौरा किया, जिनमें निम्नलिखित शामिल हैं- शिक्षा और ग्रामीण विकास पर समझौता ज्ञापनों को परिचालित करने के लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय और ग्रामीण विकास मंत्रालय की टीम, पाठ्यचर्या विकास में तकनीकी सहायता प्रदान करने के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद टीम तथा कृषि विज्ञान से संबद्ध अफगानिस्तान राष्ट्रीय अकादमी की स्थापना करने में सहायता करने के लिए राष्ट्रीय कृषि अकादमी, नई दिल्ली की टीम।

हिन्दी विभाग की स्थापना करने के लिए नांगरहार विश्वविद्यालय में हिंदी भाषा का एक प्राध्यापक प्रतिनियुक्त किया गया और काबुल विश्वविद्यालय में संस्कृत संकाय की स्थापना करने के लिए संस्कृत के एक विद्वान को प्रतिनियुक्त किया गया।

अफगानिस्तान के साथ सांस्कृतिक सम्पर्कों को संवर्द्धित करने के लिए की जा रही पहल के भाग के रूप में सितंबर 2007 में भारतीय दूतावास में ही भारतीय सांस्कृतिक केंद्र खोला गया। इस केंद्र में भारतीय शिक्षकों द्वारा शास्त्रीय संगीत तथा योग सहित अन्य गतिविधियाँ चलाई जा रही हैं और अफगानी छात्र इसमें उत्साह से भाग ले रहे हैं। अफगानी छात्र और लोक अधिकारियों के लिए क्रमशः भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद की 500 छात्रों के लिए छात्रवृत्ति योजना और आईटेक प्रशिक्षण के लिए 500 स्थानों का संतोषजनक तरीके से उपयोग किया जा रहा है। वर्ष 2007-08 की अवधि के लिए भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद की योजना के अंतर्गत 453 छात्रों को पूरे भारत वर्ष के विभिन्न विश्वविद्यालयों में अध्ययन हेतु भेजा गया है।

बंगलादेश

भारत ने अस्थायी सरकार द्वारा घोषित चुनाव रोडमैप, जिसमें बंगलादेश के लोगों और उनके राजनीतिक प्रतिनिधियों को भाग लेने के सभी वैध अवसर प्रदान किए गए हैं, के अनुरूप शांतिपूर्ण, विश्वसनीय, मुक्त एवं स्वच्छ चुनावों के जरिए लोकतंत्र की पूर्ण बहाली की आवश्यकता पर बल देते हुए इस वर्ष बंगलादेश की अस्थायी सरकार के साथ अपना क्रियाकलाप जारी रखा। भारत ने बुनियादी मौलिक अधिकारों के संरक्षण और बंगलादेश में आपातकालीन शासन के अंतर्गत कानून की विधिवत प्रक्रिया की आवश्यकता को दोहराया।

राजनीतिक स्तर पर बंगलादेश के मुख्य सलाहकार डा. फखरुद्दीन

2 अप्रैल 2007 को नई दिल्ली में 14वें सार्क शिखर सम्मेलन की पूर्व संध्या पर अफगानिस्तान के राष्ट्रपति, हामिद करजई प्रधानमंत्री, डा. मनमोहन सिंह से मुलाकात करते हुए।

3 अप्रैल 2007 को नई दिल्ली में 14वें सार्क शिखर सम्मेलन के उद्घाटन के दौरान प्रधानमंत्री, डा. मनमोहन सिंह बांग्लादेश के प्रमुख सलाहकार, डा. फखरूद्दीन अहमद से सार्क शिखर सम्मेलन की अध्यक्षता का प्रभार ग्रहण करते हुए।

अहमद ने 2-4 अप्रैल 2007 तक नई दिल्ली में आयोजित 14वें शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए भारत का दौरा किया। सार्क से संबंधित बैठकों के संदर्भ में बंगलादेश की अनेक मंत्रिस्तरीय यात्राएँ भी हुईं। भारत से वाणिज्य राज्य मंत्री जयराम रमेश ने आर्थिक एवं व्यापारिक मुद्दों पर चर्चा करने और भारत-पाकिस्तान वाणिज्य एवं उद्योग परिसंघ का उद्घाटन करने हेतु 21-22 जुलाई 2007 तक ढाका का दौरा किया। विदेश मंत्री श्री प्रणब मुखर्जी ने 15 दिसंबर 2007 को आये भयानक चक्रवात के पश्चात 1 दिसंबर 2007 को बंगलादेश का दौरा किया। इस यात्रा का उद्देश्य बंगलादेश के लोगों और वहां की सरकार के साथ एकजुटता व्यक्त करना और चक्रवात से प्रभावित क्षेत्रों में राहत और पुनर्वास कार्यों में सहायता की हमारी तत्परता को दोहरना था।

विभिन्न संस्थागत द्विपक्षीय तंत्रों के अंतर्गत अधिकारी स्तरीय नियमित बैठकें जारी रहीं। विदेश कार्यालय परामर्श का आयोजन 25-26 जून 2007 को ढाका में किया गया। सुरक्षा और सीमा प्रबंधन से जुड़े मुद्दों पर 8वीं गृह सचिव स्तरीय वार्ता 2-3 अगस्त 2007 तक नई दिल्ली में हुई। द्विवार्षिक सीमा समन्वय बैठक का आयोजन 24-29 अक्तूबर 2007 तक ढाका में हुआ। इसके अतिरिक्त् 16-17 जुलाई 2006 तक ढाका में आयोजित तीसरी संयुक्त सीमा कार्यदल बैठक में लिए गए निर्णयों के अनुरूप पहली बाहर दोनों देशों के शिष्टमंडलों ने 29-30 मई 2007 तक एक दूसरे देश में अवस्थित कुछ इंक्लेवों और प्रतिकूल कब्जे वाले स्थानों को देखा जिससे कि भूसीमा करार 1974 से संबंधित अनसुलझे मुद्दों पर और चर्चा करने के लिए जमीनी हकीकतों का आकलन किया जा सके। जल संसाधन के मुद्दे पर दोनों देशों के जल संसाधन सचिवों ने 7-8 अगस्त 2007 तक नई दिल्ली में चर्चा की। भारत-बंगलादेश संयुक्त नदी आयोग के सदस्यों के नेतृत्व में अलग से एक तकनीकी स्तरीय बैठक 25-27 सितंबर 2007 तक ढाका में आयोजित की गई जिसमें तीस्ता नदी के जल के बँटवारे से संबंधित तौर-तरीकों पर चर्चा की गई। इसके साथ ही गंगा जल के बँटवारे पर संयुक्त समिति की 36वीं बैठक 26-29 मई 2007 तक ढाका में हुई।

आर्थिक और व्यावसायिक पक्ष में प्रधान मंत्री ने नई दिल्ली में आयोजित 14वें शिखर सम्मेलन में 1 जनवरी 2008 से बंगलादेश सहित सार्क क्षेत्र के अल्प विकसित देशों से होने वाले निर्यातों को बिना शुल्क प्रवेश देने और इन देशों के संबंध में भारत की संवेदनशील सूची में मदों की संख्या को कम करने के भारत के निर्णय की घोषणा की। अतिरिक्त सद्भावना प्रदर्शन के रूप में भारत ने बंगलादेश से भारत में 8 मिलियन सिले-सिलाए वस्त्रों का कर मुक्त आयात किए जाने के लिए 16 सितंबर 2007 तक एक समझौता ज्ञापन संपन्न किया। 30 अप्रैल-1 मई 2007 तक नई दिल्ली में आयोजित बैठक में अंतर्देशीय जल पारगमन व्यापार से संबद्ध द्विपक्षीय प्रोतोकॉल को लगभग 2 वर्ष के लिए नवीकृत कर दिया गया। भारतीय मानक ब्यूरो तथा बंगलादेश मानक एवं परीक्षण संस्थान के बीच ढाका में आयोजित एफओसी की बैठक के दौरान 26 जून 2007 को एक द्विपक्षीय सहयोग समझौता ज्ञापन संपन्न किया गया। भारत ने बंगलादेश के नागरिकों अथवा इकाइयों द्वारा भारत में निवेश पर लगाये गये प्रतबंध को हटा लिया है बशर्ते कि भारत सरकार के एफआईपीबी से पूर्व अनुमोदन प्राप्त कर लिया जाए। सीमा शुल्क से संबद्ध संयुक्त कार्यकारी दल की बैठक 25-26 जुलाई 2007 तक नई दिल्ली में हुई और व्यापार से संबद्ध कार्यकारी दल की बैठक 5-6 नवंबर 2007 तक ढाका में हुई।

सार्क क्षेत्र में सम्पर्कों में सुधार लाने की भारत की नीति के अनुरूप भारत ने दोनों देशों के बीच परिवहन और व्यापार अवसंरचना तथा संपर्क को सुदृढ़ बनाने की आवश्यकता पर निरंतर बल देना जारी रखा। ढाका और कोलकाता के बीच नियमित ट्रेन सेवा की तैयारी में जुलाई 2007 में दोनों शहरों के बीच परीक्षण के तौर पर सवारी गाड़ियाँ चलाई गईं।

भारत ने बंगलादेश में भारतीय उग्रवादी गुटों की गतिविधियों पर अपनी गम्भीर चिंता को दोहराना जारी रखा। 2-3 अगस्त 2007 तक नई दिल्ली में आयोजित 5वीं गृह सचिव स्तरीय वार्ता में भारत ने अपने यहाँ होने वाली आतंकवादी घटनाओं और बंगलादेश आधारित हूजी तथा जेएमबी के साथ इसके संबंधों का उल्लेख किया। भारत में सीमा पार आतंकवाद में लिप्त तत्वों के विरुद्ध बंगलादेश द्वारा सतत कार्रवाई किए जाने की आवश्यकता पर भी बल दिया। इसके साथ ही दोनों देश आपसी सुरक्षा चिंताओं के क्षेत्र में सही समय पर और कार्रवाई किए जाने योग्य जानकारी का नियमित रूप से आदान-प्रदान करने के लिए नोडल बिन्दु नामित करने पर सहमति व्यक्त की।

बंगलादेश के मैत्रीपूर्ण लोगों के साथ भारत के घनिष्ठ संबंधों और सहानुभूति के मद्देनजर भारत ने जून 2007 में हुई भूस्खलन त्रासदी, सितंबर 2007 में आयी बाढ़ तथा नवंबर 2007 में आये चक्रवात जैसी प्राकृतिक आपदाओं से हुए नुकसान की भरपाई के लिए बंगलादेश को द्विपक्षीय सहायता दी। भारत द्वारा दी गयी सहायता में शामिल हैं, जून 2007 में हुई भूस्खलन त्रासदी के लिए 10 अमरीकी डालर और बाढ़ तथा हाल में आये चक्रवात के लिए लगभग 100 करोड़ मूल्य की अनिवार्य खाद्य सहायता। हाल में नवम्बर में आये चक्रवात, जिससे बंगलादेश के तटवर्ती क्षेत्रों में जान-माल का भारी नुकसान हुआ, के पश्चात भारत ने भारतीय वायु सेना के विमानद्वारा 1.5 अमरीकी डालर का एक आपातकालीन राहत पैकेज भेजा जिसमें दवाएं, तम्बू, कंबल, खाने योग्य मांस तथा पेयजल शोधक यंत्र शामिल थे। इसके

अतिरिक्त 1 दिसंबर, 2007 को विदेश मंत्री की बंगलादेश यात्रा के दौरान घोषणा की गयी कि भारत बंगलादेश पर लगाये गये चावल निर्यात के प्रतिबंध को 5 लाख टन अतिरिक्त चावल के निर्यात के लिए उठा लिया जाएगा और वह व्यापक पुनर्वास के लिए बुरी तरह से प्रभावित 10 गांवों को गोद लेगा (2.5 मिलियन अमरीकी डालर की लागत से)।

भूटान

भारत और भूटान के बीच घनिष्ठ और मैत्रीपूर्ण संबंध हैं, जो आपसी विश्वास समझबूझ और सद्भावना पर आधारित हैं। इस वर्ष के दौरान भी ये संबंध और संवर्धित हुए और पन बिजली सहित विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग जारी रहा।

दोनों पक्षों से हुई अनेक उच्चस्तरीय यात्राओं और द्विपक्षीय आदान-प्रदानों से ये संबंध और भी संवर्धित एवं गहन हुए। विदेश मंत्री श्री प्रणब मुखर्जी ने जुलाई 2007 में भूटान का दौरा किया। इस यात्रा के दौरान 1095 मेगावाट की सबसे बड़ी पुनातसांग्छू-1 पन बिजली परियोजना के क्रियान्वयन के संबंध में भारत सरकार और भूटान की शाही सरकार के बीच करार पर हस्ताक्षर किए जाने के अतिरिक्त आपसी हित के द्विपक्षीय, राजनीतिक, आर्थिक एवं अन्य मुद्दों पर चर्चा की गई। यह सहमति हुई कि 3514.81 करोड़ रुपये की कुल अनुमानित लागत से इस परियोजना का वित्तपोषण भारत सरकार द्वारा किया जाएगा जिसमें 40% अनुदान और 60% ऋण होगा।

भारत से हुई अन्य महत्वपूर्ण यात्राओं में शामिल हैं- चुनाव आयुक्त नवीन चावला (जून 2007), स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण सचिव नरेश दयाल (अगस्त 2007) और विभिन्न कार्यक्रमों के संबंध में 6 सदस्यीय शिष्टमंडल के नेता के रूप में मुख्य सूचना आयुक्त वजाहत हबीबुल्ला (अक्तूबर 2007)। भूटान से हुई यात्राओं में शामिल हैं- प्रधान मंत्री ल्योनपो रवांडू वांग्चुक (अप्रैल 2007), श्रम एवं मानव संसाधन मंत्री ल्योनपो उग्येन शेटिंग (अप्रैल 2007), गृह एवं सांस्कृतिक मामलों के मंत्री ल्योनपो जिम्मी वायथिनले (अप्रैल 2007), सूचना एवं संचार मंत्री ल्योनपो लेकी दोरजी (अगस्त और सितंबर 2007) तथा राष्ट्रीय पर्यावरण आयोग उप मंत्री ल्योनपो नाडो रिंचेन (अक्तूबर 2007), जिन्होंने सार्क से संबंधित विभिन्न बैठकों और अन्य बैठकों के लिए भारत का दौरा किया।

लोगों से लोगों के बीच संपर्क और विभिन्न आदान-प्रदानों को और बढ़ावा देने के लिए इस दिशा में सहयोग का विस्तार किया गया। लोगों से लोगों के बीच क्रियाकलाप में सुधार लाने के विभिन्न प्रस्तावों पर चर्चा करने के लिए भारत-भूटान प्रतिष्ठान की बैठक मई 2007 में पारो में हुई। अंतर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद के एक शिष्टमंडल ने भूटान का दौरा किया। कत्थक और राजस्थानी नृत्य मंडलियों ने हा, थिम्पू, गेदू और फुंटसोलिंग में अपने कार्यक्रम प्रस्तुत किए। भूटान-भारत मैत्री संघ की सामद्रुप जोंगखार शाखा के 15 सदस्यीय शिष्टमंडल ने भारत-भूटान मैत्री संघ द्वारा आयोजित बोहागी उत्सव में भाग लिया। गौहाटी विश्वविद्यालय के छात्रों के 23 सदस्यीय शिष्टमंडल ने सितंबर 2007 में भूटान का दौरा किया और इसने भारत-भूटान मैत्री संघ के प्रायोजन के तहत सेरुबत्शे महाविद्यालय, कांगलुंग में नृत्य कार्यक्रम प्रस्तुत किया। एनसीसी कैडेटों की 12 सदस्यीय टीम ने नवंबर में भूटान का दौरा किया।

भारत अभी भी भूटान का सबसे बड़ा विकास भागीदार है। 9वीं योजना के अंतर्गत सहमत विभिन्न परियोजनाओं में संतोषजनक प्रगति हुई है। 1020 मेगावाट की ताला पन बिजली परियोजना की सभी 6 इकाइयों के सफल प्रचालन और 1095 मेगावाट की पुनात सांग्छू-1 परियोजना के क्रियान्वयन से संबद्ध करार पर हस्ताक्षर किए जाने के साथ पन बिजली क्षेत्र में द्विपक्षीय सहयोग और आगे बढ़ा है। पुनात सांग्छू-1 परियोजना प्राधिकरण का गठन किया गया है और इसकी पहली बैठक अक्तूबर 2007 में थिम्पू में हुई। पुनातसांग्छू-2 और मांगदेछू पन बिजली परियोजना के लिए क्रमशः वैपकोस और एनएचपीसी द्वारा विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार करने का कार्य चल रहा है और इसके निर्धारित कार्यक्रम के अनुरूप पूर्ण हो जाने की आशा है। भारत सरकार की सहायता से न्गानंगलम में 1 मिलियन टन क्षमता वाली डुंगसम सीमेंट परियोजना की स्थापना का कार्य पुनः आरंभ किया गया है। इस परियोजना के लिए भारत सरकार 300 करोड़ रुपये की सहायता देगी। ''कोलाबरेशन इन द एरिया ऑफ एक्स्टीमाइजेशन/डेवलपमेंट एंड इंप्लीमेंटेशन ऑफ ई-गवर्नेंस अप्लीकेशंस'' को सुविधाजनक बनाने के लिए भारत सरकार के नेशनल इन्फार्मेटिक सेंटर सर्विसेज इन कारपोरेटेड और भूटान की शाही सरकार के सूचना एवं संचार मंत्रालय के सूचना प्रौद्योगिकी विभाग के बीच एक समझौता ज्ञापन संपन्न किया गया।

भारत, भूटान का प्रमुख व्यापार भागीदार रहा है। 2006-07 की अवधि में भारत ने भूटान से 1448 करोड़ रुपये के सामानों और सेवाओं का आयात किया। इसी अवधि के दौरान भारत से भूटान को 1305 करोड़ रुपये का निर्यात किया गया। भारतीय उद्योग परिसंघ के व्यवसाइयों/उद्योगपतियों की एक टीम ने निवेश और व्यापार के अवसरों का पता लगाने के लिए जुलाई 2007 में भूटान का दौरा किया। वर्ष 2006-07 की अवधि के दौरान भारत को उपलब्ध की गई बिजली का राजस्व भूटान के कुल राजस्व का लगभग 75% रहा।

भारत सरकार ने भूटान की शाही सरकार को 4000 से अधिक इलेक्ट्रानिक वोटिंग मशीनें उपहार स्वरूप दीं। इन मशीनों का

उपयोग चुनावों के अभ्यास में सफलतापूर्वक किया गया। भारत सरकार द्वारा प्रतिनियुक्त चुनाव आयोग के अधिकारियों ने अप्रैल/मई 2007 में भूटान में चुनावों के अभ्यास का पर्यवेक्षण किया। भूटान के मीडिया कार्मिक चुनावों के कवरेज से अपने आपको परिचित कराने के लिए भारत आए। भूटान की शाही सरकार के अनुरोध पर भारत सरकार ने भूटान के वरिष्ठ नौकरशाहों के लिए थिम्पू में ''लोकतांत्रिक संवैधानिक राजशाही'' पर एक कार्यशाला के आयोजन को सुविधाजनक बनाया जिसमें भारत से गए प्रसिद्ध लोकसेवकों ने संसाधन व्यक्ति के रूप में कार्य किया।

केंद्र स्तर पर सीमा सुरक्षा एंव प्रबंधन समूह की बैठकों (नवंबर 2007) और असम, पश्चिम बंगाल तथा भूटान की शाही सरकार के बीच राज्य सरकारों के स्तर पर हुई सीमावर्ती जिला समन्वय बैठकों (नवंबर 2007) के जरिए सुरक्षा और सीमा प्रबंधन पर सहयोग जारी रहा।

चीन

समीक्षाधीन वर्ष के दौरान द्विपक्षीय संबंधों के विकास की गति बनी रही। पर्यटन वर्ष 2007, क्षेत्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों के दौरान हुए नियमित उच्चस्तरीय क्रियाकलापों तथा विभिन्न क्षेत्रों में निरन्तर किए जा रहे आदान-प्रदानों के जरिए भारत-चीन संबंधों से जुड़ी गतिविधियाँ जारी रहीं। इसके साथ ही अंतर्राष्ट्रीय नदियों पर उच्चस्तरीय तंत्र की बैठक, वार्षिक रक्षा वार्ता तथा निःशस्त्रीकरण और अप्रसार से संबद्ध वार्ता तंत्र जैसे नये वार्ता तंत्र भी बनाए गए, जो इस वर्ष की विशेषता रही। दोनों देश जलवायु परिवर्तन और ऊर्जा आत्मनिर्भरता जैसे वैश्विक मुद्दों पर क्षेत्रीय एवं द्विपक्षीय मंचों पर अपने सहयोग को बढ़ा रहे हैं।

प्रधान मंत्री डा. मनमोहन सिंह ने 13-15 जुलाई 2007 तक चीन का दौरा किया। अपनी यात्रा के दौरान प्रधान मंत्री ने चीन के प्रधान मंत्री वेन चियापाओ के साथ सरकारी वार्ता की और उन्होंने चीन के राष्ट्रपति हू जिन्ताओ तथा नेशनल पीपुल्स कांग्रेस की स्थायी समिति के अध्यक्ष वू बंगूओ के साथ अलग से बैठकें कीं। दोनों पक्षों ने भारत और चीन के बीच 21वीं सदी के लिए एक साझा विजन को जारी किया और विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग के लिए 10 अन्य दस्तावेजों [1] पर भी हस्ताक्षर किए। इस यात्रा के दौरान प्रधान मंत्री ने भारत-चीन आर्थिक, व्यापार एवं निवेश सम्मेलन तथा चीन सामाजिक विज्ञान अकादमी को भी संबोधित किया।

दोनों पक्षों ने शान्ति और समृद्धि के लिए भारत-चीन सामरिक और सहयोग भागीदारी को नये स्तर पर ले जाने की अपनी इच्छा को दोहराया। प्रधान मंत्री ने कहा कि चीन के साथ संबंध को हम उच्च प्राथमिकता देते हैं। दोनों पक्षों ने इस बात पर सहमति व्यक्त की कि भारत-चीन संबंध क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर महत्वपूर्ण हैं, दोनों देशों के पास एशिया और विश्व में शांति एंव विकास के साझे लक्ष्य के लिए मिलकर कार्य करने का ऐतिहासिक अवसर है। भारत-चीन संबंध किसी देश विशेष के विरुद्ध नहीं है और न ही इससे अन्य देशों के साथ उनकी मैत्री प्रभावित होगी। चर्चाएँ रचनात्मक और सकारात्मक रहीं और ये सद्भावना, सौहार्द तथा मैत्रीपूर्ण वातावरण में हुईं।

''21वीं सदी के लिए साझे विजन'' से संबंधित दस्तावेज न सिर्फ भारत और चीन की साझी भावनाओं को परिलक्षित करता है, बल्कि यह भविष्य में उद्देश्यपूर्ण सहयोग और पंचशील के आधार पर विश्व स्तर पर स्थायी शांति एवं साझी समृद्धि को बढ़ावा देने की हमारी इच्छा का भी द्योतक है। इस क्षेत्र की स्थिति के संबंध में होने वाली चर्चाओं में दोनों पक्षों के विचारों में पर्याप्त समानता की झलक मिली।

चीनी पक्ष ने राष्ट्रपति पाटिल को वर्ष 2009 में चीन आने का न्यौता दिया। हमने एनपीसी अध्यक्ष को वर्ष 2008 में भारत आने के लिए दिए गए निमंत्रण को दोहराया। ये आमंत्रण स्वीकार कर लिए गए। यह भी सहमति हुई कि वर्ष 2008 में दोनों देशों के विदेश मंत्री एक दूसरे देश की यात्रा करेंगे।

दोनों पक्षों ने सशत्र बलों के बीच आपसी समझबूझ और विश्वास को बढ़ाने का कार्य जारी रखने पर सहमति व्यक्त की और प्रथम संयुक्त सैनिक प्रशिक्षण अभ्यास के सफलतापूर्ण समापन का स्वागत किया।

1. दस्तावेजों में शामिल हैं- भारत के योजना आयोग और चीन के राष्ट्रीय विकास एवं सुधार आयोग के बीच सहयोग पर समझौता ज्ञापन, दोनों देशों के रेल मंत्रालयों के बीच सहयोग पर समझौता ज्ञापन, भारत के आवास एवं शहरी गरीबी, उपशमन मंत्रालय तथा चीन के लोक गणराज्य और निर्माण मंत्रालय के बीच समझौता ज्ञापन; भूमि संसाधन प्रबंधन, भूमि प्रशासन और पुनर्वास क्षेत्र में सहयोग पर समझौता ज्ञापन; चीन गए भारतीय चिकित्सा मिशन के स्मरण स्वरूप संयुक्त चिकित्सा मिशन पर समझौता ज्ञापन; भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद और चाइनीज पीपुल्स एसोसिएशन फार फ्रैंडशिप विथ फारेन कंट्रीज के बीच समझौता ज्ञापन; भारत के भू-सर्वेक्षण और चीन के भू-सर्वेक्षण के बीच भू-विज्ञान क्षेत्र में सहयोग पर समझौता ज्ञापन, भारत के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के आयुश और पारम्परिक चीनी दवाओं के राज्य प्रशासन, एसएटीसीएम के बीच समझौता ज्ञापन, जिसमें पारम्परिक दवाओं के क्षेत्र में सहयोग का प्रावधान है; नाबार्ड और चीन कृषि विकास बैंक के बीच आपसी सहयोग पर समझौता ज्ञापन; चीन को भारत से तम्बाकू की पत्तियों का निर्यात किए जाने के लिए पादप स्वच्छता अनिवार्यताओं पर चीन के गुणवत्ता, पर्यावरण निरीक्षण और जल कृषि, सामान्य प्रशासन तथा भारत के कृषि मंत्रालय के बीच प्रोतोकॉल।

3 अप्रैल 2007 को नई दिल्ली में 14वें सार्क शिखर सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में भाग लेने के लिए भूटान के प्रधानमंत्री, ल्योनपो खाण्डू वांगचुक के आगमन पर प्रधानमंत्री, डा. मनमोहन सिंह उनका स्वागत करते हुए।

प्रधानमंत्री, डा. मनमोहन सिंह 15 जनवरी 2008 को बीजिंग, चीन में ग्रेट हॉल ऑप पीपुल में चीन के राष्ट्रपति, हू जिनताओ से मुलाकात करते हुए।

यह स्वीकार किया गया कि सामरिक और सहयोगी भागीदारी मजबूत विविधतापूर्ण और आपसी लाभकारी आर्थिक संबंधों पर आधारित होनी चाहिए। वर्तमान में 40 बिलियन अमरीकी डालर के द्विपक्षीय व्यापार को वर्ष 2010 तक बढ़ाकर 60 बिलियन करने का निर्णय लिया गया। यह भी सहमति हुई कि द्विपक्षीय, क्षेत्रीय व्यापार व्यवस्था दोनों देशों के लिए उपयोगी साबित हो सकती है। यह निर्णय भी हुआ कि इस संबंध में दोनों देशों के वाणिज्य मंत्री भावी उपायों पर निर्णय लेंगे। भावी आर्थिक संबंधों पर दोनों देशों के प्रधान मंत्रियों को सलाह देने के लिए एक उच्चस्तरीय वाणिज्यिक प्रमुख मंच की स्थापना करने का भी निर्णय लिया गया।

दोनों प्रधान मंत्रियों ने अप्रैल 2005 में दिशानिर्देशी सिद्धांतों और राजनीतिक मानदंडों से संबद्ध करार के आधार पर सीमा प्रश्न का न्यायोचित, न्यायसंगत और आपसी स्वीकार्य समाधान प्राप्त करने के लिए विशेष प्रतिनिधियों द्वारा की गई प्रगति का स्वागत किया। विशेष प्रतिनिधियों ने अपने प्रयास जारी रखे, जबकि दोनों पक्षों ने सीमावर्ती क्षेत्रों में शांति और अमन चैन बनाए रखने की अपनी आपसी वचनबद्धता को दोहराया।

भारत के प्रधान मंत्री ने कुछ अंतर्राष्ट्रीय नदियों के संबंध में बाढ़ के मौसम के आंकड़े उपलब्ध कराने में चीन द्वारा दी जा रही सहायता की सराहना की। दोनों पक्ष विशेषज्ञ स्तरीय तंत्र के जरिए इस क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने पर सहमत हुए।

दोनों पक्षों ने द्विपक्षीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी भागीदारी को सम्भव बनाने के लिए भूकम्प, इंजीनियरिंग, आपदा प्रबंधन, जलवायु परिवर्तन, जैव प्रौद्योगिकी और नैनो विज्ञान को सहयोग के प्राथमिक क्षेत्रों के रूप में स्वीकार किया।

सीमा प्रश्न पर भारत और चीन के विशेष प्रतिनिधियों के बीच 10वें दौर की बैठक 20-22 अप्रैल 2007 तक नई दिल्ली और कुन्नूर में हुई और 11वें दौर की बैठक 24-26 सितंबर 2007 तक बीजिंग में हुई। इन वार्ताओं के दौरान दोनों विशेष प्रतिनिधियों ने अप्रैल 2005 राजनीतिक मानदंडों और दिशा-निर्देशों पर संपन्न करार के आधार पर सीमा प्रश्न के समाधान की रूपरेखा पर अपनी चर्चा जारी रखी।

व्यापार और आर्थिक संबंध हाल में भारत-चीन संबंधों में सकारात्मक विकास के सबसे स्पष्ट संकेतकों में से एक होकर उभरे हैं। चीनी आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2007[2] में 38.6 बिलियन अमरीकी डालर का द्विपक्षीय व्यापार हुआ।

सीमावर्ती व्यापार संबंधों में विस्तार जारी रहा। नाथूला दर्रे के जरिए सीमा व्यापार की अवधि पहले जून से सितंबर की थी (वर्ष 2006 में) जिसे इस वर्ष बढ़ाकर मई से नवंबर तक कर दिया गया है। दोनों पक्ष नाथूला दर्रे से होकर व्यापार किए जाने वाले सामानों की सूची में विस्तार करने की संभावना पर चर्चा कर रहे हैं।

दूसरी भारत-चीन वित्तीय वार्ता 4 दिसंबर 2007 को चीन में आयोजित की गई। दोनों पक्षों ने वर्ष 2008 के आखिरी महीनों में अथवा वर्ष 2009 के पूर्वार्द्ध में वार्ता का तीसरा दौर आयोजित करने पर सहमति व्यक्त की।

इस वर्ष रक्षा आदान-प्रदानों की मुख्य विशेषता रही है नवंबर 2007 में बीजिंग में आयोजित भारत-चीन वार्षिक रक्षा वर्ता की पहली बैठक और दिसंबर 2007 में दोनों पक्षों के जमीनी बलों के बीच पहले संयुक्त प्रशिक्षण अभ्यास का आयोजन। सेना प्रमुख जनरल जे.जे. सिंह और चीफ ऑफ स्टाफ कमेटी के अध्यक्ष ने मई 2007 में चीन का दौरा किया।

भारत ने अप्रैल में नई दिल्ली में आयोजित 14वें सार्क शिखर सम्मेलन में पर्यवेक्षक के रूप में चीन की भागीदारी का स्वागत किया। संघाई सहयोग संगठन की बैठकों में भी दोनों देशों के बीच क्रियाकलाप होते हैं जिसमें भारत एक पर्यवेक्षक राज्य है। भारत और चीन पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन में प्रक्रिया भी सहयोग कर रहे हैं। रूस के साथ मिलकर दोनों देश त्रिपक्षीय फार्मेट में भी सहयोग कर रहे हैं। इस संबंध में पिछली त्रिपक्षीय बैठक 24 अक्तूबर को हार्बिन, चीन में हुई।

क्वांग्छू में नया भारतीय प्रधान कौंसलावास और कोलकाता में नया चीनी प्रधान कौंसलावास स्थापित किया जाना दोनों पक्षों के बीच संस्थागत संपर्कों को सुदृढ़ बनाने की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण मील के पत्थर हैं। संस्थागत संपर्कों को सुदृढ़ बनाने के संबंध में अन्य प्रमुख घटनाक्रमों में शामिल हैं- फरवरी में विदेश मंत्री और चीन के विदेश मंत्री के बीच हॉट लाइन संपर्क की स्थापना; सितंबर में बीजिंग में भारत-चीन प्रसिद्ध व्यक्ति समूह की छठीं बैठक का योजन; विदेश कार्यालय परामर्श, इत्यादि। दोनों देशों के राजनयिकों के समूहों द्वारा परिचय यात्राओं का भी आदान-प्रदान किया गया।

अंतर्राष्ट्रीय नदियों पर सहयोग, चीन के साथ हमारे समग्र क्रियाकलाप का एक महत्वपूर्ण भाग है। बाढ़ के मौसम के जल विज्ञान आंकड़ों के प्रावधान; आपातकालीन प्रबंधन तथा अंतर्राष्ट्रीय

2. भारत द्वारा निर्यात की जाने वाली मुख्य मदें हैं- लौह अयस्क, कच्चे धागे, मशीनें, तांबा, सोयाबीन अवशिष्ट, कार्बनिक रसायन तथा प्लास्टिक जैसी आरम्भिक और कच्ची सामग्रियाँ। चीन से होने वाले आयातों में विद्युत मशीनें, मशीनरी और कार्बनिक रसायन, लोहा तथा इस्पात इत्यादि जैसी अपेक्षाकृत उच्च मूल्य संवर्द्धित उत्पादों की प्रधानता रही। वाणिज्य विभाग के आंकड़ों के अनुसार अप्रैल-अक्तूबर, 2007 के दौरान द्विपक्षीय व्यापार 43661.72 करोड़ रुपये का हुआ।

नदियों से संबंधित अन्य मुद्दों पर क्रियाकलापों और सहयोग पर चर्चा करने के लिए भारत-चीन विशेषज्ञ स्तरीय तंत्र को सितंबर 2007 में आयोजित इसकी पहली बैठक में परिचालित किया गया।

ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन एक अन्य महत्वपूर्ण मुद्दा है जिस पर भारत और चीन के समान विचार हैं। दोनों पक्षों ने इस मुद्दे पर नियमित विचार-विमर्श जारी रखा है।

दोनों पक्षों ने एक संयुक्त लोगो के साथ ''पर्यटन के जरिए भारत-चीन मैत्री वर्ष'' का आयोजन किया और एक दूसरे देश में पर्यटन कार्यालय खोलने पर सहमति व्यक्त की। लोगों से लोगों के बीच सम्पर्क को बढ़ाने की प्रक्रिया में एक अन्य महत्वपूर्ण बात थी, चीन में वर्ष 2007-09 के लिए भारत के युवा मामले एवं खेल, पंचायती राज तथा पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्री श्री मणिशंकर अय्यर के नेतृत्व में युवाओं के 100 सदस्यीय शिष्टमंडल का चीन का दौरा और नवंबर में चीन की कम्युनिस्ट युवा लीग की केंद्रीय समिति के प्रथम सचिव तथा ऑल चाइना यूथ फेडरेशन के नामित अध्यक्ष श्री हू चुनहुआ के नेतृत्व में एक युवा शिष्टमंडल का नवंबर में भारत का दौरा।

क्रियात्मक आदान-प्रदानों में उत्साहजनक गति बनी रही। चीन की प्रमुख यात्राओं में शामिल हैं- हरियाणा के मुख्य मंत्री भूपेंद्र हूडा, केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री (15-16 अप्रैल 2007); केंद्रीय वित्ती मंत्री (29-30 मार्च 2007); योजना के आयोग के उपाध्यक्ष (24-29 अप्रैल 2007); केंद्रीय रसायन एवं उर्वरक राज्य मंत्री (मई 2007); राष्ट्रीय असंगठित क्षेत्र उपक्रम आयोग के अध्यक्ष (15-17 अगस्त 2007); शहरी विकास राज्य मंत्री (अक्तूबर 2007) और भारत के मुख्य न्यायाधीश (6-10 नवंबर 2007)। निम्नलिखित के नेतृत्व में बड़े शिष्टमंडल भारत आए- चीन लोक राजनीतिक परामर्शी सम्मेलन की 10वीं राष्ट्रीय समिति के उपाध्यक्ष लिऊ योंदोंग (6-13 जनवरी 2007); चीन के सर्वोच्च लोक न्यायालय के अध्यक्ष जियाओयांग (2-5 अप्रैल 2007); चीन राष्ट्रीय लोक कांग्रेस की आर्थिक एवं वित्तीय समिति के अध्यक्ष फू जिहुअबान (23-26 मई 2007) चीन राष्ट्रीय पर्यटन प्रशासन के अध्यक्ष साओ किवेई (अगस्त 2007); चोंगक्विंग म्युनिसिपल पार्टी समिति के सचिव और चोंगक्विंग म्युनिसिपल पार्टी कांग्रेस की स्थायी समिति के अध्यक्ष वांगचांग (सितंबर 2007); चीन लोक आर्थिक परामर्श सम्मेलन की 10वीं राष्ट्रीय समिति के उपाध्यक्ष वांग झोंगचू (20-24 सितंबर); चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के केंद्रीय पार्टी स्कूल के कार्यकारी उपाध्यक्ष सुरोंग (नवंबर 2007); चीन की कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति के अंतर्राष्ट्रीय सम्पर्क विभाग के मंत्री वांग जियारुई (20 नवंबर 2007)।

हांगकांग

चीन लोक गणराज्य के हांगकांग विशेष प्रशासनिक क्षेत्र के साथ मैत्रीपूर्ण एवं सहयोगी क्रियाकलाप जारी रहे। हांगकांग भारत का एक महत्वपूर्ण व्यापार भागीदार बना रहा। विभिन्न क्षेत्र के अनेक शिष्टमंडलों की यात्राओं का आदान-प्रदान हुआ। भारत में निवेश आकर्षित करने के लिए एक महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय केंद्र के रूप में हांगकांग की छवि का उपयोग किया गया।

हांगकांग के वित्तीय सचिव ने दिसंबर 2007 में भारत का दौरा किया और वित्त मंत्री तथा उद्योग के महत्वपूर्ण नेताओं के साथ बैठकें कीं। इस यात्रा से दोनों पक्षों के बीच वित्तीय क्षेत्र में संबंधों को और समृद्ध करने में सहायता मिली।

दोनों पक्षों ने नागर विमानन संपर्कों को और विस्तारित करने पर एक नया समझौता संपन्न किया। सीधी उड़ान की संख्या में वृद्धि करने पर द्विपक्षीय सहमति हुई।

मालदीव

भारत और मालदीव के बीच द्विपक्षीय संबंध घनिष्ठ और मैत्रीपूर्ण रहे। उच्चस्तरीय यात्राओं के जरिए इस संबंध में सौहार्दता बनाए रखी गई।

राष्ट्रपति मामून अब्दुल गयूम ने नई दिल्ली में 2-4 अप्रैल 2007 तक आयोजित सार्क शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए भारत का दौरा किया। उन्होंने राष्ट्रपति और प्रधान मंत्री के साथ चर्चा की। मालदीव की संसद (पीपल्स मजलिस) के अध्यक्ष अहमद जहीर ने प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की 150वीं वर्षगाँठ के अवसर पर होने वाले समारोहों में भाग लेने के लिए 10 मई 2007 तक नई दिल्ली का दौरा किया। 22-30 सितंबर 2007 तक उन्होंने पुनः भारत का दौरा किया जिसके दौरान वे नई दिल्ली में आयोजित राष्ट्रमंडल संसदीय संघ के 53वें वार्षिक सम्मेलन में भाग लेने वाले मालदीव के शिष्टमंडल के प्रमुख थे। योजना और राष्ट्रीय विकास मंत्री हामदुन हमीद 4-7 सितंबर 2007 तक एशियाई संघ की दीर्घावधिक नीतिगत रूपरेखा की समीक्षा पर क्षेत्रीय और एशियाई विकास कोष की भूमिका पर क्षेत्रीय परामर्श में भाग लेने के लिए भारत का दौरा किया। विदेश मंत्री अब्दुल्ला शाहिद ने 29 अक्तूबर 2007 को भारत का दौरा किया और उन्होंने प्रधान मंत्री तथा विदेश मंत्री के साथ चर्चा की।

मई 2007 में मालदीव में आए समुद्रीय ज्वार के कारण मालदीव के लोगों के समक्ष आ रही समस्याओं की जानकारी मिलने पर प्रधान मंत्री ने इस पर चिंता व्यक्त की और राष्ट्रपति गयूम को भारत से सभी सम्भव सहायता दिए जाने का आश्वासन दिया। इन आश्वासनों पर अनवरत कार्रवाई के रूप में भारत ने मालदीव सरकार को 10 करोड़ रुपये की नकद सहायता दी।

भारत ने 29 सितंबर 2007 को माले में हुए बम विस्फोटों की कड़ी निंदा की जिसके परिणामस्वरूप 12 पर्यटक घायल हो गए थे और इनमें जाँच में सभी प्रकार की सहायता देने के साथ-साथ मालदीव सरकार को चिकित्सा सहायता देने का भी प्रस्ताव किया।

8 जनवरी 2008 को एक व्यक्ति ने मालदीव के राष्ट्रपति श्री गयूम पर छुरे से हमला कर दिया। इस घटना में राष्ट्रपति गयूम को कोई नुकसान नहीं पहुंचा। हमले के बाद भारत के राष्ट्रपति और प्रधान मंत्री ने इसकी भर्त्सना करते हुए राष्ट्रपति गयूम को संदेश भेजा।

वर्ष 2007-08 के दौरान भारत ने अपने द्विपक्षीय सहायता कार्यक्रम के अंतर्गत प्रतिरक्षा, पुलिस, चिकित्सा और तकनीकी शिक्षा इत्यादि क्षेत्रों में मालदीव के राष्ट्रिकों के लिए प्रशिक्षण सुविधाएँ उपलब्ध कराना जारी रखा।

मालदीव के विदेश मंत्री अब्दुल शाहिद ने नई दिल्ली में आयोजित सार्क मंत्रियों की परिषद में भाग लेने के लिए दिसंबर 2007 में भारत का दौरा किया। श्री शाहिद ने 6 दिसंबर 2007 को विदेश और रक्षा मंत्री से मुलाकात की।

''दोस्ती-11'' के कोड नाम से भारत-मालदीव संयुक्त तटरक्षक अभ्यास 25-28 दिसंबर 2007 तक माले में हुआ। उप नौसेना अध्यक्ष आरएफ कंट्रेक्टर, एवीएएसएम, एनएम और भारतीय तट रक्षक के महानिदेशक ने ''दोस्ती-11'' अभ्यासों के आयोजन का पर्यवेक्षण करने के लिए 25-28 दिसंबर 2007 तक मालदीव का दौरा किया। अपनी यात्रा के दौरान भारतीय तट रक्षक महानिदेशक ने विदेश मंत्री और रक्षा मंत्री से मुलाकात करने के साथ-साथ मालदीव के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ भी मुलाकात की।

विदेश सचिव श्री शिवशंकर मेनन ने मालदीव के प्राधिकारियों के साथ द्विपक्षीय चर्चा करने के लिए 27-29 जनवरी 2008 तक मालदीव का दौरा किया। उन्होंने मालदीव के राष्ट्रपति से मुलाकात की। उन्होंने अन्य वरिष्ठ सरकारी अधिकारियों के साथ मुलाकात करने के अतिरिक्त मालदीव के विदेश मंत्री के साथ भी मुलाकात की।

भारत के वाणिज्य राज्य मंत्री जयराम रमेश ने 29-31 जून 2008 तक मालदीव के लिए एक भारतीय शिष्टमंडल का नेतृत्व किया। मालदीव के उच्चाधिकारियों के साथ अपनी बैठकों के दौरान मंत्री महोदय ने भारत और मालदीव के बीच द्विपक्षीय संबंध और आर्थिक सहयोग बढ़ाने के तौर-तरीकों पर चर्चा की।

मालदीव के राष्ट्रपति मौमून अब्दुल गयूम ने 6-12 फरवरी, 2008 तक भारत का राजकीय दौरा किया। अपनी यात्रा के दौरान राष्ट्रपति गयूम ने राष्ट्रपति, उप राष्ट्रपति, प्रधान मंत्री, विदेश मंत्री और रक्षा मंत्री से मुलाकात की। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सहयोग पर एक करार 11 फरवरी, 2008 को संपन्न किया गया। दोनों देशों ने इंदिरा गांधी स्मारक अस्पताल, माले के संबंध में एक नया समझौता ज्ञापन करने पर सहमति व्यक्त की।

मालदीव के राष्ट्रपति ने 7 फरवरी, 2008 को टेरी द्वारा प्रदत्त स्थायी विकास नेतृत्व पुरस्कार भी प्राप्त किया।

म्यामां

विभिन्न स्तरों पर होने वाली द्विपक्षीय यात्राओं के जरिए इस वर्ष भारत-म्यामां संबंध और संवर्धित हुए हैं। म्यामां के क्वार्टर मास्टर जनरल और राज्य शांति और विकास परिषद के अध्यक्ष ले. जनरल थिहा थुरा टिन अऊंग मिंट ऊ ने 20-27 अप्रैल 2007 तक भारत का दौरा किया। क्वार्टर मार्शल जनरल ने नई दिल्ली में हमारे क्वार्टर मार्शल जनरल और सेना उप प्रमुख के साथ बैठकें करने के अतिरिक्त विदेश मंत्री और रक्षा मंत्री से मुलाकात की। म्यामां के सामाजिक कल्याण, राहत और पुनर्वास मंत्री मेजर जनरल माउंग माउंग स्वे ने 5-9 नवंबर 2007 तक आपदा नियंत्रण पर दूसरे एशियाई मंत्रिस्तरीय सम्मेलन में भाग लिया। भारत से संस्कृति और पर्यटन मंत्री अम्बिका सोनी ने पूर्व प्रधान मंत्री जनरल सोविन की राजकीय अंत्येष्टि में भाग लेने के लिए 11 अक्तूबर को म्यामां का दौरा किया।

21 नवंबर 2007 को सिंगापुर में आयोजित पूर्व एशियाई शिखर सम्मेलन के दौरान अतिरिक्त समय में प्रधान मंत्री ने म्यामां के प्रधान मंत्री जनरल थीन-सीन के साथ मुलाकत की। इससे पूर्व 1 अक्तूबर 2007 को विदेश मंत्री ने संयुक्त राष्ट्र महा अधिवेशन के दौरान अतिरिक्त समय में न्यूयार्क में म्यामां के विदेश मंत्री ऊ न्यान विन के साथ मुलाकात की। म्यामां की आतंरिक घटनाओं के संदर्भ में विदेश मंत्री और प्रधान मंत्री दोनों ने अपनी बैठकों में इस बात पर बल दिया कि म्यामां के प्राधिकारियों द्वारा शुरू की गई राष्ट्रीय मेल-मिलाप और राजनीतिक सुधारों की प्रक्रिया व्यापक होनी चाहिए तथा इसमें दाव आंग सान सू की तथा विभिन्न जातीय राष्ट्रीयताओं को शामिल किया जाना चाहिए और इसे तेजी से आगे बढ़ाया जाना चाहिए, ताकि इसका संतोषजनक समाधान निकल सके।

गहरे समुद्र के 3 ब्लाकों एडी-2, एडी-3 और एडी-9 के लिए ओएनजीसी विदेश लिमिटेड और म्यामां तेल एवं गैस उपक्रम के बीच 23 सितंबर 2007 को साझा उत्पादन अनुबंध पर म्यामां की राजधानी ने प्यी ताव में पट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्री श्री मुरली देवड़ा की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए जाने के साथ ही हाइड्रोकार्बन क्षेत्र में सहयोग और सुदृढ़ हुआ। अपनी यात्रा

के दौरान श्री देवड़ा ने म्यामां के ऊर्जा मंत्री ब्रिगेडियर जनरल लुन थी के साथ दोनों देशों के बीच ऊर्जा सहयोग पर द्विपक्षीय बातचीत की।

म्यामां वायुसेना के कमांडर इन चीफ लेफ्टीनेंट जनरल म्यात हेन के नेतृत्व में एक 3 सदस्यीय शिष्टमंडल ने 2-7 अप्रैल 2007 तक भारत का दौरा किया। नौसेना कमांडर इन चीफ वाइस एडमिरल सो थीन के निमंत्रण पर नौसेना अध्यक्ष एडमिरल सुरेश मेहता, पीवीएसए, एवीएसएम, एडीसी ने 8-13 मई 2007 तक म्यामां का दौरा किया। उन्होंने वाइस सीनियर जनरल मुआंग अये से ने प्यी ताव में मुलाकात की। सचिव, रक्षा (वित्त) वी.के. मिश्रा के नेतृत्व में 3 सदस्यीय शिष्टमंडल ने 9-11 अप्रैल 2007 तक म्यामां का दौरा किया। भारतीय सेना के पूर्वी कमान के जीसी-इन-सी लेफ्टीनेंट जनरल के.एस. जमवाल, एवीएसएम, वीएसएम के नेतृत्व में 5 सदस्यीय सद्भावना शिष्टमंडल ने 9-14 जुलाई 2007 तक म्यामां का दौरा किया। रक्षा सेवा के कार्मिकों की अनेक अन्य यात्राएँ भी हुईं।

भारत, म्यामां की विकास परियोजनाओं के लिए सहायता देने के लिए प्रतिबद्ध है। कलादन मल्टी मॉडल पारगमन परिवहन परियोजना सहित अनेक परियोजनाएँ विचाराधीन हैं या उनका क्रियान्वयन किया जा रहा है। इस अवधि के दौरान सीमा सड़क संगठन ने तामू कलेवा-कलेमयो सड़क के सतहीकरण का कार्य आरम्भ किया जिसका उन्नयन पहले भी भारतीय सहायता से किया गया था।

व्यापार और वाणिज्य क्षेत्र में इस वर्ष महत्वपूर्ण सम्पर्क स्थापित किये गये। नैफेड ने म्यामां को 2000 मीट्रिक टन गेहूँ की आपूर्ति करने के लिए 14 अगस्त को म्यामां आर्थिक सहयोग के साथ एक करार संपन्न किया। यह आपूर्ति अक्तूबर 2007 में पूरी हो गई। गुजरात सहकारी दुग्ध विपणन संघ (अमूल) ने भी म्यामां को 200 मीट्रिक टन दूध के पाउडर की आपूर्ति किए जाने के लिए 10 अगस्त को म्यामां आर्थिक सहयोग के साथ एक करार संपन्न किया जिसकी आपूर्ति का कार्य समय से पूरा किया गया। म्यामां को भारत से भेजे जाने वाले कुल बीस 1350 एचपीवाईडीएम-4 इंजनों में से 5 इंजन प्राप्त हो चुके हैं और शेष के वर्ष 2008 के मध्य तक यांगून पहुंच जाने की आशा है। एक्जिम बैंक के दो सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल ने म्यामां का दौरा किया और इसने 19 अक्तूबर 2007 को थाथे चौंग पन बिजली परियोजना के लिए म्यामां विदेश व्यापार वार्ता के साथ 60 मिलियन अमरीकी डालर का ऋण करार संपन्न किया।

म्यामां संघ की सरकार के संस्कृति मंत्रालय के सहयोग से यांगून में भारतीय दूतावास द्वारा भारतीय स्वतंत्रता की 60वीं वर्षगाँठ को मनाने के लिए अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिसमें श्रीकला भरत का भरत नाट्यम प्रदर्शन और भारतीय गायिका पीनाज मसानी का संगीत कंसर्ट शामिल है।

वर्ष 2007-08 के दौरान म्यामां को आइटेक योजना के अंतर्गत 100 स्लाट्स और कोलंबो योजना के अंतर्गत 42 स्लाट्स आबंटित किए गए हैं। आज की तारीख में म्यामां के 28 कार्मिकों ने आइटेक कार्यक्रम के अंतर्गत और 40 ने कोलम्बो योजना के अंतर्गत प्रशिक्षण लेना आरम्भ कर दिया है और शेष स्लाट्स के संबंध में विभिन्न संस्थाओं द्वारा विचार किया जा रहा है।

म्यामां संघ के उप विदेश मंत्री ऊक्याव थू ने विदेश सचिव श्री शिवशंकर मेनन के आमंत्रण पर भारत और म्यामां के बीच होने वाले विदेश कार्यालय परामर्शों के लिए 11-14 दिसंबर 2007 तक भारत का दौरा किया। 11 दिसंबर 2007 को शिष्टमंडल स्तरीय बातचीत हुई। यात्रा के दौरान उप मंत्री ऊक्याव थू ने विदेश मंत्री प्रणब मुखर्जी के साथ भी मुलाकात की। मैत्री और सौहार्द, जो भारत और म्यामां संबंधों की विशेषता है, के वातावरण में हुई चर्चाओं में द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों सहित आपसी हित के सभी क्षेत्रों पर बातचीत की गई। भारतीय सहायता से यांगून में भारत-म्यामां सूचना प्रौद्योगिकी कौशल संवर्धन केंद्र की स्थापना पर एक समझौता ज्ञापन 12 दिसंबर 2007 को संपन्न किया गया।

म्यामां के विदेश मंत्री ऊन्यान विन ने विदेश मंत्री के निमंत्रण पर 31 दिसंबर 2007 से 4 फरवरी 2008 तक भारत का दौरा किया। अपनी यात्रा के दौरान ऊन्यान विन ने 2 जनवरी 2008 को प्रधान मंत्री से मुलाकात की। विदेश मंत्री ने प्रधान मंत्री को म्यामां में हुए हाल के आंतरिक घटनाक्रमों के बारे में बताया। हमारे प्रधान मंत्री ने म्यामां में राजनीतिक सुधार और राष्ट्रीय मेल-मिलाप लाने की तात्कालिकता की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि यह प्रक्रिया व्यापक होनी चाहिए और इसमें दाव आंग सांन सू की तथा म्यामां के विभिन्न जातीय समूहों सहित समाज के सभी वर्गों को शामिल किया जाना चाहिए। उन्होंने 2 जनवरी 2008 को विदेश मंत्री और उपराष्ट्रपति के साथ भी मुलाकात की।

नेपाल

यह वर्ष नेपाल की जारी शांति प्रक्रिया में महत्वपूर्ण घटनाक्रमों का साक्षी रहा। हालांकि नेपाल में बहुदलीय लोकतंत्र को संस्थागत रूप दिए जाने के समक्ष अभी भी अनेक महत्वपूर्ण चुनौतियाँ हैं।

जनवरी 2007 में अंतरिम संविधान प्रख्यापित किए जाने के पश्चात प्रधान मंत्री जी.पी. कोइराला के नेतृत्व में एक अंतरिम सरकार का गठन किया गया। सत्ताधारी 7 दलीय गठबंधन अंतरिम सरकार का

अप्रैल 2007 में विस्तार करके इसमें नेपाल की कम्युनिस्ट पार्टी के 5 मंत्रियों को शामिल किया गया। माओवादी मंत्रियों ने सितंबर 2007 में उस समय मंत्रिमंडल से त्यागपत्र दे दिया जब राजनीतिक दल और नेपाल की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) नेपाल को गणराज्य घोषित करने और संविधान सभा के चुनावों के लिए पूर्णतः समानुपातिक, प्रातिनिधिक प्रणाली अपनाने की माओवादियों की दो मांगों पर राजनीतिक अवरोध समाप्त करने में असफल रहे। नेपाल में स्थित संयुक्त राष्ट्र मिशन के पर्यवेक्षण में माओवादियों के पीएलए हथियारों और लड़ाकों के प्रबंधन की प्रक्रिया में प्रगति हुई। 5 अक्तूबर 2007 को अंतरिम सरकार ने 22 नवंबर 2007 को चुनाव आयोग से संविधान सभा चुनावों को रद्द करने के लिए अनौपचारिक रूप से कह दिया। संविधान सभा चुनावों को टाले जाने से नेपाल के लोगों और भारत सहित अन्य अंतर्राष्ट्रीय समुदायों को निराशा हुई है।

भारत का दृष्टिकोण नेपाल में बहुदलीय लोकतंत्र का समर्थन करने के लिए नेपाल सरकार द्वारा किए गए अनुरोध के अनुरूप सभी संभावित सहायता देना जारी रखने की रहा है जो नेपाल की शांति और अर्थव्यवस्था के विकास के लिए अनिवार्य है। भारत ने नेपाल सरकार और मुख्य राजनीतिक दलों के साथ घनिष्ठ विचार-विमर्श बनाए रखा जिसका उद्देश्य संविधान सभा चुनावों के जरिए शीघ्रातिशीघ्र नई संवैधानिक व्यवस्था को लाना है। भारत ने इस बात की आवश्यकता पर बल दिया है कि नेपाल के लोग अपने भविष्य और वे किस प्रकार शासित होना चाहते हैं, इसके बारे में मुक्त और स्वच्छ चुनाव प्रक्रिया के जरिए फैसला करने में समर्थ हों सकें।

इस वर्ष अनेक उच्चस्तरीय यात्राएँ हुईं। प्रधान मंत्री जी.पी. कोइराला और विदेश मंत्री सहाना प्रधान ने 14वें सार्क शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए अप्रैल 2007 में भारत का दौरा किया। सार्क शिखर सम्मेलन के दौरान ही अतिरिक्त समय में प्रधान मंत्री और विदेश मंत्री के साथ द्विपक्षीय बैठकें भी हुईं। विदेश मंत्री प्रधान ने सार्क मंत्रियों की परिषद में भाग लेने के लिए पुनः 6-9 दिसंबर 2007 तक भारत का दौरा किया। विदेश सचिव शिवशंकर मेनन ने सितंबर 2007 में नेपाल का दौरा किया। प्रधान मंत्री के विशेष दूत श्याम शरन ने अक्तूबर 2007 में नेपाल का दौरा किया।

अप्राधिकृत व्यापार को नियंत्रित करने के लिए भारत नेपाल व्यापार संधि और सहयोग करार को मार्च 2007 में पांच वर्ष की अगली अवधि के लिए नवीकृत किया गया। भारत और नेपाल ने नेपाल में अवसंरचना परियोजनाओं के निष्पादन के लिए भारत द्वारा किए गये 100 मिलियन अमरीकी डालर के ऋण को प्रचालित करने के लिए सितंबर 2007 में एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये।

सीमा प्रबंधन और सुरक्षा, सीमा मामलों, व्यापार और वाणिज्य, पारगमन, जल संसाधन तथा आर्थिक सहयोग जैसे द्विपक्षीय सहयोग के विभिन्न पहलुओं पर द्विपक्षीय बैठकें हुईं।

द्विपक्षीय व्यापार में लगातार वृद्धि हुई। हालांकि द्विपक्षीय व्यापार में वृद्धि की दर नेपाल की अनिश्चित राजनैतिक स्थिति के कारण कम रही। अनंतिम आकलन के अनुसार द्विपक्षीय व्यापार नेपाली राजकोषीय वर्ष (15 जुलाई से आरंभ) 2005-06 में 12.4% की तुलना में 2006-07 में 7.9% की दर से बढ़ा। नेपाली राजकोषीय वर्ष 2005-06 के अंत तक भारत के साथ द्विपक्षीय व्यापार 2.31 बिलियन अमरीकी डालर का रहा जो नेपाल के कुल व्यापार का 63.2% था। नेपाल के आयात में भारत का हिस्सा 61.7% का रहा जबकि नेपाल के कुल निर्यात का लगभग 67.6% भारत में किया गया।

भारत ने लघु विकास परियोजना योजना, जिसके अंतर्गत 220 से अधिक परियोजनाएं क्रियान्वित की गयी हैं अथवा क्रियान्वयन की प्रक्रिया में है, में अवसंरचना, स्वास्थ्य, ग्रामीण और सामुदायिक विकास, शिक्षा के क्षेत्रों में विकास परियोजनाएं चलाकर नेपाल सरकार के विकास प्रयासों में योगदान देना जारी रखा। 65 करोड़ रुपये की लागत से बीर अस्पताल का विस्तार और 20 करोड़ रुपये की लागत से मनमोहन अधिकारी पालीटेक्निक जैसी दो परियोजनाओं का क्रियान्वयन किया गया।

भारत ने वाहनों, जनरेटरों और संचार उपकरण सेटों इत्यादि के रूप में चल रही शांति प्रक्रिया के लिए नेपाल सरकार को पर्याप्त सहायता दी।

भारत-नेपाल सीमा पर सीमा संरचना को सुदृढ़ करना सरकार की प्राथमिकता रही। सीमावर्ती अवसंरचना का सुधार और उन्नयन, सीमा के दोनों ओर समेकित जांच चौकियों और सड़क तथा रेल संपर्क का विकास करने के लिए नेपाल सरकार के साथ विचार-विमर्श करके आरंभ की गई अनेक नई परियोजनाओं में पर्याप्त प्रगति हुई। क्रियान्वित हो जाने के पश्चात इन परियोजनाओं से न सिर्फ व्यापार और परिवहन को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि इससे सीमा के प्रभावी प्रबंधन में भी योगदान मिलेगा।

मानव संसाधन विकास, प्रशिक्षण तथा नेपाली संस्थानों के क्षमता निर्माण क्षेत्र में भारत-नेपाल सहयोग को और सुदृढ़ बनाया गया। भारत और नेपाल में प्रस्तावित छात्रवृत्तियों/सीटों को दोगुना करने के अतिरिक्त नेपाल के पुलिस कार्मिकों, स्थानीय विकास अधिकारियों, वित्त अधिकारियों और पत्रकारों के लिए उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाये गये। भारत की यात्रा करने वाले नेपाली शिष्टमंडलों में शामिल हैं- भारतीय न्यायपालिका में सूचना प्रौद्योगिकी के क्रियान्वयन का अध्ययन करने के लिए कार्यकारी मुख्य न्यायाधीश केदार गिरि के नेतृत्व

भारत के उप राष्ट्रपति, हामिद अंसारी 2 जनवरी 2008 को नई दिल्ली में म्यांमा संघ के विदेश मंत्री, यू न्यान विन से मुलाकत करते हुए।

नेपाल की विदेश मंत्री, सहाना प्रधान 3 अप्रैल 2007 को 14वें सार्क शिखर सम्मेलन के दौरान विदेश मंत्री, प्रणब मुखर्जी से मुलाकात करते हुए।

में नेपाल सर्वोच्च न्यायालय के शिष्टमंडल की यात्रा, लोक सेवाओं में भर्ती की भारतीय प्रणाली का अध्ययन करने के लिए लोक सेवा आयोग का दौरा, अपने भारतीय समकक्षों के साथ चर्चा करने और इलेक्ट्रानिक वोटिंग मशीनों के उपयोग का अध्ययन करने के लिए नेपाल के चुनाव आयोग का दौरा। नेपाल के व्यावसायिकों और सरकारी कर्मचारियों को आइटेक और कोलंबो योजना के अंतर्गत विभिन्न क्षेत्रों में प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए आमंत्रित किया गया।

सांस्कृतिक संबंधों को संवर्धित और विस्तारित करने के लिए अगस्त 2007 में काठमाण्डू में भारतीय सांस्कृतिक केन्द्र खोला गया।

पाकिस्तान

समग्र वार्ता प्रक्रिया और भारत-पाकिस्तान संयुक्त आयोग संस्थागत आधार उपलब्ध कराते हैं। समीक्षाधीन अवधि के दौरान इन दो छत्रों के अंतर्गत और प्रधान मंत्री तथा विदेश मंत्री के स्तर पर अनेक बैठकें हुईं। द्विपक्षीय संबंधों की गति बनाई रखी गयी। हालांकि पाकिस्तान की घरेलू राजनैतिक उथल-पुथल और इसके फलस्वरूप राजनैतिक प्रक्रिया के लंबा चलने से संस्थागत वार्ता की गति धीमी रही। भारत ने पाकिस्तान में आतंकवाद की अवसंरचना और हमारे ऊपर पड़ने वाले इसके प्रभावों पर निरंतर चिंता व्यक्त की है।

भारत सरकार ने 27 दिसंबर, 2007 को हुई पूर्व प्रधान मंत्री बेनजीर भुट्टो की हत्या की कड़ी निंदा की। इस हत्या से पाकिस्तान के आधुनिकीकरण की ताकतों को गहरा धक्का पहुंचा। उग्रवादी हिंसा और आतंकवाद का प्रसार तथा इसके कारण पाकिस्तान के राजनैतिक स्थायित्व के समक्ष आया खतरा चिंता का गंभीर विषय है। पाकिस्तान में उग्रवादी ताकतों की बढ़ती ताकत भी भारत के लिए गंभीर चिंता का विषय है।

समग्र वार्ता

द्विपक्षीय संबंधों को गहन और विस्तारित करने के लिए वर्ष 2004 में समग्र वार्ता की पहल की गयी थी जिसमें आठ विषय शामिल हैं, यथा, विश्वासोत्पादक उपायों सहित शांति और सुरक्षा; जम्मू और कश्मीर; आतंकवाद और मादक द्रव्यों का अवैध व्यापार; मैत्रीपूर्ण आदान-प्रदान; आर्थिक और वाणिज्यिक सहयोग; तुलबुल नौवहन परियोजना; सरक्रीक और सियाचिन। समग्र वार्ता का चौथा दौर मार्च 2007 में विदेश सचिवों की बैठक के साथ आरंभ हुआ और वर्ष 2007 के दौरान सभी आठ विषयों पर सचिव स्तरीय बातचीत पूरी हो गयी। चौथे दौर के आरंभ होने पर 21 फरवरी को ''नाभिकीय शस्त्रों से संबंधित दुर्घटनाओं के जोखिमों को कम करने'' पर करार संपन्न किया गया। इस अवसर पर दोनों देशों ने इस बात पर बल दिया कि समझौता एक्सप्रेस पर हुए हमले से वार्ता प्रक्रिया को बाधित होने की अनुमति नहीं दी जाएगी। समग्र वार्ता में हुई चर्चा सकारात्मक और रचनात्मक रही।

6-7 अगस्त 2007 को सरक्रीक के संबंध में हुई वार्ता में दोनों पक्षों ने अनेक नक्शों/चार्टों का आदान-प्रदान किया जिसमें सरक्रीक सीमा के चित्रण और समुद्री सीमा के चित्रण पर अपनी-अपनी स्थिति दर्शाई गई थी। सरक्रीक और इसके नजदीकी क्षेत्रों पर एक संयुक्त सर्वेक्षण जनवरी 2007 में किया गया जिसके द्वारा समान दूरी तरीके से दोनों देशों की समुद्रीय रेखा के सबसे दूरस्थ बिन्दुओं का सत्यापन किया गया। 3-4 जुलाई 2007 को आयोजित गृह सचिव स्तरीय वार्ता में द्विपक्षीय और कौंसली संपर्क करार के पाठ पर विस्तार से चर्चा की गई। इस बैठक में सीमा पार आतंकवाद और दुश्मनीपूर्ण दुष्प्रचार पर हमारी चिंताओं को भी दोहराया गया। 31 जुलाई-1 अगस्त 2007 तक आयोजित वाणिज्य सचिवों की वार्ता में पाकिस्तान से सीमेंट के आयात और भारत से चाय के निर्यात को रेल द्वारा सुविधाजनक बनाए जाने पर सहमति हुई। द्विपक्षीय व्यापार को बढ़ावा देने के लिए अनेक अन्य उपायों पर भी सहमति हुई। वार्ता के पिछले चरणों में स्थापित परिवहन सम्पर्क ने सफलतापूर्वक अपना कार्य जारी रखा जिससे लोगों की आवाजाही सुगम हुई और द्विपक्षीय व्यापार को बढ़ावा मिला। कारगिल और अस्कार्डू तथा जम्मू और सियालकोट परिवहन सम्पर्कों की स्थापना के जरिए लोगों से लोगों बीच सम्पर्क को और बढ़ाने के संबंध में भारत द्वारा किए गए प्रस्तावों को पाकिस्तान द्वारा स्वीकार किए जाने की प्रतीक्षा है।

संयुक्त आयोग

16 वर्षों के अंतराल के बाद अक्तूबर 2005 में संयुक्त आयोग की चौथी बैठक के आयोजन के साथ इसे पुनर्जीवित किया गया। संयुक्त आयोग की पांचवीं बैठक 21 फरवरी 2007 को नई दिल्ली में हुई जिसमें कृषि, स्वास्थ्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, सूचना, शिक्षा, सूचना प्रौद्योगिकी तथा दूर संचार, पर्यावरण और पर्यटन से संबद्ध तकनीकी स्तरीय कार्यकारी दलों की बैठकें हुईं। संयुक्त आयोग की अध्यक्षता भारत के विदेश मंत्री और पाकिस्तान के विदेश मंत्री द्वारा की जाती है।

उच्चस्तरीय यात्राएँ

4 अप्रैल 2007 को आयोजित दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संघ शिखर सम्मेलन के दौरान अतिरिक्त समय में प्रधान मंत्री डा. मनमोहन सिंह और पाकिस्तान के प्रधान मंत्री शौकत अजीज के बीच एक बैठक हुई। चर्चा में व्यापार, ऊर्जा, बैंकिंग, हवाई सम्पर्क तथा अन्य मुद्दों सहित द्विपक्षीय मसलों को उठाया गया।

वी. जे. एम लोकूबानदारा, श्रीलंका की संसद के अध्यक्ष ने 26 सितंबर 2007 को विज्ञान भवन में सोमनाथ चटर्जी, अध्यक्ष से मुलाकात की। यह बैठक नई दिल्ली में आयोजित हो रहे 53वें राष्ट्रमंडल संसदीय सम्मेलन के दौरान हुई।

पाकिस्तान के विदेश मंत्री, खुर्शीद महमूद कसूरी 21 फरवरी 2007 को नई दिल्ली में विदेश मंत्री, प्रणव मुखजी से हाथ मिलाते हुए।

प्रधान मंत्री अजीज ने डा सिंह को आश्वस्त किया कि पाकिस्तान कब्जे में लिए गए मछुआरों की नौकाओं को उनके मालिकों को वापस करने के लिए शीघ्र कार्रवाई करेगा। दोनों नेताओं ने एक दूसरे देश की कैद में एक दूसरे देश के नागरिकों की स्थिति पर भी समीक्षा करने पर भी सहमति जताई।

पाकिस्तान के विदेश मंत्री खुर्शीद मुहम्मद कसूरी ने विदेश मंत्री प्रणब मुखर्जी के साथ भारत-पाकिस्तान संयुक्त आयोग की चौथी बैठक की सह अध्यक्षता करने के लिए 20-21 फरवरी 2007 तक नई दिल्ली का दौरा किया। यह यात्रा 18 फरवरी 2007 को समझौता एक्सप्रेस में हुई आतंकवादी हमलों की पृष्ठभूमि में हुई। संयुक्त आयोग ने शिक्षा, सूचना प्रौद्योगिकी तथा दूर संचार, स्वास्थ्य, कृषि, पर्यटन, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पर्यावरण के क्षेत्रों में सहयोग की संभावनाओं का पता लगाया।

पाकिस्तान के कार्यवाहक विदेश मंत्री इनामुल हक ने सार्क मंत्रियों की परिषद की बैठक के लिए 7-8 दिसंबर 2007 तक नई दिल्ली का दौरा किया। सार्क बैठक में अतिरिक्त समय के दौरान विदेश मंत्री ने उनके साथ द्विपक्षीय बैठक की थी जिसमें वार्ता रूपरेखा के मुद्दों पर चर्चा की गई।

मानवीय मुद्दे

अनेक भारतीय नागरिक मछुआरे और उनकी नौकाएँ पाकिस्तान के कब्जे में हैं। पाकिस्तान भी भारत की जेलों में कैद अपने राष्ट्रिकों के संबंध में चिंतित है। विदेश मंत्री प्रणब मुखर्जी की 13-14 जनवरी 2007 तक हुई पाकिस्तान की यात्रा के दौरान कैदियों के संबंध में एक समिति गठित करने पर सहमति हुई थी जिसके सदस्य उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश होंगे, जो दोनों देशों की जेलों का दौरा करके कैदियों के लिए मानवीय व्यवहार सुनिश्चित करने तथा सजा की अवधि पूरा कर लेने वाले कैदियों की शीघ्र रिहाई के लिए उपाय करने के प्रस्ताव देंगे। तदुपरांत समिति का गठन कर दिया गया है जिसमें दोनों देशों से 4-4 न्यायाधीश हैं और जिसकी बैठक शीघ्र होने की आशा है। 3-4 जुलाई 2007 तक हुई गृह सचिव स्तरीय वार्ता में दोनों देशों में कैद एक दूसरे देश के नागरिकों की स्थिति पर व्यापक चर्चा हुई। दोनों पक्षों ने इस बात पर सहमति व्यक्ति की थी कि एक दूसरे देश में कैदियों की संख्या का सही-सही पता लगाने के लिए उपाय किए जाने चाहिए ताकि आवश्यक औपचारिकताएँ पूरी हो जाने बाद उनकी शीघ्र रिहाई को सुकर बनाया जा सके।

पाकिस्तान की जेलों में कैद भारतीय युद्धबन्दियों का मामला पाकिस्तान के साथ द्विपक्षीय संबंधों में एक महत्वपूर्ण मुद्दा रहा है। भारत सरकार निरंतर इस मामले को पाकिस्तान की सरकार के साथ उठाती रही है। जनवरी 2007 में पाकिस्तान के विदेश मंत्री की यात्रा के दौरान राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ ने भारत के गुमशुदा रक्षा कार्मिकों के रिश्तेदारों के एक शिष्टमंडल द्वारा पकिस्तान की जेलों की यात्रा करवाने पर सहमति व्यक्त की थी। गुमशुदा रक्षा कार्मिकों के परिवारों के 13 सदस्यीय समूह ने 1-14 जून 2007 तक पाकिस्तान में 10 जेलों का दौरा किया। इस यात्रा का कोई परिणाम नहीं निकल सका क्योंकि गुमशुदा भारतीय रक्षा कार्मिकों की नियति के बारे में पता लगा पाना सम्भव नहीं हुआ।

संयुक्त आतंकवाद रोधी तंत्र

भारत के प्रधान मंत्री डा. मनमोहन सिंह और पाकिस्तान के राष्ट्रपति जनरल परवेज मुशर्रफ के बीच 16 सितंबर 2006 को हवाना, क्यूबा में हुई बैठक में एक संयुक्त आतंकवाद रोधी तंत्र गठित करने पर सहमति हुई थी। संयुक्त आतंकवाद रोधी तंत्र की पहली बैठक 6-7 मार्च 2007 तक हुई जिसमें यह निर्णय लिया गया कि (1) आतंकवादी कृत्यों के संबंध में दोनों पक्षों में चल रही जाँच में सहायता, और (2) दोनों देशों में हिंसा और आतंकवादी कृत्यों की रोकथाम के लिए इस तंत्र के जरिए विशिष्ट सूचनाओं का आदान-प्रदान किया जाएगा। संयुक्त आतंकवाद रोधी तंत्र की दूसरी बैठक 22 अक्तूबर 2007 को नई दिल्ली में हुई। दोनों पक्षों ने संयुक्त आतंकवाद रोधी तंत्र की पहली बैठक और बीच की अवधि के दौरान दी गई सूचनाओं के आधार पर की गई कार्रवाइयों पर अनुवर्ती कार्रवाई की समीक्षा की। दोनों पक्षों ने इस तंत्र की पिछली बैठक के बाद से हुई आतंकवादी घटनाओं पर नई जानकारियों का भी आदान-प्रदान किया। उन्होंने इस प्रयोजनार्थ उपायों की पहचान करने, विशेष सूचनाओं का आदान-प्रदान करने तथा जाँच में सहायता देने का कार्य जारी रखने पर सहमति व्यक्त की। भारत सरकार के लिए यह तंत्र अत्यंत महत्वपूर्ण है और इसका मानना है कि यदि इसका प्रभावपूर्ण क्रियान्वयन किया जाता है तो यह एक अत्यंत उपयोगी औजार साबित होगा

वाणिज्य और व्यापार

व्यावसायिक क्रियाकलाप का संवर्धन पाकिस्तान के साथ भारत की नीति का एक अनिवार्य घटक है। वित्तीय वर्ष 2005-06 में 859.33 मिलियन अमरीकी डालर की तुलना में वित्तीय वर्ष 2006-07 में 1.66 बिलियन अमरीकी डालर का व्यापार हुआ। वर्ष 2006-07 में पाकिस्तान को भारत द्वारा कुल 1.34 बिलियन अमरीकी डालर का निर्यात किया गया जबकि भारत ने पाकिस्तान से 0.32 बिलियन अमरीकी डालर का आयात किया। वर्ष 2007-08 (अप्रैल-जुलाई 2007) में कुल द्विपक्षीय व्यापार 616.55 मिलियन का हुआ जिसमें से भारत का निर्यात 535.91 मिलियन अमरीकी डालर का रहा और पाकिस्तान का भारत को निर्यात

80.64 मिलियन अमरीकी डालर का रहा। भारत द्वारा पाकिस्तान को किए जाने वाला निर्यात एक सकारात्मक सूची के आधार पर होता है क्योंकि पाकिस्तान ने भारत को न तो मोस्ट फेवर्ड नेशंस (एमएफएन) का दर्जा दिया है और न ही इसने दक्षिण एशियाई मुक्त व्यापार करार (साफ्ता) के अंतर्गत अपेक्षित अनिवार्य टैरिफ रियायतें ही दी हैं।

जैसा कि नई दिल्ली में आयोजित सार्क शिखर सम्मेलन के दौरान अतिरिक्त समय में 4 अप्रैल 2007 को भारत के प्रधान मंत्री और उनके पाकिस्तानी समकक्ष के बीच हुई बातचीत में सहमति हुई थी। पाकिस्तान से भारत में सीमेंट के आयात को सुविधाजनक बनाया गया। विदेशी उत्पादक प्रमाणन योजना के तहत पाकिस्तान के 13 सीमेंट उत्पादकों को भारत में सीमेंट का निर्यात करने के लिए लाइसेंस दिया गया है।

एक अन्य घटनाक्रम में अगस्त 2007 में दोनों देशों ने अगस्त 2007 में एक दूसरे देशों के ट्रकों को बाघा/अटारी सीमा से एक दूसरे पक्ष में एक निर्धारित बिन्दु तक ले जाने पर सहमति व्यक्त की और इस सहमति का क्रियान्वयन 1 अक्तूबर 2007 से ही किया जा रहा है। सहमत वस्तुओं के व्यापार के लिए नियंत्रण रेखा पर श्रीनगर-मुजफ्फराबाद ट्रक सेवा आरम्भ करने के लिए प्रयास किये जा रहे हैं। व्यापार और आर्थिक सहयोग कार्यसूची के महत्वपूर्ण अनसुलझे मुद्दों में शामिल हैं- संस्था के अंतर्गत पाकिस्तान की वचनबद्धताओं को प्रभावी क्रियान्वयन और अफगानिस्तान के साथ व्यापार के लिए पारगमन हेतु अपने क्षेत्र के उपयोग की अनुमति।

दक्षिण एशियाई प्रतिभूति विनियमन मंच की दूसरी वार्षिक बैठक के दौरान अतिरिक्त समय में 28 जनवरी 2008 को भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड तथा पाकिस्तान प्रतिभूति एवं विनिमय आयोग के बीच सूचनाओं के आदान-प्रदान को सुविधाजनक बनाने के लिए एक समझौता ज्ञापन संपन्न किया गया।

अन्य महत्वपूर्ण घटनाक्रम

बगलिहार परियोजना के संबंध में पाकिस्तान की आपत्तियों पर विचार करने के लिए मई 2005 में विश्व बैंक द्वारा नियुक्त निष्पक्ष विशेषज्ञ प्रोफेसर रेमंड लफीते ने 12 फरवरी 2007 को अपना निर्यय दिया। इस निर्णय में परियोजना की भारत की समग्र डिजाइन का समर्थन किया गया।

समझौता एक्सप्रेस में हुए आतंकवादी हमलों के शिकार व्यक्तियों के नजदीकी रिश्तेदारों को मुआबजा दिया गया है। 18 फरवरी 2007 को हुई घटना के उपरान्त सरकार ने आतंकवादी हमलों के शिकार प्रत्येक पाकिस्तानी राष्ट्रिकों के कानूनी उत्तराधिकारी को 10 लाख रुपये का मुआबजा देने की घोषणा की थी।

श्रीलंका

विशेष रूप से आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में सम्पर्कों के विस्तार के जरिए भारत-श्रीलंका संबंध और भी सुदृढ़ हुए। समीक्षधीन अवधि के दौरान दोनों देशों के बीच सर्वोच्च राजनीतिक स्तर पर अनेक यात्राएँ हुईं। राष्ट्रपति महेंद्रा राजपक्षे ने 3-4 अप्रैल 2007 तक नई दिल्ली में आयोजित सार्क शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए भारत का दौरा किया। हिंदुस्तान टाइम्स लीडरशिप समिट में भाग लेने के लिए उन्होंने पुनः 13-14 अक्तूबर 2007 तक भारत का दौरा किया। अपनी यात्रा के दौरान राष्ट्रपति राजपक्षे ने प्रधान मंत्री डा. मनमोहन सिंह और संप्रग अध्यक्षा श्रीमती सोनिया गाँधी के साथ मुलाकात की। प्रधान मंत्री ने 24 नवंबर 2007 को कम्पाला, उगांडा में आयोजित राष्ट्रमंडल शासनाध्यक्षों की बैठक् के दौरान अतिरिक्त समय में राष्ट्रपति राजपक्षे से मुलाकात की।

विदेश मंत्री रोहित बोगोलागामा ने 4 जुलाई 2007 को भारत का दौरा किया और उन्होंने विदेश मंत्री प्रणब मुखर्जी के साथ मुलाकात की। खाद्य एवं कृषि मंत्री शरद पवार ने श्रीलंका के राष्ट्रपति के आमंत्रण पर 23-25 मई 2007 तक श्रीलंका का दौरा किया। श्रम एवं रोजगार राज्य मंत्री आस्कर फर्नांडीस ने ''एन इंटरनेशनल लीगल इनिशिएटिव टू स्ट्रेंग्थन नेशनल रिस्पांसेज टू एचआईवी एड्स एट दी वर्कप्लेस'' शीर्षक पर अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन द्वारा आयोजित उच्चस्तरीय संगोष्ठी में भाग लेने लिए 21 अगस्त को श्रीलंका का दौरा किया। वित्त मंत्री पी. चिदंबरम ने लक्षमन कादिरगमर अंतर्राष्ट्रीय संबंध और स्मारक अध्ययन संस्थान में वार्षिक व्याख्यान देने के लिए 11 नवंबर 2007 को श्रीलंका का दौरा किया। श्रीलंका के विदेश मंत्री रोहित बोगोलागामा ने 7-8 दिसंबर 2007 तक नई दिल्ली में आयोजित सार्क मंत्रियों की परिषद के 29वें सत्र में भाग लिया। इन यात्राओं के दौरान होने वाली बातचीत में भारत ने इस बात के प्रति अपना विश्वास व्यक्त किया कि श्रीलंका की जातीय समस्या का कोई सैन्य समाधान नहीं हो सकता और इसका एकमात्र तरीका वार्ता पर आधारित राजनीतिक समाधान ही है, जो श्रीलंका के सभी समुदायों को स्वीकार्य हो।

इस वर्ष द्विपक्षीय, आर्थिक और वाणिज्यिक सम्पर्कों का विस्तार जारी रहा। भारत, श्रीलंका के लिए आयात का सबसे बड़ा स्रोत और श्रीलंकाई निर्यातों का तीसरा सबसे बड़ा गंतव्य है। भारत-श्रीलंका मुक्त व्यापार करार से उत्पन्न गति जारी रही, जैसा कि पिछले वर्षों के दौरान द्विपक्षीय व्यापार के टर्नओवर में सतत और तीव्र वृद्धि से परिलक्षित होता है। अप्रैल-सितंबर 2007 की अवधि के दौरान 1.6 बिलियन अमरीकी डालर का व्यापार हुआ, जबकि वर्ष 2006 में इसी अवधि के दौरान 1.3 बिलियन अमरीकी डालर का हुआ था। दोनों पक्षों ने एक व्यापक आर्थिक भागीदारी

करार पर अपनी बातचीत को आगे बढ़ाया। व्यापक आर्थिक भागीदार करार पर 11वें दौर की वार्ता 2-4 जनवरी 2008 तक कोलम्बो में हुई। नवीनतम आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2007 में भारत, श्रीलंका में चौथा सबसे बड़ा निवेशक है। महत्वपूर्ण भारतीय निवेशकों में भारतीय तेल निगम, आईसीआईसीआई बैंक, भारतीय स्टेट बैंक, टाटा, सीएट, निकालेस पिरामल, विदेश संचार निगम लिमिटेड शामिल हैं।

नागर विमानन और पर्यटन क्षेत्र में भारत-श्रीलंका सहयोग द्विपक्षीय संबंध का एक महत्वपूर्ण पहलू है। श्रीलंका की राष्ट्रीय वायु सेवा कंपनी श्रीलंकन एअरलाइंस अब भारत के विभिन्न गंतव्यों के लिए प्रति सप्ताह 100 उड़ान भर रही है। श्रीलंका के लिए भारतीय हवाई कंपनियों की उड़ानों की संख्या भी बढ़ी है। नागर विमानन क्षेत्र में सहयोग से दोनों देशों के बीच और लागों से लोगों के बीच संपर्क बढ़ाने में योगदान मिला है।

भारत ने श्रीलंका को विकास सहायता उपलब्ध कराना जारी रखा। भारत ने 200 नेनासलास (कंप्यूटर केंद्र) की स्थापना करने के लिए वित्तीय सहायता दी। भारत, श्रीलंका के पूर्वी प्रांत में जातीय संघर्षों से प्रभावित मछुआरों की सहायता के लिए एक परियोजना भी चला रहा है। उन्हें मछली पकड़ने वाली नौकाएँ, जाल, शीतगृह तथा शीत भंडारण वाले ट्रक मुहैया कराए जा रहे हैं। श्रीलंका के चाय बागानों और अन्य बागान क्षेत्रों में रह रहे भारतीय मूल के लोगों के लिए चिकित्सा सुविधाओं में सुधार और उनके बच्चों की शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अनेक परियोजनाएँ चलाई जा रही हैं।

भारत ने मानव संसाधन विकास के क्षेत्र में श्रीलंका को सहायता देना जारी रखा। वर्ष 2006 में आरंभ की गई श्रीलंका के 100 छात्रों को महात्मा गाँधी छात्रवृत्ति दिए जाने संबंधी योजना को इस वर्ष भी दोहराया गया। ये छात्रवृत्तियाँ प्रतिभाशाली श्रीलंकाई छात्रों को भारत द्वारा दी जाने वाली अन्य विभिन्न छात्रवृत्तियों के अतिरिक्त है। शिक्षा से संबद्ध संयुक्त कार्यकारी समिति की बैठक 11-13 दिसंबर 2007 तक कोलम्बो में हुई।

जहाँ तक सांस्कृतिक क्षेत्र का प्रश्न है, भारतीय सांस्कृतिक केंद्र द्वारा चलाई जा रही नियमित गतिविधियों में कला और संस्कृति क्षेत्र के प्रसिद्ध व्यक्तियों की यात्राएं और भारत से गई सांस्कृतिक मंडलियों के कार्यक्रम आयोजित किए गए।

■■

दक्षिण पूर्व एशिया और प्रशांत 2

आस्ट्रेलिया

भारत-आस्ट्रेलिया द्विपक्षीय संबंध सभी क्षेत्रों में विकसित होते रहे। इस वर्ष के दौरान अनेक मंत्रिस्तरीय यात्राएँ हुईं:

- इस्पात, रसायन एवं उर्वरक मंत्री राम विलास पासवान के नेतृत्व में एक शिष्टमंडल 24-29 जून 2007 तक आस्ट्रेलिया गया।
- कपड़ा मंत्री शंकरसिंह बघेला ने 2-5 जुलाई 2007 तक आस्ट्रेलिया का दौरा किया।
- स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री डा. ए. रामदास ने एचआईवी/एड्स पर सिडनी में आयोजित तृतीय मंत्रिस्तरीय बैठक में भाग लेने के लिए 20-27 जुलाई 2007 तक आस्ट्रेलिया का दौरा किया।
- कृषि, उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण राज्य मंत्री डा. अखिलेश सिंह ने 6-8 जुलाई 2007 तक आस्ट्रेलिया का दौरा किया।
- वित्त राज्य मंत्री पवन कुमार बंसल ने सिडनी में बैंक ऑफ बड़ौदा की शाखा का उद्घाटन करने के लिए सितंबर 2007 में आस्ट्रेलिया का दौरा किया।

इस वर्ष के दौरान हुई अन्य यात्राओं में शामिल हैं- हरियाणा विधान सभा के अध्यक्ष डा. आर.एस. कादियन की अप्रैल 2007 में; आस्ट्रेलिया में सामान और सेवा कर प्रणाली का अध्ययन करने के लिए राज्य वित्त मंत्रियों की अधिकार प्राप्त समिति का एक शिष्टमंडल मई 2007 में; पांडिचेरी के उपराज्यपाल मुकुट मिथि मई 2007 में; राष्ट्रीय रक्षा कालेज के कमांडेंट वाइस एडमिरल संजीव भसीन की अक्तूबर 2007 में।

आस्ट्रेलिया की ओर से रक्षा मंत्री ब्रेंडन नेल्सन ने 10 से 13 जुलाई 2007 तक भारत का दौरा किया। इस यात्रा के दौरान आदान-प्रदान की गई वर्गीकृत सूचनाओं के संरक्षण पर एक करार सम्पन्न किया गया।

वर्ष 2006-07 (जुलाई-जून) के दौरान भारत-आस्ट्रेलिया व्यापार 11.4 बिलियन आस्ट्रेलियाई डालरों का रहा अर्थात पिछले वर्ष की तुलना में 32.4% की वृद्धि दर्ज की गई। भारत और आस्ट्रेलिया अगस्त 2007 में मुक्त व्यापार करार सम्पन्न करने के लिए व्यवहार्यता अध्ययन कराने पर सहमत हुए।

खनन एवं ऊर्जा क्षेत्र में भारत-आस्ट्रेलिया सहयोग में वृद्धि जारी रही। ऊर्जा और खनिजों से संबद्ध भारत-आस्ट्रेलिया संयुक्त कार्यकारी दल की पांचवीं बैठक जुलाई 2007 में कैनबरा में हुई। रिलाइंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड को पश्चिमी आस्ट्रेलिया में एक्सप्लोरेशन का लाइसेंस दिया गया और आस्ट्रेलियाई कंपनी सैंटोस ने एनईएलपी-VI के तहत बंगाल की खाड़ी में दो एक्सप्लोरेशन ब्लाक्स प्राप्त किए।

रक्षा के क्षेत्र में भी संबंधों में विकास होता रहा। आस्ट्रेलियाई रक्षा मंत्री की यात्रा के अतिरिक्त आस्ट्रेलियाई रक्षा बल के प्रमुख एसीएम अंगुस ह्युस्टन ने मई 2007 में और आस्ट्रेलियाई नौसेना के वाइस एडमिरल रुस साल्डर्स ने अगस्त 2007 में भारत का दौरा किया।

भारत आस्ट्रेलिया के लिए कुशल कार्मिकों का दूसरा सबसे बड़ा स्रोत और विदेशी छात्रों का दूसरा सबसे बड़ा स्रोत बनकर उभरा है।

ब्रुनेई दारस्लाम

भारत और ब्रुनेई दारस्लाम के बीच द्विपक्षीय संबंध सौहार्दपूर्ण और मैत्रीपूर्ण रहे। कार्यकलाप के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में शामिल हैं- राजनैतिक, आर्थिक एवं वाणिज्यिक, सूचना प्रौद्योगिकी तथा प्रतिरक्षा।

ब्रुनेई निवेश एजेंसी के एक प्रतिनिधि मंडल ने 2-3 अगस्त 2007 तक नई दिल्ली और मुम्बई का दौरा किया।

कम्बोडिया

8-10 दिसंबर 2007 तक कम्बोडियाई प्रधान मंत्री हुन सेन की भारत की राजकीय यात्रा से कम्बोडिया के साथ भारत के संबंधों को नई गति मिली। यात्रा के दौरान सजायाफ्ता लोगों के स्थानांतरण, ऋण किश्तों, रक्षा सहयोग, जल संसाधन प्रबंधन, कृषि विकास, तेल एवं गैस क्षेत्र तथा विदेश कार्यालय परामर्शों पर सात करार/समझौता ज्ञापन सम्पन्न किए गए। कम्बोडिया को रियायती शर्तों पर 35.2 मिलियन अमरीकी डालर का नया ऋण देने का प्रस्ताव किया गया।

इससे पूर्व उप प्रधान मंत्री तथा मंत्री होर नामहोंग 17-19 मई 2007 तक भारत के सरकारी दौरे पर आए। अंग्रेजी भाषा प्रशिक्षण केंद्र की स्थापना पर एक समझौता ज्ञापन सम्पन्न किया गया। तदनुरूप नामपेन्ह के प्रतिष्ठित रॉयल अकादमी आफ कम्बोडिया में इस केंद्र को प्रचालित किया गया।

गृह मंत्रालय के 4 सदस्यीय दल ने अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद, संगठित अपराध तथा मादक द्रव्यों के गैर कानूनी व्यापार का मुकाबला करने से संबद्ध करार के अंतर्गत गठित समन्वयन समिति की पहली बैठक में भाग लेने के लिए नवंबर 2007 में कंबोडिया का दौरा किया।

रक्षा सहयोग को नई गति मिली। भारत से सैन्य आसूना महानिदेशक तथा 17 सदस्यीय सेना उच्च कमांड पाठ्यक्रम अध्ययन दल ने कम्बोडिया की यात्रा की। भारत सरकार ने कम्बोडिया की शाही सेना के लिए पैराशूट और दवाएं उपहार स्वरूप भेजीं।

फिजी

भारत ने अंतरिम प्रधान मंत्री कोमोडोर जोसैया भेरेक बैनी मारामा के नेतृत्व वाली फिजी द्वीप गणराज्य की अंतरिम सरकार के साथ अपना क्रियाकलाप जारी रखा। दोनों सरकारों के बीच होने वाले उच्चस्तरीय क्रियाकलापों मुख्यतः लोकतंत्र की शीघ्र वापसी आवश्यकता पर बल दिया गया, ताकि फिजी में स्थिरता लौट सके और वहाँ का आर्थिक विकास हो सके तथा फिजी के बड़े समुदायों में शान्ति और सामंजस्य को बढ़ावा दिया जा सके।

विदेश मामले तथा विदेशी व्यापार अंतरिम मंत्री रातू इपेली नैलाकटाऊ ने 4-6 मार्च 2007 तक नई दिल्ली का दौरा किया। वित्त, राष्ट्रीय योजना तथा चीनी उद्योग के अंतरिम मंत्री महेन्द्र चौधरी ने 10-20 मई 2007 तक नई दिल्ली का दौरा किया। फिजी के कार्यकारी मुख्य न्यायाधीश एंथेनी गेट्स ने 21-26 मई 2007 तक भारत का दौरा किया।

भारत और फिजी द्वीप ने 23 जुलाई 2007 को नई दिल्ली में विदेश कार्यालय परामर्शों का दूसरा दौर सम्पन्न किया।

भारत सरकार ने फिजी में डायलिसिस केन्द्र की स्थापना किए जाने हेतु फिजी के किडनी प्रतिष्ठान को एक लाख अमरीकी डालर का भेंट किया। फिजी के बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिए भी भारत ने 76 हजार फिजी डालर भेंट स्वरूप दिया है। फिजी के सतत विकास के लिए अक्तूबर 2006 और अक्तूबर 2007 में भी एक-एक लाख के सहायता अनुदान दिये गए।

इंडोनेशिया

इस वर्ष इंडोनेशिया के साथ हमारे द्विपक्षीय संबंध और सुदृढ़ हुए। दोनों पक्षों की ओर से अनेक मंत्रिस्तरीय और अधिकारी स्तरीय यात्राएँ हुईं, जिनमें 18 जून 2007 को तीसरे भारत-इंडोनेशिया संयुक्त आयोग की बैठक में भाग लेने के लिए विदेश मंत्री प्रणव मुखर्जी की यात्रा भी शामिल है। संयुक्त आयोग, जिसकी सह अध्यक्षता इंडोनेशिया के विदेश मंत्री नूरहसन बीराजुदा द्वारा की गई; ने अनेक क्षेत्रों में सहायता पर सहमति व्यक्त की। दोनों पक्षों ने नई सामरिक भागीदारी को क्रियान्वित करने के कार्य बिन्दुओं पर भी सहमति व्यक्त की, जिसकी घोषणा वर्ष 2005 में राष्ट्रपति सुशीलो क्वांग मुधोयोनो की राजकीय यात्रा के दौरान शिखर स्तरीय वार्ता में की गई थी।

इस यात्रा के दौरान असेह में निर्माण के लिए एक व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र की स्थापना करने के संबंध में भी समझौता ज्ञापन सम्पन्न किया गया।

असेह के नव चयनित गवर्नर डा. इरवंडी युसुफ के नेतृत्व में एक शिष्टमंडल ने 19-26 अगस्त 2007 तक दिल्ली, गोवा और हैदराबाद का दौरा किया जिसका उद्देश्य राज्य संस्थाओं के निर्माण में भारत के अनुभवों से सीखना था।

भारत के पूर्व राष्ट्रपति डा. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने इंडोनेशियाई विज्ञान केंद्र के निमंत्रण पर बीज व्याख्यान देने के लिए 19-20 नवंबर 2007 तक जकार्ता का दौरा किया।

इंडोनेशियाई पक्ष से सामाजिक मामलों के मंत्री बख्तियार चम्सिया ने 6-7 नवंबर 2007 तक आपदा जोखिम उपशमन पर आयोजित दूसरे एशियाई मंत्रिस्तरीय बैठक में भाग लेने के लिए दिल्ली का दौरा किया। स्वास्थ्य मंत्री डा. शिती फदीला सुपाड़ी ने 4-5 दिसंबर 2007 तक नई दिल्ली में एवियन तथा पैडोमि इन्फ्लुएंजा पर आयोजित मंत्रिस्तरीय सम्मेलन में भाग लिया।

रक्षा क्षेत्र में संयुक्त रक्षा सहयोग समिति की पहली बैठक 12-14 जून 2007 तक जकार्ता में हुई। नौसेना से नौसेना के बीच द्विपक्षीय संबंधों को सुदृढ़ करने के तरीकों पर चर्चा करने के लिए नौसेना से नौसेना स्टाफ के बीच पहली बातचीत 4-5 अप्रैल 2007 तक नई दिल्ली में हुई। इसके उपरान्त 10-13 अप्रैल 2007 तक एडमिरल स्लामेट सोबीजांटो की भारत यात्रा हुई। अंडमान समुद्र मे एक माह तक चलने वाले द्विवार्षिक भारत-इडोनेशियाई समन्वित गश्ती का 10वाँ दौर सितंबर 2007 में आयोजित किया गया।

भारत के छः रक्षा अधिकारी इंडोनेशिया में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। इंडोनेशियाई सशस्त्र बलों के 5 अधिकारियो को रक्षा सेवा स्टाफ कालेज बेलिंगटन, आर्मी वार कालेज, मऊ तथा सशस्त्र बल तकनीकी कालेज, बंगलौर में इस वर्ष के दौरान प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए भेजा गया।

आर्थिक और व्यावसायिक क्षेत्र में तीसरे भारत-इंडोनेशिया संयुक्त आयोग की बैठक के दौरान दोनों पक्ष वर्ष 2010 तक दोतरफा व्यापार 20 बिलियन अमरीकी डालर तक पहुँचाने के उद्देश्य से

भारत की राष्ट्रपति प्रतिभा देवीसिंह पाटील और प्रधानमंत्री, डा. मनमोहन सिंह 5 अक्तूबर 2007 को नई दिल्ली में फिलीपींस की राष्ट्रपति, ग्लोरिया मैकापगल अरोयो के औपचारिक स्वागत समारोह में।

कंबोडिया की शाही सरकार के प्रधानमंत्री, सामदेच हून सेन 8 दिसम्बर 2007 को भारत के उप राष्ट्रपति, एम. हामिद अंसारी से मुलाकात करते हुए।

व्यापार और निवेश के विस्तार को सुविधाजनक बनाते हुए व्यापार की मदों को विविधतापूर्ण बनाने के लिए एक कार्य योजना बनाने पर सहमति हुई थी। इस बैठक के दौरान विशेष आर्थिक क्षेत्रों और ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों से लेकर कानूनी सहायता, जैव प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष से संबंधित अनुप्रयोगों, दूर शिक्षा तथा दूर स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग बढ़ाने की पहचान की गई।

गृह मंत्रालय के अधिकारियों तथा मांस निर्यात उद्योग के प्रतिनिधियों वाले एक प्रतिनिधि मंडल ने इंडोनेशिया में भारतीय मांस के निर्यात पर लगे प्रतिबंध को उठाने पर चर्चा करने के लिए 29-30 अक्तूबर 2007 तक भारत-इंडोनेशिया का दौरा किया।

एक व्यापक आर्थिक सहयोग करार संपन्न किए जाने हेतु व्यवहार्यता अध्ययन करने के लिए भारत-इंडोनेशिया संयुक्त अध्ययन दल की पहली बैठक 30-31 अक्तूबर 2007 तक जकार्ता में हुई।

टाटा पावर कंपनी लिमिटैड 1.3 बिलियन अमरीकी डालर की लागत से इंडोनेशिया के प्रमुख कोयला खदानों पीटी काल्टिम प्राइमाकोल (केपीसी) तथा पीटी एरुटमिन इंडोनेशिया में 30 प्रतिशत हिस्सेदारी की खरीद करने के लिए एक करार पर हस्ताक्षर किया। बैंक आफ इंडिया ने 5.24 मिलियन अमरीकी डालर में इंडोनेशिया के बैंक स्वदेशी में 76 प्रतिशत हिस्सेदारी प्राप्त की। टीडीएस मोटर्स ने जुलाई 2007 में जकार्ता के करावांग में अपने दो पहिया निर्माण केंद्रों का शुभारम्भ किया (80 मिलियन अमरीकी डालर का निवेश)।

जनवरी-जून 2007 के दौरान द्विपक्षीय व्यापार 52.4 प्रतिशत बढ़कर 3.116 मिलियन अमरीकी डालर तक पहुँच गया (वर्ष 2006 में इसी अवधि की तुलना में)। इंडोनेशिया से भारत को किए जाने वाला आयात 77.6 प्रतिशत बढ़कर 2269 मिलियन अमरीकी डालर तक पहुँच गया, जबकि हमारे निर्यात ने 10.4 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की जो 847 मिलियन अमरीकी डालर का हो गया।

जवाहरलाल नेहरू भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, जकार्ता और भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, बाली में सांस्कृतिक आदान-प्रदान और समझ-बूझ को बढ़ावा देने में अपनी सक्रिय भूमिका निभाना जारी रखा।

लाओ लोकतांत्रिक जन गणराज्य

द्विपक्षीय और आसियान से जुड़े मंचों के जरिए भारत और लाओ लोकतांत्रिक जन गणराज्य के बीच विकास भागीदारी के समग्र बातचीत के अंतर्गत अनेक सहयोगी परियोजनाएँ इस वर्ष के दौरान आगे बढ़ीं।

भारत ने लाओ लोकतांत्रिक जन गणराज्य में कृषि और सिंचाई परियोजना के लिए 17.34 मिलियन अमरीकी डालर के ऋण का अनुमोदन किया। लाओ के 30 राष्ट्रिकों ने भारत लाओ लोकतांत्रिक जन गणराज्य के बीच विद्यमान द्विपक्षीय आईसीटी सहयोग कार्यक्रम के अंतर्गत जुलाई 2006 में मास्टर ऑफ कंप्यूटर अप्लीकेशन (एमसीए) कार्यक्रम के लिए गुरु गोबिंद सिंह इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय में नामांकन कराया।

भारत ने भारत-आसियान सहयोग ढाँचे के अंतर्गत लाओ राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में लाओ-भारत अंग्रेजी भाषा प्रशिक्षण केंद्र की भी स्थापना की है। भारत सरकार ने एवियन इनफ्लूएंजा की रोकथाम के लिए चिकित्सा उपकरणों की खरीद हेतु लाओ लोकतांत्रित जन गणराज्य के स्वास्थ्य मंत्रालय को एक लाख अमरीकी डालर का अनुदान दिया है। भारत ने यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल वाटफू के जीर्णोद्धार और अंकोरवाट से पूर्व के एक हिन्दू मंदिर के जीर्णोद्धार के लिए भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की ओर से लाओ लोकतांत्रिक जन गणराज्य के साथ एक समझौता ज्ञापन सम्पन्न किया।

मलेशिया

वर्ष 2007 भारत और मलेशिया के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना की 50वीं वर्षगाँठ थी। फरवरी 2007 में नई दिल्ली में आयोजित चौथे भारत-मलेशिया संयुक्त आयोग की बैठक में लिए गए निर्णयों पर अनुवर्ती कार्रवाई के रूप में विभिन्न क्षेत्रों में हमारे क्रियाकलापों को और गति मिली।

वर्ष 2006 में मिले संकेत के आधार पर व्यावसायिक संबंध और सुदृढ़ हुए तथा वर्ष 2007 के पहले 7 महीनों के दौरान द्विपक्षीय व्यापार 4.1 बिलियन अमरीकी डालर का हो गया। अर्थात 2006 में इसी अवधि की तुलना में लगभग 16 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

आर्थिक क्षेत्र में भारत और मलेशिया ने भारत के वाणिज्य सचिव और मलेशिया के उनके समक्ष के द्वारा 11 अगस्त 2007 को हस्ताक्षरित संयुक्त अध्ययन दल की रिपोर्ट को अंगीकार किया, जिसके जरिए भारत-मलेशिया व्यापारिक, आर्थिक सहयोग करार का मार्ग प्रशस्त होगा।

''मल्टिपल डेजिगनेशन'' प्रावधान जिसके तहत दोनों पक्ष भारत-मलेशिया मार्ग पर अपनी इच्छा के अनुसार एयरलाइनों की संख्या बढ़ा सकते हैं; का समर्थन करते हुए 13 जुलाई 2007 को नागर विमानन सचिव और मलेशिया परिवहन मंत्रालय के महासचिव के बीच वायु सेवाओं पर एक द्विपक्षीय समझौता ज्ञापन संपन्न कियागया। इस समझौता ज्ञापन के अंतर्गत दोनों पक्षों की क्षमता पात्रता को भी पर्याप्त रूप से उदार बनाया गया है। एयर इंडिया की बजट सहायक कंपनी एयर इंडिया एक्सप्रेस ने 28 अक्तूबर 2007 को चेन्नई-क्वालालम्पुर सेक्टर में अपना प्रचालन आरम्भ कर दिया।

मलेशिया में भारतीय निवेश को भी गति मिली है। एयरलाइंस इंडस्ट्रीज लिमिटैड ने सितंबर 2007 में हुआलोन कारपोरेशन को खरीदा। बल्लारपुर इंडस्ट्रीज लिमिटेड (थापर समूह) ने अप्रैल 2007 में साबा फारेस्ट उद्योगों को प्राप्त किया, तो लार्सन एंड ट्रबो ने अक्तूबर 2007 में टामको कारपोरेट होल्डिंग्स को खरीदा। सितम्बर में सत्यम ने भारत के बाहर सबसे बड़े साफ्टवेयर केंद्र के रूप में अपने मलेशिया में किए जा रहे कार्यों का विस्तार करने की महत्वाकांक्षी योजना के रूप में साइबरजया में 500 सीटों वाले नये और आधुनिक ग्लोबल सोलुशंस सेंटर का उद्घाटन किया।

इस वर्ष के दौरान मलेशिया से भारत में अनेक मंत्रिस्तरीय दौरे हुए। उच्च शिक्षा मंत्री दातो मुस्तफा मुहम्मद ने 100 से अधिक मलेशियाई छात्रों द्वारा संयुक्त परीक्षा तथा कारपोरेट क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी में अनुप्रयोगों के लिए इन्फोसिस द्वारा प्रशिक्षित व्याख्याताओं द्वारा पास किए जाने पर होने वाले समारोहों में भाग लेने के लिए जून 2007 में मैसूर का दौरा किया। मलेशिया के कार्य मंत्री दातोसेरी एस सामी वेल्लू ने 2-3 जुलाई 2007 तक केरल का दौरा किया जिसके दौरान राज्य सरकार और मलेशिया सरकार के बीच किनालुर कोजीकोड में एक नए तकनीकी संवर्धन केन्द्र की स्थापना पर समझौता ज्ञापन सम्पन्न किया गया। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और उद्योग मंत्री दातो सेरी रफीदा अजीज के नेतृत्व में एक उच्चस्तरीय व्यावसायिक शिष्टमंडल 25 नवंबर-1 दिसंबर 2007 तक व्यापार और निवेश मिशन पर नई दिल्ली, मुम्बई और चेन्नई के दौरे पर आया। मलेशिया केंद्रीय बैंक नेगाड़ा के गवर्नर तान श्री डाक्टर जेती अख्तर अजीज ने 2007 में भारत का दौरा किया जिसके दौरान भारतीय रेल और भारतीय बैंकिंग एवं वित्त संस्थान के साथ दो अलग-अलग समझौता ज्ञापन सम्पन्न किया गया।

मलेशियाई शाही वायुसेना के कार्मिकों को प्रशिक्षण देने संबंधी भारत द्वारा सहमति व्यक्त किए जाने से मलेशिया के साथ हमारे रक्षा संबंध और संवर्धित हुए। दूसरी वार्षिक नौसैनिक स्टाफ बातचीत 23-27 अप्रैल 2007 तक क्वालालम्पुर में हुई।

रक्षा क्षेत्र में मलेशिया के लिए हुई कुछ यात्राओं में शामिल हैं- 15-18 अप्रैल 2007 तक विदेश यात्रा कार्यक्रम के भाग के रूप में एयर वार अफेयर कालेज सिकंदराबाद के उच्च एयर कमांड पाठ्यक्रम के 10 अधिकारियों की मलेशिया यात्रा। लेफ्टीनेंट जनरल थानसमैथ्यू, एवीएसएम, एजी ने 8 सितंबर 2007 को क्वालालम्पुर अंतराष्ट्रीय टेटू समारोह में चीफ ऑफ स्टाफ कमेटी के अध्यक्ष का प्रतिनिधित्व करने के लिए क्वालालम्पुर का दौरा किया। संयुक्त युद्ध कालेज, मऊ के 36 उच्च कमान पाठ्यक्रम के डाइरेक्टिंग स्टाफ तथा छात्र अधिकारियों के 16 अधिकारियों ने विदेश यात्रा कार्यक्रम के भाग के रूप में 11-12 सितम्बर 2007 तक मलेशिया का दौरा किया। नेशनल मेरीटाइम फाउंडेशन के कार्यकारी निदेशक कोमोडोर राजीव साहनी और रक्षा मंत्रालय (नौसेना) के समन्वित मुख्यालय के कोमोडोर संदीप टंडन, जेडीएनओ ने ''मलक्का और सिंगापुर जल डमरूमध्य में नौवहन और पर्यावरण संरक्षण के संवधन'' पर आयोजित बैठक में भाग लेने के सिलसिले में 12-15 मार्च 2007 तक मलेशिया का दौरा किया।

मलेशिया की ओर से मलेशियाई सैन्यबल स्टाफ पाठ्यक्रम के 53 अधिकारियों के एक समूह ने 24 जून-जुलाई 2007 तक भारत का दौरा किया।

मलेशियाई रक्षा उप मंत्री के नेतृत्व में मलेशियाई रक्षा मंत्रालय के एक 50 सदस्यीय अभियान दल (केपटाउन-क्वालालम्पुर) ने 20-26 अगस्त 2007 तक भारत से होकर यात्रा की (बाघा बार्डर-मोरेह) मार्ग में इस दल को भारतीय सैन्यबलों ने भरपूर समर्थन और सहायता दी।

भारतीय कामगारों की सुरक्षा और कल्याण से संबंधित एक समझौता ज्ञापन को 28 जून 2007 को अंतिम रूप दिया गया।

राजनीतिक संबंधों की 50वीं वर्षगाँठ को मनाने के लिए मलेशिया के विभिन्न भागों में अनेक उच्चस्तरीय सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

न्यूजीलैंड

2 अक्तूबर 2007 को बेलिंगटन के महापौर केरी प्रेंडरगास्त और गवर्नर जनरल आनंद सत्यानंद ने बेलिंगटन रेलवे स्टेशन के सामने वाले बाग में संयुक्त रूप से महात्मा गाँधी की प्रतिमा का अनावरण किया। न्यूजीलैंड में अनावरण की गई किसी विदेशी की यह पहली प्रतिमा है।

न्यूजीलैंड के व्यापार मंत्री फिलगौफ ने 19-23 अप्रैल 2007 तक भारत का दौरा किया। अपनी यात्रा के अंत में उन्होंने कहा कि भारतीय समकक्ष श्री कमल नाथ के साथ हुई बातचीत का एक उपयोगी परिणाम यह रहा है कि भारत और न्यूजीलैंड मुक्त व्यापार करार के प्रभावों का अध्ययन कराने पर सिद्धांत रूप में सहमत हो गए हैं। उप प्रधान मंत्री तथा वित्त मंत्री माइकल कूलन भी भारत यात्रा पर आए। न्यूजीलैंड के श्रम मंत्री तेवर मलाड और युवा मामले तथा खेल मंत्री ननैया महूता अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लेने के लिए भारत आए उन्होंने अपने समकक्षों के साथ बैठकें कीं।

पंचायती राज, खेल एवं युवा मामलों के मंत्री श्री मणि शंकर अय्यर ने 25-29 मार्च 2007 तक आकलैंड में आयोजित स्थानीय शासन पर राष्ट्रमंडल सम्मेलन में भाग लेने के लिए न्यूजीलैंड का दौरा किया।

कपड़ा मंत्री शंकर सिंह बघेला ने 5-8 जुलाई 2007 तक न्यूजीलैंड का दौरा किया।

24-26 अक्तूबर 2007 तक न्यूजीलैंड संयुक्त व्यापार समिति संयुक्त वाणिज्य परिषद की बैठकें हुईं।

पापुआ न्यूगिनी

पापुआ न्यूगिनी के साथ भारत के संबंध लगातार आगे बढ़ रहे हैं। पापुआ न्यूगिनी सोलोमन द्वीप तथा बनातू ने संयुक्त राष्ट्र संघ लेखा परीक्षा मंडल (एशियाई सीट); ''एशियाई'' क्षेत्रसे संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में अस्थाई सदस्यता; विश्व मौसम विज्ञान संगठन तथा राष्टमंडल महासचिव जैसे विभिन्न अंतराष्ट्रीय संगठनों में भारत की उम्मीदवारी के प्रति समर्थन व्यक्त किया।

आइटेक कार्यक्रम के अंतर्गत भारत सरकार ने एचआईवी/एड्स संसाधन केंद्र स्थापित किए जाने के लिए पापुआ न्यूगिनी को 10 लाख अरब रुपये की वित्तीय सहायता का अनुमोदन किया है।

प्रशांत द्वीप के देशों के लिए भारत सरकार की क्षेत्रीय सहायता पहल के भाग के रूप में सतत विकास के लिए सामाजिक एवं आर्थिक कार्यक्रमों के लिए उपकरण और सामग्रियों की आपूर्ति हेतु एक लाख डालर के अनुदान का अनुमोदन भी किया गया है।

भारत ने सुनामी पीड़ितों के राहत और पुनर्वास के लिए एक लाख अमरीकी डालर की सहायता दी।

एक बड़ी तेल कंपनी आयल सर्च लिमिटेड तथा भारतीय कंपनी ओसवाल प्रोजेक्ट्स ने पोर्ट मोसावी में विश्व के सबसे बड़े अमोनिया और यूरिया उर्वरक संयंत्र को प्राकृतिक गैस की आपूर्ति किए जाने के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। एक अन्य भारतीय कंपनी पोर्ट मोसावी में नारियल तेल एक्स्ट्रैकन संयंत्र स्थापित करने की प्रक्रिया में है।

फिलीपींस

फरवरी 2006 में राष्ट्रपति कलाम की राजकीय यात्रा, जनवरी 2007 में आसियान-भारत तथा पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलनों के लिए प्रधान मंत्री की यात्रा तथा 4-6 अक्तूबर 2007 तक फिलीपींस के राष्ट्रपति ग्लोरिया मकापगल अरोयो की भारत की राजकीय यात्रा से भारत और फिलीपींस के बीच द्विपक्षीय संबंधों को नया आयाम मिला है। इस यात्रा के दौरान निम्नलिखित घोषणाओं/करारों/समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गएः

- द्विपक्षीय सहयोग की रूपरेखा पर संयुक्त घोषणा;
- द्विपक्षीय सहयोग पर संयुक्त आयोग की स्थापना से संबद्ध करार;
- अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद का मुकाबला करने के लिए सहयोग पर संयुक्त घोषणा;
- राजनयिक पासपोर्ट धारकों के लिए वीजा अनिवार्यता में छूट देने से संबद्ध समझौता ज्ञापन;
- क्षेत्रीय ऊर्जा के क्षेत्र में संवर्धित सहयोग पर समझौता ज्ञापन;
- भारत और फिलीपींस के विदेश सेवा संस्थान के बीच सहयोग पर समझौता ज्ञापन;
- फिलीपींस को 15 मिलियन अमरीकी डालर का ऋण दिए जाने के संबंध में भारतीय एक्जिम बैंक और फिलीपींस सरकार के बीच समझौता ज्ञापन;
- भारतीय राज्य व्यापार निगम तथा फिलीपींस अंतर्राष्ट्रीय व्यापार निगम के बीच समझौता ज्ञापन; और
- स्वास्थ्य एवं चिकित्सा के क्षेत्र में सहयोग पर समझौता ज्ञापन।

विदेश मंत्री श्री प्रणब मुखर्जी के नेतृत्व में एक भारतीय शिष्टमंडल अगस्त 2007 में आसियान मंत्रिस्तरीय बैठक/पश्च मंत्रिस्तरीय बैठकों/आसियान क्षेत्रीय मंच मंत्रिस्तरीय बैठकों के लिए फिलीपींस गया।

भारतीय नौसेना के पूर्वी बेड़े के 3 नौसैनिक पोतों नामतः आईएनएस ज्योति, आईएनएस राजन और आईएनएस कुठार ने 5-9 मई 2007 तक मनीला का ''सद्भावना दौरा'' किया।

फिलीपींस के पियरे ऑफ इमीग्रेशन ने चीनी राष्ट्रिकों के साथ-साथ भारतीय राष्ट्रिकों को भी वीजा जारी किए जाने के लिए उच्च जोखिम/प्रतिबंधित श्रेणी वाली सीटों से हटा लिया है। ऐसा फिलीपींस में उत्तरोत्तर बढ़ रहे भारतीय निवेश विशेषतः आईटी क्षेत्र को ध्यान में रखकर तथा पर्यटन के लिए भारतीय यात्रियों को आकर्षित करने के लिए किया गया है।

पिछले दो वर्षों के दौरान व्यावसायिक पायलट लाइसेंस प्राप्त करने के लिए फिलीपींस के निजी पायलट प्रशिक्षण स्कूलों में पढ़ने वाले भारतीय छात्रों की संख्या में तीव्र वृद्धि हुई है। स्थानीय चिकित्सा महाविद्यालयों में भी पिछले दो वर्षों के दौरान भारतीय छात्रों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

सिंगापुर

वर्ष 2007-08 के दौरान भारत और सिंगापुर के बीच विद्यमान मैत्रीपूर्ण संबंधों को और संवर्धित करने के लिए अनेक नई पहलकदमियाँ की गईं। इस संबंध में द्विपक्षीय संबंधों की प्रगति पर नजर रखने के लिए विदेश मंत्रियों के नेतृत्व में गठित संयुक्त मंत्रिस्तरीय समिति उल्लेखनीय है। 18-20 जून 2007 की विदेश मंत्री प्रणब मुखर्जी की सिंगापुर यात्रा के दौरान 19

विदेश मंत्री, प्रणब मुखर्जी 20 जून 2007 को सिंगापुर के प्रधानमंत्री ली सेन लूंग से उनकी यात्रा के दौरान मुलाकात करते हुए।

विदेश राज्य मंत्री, ई. अहमद 19 अक्तूबर 2007 को प्रशांत वार्ता मंच के संबंध में टोंगा अधिराज्य के नरेश जार्ज टोपोऊ वी. से अपनी यात्रा के दौरान मुलाकात करते हुए।

जून 2007 को इस आशय के करार पर हस्ताक्षर किए गए। दोनों देशों ने द्विपक्षीय सुरक्षा गोलमेज वार्ता का गठन करने पर सहमति व्यक्त की है जो दोनों देशों की सुरक्षा एजेंसियों के लिए भी आपसी हित के मुद्दों पर चर्चा करने हेतु एक मंच उपलब्ध कराएगा इसके अतिरिक्त ट्रैक-2 स्ट्रैटजिक वार्ता तंत्र बनाने पर भी सहमति हुई है जो आपसी हित के द्विपक्षीय और अन्तर्राष्ट्रीय मामलों पर वरिष्ठ नीति निर्माताओं को चर्चा करने का अवसर प्रदान करेगा।

दोनों देशों के बीच सम्पन्न समझौता ज्ञापन, जिसके अंतर्गत दोनों देशों की वायु सेना द्विपक्षीय अभ्यास और संयुक्त प्रशिक्षण में शामिल हो सकेंगे; भी एक महत्वपूर्ण घटनाक्रम था। दोनों देशों की सेनाओं के बीच भी ऐसे ही समझौता ज्ञापन संपन्न करने की प्रक्रिया अंतिम रूप दिया जा रहा है।

दोनों देशों के बीच आर्थिक संबंधों में भी निरंतर प्रगति हुई है। एसईसीए की पहले समीक्षा 1 अक्तूबर 2007 को सफलतापूर्वक संपन्न की गई। दोनों देशों को सलाह देने के लिए तथा सहयोग की प्राथमिकता वाले क्षेत्रों की पहचान करने के लिए भारत-सिंगापुर सीईओ मंच स्थापित करने पर भी सहमत हो गए हैं। इसके अतिरिक्त सिंगापुर में भारतीय कंपनियों को सहायता करने तथा साझी चिंताओं पर बातचीत करने के लिए भारतीय उद्योग परिसंघ-भारत व्यावसायिक मंच की स्थापना 20 जून 2007 को विदेश मंत्री की सिंगापुर यात्रा के दौरान की गई है।

सिंगापुर में भारतीय कंपनियों का प्रतिनिधित्व करने के लिए एक नया मंच, जो वाणिज्य परिसंघ के समान ही होगा, का शुभारम्भ 20 जून 2007 को विदेश मंत्री प्रणब मुखर्जी द्वारा किया गया। नया भारत वाणिज्यिक मंच सीआईआई से संबद्ध है और इसका उद्देश्य सिंगापुर में कार्य कर रही लगभग 2600 भारतीय कंपनियों का प्रतिनिधित्व करना है।

सिंगापुर-भारत आर्थिक क्षेत्र स्थापित करने के सिंगापुर के प्रस्ताव पर भी प्रगति हो रही है। मेसर्स एसंडस के नेतृत्व में अनेक कंपनियों ने सिद्धांत रूप में तमिलनाडु में अपने एसईजेड प्रस्तावों के लिए अनुमोदन प्राप्त कर लिया है।

सीआईआई ने 23-24 अप्रैल 2007 को दक्षिण भारत से सिंगापुर के लिए शिक्षा संकेंद्रित विपरीत मिशन पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया। इसमें दक्षिण एशिया के उच्च शैक्षिक संस्थानों के प्रतिनिधि शामिल हुए। इस विपरीत मिशन का प्रमुख उद्देश्य दोनों देशों में उपयोग में लाए जा रहे सर्वोत्तम प्रथाओं का आदान-प्रदान करना तथा सहयोगी अवसरों का पता लगाना था।

प्रथम पूर्व एशिया ऊर्जा मंत्रियों की बैठक 23 अगस्त 2007 को सिंगापुर में हुई। सचिव (पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस) ने इस बैठक में भारत का नेतृत्व किया।

कुछ महत्वपूर्ण यात्राएँ निम्नलिखित हैं-

- सिंगापुर के परिवहन और विदेश मामलों के तीसरे मंत्री रेमंड लिन ने अप्रैल 2007 में भारत का दौरा किया। मंत्री के साथ 20 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल भी आया था। मंत्री की चेन्नई यात्रा के दौरान एयर इंडिया और सिंगापुर एयरपोर्ट टर्मिनल सर्विसेस ने 2 मई 2007 को चेन्नई में एक समझौत ज्ञापन संपन्न किया।
- आंध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री डा. वी एस राजशेखर रेड्डी एक उच्चस्तरीय प्रतिनिधि मंडल के साथ 11-13 मई 2007 तक सिंगापुर की यात्रा पर गए। इस यात्रा के दौरान उन्होंने सिंगापुर - भारतीय वाणिज्य एवं उद्योग परिसंघ द्वारा आंध्रप्रदेश में निवेश अवसरों पर आयोजित रोड शो/ सेमिनार का उद्घाटन किया।
- सिंगापुर में जीएसटी के क्रियान्वयन का अध्ययन करने के लिए केंद्र सरकार/पश्चिमी बंगाल, राजस्थान, मध्य प्रदेश, बिहार, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली और उड़ीसा राज्य सरकारों के अधिकारियों के साथ राज्य विद्युत मंत्रियों की एक अधिकार प्राप्त समिति ने 21-23 मई 2007 तक सिंगापुर का दौरा किया।
- रक्षा मंत्री ए. के एंटनी ने वार्षिक संगरीला वार्ता में भाग लेने के लिए 31मई-2 जून 2007 तक सिंगापुर का दौरा किया।
- सिंगापुर के शिक्षा एवं मानव शक्ति मंत्री गान किमयोंग ने 23-31 अगस्त 2007 तक भारत का दौरा किया।
- सिंगापुर के व्यापार और शिक्षा राज्य मंत्री एस. ईश्वरन ने 24-27 सितंबर 2007 तक पांडिचेरी और मुम्बई का दौरा किया। मंत्री महोदय ने 27 सितंबर 2007 को मुम्बई में भारतीय वाणिज्य एवं उद्योग परिसंघ द्वारा आयोजित रिएल एस्टेट शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए अवसंरचना मिशन के नेता के रूप में भारत का दौरा किया।
- सिंगापुर के रक्षा मंत्री तियो ची हीन ने देवलाली में आयोजित होने वाले द्विपक्षीय आर्टिलरी अभ्यासों के सिलसिले में 14-18 अक्तूबर 2007 तक भारत का दौरा किया।
- सिंगापुर के निर्माता मंत्री ली क्वान योव ने अक्तूबर 2007 में भारत का दौरा किया। सिटी एशिया प्रशांत वाणिज्यिक नेता शिखर सम्मेलन, सिंगापुर के सिलसिले में वे पुनः दिसंबर 2007 में भारत आए।
- विदेश मंत्री जार्ज यो ने नवंबर 2007 में भारत का दौरा किया।

- योजना आयोग के उपाध्यक्ष डा. मोंटेक सिंह अहलूवालिया ने 15-17 नवंबर 2007 तक भारत का दौरा किया।
- प्रधान मंत्री डा. मनमोहन सिंह ने तीसरे पूर्व एशिया शिखर सम्मेलन के छठे भारत-आसियान शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए 20-21 नवंबर 2007 तक सिंगापुर का दो दिवसीय दौरा किया।

रक्षा कार्य दल की दूसरी वार्षिक बैठक 3-4 मई 2007 तक सिंगापुर में आयोजित की गई। मई 2007 में इमडेक्स के लिए हमारे नौसेना अध्यक्ष की सिंगापुर यात्रा इस वर्ष एक अन्य महत्वपूर्ण उच्चस्तरीय यात्रा थी। पहली बार भारतीय नौसेना और सिंगापुर गणराज्य की नौसेना ने बंगाल की खाड़ी में 4-8 सितंबर 2007 तक अमरीकी नौसेना, चीनी नौसेना और रायल आस्ट्रेलियन नौसेना के साथ बहुपक्षीय अभ्यास मालावार 02-02 में भाग लिया। फरवरी-अप्रैल 2007 तथा अक्तूबर-नवंबर 2007 में बबीना और देवलाली में क्रमशः आर्मर और आर्टिलरी प्रशिक्षण अभ्यास चलाए गए। दोनों वायुसेनाओं के बीच कलाईकांडा में नवंबर-दिसंबर 2007 में सैन्य अभ्यासों की सिंडेक्स श्रृंखला भी चलाई गई।

चौथी वार्षिक रक्षा नीति वार्ता 8-10 अक्तूबर 2007 तक नई दिल्ली में हुई, जिसकी सह अध्यक्षता भारत और सिंगापुर के रक्षा सचिवों ने की। चौथी रक्षा नीति वार्ता के दौरान दोनों सचिवों द्वारा 9 अप्रैल 2007 को अनिवार्य वित्तीय प्रोतोकोल के साथ भारत में किए जाने वाले वायुसेना द्विपक्षीय अभ्यासों के लिए एक दीर्घावधिक समझौता ज्ञापन सम्पन्न किया गया।

एक भारतीय अधिकारी को मई 2007 से हाल में गठित सशस्त्र डकैती के विरुद्ध क्षेत्रीय सहयोग के लिए सूचना के आदान-प्रदान केंद्र में तैनात किया गया है।

सांस्कृतिक क्षेत्र में नालंदा अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना करने के प्रस्ताव का सिंगापुर सरकार ने समर्थन किया है। नालंदा मेंटरग्रुप जिसके अध्यक्ष प्रोफेसर अमर्त्यसेन हैं और जिसकी स्थापना भारत सरकार ने की है, की पहली बैठक जुलाई 2007 में सिंगापुर में हुई। एशियाई सभ्यता संग्रहालय में 'आन द नालंदा ट्रेलः बुद्धिज्म इन इंडिया चाइना एंड साउथ ईस्ट एशिया' तीसरे पूर्वी एशियाई शिखर सम्मेलन तथा आसियान शिखर सम्मेलन की समाप्ति के पश्चात सिंगापुर के प्रधानमंत्री ली शियेन लुंग और उनकी पत्नी ने 21 नवंबर 2007 को एक स्वागत समारोह और उपर्युक्त प्रदर्शनी को देखने की व्यवस्था कराई। सिंगापुर के प्रधानमंत्री और हमारे प्रधान मंत्री डा. मनमोहन सिंह ने वहाँ उपस्थित लोगों, जिसमें पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन तथा यूरोपीय संघ के राज्याध्यक्ष/शासनाध्यक्ष तथा उनकी पत्नी/पति शामिल थे, को सम्बोधित किया।

थाईलैंड

वर्ष 2007 में भारत और थाईलैंड के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना की 60वीं वर्षगाँठ मनाई गई। इस वर्ष द्विपक्षीय संबंधों में पर्याप्त प्रगति हुई।

इस वर्ष की एक महत्वपूर्ण घटना रही 25-27 जून 2007 तक प्रधान मंत्री शुरायुद चुलानोत की भारत की राजकीय यात्रा। इस यात्रा के दौरान नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने पर एक समझौता ज्ञापन तथा वर्ष 2007-09 के लिए सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम पर हस्ताक्षर किए गए।

इस वर्ष राजकुमारी महाचक्री सिरिनथ्रोन ने दो बार भारत का दौरा किया। पहली यात्रा में 5-10 मार्च 2007 तक उन्होंने नई दिल्ली, आनंद, ऊटी, मैसूर और कोलकाता का दौरा किया। दूसरी बार उन्होंने दोनों देशों के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना की 60वीं वर्षगाँठ मनाए जाने के अवसर पर उनके द्वारा खीचे गए फोटो की प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के लिए 8-9 अगस्त 2007 तक नई दिल्ली का दौरा किया।

वाणिज्य मंत्री किर्क-क्राई जिरापोर्ट ने एक व्यावसायिक प्रतिनिधिमंडल के प्रमुख के रूप में 11-12 अप्रैल 2007 तक भारत का दौरा किया। इसी वर्ष बाद में अपनी दूसरी यात्रा के दौरान उन्होंने 22-25 जून 2007 तक उत्तर-पूर्वी राज्यों का दौरा किया।

उप विदेश मंत्री शवनीत कोगसिरी के नेतृत्व में थाईलैंड के व्यवसाइयों का एक 12 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल एक रोड शो में भाग लेने के लिए 28 जून-4 जुलाई 2007 तक भारत आया।

थाईलैंड के उप प्रधान मंत्री एवं उद्योग मंत्री कोशित पंपिमरास के नेतृत्व में वरिष्ठ अधिकारियों और व्यावसायिक कार्यपालकों का एक प्रतिनिधिमंडल 28 अगस्त-4 सितंबर 2007 तक भारत आया।

विदेश मंत्री श्री प्रणब मुखर्जी ने भारत थाईलैंड संयुक्त आयोग की 5वीं बैठक में भाग लेने के लिए 13-16 सितंबर 2007 तक थाईलैंड का दौरा किया।

पंचायती राज, युवा मामले और खेल तथा उत्तर-पूर्वी क्षेत्र विकास मंत्री मणिशंकर अय्यर ने 10-11 अप्रैल 2007 तक नई दिल्ली में आयोजित होने वाले तीसरे उत्तर-पूर्वी व्यावसायिक शिखर सम्मेलन के संबंध में प्रचार-प्रसार करने के लिए 22-24 मार्च 2007 तक थाईलैंड का दौरा किया। इसी वर्ष बाद में मंत्री महोदय ने 31 अक्तूबर-05 नवंबर 2007 तक थाईलैंड का दौरा किया।

द्विपक्षीय व्यापार 2005-06 के 2286.89 मिलियन अमरीकी

डालर से बढ़कर वर्ष 2006-07 में 3189.96 मिलियन अमरीकी डालर हो गया। अर्थात 39.49 प्रतिशत की वृद्धि हुई। भारत का निर्यात भी 1075.31 मिलियन अमरीकी डालर से बढ़कर 1444.35 मिलियन अमरीकी डालर हो गया। अर्थात 34.32 प्रतिशत की वृद्धि हुई। थाईलैंड से भारत को किए जाने वाला आयात 1211.58 मिलियन अमरीकी डालर से बढ़कर 1745.61 मिलियन अमरीकी डालर का हो गया। अर्थात 44.68 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

इस वर्ष भारत थाईलैंड मुक्त व्यापार करार की व्यापार वार्ता समिति की अनेक बैठकें हुईं। समानों में मुक्त व्यापार करार के संबंध में पर्याप्त प्रगति हुई है। सेवाओं में मुक्त व्यापार करार तथा निवेश पर करार सम्पन्न करने के संबंध में भी चर्चा आरम्भ की गई है।

भारत और थाईलैंड के बीच 1985 में सम्पन्न दोहरे कराधान के परिहार से संबद्ध अभिसमय की समीक्षा के लिए पहले दौर की बातचीत 16-20 जुलाई 2007 तक बैंकाक में हुई।

पिछले वर्षों के दौरान भारत-थाईलैंड के बीच रक्षा सहयोग में निरन्तर वृद्धि हुई है। इस वर्ष के दौरान दोनों पक्षों से अनेक यात्राएँ हुईं।

भारतीय सेना और थाईलैंड की शाही सेना ने आतंकवाद से निपटने सं संबंधित साझा अभियान ''मैत्री 07-01 का अभ्यास 7-19 सितंबर 2007 तक एसआरसी रामगढ़, रांची में किया। थाईलैंड शाही नौसेना के कमांडर इन चीफ एडमिरल सतीरापन कनोत 25-28 मार्च 2007 तक भारत के दौरे पर आए। इस वर्ष के दौरान भारत-थाईलैंड साझा गश्ती के दो दौर हुए। साझा गश्ती का चौथा दौर 2-4 अप्रैल 2007 तक आयोजित किया गया। भारतीय नौसेना के एक पोत और एक डोर्नियर विमान तथा थाईलैंड शाही नौसेना के एचटीएमएस खामरोनसिन ने एक डोर्नियर ने इस गश्ती में भाग लिया। इसके उपरांत साझा गश्ती का 5वाँ दौर हुआ जो 31 अक्तूबर-7 नवंबर 2007 तक आयोजित किया गया। भारतीय नौसेना के वीएनएस त्रिंकत और एक डोर्नियर विमान तथा थाईलैंड शाही नौसेना के एचटीएमएस फुकेट और एक डोर्नियर विमान ने इस गश्ती कार्यक्रम में भाग लिया।

थाईलैंड की शाही नौसेना के अनुरोध पर 22 मई 2007 को भारतीय नौसेना और थाईलैंड की शाही नौसेना के बीच पासेक्स अभ्यास कियागया। भारतीय नौसेना के आईएनएस राणा और आईएनएसएस रंजीत तथा थाईलैंड की शाही नौसेना के एचटीएमएस चाओफ्राया तथा एसटीएमस खामरोनसिन ने इस अभ्यास में भाग लिया।

आईएएफ-आरटीएएफ मिड कनिष्ठ स्तरीय आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत भारतीय वायुसेना और थाईलैंड की शाही वायुसेना के 15-15 सदस्यों ने 19-25 अगस्त 2007 तक एक-दूसरे देश का दौरा किया। सूर्य किरण एरोबिक टीम द्वारा 12 दिसंबर 2007 को बैंकाक में 9 विमानों के साथ एरोबिक प्रदर्शन किया गया।

रक्षा प्रशिक्षण के क्षेत्र में भी भारत और थाईलैंड के बीच पर्याप्त सहयोग हुआ। भारतीय सैन्य अकादमी के साथ चल रहे सहयोग कार्यक्रम के अंतर्गत चुलांग कार्न शाही सैन्य अकादमी के 14 कैडेटों के एक समूह ने 22-29 अक्तूबर 2007 तक भारत का दौरा किया। मेजर जनरल जी डी बक्शी, एसएम वीएसएम, वरिष्ठ निर्देशन स्टाफ (सेना) के नेतृत्व में राष्ट्रीय रक्षा महाविद्यालय के 14 पाठ्यक्रम सदस्यों ने 20-25 मई 2007 तक भारत का दौरा किया।

इस वर्ष के दौरान थाईलैंड में अनेक भारतीय सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। दोनों देशों के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना की 60वीं वर्षगाँठ के अवसर पर श्री कला भारत ने 3 अगस्त 2007 को थाईलैंड के विदेश मंत्रालय द्वारा आयोजित स्वागत समारोह में भरतनाट्यम की प्रस्तुति दी। भारत-थाईलैंड राजनीतिक संबंधों की स्थापना की 60वीं वर्षगाँठ मनाने के लिए आयोजित किए गए कुछ कार्यक्रमों का उल्लेख नीचे किया गया है:

- भारत-थाईलैंड केंद्र द्वारा थम्मासत विश्वविद्यालय में एक अगस्त 2007 को ''थाईलैंड और भारत संबंध, शांति और समृद्धि के लिए भागीदारी'' शीर्षक से एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया।
- 14 सितंबर 2007 को बैंकाक में ''भारत की छवि'' शीर्षक से एक समकालीन प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।
- 25 अगस्त 2007 को बैंकाक में ''भारत की संगीत धरोहर-महान संत कवियों को श्रद्धांजलि'' नामक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

वियतनाम

वर्ष 2007 वियतनाम के साथ द्विपक्षीय संबंधों के लिहाज से एक महत्वपूर्ण वर्ष रहा। इसमें एक महत्वपूर्ण घटना रही 4-6 जुलाई 2007 तक वियतनाम के प्रधान मंत्री न्गूयेन तान डुंग की भारत यात्रा। दोनों प्रधान मंत्रियों ने द्विपक्षीय संबंधों को सामरिक भागीदारी के स्तर तक ले जाने के लिए एक संयुक्त घोषणा पर हस्ताक्षर किए।

लोक सभा अध्यक्ष सोमनाथ चटर्जी के नेतृत्व में एक भारतीय

संसदीय शिष्टमंडल ने 23-27 मार्च 2007 तक वियतनाम का दौरा किया। इस स्तर पर भारतीय संसदीय शिष्टमंडल का दौरा दो से अधिक दशकों के अंतराल के बाद हुआ।

वियतनाम के प्रधान मंत्री न्यूयेन तान डुंग 4-6 जुलाई 2007 तक भारत की राजकीय यात्रा पर आए। इस यात्रा के दौरान ही नई दिल्ली में भारत-वियतनाम संयुक्त वाणिज्यिक परिषद की 5वीं बैठक का आयोजन किया गया। दोनों प्रधान मंत्रियों ने भारत और वियतनाम के बीच सामरिक भागीदारी बनाने पर संयुक्त घोषणा संपन्न की। इस यात्रा के दौरान निम्नलिखित करारों पर हस्ताक्षर किए गएः (1) मात्स्यिकी और कृषि के क्षेत्र में सहयोग पर समझौता ज्ञापन; (2) भारत के परमाणु ऊर्जा विभाग तथा वियतनाम के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के बीच समझौता ज्ञापन; (3) वर्ष 2007-09 के लिए कृषि के क्षेत्र में कार्य योजना; (4) वर्ष 2007-10 के लिए भारत और वियतनाम के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम; (5) वियतनाम के दनांग सिटी में अंग्रेजी भाषा प्रशिक्षण केंद्र की स्थापना के लिए समझौता ज्ञापन; (6) एक दूसरे देश में राजनयिक मिशनों की स्थापना के लिए परिसंपत्तियाँ और भूखंड के आदान-प्रदान करने से संबद्ध समझौता ज्ञापन; (7) शैक्षिक आदान-प्रदान; (8) वियतनाम स्टील कारपोरेशन और टाटा स्टील के बीच सहयोग पर समझौता ज्ञापन। भारत ने वियतनाम के लिए 45 मिलियन अमरीकी डालर के रियायती ऋण की भी घोषण की।

गृह मंत्री श्री शिवराज पाटील ने 8 से 10 अक्तूबर 2007 तक वियतनाम का दौरा किया और वहाँ के सार्वजनिक सुरक्षा मंत्री ले होंग अन्ह के साथ चर्चा की। दोनों मंत्रियों ने आपराधिक मामलों में पारस्परिक विधिक सहायता पर एक करार सम्पन्न किया। भारत के गृह मंत्रालय और वियतनाम के सार्वजनिक सुरक्षा मंत्रालय के बीच सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन के प्रारूप पर भी हस्ताक्षर किए गए। मंत्री महोदय ने हनोई में भारत की पूर्व प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी के नाम पर नामित बाग में उनकी आवक्ष प्रतिमा का अनावरण किया।

टाटा स्टील ने वियतनाम में एक समेकित इस्पात कारखाना स्थापित करने के लिए 29 मई 2007 को वियतनाम स्टील कारपोरेशन के साथ एक करार सम्पन्न किया। प्रस्तावित इस्पात परिसर जिसकी प्रतिवर्ष अनुमानित क्षमता 4.5 मिलियन टन की है, में 3.5 बिलियन अमरीकी डालर का निवेश किए जाने की सम्भावना है और इसका निर्माण व्यवहार्यता अध्ययन पूरा किए जाने के बाद किया जाएगा। टाटा स्टील का थैच खे लौह अयस्क संयुक्त स्टॉक कम्पनी, जो खनन का कार्य करेगी, में भी 30 प्रतिशत की हिस्सेदारी रहेगी। तदनुरूप हा तिन्ह प्रान्त के ऊँग आंग औद्योगिक क्षेत्र में एक कोल्ड रोल्ड इस्पात संयंत्र की स्थापना करने के लिए टाटा स्टील और वियतनाम स्टील कारपोरेशन के बीच हनोई में 31 अक्तूबर 2007 को एक समझौता ज्ञापन संपन्न किया गया, जिसमें भागीदारी की शर्तों का उल्लेख किया गया है। इससे पूर्व एस्सार स्टील ने वियतनाम में 2 मिलियन टन प्रतिवर्ष क्षमता वाले हॉट स्ट्रिप कारखाने की स्थापना करने के लिए 12 फरवरी 2007 को वियतनाम स्टील कारपोरेशन और वियतनाम जनरल रबर कारपोरेशन के साथ एक संयुक्त उपक्रम स्थापित करने से संबंधित करार संपन्न किया था।

वियतनाम के व्यापार और उद्योग उपमंत्री न्यूयेन तान बिएन 33 उपक्रमों के प्रतिनिधियो के साथ नई दिल्ली में आयोजित भारतीय अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेले में भाग लेने के लिए 12-29 नवंबर 2007 तक भारत में रहे।

इस वर्ष रक्षा आदान-प्रदान भी जारी रहे। कर्नल जनरल न्यूयेन हुई ह्यू ने 28-29 नवंबर 2007 तक नई दिल्ली में आयोजित भारत-वियतनाम सुरक्षा वार्ता की तीसरी बैठक में भाग लेने के लिए भारत का दौरा किया। भारतीय नौसेना दो पोतों - आईएनएस मैसूर और आईएनएस रंजीत ने 7-11 मई 2007 तक होची मिन्ह सिटी का सद्भावना दौरा किया। तटरक्षक पोत आईसीजीएस सागर ने 12-14 मई 2007 तक होची मिन्ह सिटी का दौरा किया। मेजर जनरल आर के लिम्बा के नेतृत्व में आर्मी वार कालेज के उच्च कमान पाठ्यक्रम के 17 अधिकारियों के एक समूह ने 2-6 सितंबर 2007 में हैदराबाद में आयोजित विश्व सैन्य खेलों में भाग लिया। रक्षा प्रबंधन कालेज के उच्च रक्षा प्रबंधन पाठ्यक्रम के 32 अधिकारियों के एक समूह ने 11-14 नवंबर 2007 तक वियतनाम का दौरा किया।

पूर्ण राजनयिक संबंधों की स्थापना की 35वीं वर्षगाँठ मनाने के लिए दोनों देशों में अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। राष्ट्रपति और विदेश मंत्री स्तर पर दोनों पक्षों के बीच शुभकामनाओं का आदान-प्रदान किया गया। 5 जनवरी 2007 को भारतीय दूतावास द्वारा हनोई एक समारोह का आयोजन किया गया। 19 जनवरी 2007 को वियतनाम समाजिक विज्ञान अकादमी के दक्षिण-पूर्व एशिया अध्ययन संस्थान में ''भारत का उदय और वियतनाम-भारत संबंधों की संभावनाएँ'' शीर्षक से एक सेमिनार आयोजित किया गया।

प्रशांत द्वीप मंच

भारत ने टोंगा में 38वें प्रशांत द्वीप मंच शिखर बैठक की समाप्ति के पश्चात 18-19 अक्तूबर 2007 को भारत और प्रशांत द्वीप मंच के बीच आयोजित 5वीं पश्च-मंच वार्ता भागीदारों की बैठक में भाग लिया। 18 अक्तूबर 2007 को आयोजित पूर्ण सत्र में टोगा अधिराज्य के प्रधान मंत्री ने मंच के अध्यक्ष के रूप में पश्च-मंच वार्ता भागीदारों के शिष्टमंडलों के नेताओं को प्रशांत नेता शिखर बैठक में हुए विचार-विमर्शों और मंच की विज्ञप्ति के

बारे में बाताया। जलवायु परिवर्तन, ऊर्जा, मात्स्यिकी, पर्यटन तथा स्वास्थ्य पर अलग से चर्चा हुई।

पूर्ण सत्र में विदेश राज्य मंत्री ई. अहमद द्वारा घोषित निम्नलिखित सहायता पैकेज का काफी स्वागत हुआः

- सामाजिक एवं आर्थिक कार्यक्रमों तथा स्थाई विकास के लिए उपकरणों और सामग्रियों की आपूर्ति हेतु प्रशांत द्वीप के 14 पात्र देशों को एक-एक लाख डालर का सहायता अनुदान।
- प्रशांत द्वीप के देशों के अधिकारियों के लिए ''स्थाई विकास पर एक कार्यशाला का आयोजन सूवा में टाटा ऊर्जा अनुसंधान संस्थान द्वारा किया जाएगा।
- विदेश सेवा संस्थान, नई दिल्ली में प्रशांत द्वीप के देशों के राजनयिकों के लिए पाठ्यक्रम चलाया जाएगा।
- भारत के आइटेक कार्यक्रम के अंतर्गत प्रशांत द्वीप के सभी देशों को जारी प्रशिक्षण अवसरों (2007-08 के 67 छात्रवृत्तियाँ) का प्रस्ताव।
- प्रशांत द्वीप के प्रत्येक देश को स्नातक पूर्व अथवा स्नातकोत्तर अध्ययनों के लिए एक-एक छात्रवृत्ति प्रदान किए जाना।

भारत और प्रशांत द्वीप मंच सचिवालय के बीच परामर्शी बैठक 19 अक्तूबर 2007 को हुई। विदेश राज्य मंत्री ई. अहमद ने टोंगा में फिजी, टोंगा, किरबाती, तुवालू, बनवातू, यूके, पीएनजी, समाओ तथा सोलोमन द्वीप के शिष्टमंडलों के नेताओं के साथ द्विपक्षीय बैठकें की और आपसी हित के मामलों पर चर्चा की।

■■

पूर्व एशिया 3

जापान

भारत-जापान के संबंधों में पिछले कुछ वर्षों में महत्वपूर्ण बदलावा आया है, जिसकी एक महत्वपूर्ण वजह नियमित रूप से शीर्ष स्तर के आदान-प्रदानों की सफलता है। प्रधानमंत्री कोइजूमी और प्रधानमंत्री ऐबे ने क्रमशः अप्रैल 2005 और अगस्त 2007 में भारत का दौरा किया। प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह ने दिसंबर, 2006 में जापान का दौरा किया। वर्ष 2006 में प्रधानमंत्री की यात्रा के दौरान हस्ताक्षरित संयुक्त बयान के द्वारा भारत-जापान के सामरिक और सार्वभौमिक साझेदारी की शुरूआत हुई जिसमें दोनों देशों के भावी संबंधों की रूपरेखा बनाने और उस दिशा में विस्तृत कार्य-योजना बनाने की भी परिकल्पना तय की गयी है। भारत-जापान "सामरिक और सार्वभौमिक साझेदारी" सहयोग के पांच स्तंभों अर्थात राजनीतिक, रक्षा और सुरक्षा सहयोग, विस्तृत आर्थिक साझेदारी, विज्ञान और प्रौद्योगिकी की पहल, दोनों देशों के लोगों के आपसी मेलजोल और क्षेत्रीय और बहुपक्षीय मंचों में सहयोग पर आधारित है।

जापान के प्रधानमंत्री, शिंजो ऐबे ने 21-23 अगस्त 2007 के दौरान भारत का सरकारी दौरा किया। दोनों प्रधानमंत्री इस बात पर सहमत थे कि भारत-जापान सामरिक और सार्वभौमिक साझेदारी बढ़ाए जाने की असीम संभावनाएं हैं। इस संबंध में हितों के औचित्य के महत्व को समझते हुए दोनों प्रधानमंत्रियों ने सामरिक और सार्वभौमिक साझेदारी के नए आयामों की रूपरेखा बनाने के संबंध में एक संयुक्त बयान पर हस्ताक्षर किए। वे सभी स्तरों पर सामरिक वार्ता का दायरा बढ़ाने, सुरक्षा और रक्षा के क्षेत्र में किए जा रहे आदान-प्रदान की गुणवत्ता बढ़ाने और वर्ष 2010 तक 20 बिलियन अमरीकी डालर का व्यापारिक लक्ष्य निर्धारित करने, यथाशीघ्र एक व्यापक, आर्थिक साझेदारी करार करने और एक नया भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान संस्थान (आईआईटी) बनाने में सहयोग की संभावनाओं का पता लगाने हेतु एक कार्य दल बनाने के लिए सहमत हुए। ऊर्जा सुरक्षा और पर्यावरणीय सुरक्षा बढ़ाने के संबंध में एक संयुक्त बयान पर भी अलग से हस्ताक्षर किए गए। संसद में दिए गए भाषण में प्रधानमंत्री ऐबे ने कहा कि जापान-भारत को सरकारी विकास संबंधी सहायता देता रहेगा। उनकी यात्रा के साथ एक बड़ा व्यापारिक प्रतिनिधिमंडल और प्रमुख विश्वविद्यालयों के अनेक अध्यक्ष भी गए थे।

दोनों देशों के संबंधों में आए इस सुधार के पश्चात वर्ष 2007 में अनेक मंत्रीस्तरीय, सरकारी और व्यापारिक यात्राओं का दौर प्रारंभ हुआ। जापानी विदेश मंत्री तारो ऐसो ने सार्क शिखर सम्मेलन के लिए 3 अप्रैल 2007 को भारत का दौरा किया; कृषि वानिकी और मत्स्य-पालन मंत्री, तोषीकात्सु मात्सुका ने डब्ल्यूटीओ जी-6 बैठक में भाग लेने के लिए 12-16 अप्रैल 2007 के दौरान भारत की यात्रा की; और भूमि, अवसंरचना और परिवहन मंत्री फूयूशिबा ने अप्रैल-मई 2007 में भारत का दौरा किया। आर्थिक, व्यापार व उद्योग मंत्री अकीरा अमारी ने पहली मंत्रीस्तरीय नीतिगत वार्ता और ऊर्जा वार्ता की दूसरी बैठक के लिए जून-जुलाई 2007 में भारत की यात्रा की। जापान के रक्षा मंत्री कोईवे ने 23-24 अगस्त 2007 को भारत का दौरा किया। जापान के लोकतांत्रिक दल के उपाध्यक्ष कात्सुय ओकादा ने जनवरी 2008 में भारत में एक प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। वित्त मंत्री नुकागा ने जनवरी 2008 में नई दिल्ली की यात्रा की।

भारत के विदेश मंत्री श्री प्रणब मुखर्जी ने जापानी विदेश मंत्री के साथ पहली सामरिक वार्ता के लिए 22-23 मार्च 2007 को जापान की यात्रा की। वे जापान के प्रधानमंत्री शिजो ऐबे से भी मिले और उन्होंने रक्षा मंत्री क्यूमा, प्रधान मंत्रीमंडल सचिव शियोजाकी, अर्थ-व्यवस्था, व्यापार व उद्योग मंत्री (एमईटीआई), अमारी और भूमि, अवसंरचना और परिवहन मंत्री (एनएलआईटी), फूयूशिबा के साथ भी बैठक की। प्रधानमंत्री शिंजो ऐबे और अन्य जापानी संलापकों ने भारत और जापान द्वारा क्षेत्रीय मुद्दों पर और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर एक साथ काम करने के महत्व को रेखांकित किया।

भारत से जिन अन्य उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडलों ने जापान का दौरा किया उनमें कपड़ा मंत्री (4-6 अप्रैल 2007), वाणिज्य और उद्योग मंत्री (23-25 मई 2007), कपड़ा राज्य मंत्री (22-25 जुलाई, 2007), उद्योग राज्य मंत्री (25-28 जुलाई, 2007), जल संसाधन मंत्री (5-8 अगस्त 2007), पर्यटन और संस्कृति मंत्री (12-14 सितंबर 2007), शहरी विकास मंत्री (28-31 अक्तूबर, 2007), राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (6-7 अगस्त 2007), गुजरात के मुख्यमंत्री (16-21 अप्रैल 2007) शामिल थे। इसके अलावा विदेश सचिव, वाणिज्य सचिव, रक्षा सचिव, वायु सेना

अध्यक्ष और महानिदेशक, तट रक्षक ने भी जापान का दौरा किया। उच्च स्तरीय आदान-प्रदान में इस तीव्र वृद्धि के साथ व्यापारिक प्रतिनिधिमंडलों, संसदीय प्रतिनिधिमंडलों का भी व्यापक आदान-प्रदान हुआ है और दोनों देशों के प्रांतीय और स्थानीय सरकारों के मध्य आपसी संपर्क कायम हुआ।

प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह ने 21 नवंबर 2007 को सिंगापुर में आयोजित पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन के अवसर पर जापान के नए प्रधानमंत्री यासूओ फूकूदा से मुलाकात की।

दोनों देशों के बीच सभी आर्थिक मुद्दों पर वार्ता प्रक्रिया तैयार करने की दृष्टि से एक उच्च स्तरीय सामरिक आर्थिक वार्ता की शुरूआत की गयी है। इसकी पहली बैठक, जिसकी सहअध्यक्षता वित्त सचिव और उप-विदेश मंत्री कोहनो द्वारा की गयी थी, 18 जुलाई, 2007 को नई दिल्ली में आयोजित की गयी। प्रधानमंत्री ऐबे की यात्रा के दौरान इस वार्ता को संस्थागत रूप देने पर सहमति हुई।

द्विपक्षीय आर्थिक संबंधों में वृद्धि की अपार संभावनाएं मौजूद होती हैं। प्रधानमंत्री ऐबे की यात्रा के दौरान वर्ष 2010 तक 20 बिलियन अमरीकी डालर का व्यापारिक लक्ष्य प्राप्त करने की दिशा में प्रयास करने पर सहमत हुई। गतिरोध की अवधि के पश्चात हाल के व्यापारिक आंकड़े द्विपक्षीय व्यापार में सकारात्मक वृद्धि को दर्शाते हैं। हमारे वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2006-07 में 7458 मिलियन अमरीकी डालर का दो तरफ व्यापार हुआ (2863 मिलियन अमरीकी डालर का निर्यात तथा 4595 मिलियन डालर का आयात) जो कि पिछले वर्ष की तुलना में 14% अधिक है।

भारत में संचयी विदेशी प्रत्यक्ष निवेश में जापान इस समय 5वां सबसे बड़ा देश है। जापानी कंपनियों ने वर्ष 1991 और मई 2007 के मध्य 2.58 बिलियन अमरीकी डालर का वास्तविक निवेश किया है जिसमें वर्तमान शेयरों के अधिग्रहण के लिए प्राप्त एफडीआई प्रवाह, भारतीय रिजर्व बैंक की एनआरआई स्कीमें, स्टॉक की अदला-बदली व शेयरों के अग्रिम लंबित निर्गम शामिल नहीं हैं। भारत में जापान का अधिकांश प्रत्यक्ष निवेश घरेलू बाजार को ध्यान में रखकर निर्माण उद्योगों में किया गया है।

पिछले चार वर्षों में जापान की सरकारी विकास संबंधी सहायता (ओडीए) सबसे अधिक भारत को ही मिली है। (भारत को वर्ष 2006-2007 में 185 बिलियन येन के समकक्ष 6900 करोड़ रुपए मिले हैं जो कि जापान की सार्वभौमिक ओडीए का 23% हिस्सा है।) जापान के प्रधानमंत्री ऐबे की यात्रा के दौरान इस पर सहमति हुई कि अवसंरचना विकास, पर्यावरण, ऊर्जा, निर्धनता उन्मूलन और सामाजिक क्षेत्र विकास सहित अन्य क्षेत्रों में ओडीए अपनी भूमिका बढ़ाता रहेगा।

दोनों देशों ने जनवरी/फरवरी, 2007 से एक व्यापक आर्थिक साझेदारी करार (सीईपीए) की बातचीत भी प्रारंभ की है। इस बातचीत में भारतीय पक्ष का नेतृत्व वाणिज्य सचिव और जापानी पक्ष का नेतृत्व उप विदेश मंत्री कर रहे हैं। अभी तक पांच दौर की वार्ता हो चुकी है। दोनों पक्ष दो वर्ष की समय सीमा में समझौतों को पूरा करने पर सहमत हैं।

दिसंबर, 2006 में जापान के प्रधानमंत्री के दौरे के दौरान दिल्ली-मुंबई औद्योगिक गलियारे (डीएमआईसी) के विकास के प्रस्ताव पर सहमति हुई थी। 1483 किमी डीएमआईसी का संरेखण अहमदाबाद, पालमपुरा, फुलेरा, रेवाडी और दादरी से होकर है। सचिव, औद्योगिक नीति एवं संवर्द्धन विभाग (डीआईपीपी) एवं जापानी उप मंत्री, आर्थिक, व्यापार एवं उद्योग मंत्रालय (एमईटीआई) द्वारा सह अध्यक्षता वाले एक संयुक्त कार्य बल (जीटीएफ) ने प्रारंभिक अवधारणा-पत्र प्रस्तुत कर दी है। प्रधानमंत्री अबे की यात्रा के दौरान दोनों पक्षों ने पुष्टि की कि वे विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) की तैयारी प्रारंभ करने के लिए डीएमआईसी हेतु परियोजना विकास निधि स्थापित करने के लिए मिलकर कार्य करेंगे। संयुक्त कार्य बल (जेटीएफ) की चौथी बैठक नवंबर 2007 में नई दिल्ली में हुई।

जापान ने ओडीए/एसटीईपी ऋण सहायता के माध्यम से समर्पित फ्रेट कोरिडॉर परियोजना में सहायता करने के लिए अपनी सहमति व्यक्त कर दी है। अक्तूबर 2007 में जापान अंतर्राष्ट्रीय सहयोग एजेंसी (जेआईसीए) का अध्ययन कार्य पूरा हो गया है। दोनों फ्रेट कॉरिडोर मुंबई-दिल्ली (पश्चिमी कॉरिडोर) तथा दिल्ली-हावड़ा (पूर्वी कारिडोर) मार्गों पर चलेंगे। जापान ने प्रधानमंत्री अबे की यात्रा के दौरान इस परियोजना के लिए वित्तीय समर्थन पर विचार करने की अपनी इच्छा की पुनः पुष्टि की। दोनों पक्षों के बीच विवरणों पर चर्चा की जा रही है।

उच्च प्रौद्योगिकी के लिए द्विपक्षीय परामर्शदात्री तंत्र की इस वर्ष मई 2007 और नवंबर 2007 में दो बार बैठक हुई जिसका उद्देश्य प्रधानमंत्री अबे की यात्रा के दौरान हुए समझौते को कार्यान्वित करना है ताकि अपनी-अपनी निर्यात नियंत्रण पद्धति से संबंधित मामलों पर ध्यान दिया जा सके एवं दो तरफ की उच्च प्रौद्योगिकी व्यापार को सुगम बनाने में और आगे प्रगति की जा सके।

भारत के योजना आयोग के उपाध्यक्ष तथा जापान के आर्थिक, व्यापार व उद्योग मंत्री की सह अध्यक्षता में भारत-जापान ऊर्जा वार्तालाप इस वर्ष अप्रैल 2007 व जुलाई 2007 में दो बार हुआ।

इस बातचीत का उद्देश्य ऊर्जा क्षेत्र में सहयोग का व्यापक ढंग से संवर्द्धन करना है।

रक्षा एवं सुरक्षा द्विपक्षीय संबंधों के एक महत्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में उभरकर सामने आए हैं। सांस्थानिक रूपरेखा के रूप में लेन-देन व सहयोग के संवर्द्धन के लिए वर्ष 2007 के कार्यक्रमों के कैलेंडर को अंतिम रूप दिया गया है। अप्रैल 2007 में सचिव स्तर की वार्षिक रक्षा नीति संबंधी बातचीत हुई। भारतीय नौसेना के जहाजों ने सद्भावना अभ्यास के लिए (अप्रैल 2007) जापान का दौरा किया। भारत के वायुसेना प्रमुख व थल सेना प्रमुखों ने क्रमशः जनवरी व अप्रैल 2007 में जापान की यात्रा की। जापान राष्ट्रीय रक्षा अध्ययन संस्थान के एक प्रतिनिधिमंडल ने अपने राष्ट्रपति के नेतृत्व में अगस्त 2007 में भारत वर्ष का दौरा किया। जापानी रक्षा मंत्री वाई कोआइक ने 24-25 अगस्त 2007 को भारत की यात्रा की। भारतवर्ष व जापान ने व्यापक सुरक्षा वार्तालाप (सीएसडी) व सेना से सेना की बातचीत भी की है।

विज्ञान व प्रौद्योगिकी सहयोग सामरिक भागीदारी के एक महत्वपूर्ण तत्व के रूप में उभर रहा है। विज्ञान व प्रौद्योगिकी की पहल के अंतर्गत, दोनों पक्ष नैनो प्रौद्योगिकी, जीव विज्ञान व सूचना व संचार प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में संयुक्त अनुसंधान व विकास कार्यक्रम प्रारंभ करने तथा गहरे समुद्र के वैज्ञानिक ड्रिलींग (भेदन) में सहयोग पर कार्य कर रहे हैं। जुलाई, 2007 में टोकियो में एक आशय-पत्र पर हस्ताक्षर किए गए थे, जिससे हम उच्च ऊर्जा भौतिकी में प्रयोग के लिए अपनी लागत पर सुकुबा में जापानी सुविधा, केईके पर एक "बीम लाइन" का निर्माण कर पाएंगे।

भारत में 13 फरवरी 2007 को नई दिल्ली में जापान महोत्सव का उद्घाटन किया गया। वर्ष 2007 को "भारत-जापान पर्यटन आदान-प्रदान वर्ष" का नाम दिया गया। पर्यटन आदान-प्रदान पर संयुक्त वक्तव्य ने दोनों देशों के बीच 2010 तक 300,000 पर्यटकों (आगंतुकों) तथा 2015 तक 500,000 पर्यटकों (आगंतुकों) का लक्ष्य निर्धारित किया है।

दोनों देशों के उच्च शैक्षिक संस्थानों के बीच शैक्षणिक आदान-प्रदान पर उपकुलपति/राष्ट्रपति की अब तक की प्रथम भारत-जापान वार्ता अगस्त 2007 में प्रधानमंत्री अबे की यात्रा के दौरान हुई थी। यह निर्णय लिया गया कि दोनों पक्ष नए आईआईटी की स्थापना में भागीदारी के अध्ययन एवं इसकी संभावना तलाशने के लिए कार्यदल पर पहल करेंगे।

कोरिया गणराज्य (आरओके)

हाल के वर्षों मे भारत व कोरिया गणराज्य के बीच संबंध अधिक गहन एवं विविधतापूर्ण हुए हैं। राजनीतिक स्तर पर, ये संबंध उत्कृष्ट एवं किसी भी प्रकार के विरोध से वंचित हैं। उच्च स्तरीय दौरों में वृद्धि, वाणिज्यिक संबंधों में सुदृढ़ता, कला व संस्कृति के क्षेत्र में संपर्कों से भारत-कोरिया द्विपक्षीय संबंधों को बल मिला है।

3-4 अप्रैल 2007 को नई दिल्ली में 14वें सार्क शिखर सम्मेलन में विदेश एवं व्यापार मंत्री सांग मिन सून, प्रेक्षक के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने सूचना व संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी), सरकारी अभिनव परिवर्तन, मानव संसाधन विकास तथा आर्थिक क्षेत्र के अन्य क्षेत्रों में अनुभव की साझेदारी करने एवं सार्क की कोरियाई गणराज्य की सहकारी परियोजना के अधीन सार्क देशों के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए तदुपरांत प्रस्ताव प्रस्तुत करने में रूचि व्यक्त की।

कोरिया गणराज्य के राष्ट्रीय रक्षा मंत्री, किम जंग सू ने, जिन्होंने 29-31 मई 2007 को भारत का दौरा किया था, रक्षा उपस्कर के संयुक्त अनुसंधान, उत्पादन एवं विपरण के बारे में पता लगाने की अपनी इच्छा पुनः व्यक्त की।

ग्योनजी प्रांत एवं महाराष्ट्र राज्य के बीच तथा इंशियन महानगर एवं कोलकाता तथा सियोल व दिल्ली शहरों के बीच दोहरे प्रबंध हैं।

16-18 सितंबर 2007 को सियोल में भारत-कोरिया गणराज्य संयुक्त आयोग के पांचवे सत्र का आयोजन हुआ। विदेश मंत्री व उनके समकक्ष ने इस बैठक की सहअध्यक्षता की। विदेश मंत्री ने कोरिया गणराज्य के राष्ट्रपति, नेशनल असेम्बली के अध्यक्ष से भी मुलाकात की तथा राष्ट्रीय रक्षा मंत्री से भेंट की। भारत एवं कोरिया गणराज्य ने विदेश नीति सुरक्षा वार्तालाप आयोजित करने की क्रियाविधि की भी पहल की है, जो कि द्विपक्षीय संबंधों एवं क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा मसलों के संपूर्ण दायरे को ध्यान में रखते हुए एक व्यापक वार्तालाप है।

हाल के वर्षों में भारत एवं कोरिया गणराज्य के बीच द्विपक्षीय व्यापार में अत्यधिक वृद्धि हुई है। यह 2006 में 9.17 बिलियन अमरीकी डालर तक बढ़ गया। वर्ष 2007 के दौरान यह 11.22 बिलियन अमरीकी डालर तक पहुंच गया है जोकि वर्ष 2010 के लिए निर्धारित लक्ष्य से आगे बढ़ गया है। 2007 (नवंबर 2007 तक) में यह 10.2 बिलियन अमरीकी डालर पहुंच गया, यह वह लक्ष्य है जो हमने वर्ष 2010 के लिए निर्धारित किया हुआ था। कोरिया गणराज्य का विदेशी प्रत्यक्ष निवेश में 9वां स्थान है और यह एक प्रमुख निवेश भागीदार है। दोनों पक्षों द्वारा द्विपक्षीय व्यापक आर्थिक साझेदारी करार (सीईपी) संपन्न करने के पश्चात, जिस पर समझौता अंतिम चरण पर पहुंच गया है, द्विपक्षीय आर्थिक संबंध को और भी अधिक बल मिलने की संभावना है। कोरिया गणराज्य को भारत से सीईपीए पर समझौता शुरू करने के लिए प्रथम ओईसीडी देश होने का गौरव प्राप्त है।

डेमोक्रेटिक पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ कोरिया (डीपीआरके)

मानवीय और मानव संसाधन विकास सहायता पर केंद्रित भारत और डीपीआरके के संबंध मैत्रीपूर्ण बने रहे। संस्कृति, खेल और शिक्षा के आदान-प्रदान में प्रगति जारी रही।

सचिव (पूर्व) के साथ विदेश कार्यालय परामर्शों के आयोजन हेतु मई 2007 में भारत दौरे पर आए उप विदेश मंत्री, किम यंग-II के साथ दोनों ओर से उनके द्विपक्षीय आदान-प्रदान जारी रहे। इस विचार-विमर्श में द्विपक्षीय संबंधों और भावी सहयोग के उपायों की समीक्षा करना शामिल था।

भारत ने डीपीआरके को मानव संसाधन विकास और अन्य प्रकार की सहायता प्रदान करना जारी रखा। डीपीआरके को जनवरी 2008 में 2000 मिट्रिक टन चावल की दूसरी खेप भेजी गयी। हमने फरवरी, 2006 में मानवीय सहायता के रूप में 2000 मिट्रिक टन चावल पहले भेजा था। हम कृषि के पुनरूद्धार में सहायता करने के लिए भी सहमत हो गए हैं और कोरिया-भारत मैत्री फार्म को फार्म उपकरण और बीज की आपूर्ति कर रहे हैं।

भारतीय सांस्कृतिक मंडली ने 10-18 अप्रैल 2007 तक प्योंगयांग में आयोजित अप्रैल बसंत मैत्री कला महोत्सव में सशक्त प्रस्तुत की। डीपीआरके ने हैदराबाद में 14-21 अक्तूबर, 2007 तक आयोजित चौथी अंतर्राष्ट्रीय सैन्य खेल परिषद (सीआईएसएम), सैन्य विश्व खेल में भाग लेने के लिए 171 सदस्यीय एक मजबूत दस्ता भेजा।

डीपीआरके में मानव संसाधन विकास के लिए हमारी सहायता का विस्तार जारी रहा। हमने अपने आटीईसी कार्यक्रम के अंतर्गत तकनीकी प्रशिक्षण के लिए प्रशिक्षण स्लाट 13 से बढ़ाकर 18 कर दिए हैं।

भारत और डीपीआरके ने यूएन निकायों और दूसरे अंतर्राष्ट्रीय संगठनों में सहयोग जारी रखा है।

मंगोलिया

मंगोलिया के प्रधानमंत्री इंगखबायर ने वर्ष 2004 में भारत की यात्रा के समय भारत-मंगोलिया संबंधों को "भागीदारी के नए स्तर" पर ले जाने के निर्णय के उपरांत मंगोलिया के साथ भारत के पारंपरिक रूप से मैत्रीपूर्ण और हार्दिक संबंधों में विगत वर्षों में अत्यधिक सुधार हुआ है। भारत ने उच्चतर शिक्षा, कृषि, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी तथा मानव संसाधन विकास में मंगोलिया को तकनीकी और आर्थिक सहयोग प्रदान करना जारी रखा।

इस वर्ष के दौरान रक्षा के क्षेत्र में भारत-मंगोलिया सहयोग में अच्छी प्रगति हुई। 9-10 फरवरी, 2007 को रक्षा अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान (आईडीएसए) द्वारा आयोजित नौवें एशियाई सुरक्षा सम्मेलन में मंगोलिया के राष्ट्रीय रक्षा मंत्री एम. सोनोमपिल ने पांच सदस्यीय मंगोलियाई प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। मंगोलिया के मंत्री रक्षा मंत्री से मिले और 3-11 फरवरी, 2000 तक बंगलौर में आयोजित एयरो इंडिया 2007 का भी दौरा किया। मंगोलिया के वायुसेना और वायु रक्षा के प्रमुख जनरल टीएस ब्यामबाजव ने अंतर्राष्ट्रीय एयरोस्पेस ऊर्जा सेमिनार और फरवरी, 2007 में बंगलौर में एयरो इंडिया 2007 में शो भी शामिल हुए।

26 अगस्त से 6 सितंबर 2007 तक मंगोलिया में तीसरा भारत-मंगोलिया संयुक्त सैन्य अभ्यास किया गया। इस अभ्यास में 46 सैनिक अधिकारियों के एक दल ने भाग लिया। उप रक्षा मंत्री और मंगोलिया के सशस्त्र सेना के प्रमुख एवं डीजीएमओ लेफ्टिनेंट जनरल मोहन पांडेय उद्घाटन समारोह में सम्मिलित हुए।

वर्ष के दौरान भारत और मंगोलिया की राष्ट्रीय सुरक्षा परिषदों के बीच नियमित वार्ता जारी रही। जेआईसी अध्यक्ष डॉ एस डी प्रधान के नेतृत्व में भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के एक पांच सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने जुलाई-अगस्त 2007 में उलानबातर में दोनों रा.सु.प. के बीच दूसरे दौर की वार्ता आयोजित की। मंगोलियाई एनएससी के कार्यकारी सचिव, पी सनदेव ने 18-22 नवंबर 2007 तक भारत का दौरा किया।

शिक्षा के क्षेत्र में क्रमशः 1992 और 2002 में भारतीय सहायता से स्थापित राजीव गांधी व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र और अटल बिहारी बाजपेयी सूचना और संचार प्रौद्योगिकी उत्कृष्टता केंद्र अच्छी प्रकार से कार्य कर रहे हैं। राजीव गांधी व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र में स्थापित भारतीय सांस्कृतिक केंद्र ने भी भारत और मंगोलिया के बीच सांस्कृतिक संबंधों को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

वर्ष 2002 में हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापन के अंतर्गत भारत मंगोलिया संयुक्त विद्यालय का उद्घाटन वर्ष 2003 में किया गया। इस समझौता ज्ञापन को पत्रों के आदान-प्रदान के जरिए और पांच वर्षों के लिए 2012 तक बढ़ा दिया गया है। एस.सी कुंतिया, संयुक्त सचिव, माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय के नेतृत्व में एक प्रभावी मूल्यांकन टीम ने विद्यालय के कार्य-निष्पादन का अध्ययन करने और विद्यालय को के.मा.शि.बो. पाठ्यक्रम के अंतर्गत एक पूर्ण विकसित अंग्रेजी माध्यम के हाईस्कूल में उन्नत करने के प्रश्न पर विचार करने के लिए 5-12 दिसंबर, 2007 तक मंगोलिया का दौरा किया।

भारत में उच्चतर अध्ययन के लिए सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम (सीईपी) और सामान्य सांस्कृतिक छात्रवृत्ति योजना (जीसीएसएस) के अंतर्गत भारत ने मंगोलिया के राष्ट्रिकों को 30 छात्रवृत्तियां प्रदान कीं।

मंगोलिया ने वर्ष 2006-2007 के दौरान अंग्रेजी भाषा, होटल प्रबंधन, लघु व्यवसाय, कंप्यूटर हार्डवेयर एवं सॉफ्टवेयर, प्रबंधन विकास कार्यक्रम, वस्त्र आदि सहित 11 विषयों में 50 भारतीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग (आईटीसी) प्रशिक्षण स्लाटों का उपयोग किया- 100% उपयोग।

आईटीईसी के अंतर्गत "बकरे-बकरियों के वीर्य और भ्रूण स्थानांतरण पर एक विशेष प्रशिक्षण पाठ्यक्रम" आयोजित किया गया जिसमें केंद्रीय बकरा-बकरी अनुसंधान संस्थान, मथुरा में मंगोलिया के तीन वैज्ञानिकों को प्रशिक्षण दिया गया। यह त्रैमासिक पाठ्यक्रम नवंबर 2007 में शुरू हुआ।

भारत मंगोलिया को आपात खाद्य सहायता के रूप में 5000 मीट्रिक टन चावल और 5000 मीट्रिक टन चीनी देने पर सहमत हो गया है।

■■

4 यूरेशिया

इस वर्ष के दौरान इस क्षेत्र के देशों के साथ भारत का संबंध निरंतर मैत्रीपूर्ण और सद्भावनापूर्ण बना रहा। भारत ने अलग-अलग देशों के साथ यात्राओं के आदान-प्रदान, बैठकों तथा अंतर-सरकारी आयोगों, विदेश कार्यालय परामर्शों और कार्यदलों, विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग समझौतों पर हस्ताक्षर, व्यापार और वैज्ञानिक प्रतिनिधिमंडलों की यात्राओं, प्रदर्शनियों में भाग लेने और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यमों से अपने संबंधों को सुदृढ़ किया है। इसी वर्ष भारत और रूसी परिसंघ के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना की 60वीं वर्षगांठ मनाई गयी और भारत और आर्मीनिया, अजरबैजान, बेलारूस, जॉर्जिया, कजाखस्तान, किरगिज गणराज्य, ताजिकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, यूक्रेन और उज्बेकिस्तान के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना के 15 वर्ष पूरे हुए। मंत्रालय और मिशनों के बीच हितों के विभिन्न क्षेत्रों पर चर्चा करने हेतु 3-5 दिसंबर, 2007 तक नई दिल्ली में यूरेशिया प्रभाग के देशों में भारतीय मिशनों के प्रमुखों का एक सम्मेलन आयोजित हुआ। शंघाई सहयोग संगठन में एक प्रेक्षक राज्य के तौर पर भारत ने राज्य एवं शासनाध्यक्षों की परिषद की बैठकों में भाग लिया।

रूस

इस वर्ष के दौरान भारत और रूस के बीच उच्च स्तरीय यात्राओं के आदान-प्रदान और दस्तावेजों पर हस्ताक्षर के माध्यम से विशेषकर रक्षा, अंतरिक्ष, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, आर्थिक सहयोग, स्वापक पदार्थों के विरुद्ध कार्यवाही और संस्कृति के क्षेत्रों में भागीदारी और सुदृढ़ हुई। प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने 11-12 नवंबर 2007 तक मॉस्को की आधिकारिक यात्रा की और रूस के राष्ट्रपति व्लादिमिर पुतिन के साथ प्रतिनिधिमंडल स्तर की बातचीत की। उन्होंने रूस के प्रधानमंत्री विक्टर जुबकोव से भी मुलाकात की और वरिष्ठ भारतीय और रूसी व्यापार और उद्योग प्रतिनिधियों के साथ एक व्यापारिक बैठक में भाग लिया। इस यात्रा के दौरान निम्नलिखित दस्तावेजों पर हस्ताक्षर हुएः (i) बहुभूमिका परिवहन विमान के विकास और उत्पादन में सहयोग पर करार; (ii) विनिमय पत्र (भारत में रूसी निवेश के लिए रुपया ऋण निधि के सदुपयोग पर); (iii) स्वापक पदार्थों, मनःप्रभावी पदार्थों और इनके निर्माण में सहयोगी पदार्थों के अवैध व्यापार का सामना करने में सहयोग संबंधी करार; (iv) संयुक्त चंद्रमा अन्वेषण के क्षेत्र में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन और रूसी परिसंघ की फेडरल स्पेस एजेंसी के बीच करार।

रूसी परिसंघ के प्रधानमंत्री विक्टर जुबकोव ने एक बड़े व्यापारिक प्रतिनिधिमंडल के साथ 12-13 फरवरी, 2008 को भारत की यात्रा की। उन्होंने व्यापार और निवेश संबंधी द्वितीय भारत रूस मंच में भाग लिया और 2008 में भारत में "रूस के वर्ष" का उद्घाटन किया जिसमें संस्कृति, व्यापार और अर्थव्यवस्था और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी सहित विभिन्न क्षेत्रों में पूरे वर्ष कार्यक्रमों का आयोजन होगा।

इस वर्ष के दौरान निम्नलिखित अन्य उच्चस्तरीय यात्राएं हुईंः

- वस्त्र मंत्री शंकर सिंह वघेला ने अप्रैल 2007 में मॉस्को की यात्रा की।
- वाणिज्य और उद्योग मंत्री कमलनाथ ने 9-10 जून 2007 को सेंट पीटर्सबर्ग आर्थिक मंच में भाग लेने के लिए सेंट पीटर्सबर्ग की यात्रा की।
- प्रधानमंत्री के विशेष दूत श्याम सरन ने 13-14 अगस्त 2007 को मॉस्को की यात्रा की।
- राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार एम. के. नारायणन ने 28-29 अगस्त 2007 के बीच मॉस्को की यात्रा की।
- भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (भा.सां.सं.प.) के अध्यक्ष डॉ. कर्ण सिंह ने सांस्कृतिक सहयोग, विशेषकर 2008 में "भारत में रूस के वर्ष" और 2009 में "रूस में भारत के वर्ष" हेतु तैयारियों पर चर्चा के लिए 7-10 अक्तूबर, 2007 तक मॉस्को की यात्रा की।
- विदेश मंत्री श्री प्रणब मुखर्जी ने भारत-रूस व्यापारिक, आर्थिक, वैज्ञानिक, प्रौद्योगिकीय और सांस्कृतिक सहयोग अंतर-सरकारी आयोग के 13वें सत्र की सहअध्यक्षता करने हेतु 11-13 अक्तूबर तक मॉस्को की यात्रा की।
- रक्षा मंत्री ए. के. एंटोनी ने भारत-रूस सैन्य तकनीकी सहयोग संबंधी अंतर-सरकारी आयोग के 7वें सत्र की सहअध्यक्षता करने हेतु 17-19 अक्तूबर, 2007 तक मॉस्को की यात्रा की।

प्रधानमंत्री, डा. मनमोहन सिंह 12 नवंबर 2007 को मास्को में एक समारोह में रूसी परिसंघ के राष्ट्रपति श्री ब्लादिमीर पुतीन से मुलाकात करते हुए।

विदेश मंत्री, प्रणब मुखर्जी 16 अप्रैल 2007 को नई दिल्ली में बेलारूस गणराज्य के राष्ट्रपति, अलेंक्सांडर लूकाशेंको से मुलाकात करते हुए।

- रूसी सुरक्षा परिषद के कार्यकारी सचिव जनरल वैलेन्टिन सोबोलेव ने 28 अक्तूबर से 1 नवंबर 2007 तक भारत की यात्रा की।
- पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री मुरली देवड़ा ने 25-27 नवंबर 2007 तक मॉस्को की यात्रा की।

इसके अतिरिक्त बहुपक्षीय कार्यक्रमों के साथ-साथ निम्नलिखित उच्च स्तरीय बैठकें भी आयोजित हुईं:

- प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह ने 6-8 जून 2007 तक हाईलीगेंडाम, जर्मनी में जी-8 और आउटरीच देशों के शिखर सम्मेलन के दौरान राष्ट्रपति पुतिन से संक्षिप्त मुलाकात की।
- विदेश मंत्री ने मनीला में ए.आर.एफ./आसियान/ई.ए.एस. बैठक के साथ-साथ 1 अगस्त 2007 को रूसी विदेश मंत्री सर्गेई लैवरोव से मुलाकात की।
- विदेश मंत्री ने हर्बिन, चीन में आयोजित भारत-रूस-चीन त्रिपक्षीय विदेश मंत्रियों की बैठक के साथ-साथ 24 अक्तूबर, 2007 को रूस के विदेश मंत्री सर्गेई लैवरोव एक द्विपक्षीय बैठक की।

विदेश सचिव और रूसी प्रथम उप विदेश मंत्री आंद्रेई डेनिसोव के बीच 9 अप्रैल 2007 को दिल्ली में विदेश कार्यालय परामर्श हुए। भारत और रूस के विदेश मंत्रियों के बीच विशिष्ट विषयों पर निम्नलिखित परामर्श भी हुए: मध्य एशिया और शंघाई सहयोग संगठन (मई 2007, मॉस्को) और संयुक्त राष्ट्र से संबंधित मुद्दे (मई 2007, मास्को)। दोनों देशों की सुरक्षा परिषदों के संयुक्त समन्वय दल (जेसीजी) की मुलाकात संयुक्त आसूचना समिति के अध्यक्ष एस. डी. प्रधान और रूसी सुरक्षा परिषद के उपसचिव वी-नेजारोव की अध्यक्षता में जून 2007 में मॉस्को में हुई। रूस की सुरक्षा परिषद के कार्यकारी सचिव जनरल वैलेन्टिन सोबोलेव की भारत यात्रा के दौरान 30 अक्तूबर, 2007 को संयुक्त परामर्शदात्री दल की एक और बैठक आयोजित हुई।

सैन्य-तकनीकी सहयोग संबंधी अंतर-सरकारी आयोग की 7वीं बैठक के लिए रक्षा मंत्री की रूस यात्रा के दौरान संभावित बहु भूमिका वाले लड़ाकू विमान के संयुक्त विकास और उत्पादन संबंधी एक करार पर हस्ताक्षर हुए। भारत और रूस ने 24-27 अप्रैल 2007 तक जापान सागर में संयुक्त नौसैनिक अभ्यास किया और रूस के स्कोव क्षेत्र में 11-20 सितंबर 2007 तक भारतीय थलसेना, भारतीय वायुसेना और रूसी वायुसेना की संयुक्त भागीदारी में आतंकवाद विरोधी अभ्यास किया।

व्यापारिक, आर्थिक, वैज्ञानिक, प्रौद्योगिकीय और सांस्कृतिक सहयोग संबंधी अंतर-सरकारी आयोग के अंतर्गत पांच संयुक्त कार्यदलों नामतः (i) व्यापार और अर्थव्यवस्था (ii) ऊर्जा (iii) धातुविज्ञान और खनन (iv) प्रौद्योगिकी और (v) पर्यटन एवं संस्कृति ने अगस्त और अक्तूबर, 2007 के बीच मॉस्को में अपने-अपने क्षेत्रों में सहयोग पर चर्चा की। अक्तूबर, 2007 में पारस्परिक वित्तीय प्रतिबद्धताओं पर संयुक्त कार्यबल की बैठक मॉस्को में हुई और बैंकिंग पर उप दल की बैठक जयपुर में हुई। द्विपक्षीय व्यापार और निवेश बढ़ाने और समग्र आर्थिक सहयोग करार की व्यवहार्यता की जांच करने हेतु उपायों का पता लगाने के लिए 2006 में गठित संयुक्त अध्ययन दल ने जुलाई 2007 में मॉस्को में अपनी चौथी बैठक के दौरान अपनी रिपोर्ट को अंतिम रूप दिया। दोनों देशों ने संयुक्त अध्ययन दल की सिफारिशों के क्रियान्वयन की निगरानी हेतु एक संयुक्त कार्यबल की स्थापना करने पर सहमति व्यक्त की।

इस वर्ष के दौरान विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में एकीकृत दीर्घावधि सहयोग कार्यक्रम (आई.एल.टी.पी.) ने सफल कार्य के 20 वर्ष पूरे किए। 11-12 अक्तूबर, 2007 तक मॉस्को में आई.एल.टी.पी. की संयुक्त परिषद की बैठक हुई जिसकी सहअध्यक्षता प्रधानमंत्री की वैज्ञानिक सलाहकार परिषद के अध्यक्ष प्रो. सी.एन.आर. राव द्वारा की गयी। इस बैठक के दौरान भारत में अलौह और दुर्लभ धातुओं, जैव चिकित्सकीय प्रौद्योगिकी और त्वरक और लेजर संबंधी संयुक्त केंद्रों के गठन पर तीन समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर हुए। अगस्त 2007 में भारत के विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग और रशियन फाउंडेशन ऑफ बेसिक रिसर्च, मॉस्को ने बुनियादी विज्ञान में सहयोग संबंधी एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

द्विपक्षीय संबंधों को बढ़ावा देने के प्रयास के तौर पर वर्ष 2008 के शुरू में "भारत में रूस के वर्ष" का उद्घाटन किया गया। पूरे वर्ष चलने वाले इस कार्यक्रम में संस्कृति, अर्थव्यवस्था और वाणिज्य, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, कला इत्यादि के क्षेत्रों में व्यापक कार्यक्रम शामिल हैं जिसके उपरांत "2009 में रूस में भारत के वर्ष" का आयोजन किया जाएगा।

आर्मेनिया

कृषि राज्य मंत्री कांतिलाल भूरिया ने येरेवन में प्रथम अंतर्राष्ट्रीय आर्मेनियाई एप्रिकोट सम्मेलन में भाग लेने के लिए 6-7 जुलाई, 2007 तक आर्मेनिया में एक प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। उन्होंने आर्मेनिया के कृषि मंत्री के साथ द्विपक्षीय वार्ता की और भारत में आर्मेनियाई एप्रिकोट बागानों की कृषि हेतु एक परियोजना स्थापित करने पर चर्चा की।

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित ने येरेवन के मेयर के आमंत्रण पर 4-6 सितंबर 2007 तक आर्मेनिया की यात्रा की। मुख्यमंत्री ने येरेवन के मेयर के साथ

सहयोग के विभिन्न क्षेत्रों पर चर्चा की और आर्मेनिया के प्रधानमंत्री, राष्ट्रीय असेम्बली के अध्यक्ष और शिक्षा और विज्ञान मंत्री से मुलाकात की। एक संयुक्त वक्तव्य जारी किया गया और दिल्ली और येरेवन के बीच सहयोग संबंधी एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने का निर्णय लिया गया।

अजरबैजान

अजरबैजान के विदेश उप मंत्री खलफ खालाफोव के नेतृत्व में अजरबैजान के एक चार सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने विदेश कार्यालय परामर्शों के लिए 13-16 मार्च 2007 तक भारत की यात्रा की और एन. रवि, सचिव (पूर्व), विदेश मंत्रालय के साथ वार्ता की।

वाणिज्य राज्य मंत्री जयराम रमेश ने 10-12 अप्रैल 2007 तक बाकू में एक बारह सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। भारत-अजरबैजान व्यापारिक, आर्थिक, वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकीय सहयोग पर अंतर-सरकारी आयोग की स्थापना हेतु एक करार संपन्न किया गया। मंत्री ने अजरबैजान के राष्ट्रपति इल्हाम अलीयेव से मुलाकात की और आर्थिक विकास मंत्री, उद्योग और ऊर्जा मंत्री और अजरबैजान के विदेश उप-मंत्री से भी मुलाकातें कीं।

आई.सी.सी.आर. के सहयोग से एक दस सदस्यीय पारंपरिक नृत्य और संगीत (गायन और वाद्य) मंडली ने 16-21 अप्रैल 2007 तक भारत की यात्रा की और दिल्ली, लखनऊ और हरिद्वार में कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

बेलारूस

बेलारूस के विदेश मंत्री सर्गेई मार्तिनोव ने 22-23 फरवरी, 2007 तक भारत की यात्रा की।

बेलारूस के राष्ट्रपति एलेक्सांडर लूकाशेन्को ने 15-16 अप्रैल 2007 को भारत की आधिकारिक यात्रा की। संस्कृति, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, प्रर्त्यपण, कृषि और विश्व व्यापार संगठन में बेलारूस के प्रवेश के क्षेत्र में सहयोग संबंधी पांच दस्तावेजों पर हस्ताक्षर हुए और एक संयुक्त वक्तव्य को अपनाया गया।

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित ने मिन्स्क शहर के 940वें वर्षगांठ समारोह में भाग लेने के लिए मिन्स्क के मेयर के आमंत्रण पर 7-10 सितंबर 2007 तक बेलारूस की यात्रा की।

बेलारूस ने नई दिल्ली में भारतीय अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला, 2007 (14-28 नवंबर 2007) में भाग लिया। 14-15 नवंबर 2007 को भारत में बेलारूसी विज्ञान के राष्ट्रीय दिवस का आयोजन हुआ और इस समारोह के दौरान सहयोग और पारस्परिक समझबूझ पर बेलारूसी चैंबर आफ कॉमर्स और कलकत्ता चैंबर आफ कॉमर्स के बीच एक समझौता ज्ञापन संपन्न किया गया।

जॉर्जिया

संयुक्त सचिव (एफ.टी.-सी.आई.एस.), वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ने व्यापार और आर्थिक सहयोग पर एक संयुक्त कार्यदल की स्थापना पर चर्चा करने हेतु 30-31 अक्तूबर, 2007 तक त्बिलिसी की यात्रा की। इस यात्रा के दौरान दोनों पक्षों ने बैंकिंग, कृषि, औषधि और पर्यटन क्षेत्रों में सहयोग करने हेतु सहमति व्यक्त की।

कजाखस्तान

भारत और कजाखस्तान के बीच द्विपक्षीय संबंध तेजी से बढ़े हैं। अगस्त 2007 में सचिव (पूर्व), विदेश मंत्रालय एन. रवि और कजाख विदेश उप विदेश मंत्री नुरलन बी. यरमेक्बायेव की सहअध्यक्षता में विदेश कार्यालय परामर्श हुए। केंद्रीय वस्त्र मंत्री शंकर सिंह वघेला ने मार्च 2007 में कजाखस्तान के अलमाती, शिंकेट और अस्ताना शहरों की यात्रा की और वस्त्र क्षेत्र में सहयोग से संबंधित मुलाकातें कीं। सूचना प्रौद्योगिकी पर संयुक्त कार्यदल की बैठक अगस्त 2007 में नई दिल्ली में आयोजित हुई। कजाखस्तान स्थित भारतीय राजदूतावास 1 नवंबर 2007 से अलमाती से अस्ताना में स्थानांतरित हो गया।

सेरिक अबद्राखमानोव, अध्यक्ष अंतर्राष्ट्रीय मामले और रक्षा समिति के नेतृत्व में एक संसदीय प्रतिनिधिमंडल ने 10-11 मई 2007 तक भारत की यात्रा की। प्रतिनिधिमंडल ने लोकसभा अध्यक्ष से मुलाकात की और विदेश मंत्रालय संबंधी संसदीय स्थायी समिति के अध्यक्ष लक्ष्मी नारायण पांडे से पारस्परिक हित के मामलों पर विचारों के आदान-प्रदान हेतु भेंट की।

किर्गिज गणराज्य

शंघाई सहयोग संगठन के सातवें शिखर सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधिमंडल के नेता के तौर पर यात्रा के दौरान पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्री मुरली देवड़ा ने 15 अगस्त 2007 को किर्गिज गणराज्य के राष्ट्रपति कुर्मानबेक बाकीव से मुलाकात की। मंत्री ने विश्केक में भारत-किर्गिज सूचना प्रौद्योगिकी केंद्र का उद्घाटन भी किया जिसे भारतीय सहायता से स्थापित किया गया था।

भारत-किर्गिज व्यापारिक, आर्थिक, वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकीय सहयोग संबंधी अंतर-सरकारी आयोग के चौथे सत्र का आयोजन 1-3 सितंबर 2007 तक बिश्केक में ओ.पी. आर्या, अपर सचिव, वाणिज्य विभाग और किर्गिज के व्यापार और आर्थिक मंत्री जैपारोव अकिलबेक ऊसनबेकोविच की सहअध्यक्षता में किया गया। भारत सरकार ने विशेष सद्भावना व्यक्त करते हुए किर्गिज

गणराज्य के 1.1 मिलियन अमरीकी डालर के बकाया ऋण को माफ करने का निर्णय लिया।

किर्गिज गणराज्य के आंतरिक मंत्री ने नवंबर 2007 में नई दिल्ली में आपदा जोखिम प्रबंधन पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन में भाग लिया और गृह मंत्री शिवराज पाटिल से मुलाकात की।

किर्गिज गणराज्य के विदेश मंत्री अदनान कराबायेव ने 3-6 फरवरी, 2008 तक भारत की आधिकारिक यात्रा की और द्विपक्षीय संबंधों की समीक्षा करने और पारस्परिक हित के अन्य मुद्दों पर चर्चा करने हेतु विदेश मंत्री से मुलाकात की।

ताजिकिस्तान

विदेश मंत्रालय में सचिव (पूर्व) एन. रवि के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ने विदेश कार्यालय परामर्शों और द्विपक्षीय सहयोग पर चर्चा हेतु 6-7 अगस्त 2007 को दुशांबे की यात्रा की।

भारत-ताजिकिस्तान अंतर-सरकारी आयोग के चौथे सत्र का आयोजन अक्तूबर, 2007 में दुशांबे में हुआ। भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व वाणिज्य सचिव जी. के. पिल्लई और ताजिक प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व आर्थिक विकास और व्यापार मंत्री गुलोमजोन बोबोजोद ने किया। आयोग की बैठक के साथ-साथ संयुक्त व्यापारिक परिषद की बैठक भी आयोजित हुई जिसमें भारतीय सार्वजनिक/निजी क्षेत्र से लगभग 20 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस यात्रा के दौरान भारत और ताजिकिस्तान ने दोहरे कराधान से बचाव संबंधी करार पर हस्ताक्षर को अंतिम रूप दिया।

विदेश राज्य मंत्री श्री ई. अहमद ने सितंबर 2007 में सियोल में आयोजित एशिया सहयोग वार्ता के दौरान ताजिकिस्तान के विदेश मंत्री से मुलाकात की।

तुर्कमेनिस्तान

भारत और तुर्कमेनिस्तान के बीच द्विपक्षीय संबंध घनिष्ठ और सौहार्दपूर्ण बने रहे। पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री मुरली देवड़ा ने अशगाबात में 25 नवंबर 2007 को 2 घंटे के लिए पारगमन यात्रा के दौरान विश्राम किया। हाइड्रोकार्बन क्षेत्र में द्विपक्षीय सहयोग पर चर्चा करने के लिए हाइड्रोकार्बन संसाधनों के प्रबंधन तथा उपयोग संबंधी राजकीय अभिकरण के अध्यक्ष बैमुरात मुराडोव से मुलाकात की। संसद सदस्य, निर्मला देशपांडे सहित सांसदों और प्रतिष्ठित विद्वानों के एक भारतीय प्रतिनिधिमंडल ने सितंबर 2007 में अशगाबात में रूहनामा नामक एक विचार-गोष्ठी में भाग लिया।

तुर्कमेनिस्तान के उप-प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री रशीद मेरेदोव के नेतृत्व में एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल ने 20-22 जनवरी 2008 तक भारत की यात्रा की। इस यात्रा के दौरान विदेश राज्य मंत्री ई. अहमद और विदेश मंत्री मेरेडोव ने भारत-तुर्कमेन अंतर-सरकारी आयोग के दूसरे सत्र की सहअध्यक्षता की जिसमें दोनों देशों के बीच व्यापारिक, आर्थिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संबंधों की समीक्षा हुई।

इस प्रतिनिधिमंडल ने विदेश मंत्री, प्रधानमंत्री तथा उपराष्ट्रपति से मुलाकात की तथा मानव संसाधन विकास, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस, वाणिज्य और उद्योग, विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालयों तथा भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद से विचार-विमर्श किया।

उक्रेन

उक्रेन के साथ भारत के संबंध मैत्रीपूर्ण और सौहार्दपूर्ण बने रहे जो कि अपने घरेलू राजनैतिक घटनाक्रमों, संसदीय चुनावों और सरकार के निर्माण में व्यस्त रहा। अक्तूबर, 2007 में विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के सचिव ने कीव में एक प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। इस यात्रा के दौरान विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सहयोग संबंधी एक करार को अंतिम रूप दिया गया। अप्रैल 2007 में उक्रेन के परिवहन मंत्रालय के एक आधिकारिक प्रतिनिधिमंडल ने भारत सरकार के संबद्ध विभागों के साथ जहाजरानी, रेलवे और सड़क परिवहन के क्षेत्र में दोनों देशों के बीच सहयोग पर चर्चा हेतु भारत की यात्रा की। इस प्रतिनिधिमंडल ने बंदरगाह की यात्रा करने और पत्तन प्राधिकारियों से मिलने के लिए मुंबई की यात्रा भी की।

उज्बेकिस्तान

वाणिज्य राज्य मंत्री जयराम रमेश ने भारत उज्बेक अंतर सरकारी आयोग के 7वें सत्र की सहअध्यक्षता हेतु अप्रैल 2007 में ताशकंद की यात्रा की। उज्बेकिस्तान के उप प्रधानमंत्री और वित्त मंत्री अब्दुल्ला अरिपोव ने उज्बेक पक्ष की ओर से बैठक की सहअध्यक्षता की।

मई 2007 में आतंकवाद विरोधी भारत-उज्बेकिस्तान संयुक्त कार्यदल की एक बैठक आयोजित हुई। भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान के निदेशक दिनेश अवस्थी के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ने अप्रैल 2006 में उज्बेकिस्तान में प्रधानमंत्री की यात्रा के दौरान व्यक्त की गयी प्रतिबद्धता की अनुवर्ती कार्रवाई के रूप में भारत सरकार की सहायता से उज्बेकिस्तान में उद्यम विकास केंद्र की स्थापना पर चर्चा करने के लिए मार्च 2007 में ताशकंद की यात्रा की।

शंघाई सहयोग संगठन

शंघाई सहयोग संगठन (एस.सी.ओ.) के राज्याध्यक्षों की परिषद की 7वीं बैठक 16 अगस्त 2007 को विश्केक, किर्गिज गणराज्य में आयोजित हुई। पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री मुरली देवड़ा ने इस बैठक में भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया।

इस प्रतिनिधिमंडल ने एस.सी.ओ. राज्याध्यक्षों के उद्घाटन सत्र में भाग लिया और अपने भाषण में मंत्री ने ऊर्जा, आर्थिक विकास, आतंकवाद विरोध और नशीले पदार्थों के अवैध व्यापार के विरोध के क्षेत्रों में एस.सी.ओ. की गतिविधियों में भाग लेने में भारत की रूचि को दोहराया। 2 नवंबर 2007 को ताशकंद में शासनाध्यक्षों की परिषद की बैठक का आयोजन हुआ और भारत का प्रतिनिधित्व विदेश राज्य मंत्री ई. अहमद ने किया।

भारत-रूस-चीन

24 अक्तूबर, 2007 को भारत-रूस-चीन त्रिपक्षीय विदेश मंत्रियों की बैठक हरबिन (चीन) में आयोजित हुई। 14 फरवरी, 2007 को दिल्ली में आयोजित पिछली बैठक के पश्चात 2007 में यह दूसरी बैठक थी जिसमें त्रिपक्षीय वार्ता प्रणाली को आगे बढ़ाया गया। पारस्परिक हित के क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर व्यापक विचार-विमर्श के अलावा तीनों मंत्रियों ने त्रिपक्षीय आर्थिक सहयोग को सुदृढ़ करने का निर्णय किया। विशेषकर तीनों देशों ने कृषि, औषधि और जन स्वास्थ्य और आपदा प्रबंधन पर विशषज्ञ स्तरीय चर्चाएं आयोजित करने और भू राजनैतिक सामरिक प्रवृत्तियों के विकास पर अधिकारियों और विद्वानों की भागीदारी के साथ एक विचार-गोष्ठी के आयोजन पर सहमति व्यक्त की। इसके उपरांत 15 दिसंबर, 2007 को नई दिल्ली में त्रिपक्षीय व्यापारिक मंच का आयोजन हुआ जिसमें लगभग 250 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। चीन और रूस प्रत्येक के पच्चीस से तीस व्यापारिक प्रतिनिधियों ने इस सम्मेलन में भाग लिया। इस सम्मेलन में त्रिपक्षीय सहयोग के चार संभावित क्षेत्रों नामतः ऊर्जा, अवसंरचना विकास, औषधि और जैव चिकित्सकीय प्रौद्योगिकी तथा नैनो टेक्नोलोजी पर ध्यान केंद्रित किया गया। इस बात पर सहमति व्यक्त की गयी कि त्रिपक्षीय व्यापारिक सम्मेलन वर्ष में दो बार आयोजित किए जाने चाहिए और वर्ष 2009 में अगले सम्मेलन की मेजबानी चीन करेगा।

आई.एन.एस.टी.सी.

समन्वय परिषद की तीसरी बैठक और अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारे (आई.एन.एस.टी.सी.) के विशेषज्ञ दलों की चौथी बैठक नवंबर 2007 में अस्ताना, कजाखस्तान में आयोजित हुई। भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व संयुक्त सचिव, जहाजरानी मंत्रालय ने किया। इस बैठक में इस गलियारे के विकास में हुई प्रगति पर चर्चा की गयी ताकि भारत और रूस तथा मध्य एशिया तथा कोकशस क्षेत्रों के अन्य देशों के बीच परिवहन संपर्क को सुगम बनाया जा सके।

■■

5 खाड़ी, पश्चिम एशिया और उत्तरी अफ्रीका

खाड़ी

भारत और खाड़ी क्षेत्र के देशों के बीच बहुआयामी संबंधों वाले प्रगाढ़ और मैत्रीपूर्ण संपर्क वर्ष के दौरान और मजबूत हुए हैं। इसमें इस क्षेत्र में बड़ी संख्या में भारतीय प्रवासी समुदाय की उपस्थिति ने योगदान दिया है। खाड़ी क्षेत्र के देशों के सहयोग से उनके, विशेष रूप से प्रवासी कामगारों के कल्याण को बढ़ावा देने के लिए सक्रिय कदम उठाए गए हैं। द्विपक्षीय व्यापार और आर्थिक सहयोग में संतोषजनक प्रगति हुई है। सभी क्षेत्र में भारत के तालमेल पर्याप्त रूप से बढ़े हैं। इस वर्ष बहरीन के युवराज की यात्रा, संयुक्त अरब गणराज्य के उप राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री तथा दुबई के शासक की यात्रा और दिसंबर, 2007 में ओमान सल्तनत के उप प्रधानमंत्री और मंत्रियों के परिषद की यात्रा उल्लेखनीय रही। भारत-खाड़ी सहयोग परिषद (जीसीसी) औद्योगिक सम्मेलन मई 2007 में मुम्बई में आयोजित हुई।

बहरीन

भारत के उप-राष्ट्रपति के निमंत्रण पर बहरीन राज्य के युवराज शेख सलमान बिन हमद अल खलीफा ने 19-22 मार्च 2007 को भारत की यात्रा की। इस यात्रा के दौरान उन्होंने राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री से मुलाकात की। युवराज ने नई दिल्ली में बहरीन के राजदूतावास का उद्घाटन किया। प्रसार भारती और बहरीन रेडिया और टीवी कारपोरेशन के बीच सहयोग के लिए एक सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम और एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

लोक सभा के अध्यक्ष श्री सोमनाथ चटर्जी ने 19 अप्रैल 2007 को बहरीन के अपने पारगमन के प्रवास के दौरान स्थानीय विशिष्टजनों से भेंट की। बहरीन के काउंसिल ऑफ रिप्रजेन्टेटिव के अध्यक्ष, खलीफा बिन अहमद अल डहरानी के नेतृत्व में बहरीन के एक संसदीय प्रतिनिधिमंडल ने 28 नवंबर - 2 दिसंबर, 2007 के दौरान भारत की यात्रा की।

श्री ई. अहमद, विदेश राज्य मंत्री ने 8 सितम्बर 2007 को बहरीन की यात्रा की जहां उन्होंने स्थानीय विशिष्टजनों से मुलाकात की और राजक्षमा से संबंधित मसले पर बहरीन के श्रम मंत्री और भारतीय समुदाय के बीच एक प्रभावी सत्र में भाग लिया। प्रवासी भारतीय कार्य मंत्री ब्यालर रवि ने मानवशक्ति और राजक्षमा के प्रभाव पर प्रस्तावित समझौता ज्ञापन पर विचार-विमर्श करने के लिए बहरीन की यात्रा की और वहां के श्रम मंत्री से मुलाकात की।

तीन भारतीय नौसेना के जहाज आईएनएस दिल्ली, आईएनएस ब्यास और आईएनएस ज्योति 21-25 अगस्त 2007 तक बहरीन की सद्भावना यात्रा पर गए।

भारत-बहरीन आर्थिक एवं तकनीकी सहयोग पर संयुक्त समिति (जेसीईटीसी) की चतुर्थ बैठक 14-15 नवंबर 2007 को बहरीन में संपन्न हुई। श्री ई. अहमद, विदेश राज्य मंत्री ने भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। संयुक्त समिति ने पारस्परिक हित के सभी क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग की समीक्षा की। मई 2007 में मुम्बई में संपन्न तृतीय भारत-जीसीईटीसी औद्योगिक मंच में अंगीकार किए गए मुम्बई घोषणा-पत्र में आर्थिक क्रियाकलापों को बढ़ाने के प्रस्तावों को आगे बढ़ाने पर सहमति हुई। भारतीय उद्योग परिसंघ और बहरीन में उसके समकक्ष परिसंघ ने निजी क्षेत्र के सहयोग के लिए एक कार्यक्रम को अंतिम रूप दिया।

ईरान

भारत-ईरान संबंध क्षेत्रीय स्थिरता के परस्पर हितों के साथ-साथ हाइड्रोकार्बन, व्यापार, वाणिज्य और निवेश के क्षेत्रों में सहयोग पर आधारित है। मध्य एशिया और अफगानिस्तान तक पहुंच के लिए पारगमन देश के रूप में ईरान एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। इस प्रकार भारत और ईरान के बीच समकालीन संबंध के पीछे बहु-आयामी ऐतिहासिक एवं सभ्यतामूलक संबंध है। ईरान की सरकार के साथ नियमित संपर्क उच्च-स्तरीय आदान-प्रदान के माध्यम से तथा साथ ही संयुक्त आयोग, विदेश कार्यालय परामर्शों-सह-सामरिक वार्ता एवं दोनों देशों के राष्ट्रीय सुरक्षा परिषदों के बीच परामर्शों जैसी नियमित सांस्थानिक तंत्रों के द्वारा भी किए जाते हैं।

भारत की अध्यक्षता में 3-4 अप्रैल 2007 को नई दिल्ली में आयोजित 14वें सार्क शिखर सम्मेलन के दौरान ईरान को सार्क में पर्यवेक्षक का दर्जा प्रदान किया गया।

अन्तर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी में ईरान के नाभिकीय मुद्दों पर नवीन घटनाक्रमों से भारत सरकार को अवगत कराने के लिए ईरान के एशिया, ओसीनिया एवं कॉमनवेल्थ के लिए उप विदेश

मंत्री डा.मेहदी सफारी ने 6-8 सितम्बर 2007 को भारत की यात्रा की। "अप्रसार संधि सुरक्षोपाय करार के क्रियान्वयन और सुरक्षा परिषद संकल्प 1737 (2006) और 1747 (2007)" पर अन्तर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी के महानिदेशक के 15 नवंबर 2007 की रिपोर्ट को भारत ने नोट किया।

विदेश राज्य मंत्री श्री ई.अहमद ने "मानवाधिकार एवं सांस्कृतिक विविधता" पर गुटनिरपेक्ष देशों के सम्मेलन में भाग लेने के लिए ईरान की सितंबर 2007 में यात्रा की।

नई दिल्ली में आपदा जोखिम कम करने पर द्वितीय एशियाई मंत्री स्तरीय सम्मेलन में भाग लेने के लिए ईरान के आंतरिक मंत्री मोस्तफा पोउर मोहम्मदी ने 6-8 नवंबर 2007 को भारत की यात्रा की।

जल संसाधन मंत्री, प्रो. सैफुद्दीन सोज ने क्षेत्रीय शहरी जल प्रबंधन केन्द्र की 5वीं आमसभा की तेहरान में 24 नवंबर 2007 को आयोजित बैठक में भाग लेने के लिए ईरान की यात्रा की।

गार्जियन काउंसिल के अध्यक्ष अयातुल्ला अहमद जन्नती ने आरसीसीआर के विशिष्ट अतिथि कार्यक्रम के अंतर्गत 24 नवंबर-1 दिसम्बर 2007 तक भारत की यात्रा की।

भारत के विदेश सचिव और ईरान के उप विदेश मंत्री के स्तर की भारत और ईरान ने वार्षिक विदेश कार्यालय परामर्श/सामरिक वार्ता आयोजित की। विदेश सचिव ने पाँचवे एफओसी/सामरिक वार्ता के लिए 16-17 दिसंबर 2007 को ईरान की यात्रा की।

वित्त एवं आर्थिक मामलों के मंत्री दानेश जाफरी ने ''सीआईआई सहभागिता शिखर बैठक 2008'' में भाग लेने के लिए 16-18 जनवरी 2008 तक भारत की यात्रा की।

ईरान के पर्यटन एवं हस्तशिल्प संगठन, सांस्कृतिक विरासत के उप प्रमुख डा. हुसैन जाफरी ने 16 से 17 जनवरी 2008 तक भारत की यात्रा की। यात्रा के दौरान भारतीय औद्योगिक संबंध परिषद और सीएचटीएचओ के बीच भारत और ईरान द्वारा एक दूसरे के देशों में भारत महोत्सव आयोजित करने के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

भारत-ईरान वाणिज्यिक संबंधों पर ईरान के कच्चे तेल के भारतीय आयात का आधिपत्य रहा। भारत का निर्यात वर्ष 2005-06 के 1188.71 मिलियन अमरीकी डालर की तुलना में वर्ष 2006-07 में 1490.75 मिलियन अमरीकी डालर तक पहुंच गया (25% की वृद्धि) जबकि आयात वर्ष 2005-06 के 4822.65 मिलियन अमरीकी डालर की तुलना में 55.26% की वृद्धि दर दर्ज करते हुए वर्ष 2006-07 में 7842.36 मिलियन अमरीकी डालर पर पहुंच गया। वर्ष 2006-07 के दौरान व्यापार के टर्न ओवर में 55% की वृद्धि दर्ज हुई।

ईरान को निर्यात की जा रही महत्वपूर्ण भारतीय सामानों में प्राथमिक और अर्द्ध-निर्मित लौह एवं स्टील, धातु, मशीनरी और उपकरण, औषधियों एवं दवाओं, प्रसंस्कृत खनिज, अकार्बनिक/एग्रो रसायन, चाय, सूत वस्त्र इत्यादि का निर्माण शामिल है। भारत काफी मात्रा में ईरान को पेट्रोलियम उत्पादों का भी निर्यात करता है। ईरान से भारत को आयात की गई वस्तुओं में शामिल है-कच्चा तेल, फल एवं गिरी, दलहन, अलौह धातु, कार्बनिक एवं अकार्बनिक रसायन, रासायनिक धातु के स्क्रैप, लौह एवं स्टील, कार्बनिक रसायन धातु के स्क्रैप, लौह एवं स्टील, कार्बनिक रसायन एवं चमड़ा।

कई भारतीय कंपनियां ईरान की कंपनियों के साथ संयुक्त उपक्रम के माध्यम से अथवा निवेश के जरिए पोत-परिवहन, खनन, रेल, स्टील, आईसीटी, वाहन, सीमेंट इत्यादि के क्षेत्रों में ईरान में सक्रिय है।

द्विपक्षीय निवेश संवर्धन एवं संरक्षण करार को अंतिम रूप देने के लिए वार्ता का पांचवां दौर नई दिल्ली में 1-2 फरवरी 2007 को आयोजित किया गया। दोहरे कराधान के परिहार से संबद्ध करार पर बातचीत का तीसरा दौर 11-16 मार्च 2007 को तेहरान में संपन्न हुई। इन करारों से संबंधित अधिकांश बकाए मुद्दों का समाधान ढूंढने पर समुचित प्रगति हुई।

भारत वर्ष 2009 के उत्तरार्ध से 25 वर्षों तक प्रति वर्ष पांच मिलियन टन एलएनजी खरीदने के लिए ईरान के साथ एक करार पर हस्ताक्षर किया है। हालांकि यह करार अभी तक कार्यान्वित नहीं हो सका है क्योंकि ईरान पक्ष का पूर्व सहमत संविदा दर के संशोधन पर जोर देना जारी है जिसके पश्चात ही ईरान के संसद द्वारा करार का अनुसमर्थन किया जाएगा। हमारा मानना है कि यह करार विधिसम्मत और बाध्यकारी है और इसे कार्यान्वित किया जाना चाहिए। इस मसले का शीघ्र समाधान करने और संविदा को शीघ्र कार्यान्वित करने की हमारी रुचि से ईरान की सरकार को पुनः अवगत करा दिया गया है।

ईरान-पाकिस्तान-भारत गैस पाइप लाइन परियोजना पर अभी तक ईरान के साथ द्विपक्षीय संयुक्त कार्यदल की चार बैठकें, पाकिस्तान के साथ द्विपक्षीय छह बैठकें और ईरान और पाकिस्तान के साथ छह त्रिपक्षीय बैठकें हो चुकी हैं। जनवरी 2007 में हुई त्रिपक्षीय बैठक में मूल्य-निर्धारण के फार्मूले पर बातचीत की गई जिस पर पाकिस्तान सहमत है और हम, पाकिस्तान के साथ तय की जा रही पारगमन शुल्क और परिवहन किराए के अध्यधीन विचार करने के लिए सहमत हैं। लेकिन मई 2007 में हुई अगली बैठक में ईरान ने सहमत फार्मूले को बदलते हुए मूल्य संशोधित करने पर नए प्रस्ताव प्रस्तुत किए। भारत का दृष्टिकोण

यह है कि पहले पाकिस्तान के साथ द्विपक्षीय रूप से पारगमन शुल्क और परिवहन किराए के मुद्दे को निपटाया जाए जिसके आधार पर गैस के मूल्य निर्धारण पर निर्णय लिया जा सके।

ईरान हमारे सामानों को मध्य एशिया और अफगानिस्तान तक भेजने के लिए महत्वपूर्ण है। अफगानिस्तान में मौजूदा 100 मिलियन अमरीकी डालर प्रति वर्ष से ऊपर की हमारी सहायता परियोजनाओं के लिए आवश्यक माल के लिए भी ईरान होकर पारगमन करने की आवश्यकता होती है। ईरान के चबाहर बंदरगाह से होकर अफगानिस्तान के लिए एक वैकल्पिक समुद्री मार्ग के विकास में भारत और ईरान सहयोग कर रहे हैं। भारत, ईरान, रूस और अन्य मध्य एशियाई देश भी उत्तर दक्षिण पारगमन गलियारे पर कार्य कर रहे हैं जो ईरान और कैस्पियन सागर से होते हुए हमारे मालों को रूस और उत्तरी यूरोप तक पारगमन की व्यवस्था करेगा।

ईराक

आर्थिक एवं तकनीकी सहयोग के लिए भारत-इराक संयुक्त आयोग की बैठक का 16वां सत्र नई दिल्ली में 22-23 मई 2007 को संपन्न हुआ। इराक के प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व डा. हुसैन अल शहरीस्तानी, तेल मंत्री ने किया। संयुक्त आयोग की बैठक में पारस्परिक हित के सभी क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग की समीक्षा की गई। प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह ने तेल मंत्री शहरीस्तानी के साथ अपनी बैठक के दौरान इराकी लोगों के प्रति और इराक के पुनर्निर्माण के लिए भारत द्वारा समर्थन देने की बात कही।

कुवैत

विदेश राज्य मंत्री श्री ई. अहमद ने 10 मार्च 2007 को कुवैत की यात्रा की और वहां ओलम्पिक समिति के वरिष्ठ अधिकारियों और युवा एवं खेल कार्यक्रमों के पब्लिक अथॉरिटी से मुलाकात की। प्रवासी भारतीय कार्य मंत्री श्री व्यालार रवि ने 7-10 अप्रैल 2007 तक कुवैत की यात्रा की। इस यात्रा के दौरान दोनों देशों के बीच श्रम, नियोजन एवं मानव शक्ति विकास पर एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया गया।

बंगलौर में आयोजित सीआईआई सहभागिता शिखर सम्मेलन 2007 में भाग लेने के लिए कुवैत के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री, फलाह आय हाजरी ने जनवरी 2007 में एक प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया।

आईएनएस बेटवा, 18 अगस्त 2007 को कुवैत से वापस आते समय कुवैत के नौसेना पोत "गारोह" के साथ एक पैसेज एक्सरसाइज (पास्सेक्स) में भाग लिया।

कुवैत की सरकार ने मई-जून 2007 में आवासी उल्लंघनकर्ताओं के लिए दो माह की अवधि के लिए राजक्षमा देने की घोषणा की। 11,689 भारतीय राष्ट्रिकों ने इस राजक्षमा का लाभ उठाया। भारतीय राजदूतावास ने 7411 आपात प्रमाणपत्र जारी किए ताकि भारतीय राष्ट्रिक राज्यक्षमा का लाभ उठा सकें।

अगस्त 2004 में भारत और कुवैत के बीच हस्ताक्षरित प्रत्यर्पण संधि 7 अगस्त 2007 को प्रवर्तित हुई। अगस्त 2004 में हस्ताक्षरित आपराधिक मामलों में पारस्परिक विधिक सहायता करार 15 अक्टूबर 2007, को प्रवर्तित हुआ। श्रम, नियोजन एवं मानवशक्ति विकास पर अप्रैल 2007 में हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापन 16 अक्टूबर 2007 को प्रवर्तित हुआ और दोहरे कराधान के परिहार से संबद्ध करार और आय पर करों से संबंधित राजकोषीय वंचना निरोधक करार 17 अक्टूबर 2007 को प्रवृत्त हुई जिसमें करार के प्रावधान 1 अप्रैल 2008 से प्रवृत्त होने का प्रावधान था।

कुवैत पर अगस्त 1990 में हुए इराकी हमले के बाद कुवैत और इराक से पलायन करने वाले भारतीयों को मुआवजे का भुगतान करने के लिए शेष बचे दावेदारों की पहचान करने का कार्य विशेष कुवैत सेल ने जारी रखा। वर्ष 2007 के दौरान पूर्ववर्ती वर्ष के दौरान पहचान किए गए 5000 से अधिक दावेदारों को सेल ने 9 मिलियन अमरीकी डालर से अधिक की राशि वितरित की। शेष बचे 879 दावेदारों को भुगतान कर देने के पश्चात सेल का अधिदेश समाप्त हो जाएगा।

ओमान

ओमान सल्तनत के मंत्रि परिषद के उप प्रधान मंत्री सईद फहद बिन महमूद अल सैद 12-15 दिसंबर, 2007 तक राजकीय यात्रा पर भारत आए। उनके साथ विदेश मामलों के लिए उत्तरदायी मंत्री, वाणिज्य एवं उद्योग, तेल एवं गैस, कृषि, सूचना मंत्रियों के साथ-साथ व्यापार से जुड़ी एक टीम भी उनके साथ आयी। इस यात्रा के दौरान निम्नलिखित चार समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गएः i) राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम, भारत और लघु एवं मध्यम उद्यम महानिदेशालय, ओमान के बीच समझौता ज्ञापन, ii) भरतीय उद्यम संस्थान, गुवाहाटी और लघु एवं मध्यम उद्यम महानिदेशालय के बीच समझौता ज्ञापन, iii) उच्च शिक्षा सहयोग पर समझौता ज्ञापन और iv) ओमान की तेल कंपनी एस.ए.ओ.सी. और कृषक भारती कॉपरेटिव लि. के बीच समझौता ज्ञापन। ओमान के उच्च स्तरीय व्यापार प्रतिनिधिमंडल ने सीआईआई और फिक्की द्वारा नई दिल्ली में आयोजित बैठक में भारत के शीर्ष व्यवसायियों और व्यापार घरानों के साथ विचार-विमर्श किया।

5 मई 2007 को मस्कट में सामरिक परामर्शदात्री दल की 5वीं बैठक में भाग लेने के लिए एन. रवि, सचिव (पूर्व) ने भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया।

विदेश राज्य मंत्री, श्री ई. अहमद ने 2.5 अक्टूबर 2007 तक ओमान की यात्रा की।

विदेश मंत्री प्रणव मुखर्जी 13 जनवरी 2008 को अपनी यात्रा के दौरान ओमान सल्तनत के उप प्रधानमंत्री सैय्यद फाहद बिन महमूद अल सैद से मुलाकात करते हुए।

विदेश राज्य मंत्री, ई. अहमद 29 मार्च 2007 को फिलिस्तीन के राष्ट्रपति महमूद अब्बास के साथ।

प्रवासी भारतीय कार्य मंत्री श्री व्यालार रवि ने 26-27 अक्टूबर 2007 को ओमान की यात्रा की।

ओमान में गहरे तेल एवं गैस ब्लॉक का खनन अधिकार रिलायंस उद्योग ने प्राप्त किया। हैदराबाद स्थित अपोलो ग्रुप हॉस्पिटलों के साथ मिलकर मस्कट स्थित अपोलो चिकित्सा केन्द्र के साथ निजी क्षेत्र में ओमान की पहली टेलीमेडिसिन सेवा का उद्घाटन हुआ।

आईएनएस दिल्ली, आईएनएस ब्यास और आईएनएस ज्योति रियर एडमिरल एस.के. सिन्हा ने पश्चिमी बेड़े के कमांडिंग फ्लैग ऑफिसर के कमान में 1-4 सितम्बर 2007 तक पोर्ट सुलतान कबूस का दौरा किया। कैडेट प्रशिक्षण पोत आईएनएस कृष्णा ने 12 सितम्बर 2007 को सलालाह बंदरगाह का दौरा किया।

संयुक्त सैन्य सहयोग परिषद की द्वितीय बैठक में भाग लेने के लिए रक्षा सचिव के नेतृत्व में एक सात सदस्यीय भारतीय रक्षा प्रतिनिधिमंडल ने 1-4 दिसंबर 2007 तक ओमान की यात्रा की।

विदेश मंत्री श्री प्रणब मुखर्जी ने 13-14 जनवरी 2008 को मस्कट की यात्रा की। उन्होंने मंत्रिपरिषद के उप प्रधान मंत्री और विदेश मामलों के उत्तरदायी मंत्री से व्यापक विषयों पर बातचीत की। उन्होंने भारतीय राजदूतावास के नए चांसरी-सह-दूतावास आवासीय परिसर का भी उद्घाटन किया।

कतर

प्रवासी भारतीय कार्य मंत्री व्यालार रवि ने अप्रैल 2007 में दोहा की यात्रा की और भारतीय कामगारों के कल्याण से संबंधित मुद्दों पर स्थानीय मंत्रियों के साथ विचार-विमर्श किया। विदेश राज्य मंत्री श्री ई.अहमद ने भी सितंबर 2007 में दोहा की यात्रा की। रक्षा सचिव ने जून 2007 में दोहा की यात्रा की। रक्षा सचिव ने जून 2007 में एक छह सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल के साथ दोहा की यात्रा की।

आईएनएस दिल्ली, आईएनएस ब्यास और आईएनएस ज्योति-भारतीय नौसेना के तीन पोतों ने 15-19 अगस्त 2007 तक कतर की सद्भावना यात्रा की।

कतर के श्रम एवं सामाजिक कार्यमंत्री की भारत यात्रा के दौरान कतर में भारतीय मानवशक्ति के नियोजन के विनियम पर करार के एक अतिरिक्त प्रोटोकॉल पर 20 नवंबर 2007 को हस्ताक्षर किया गया। यह विशेष रूप से अकुशल एवं घरेलू क्षेत्र में भारतीय कामगारों से संबंधित मुद्दों का हल ढूँढने के लिए एक ढाँचा प्रदान करेगा।

प्राकृतिक गैस पर पर छठें दोहा सम्मेलन में भाग लेने के लिए श्री मुरली देवड़ा, पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्री ने दोहा का अक्टूबर 2007 में दो-दिवसीय यात्रा के लिए एक उच्च-स्तरीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। भारत को एलएनजी की आपूर्ति करने के विषय पर उन्होंने कतर के विशिष्टजनों के साथ विचार-विमर्श भी किया। 1025 मिलियन टन द्रवित प्राकृतिक गैस (एलएनजी) की आपूर्ति के लिए 3 जुलाई, 2007 को पेट्रोनेट लिमिटेड ऑफ इंडिया ने रासगैस के साथ दोहा में एक बिक्री एवं क्रय से संबंधित करार पर हस्ताक्षर किया।

सऊ दी अरब और हज

पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्री श्री मुरली देवड़ा ने एशियाई तेल मंत्रियों के दूसरे गोलमेज बैठक में भाग लेने के लिए 1-2 मई 2007 को रियाद में एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। यात्रा के दौरान उन्होंने वहां के पेट्रोलियम मंत्री के साथ द्विपक्षीय बैठक की।

आईएनएस राजपूत और आईएनएस बेतवा-दो भारतीय नौसेना पोत 21-25 अगस्त 2007 को सद्भावना यात्रा पर अल-जुबैल बंदरगाह पहुंचा।

पश्चिम एशिया और मध्य पूर्व शांति प्रक्रिया के विशेष देत सी.आर. गरेखान ने 8-9 सितंबर 2007 को जद्दा का दौरा किया और सऊदी अरब के प्रख्यात लोगों, बुद्धिजीवियों, मीडिया के लोगों और प्रमुख भारतीय लोगों के साथ विमर्श किया।

7-9 सितम्बर 2007 तक अध्यक्ष, आपेडा के नेतृत्व में एक कृषि प्रनिधिमंडल, 16-22 नवंबर 2007 तक भारत-अरब वाणिज्य एवं उद्योग परिसंघ द्वारा आयोजित एक व्यापार प्रतिनिधिमंडल और 2-7 सितंबर 2007 तक भारतीय प्लास्टिक प्रोसेसर्स संगठन के एक प्रतिनिधिमंडल के दौरे से आर्थिक एवं वाणिज्यिक संपर्कों को बल मिला है।

पुदुच्चेरी सरकार के शिक्षा एवं युवा कार्य मंत्री के नेतृत्व में एक 12 सदस्यीय भारतीय युवा प्रतिनिधिमंडल ने जनरल प्रेसीडेंसी ऑफ यूथ वेलफेयर (जीपीवाईएफ) के निमंत्रण पर 24 अक्टूबर'-4 नवंबर 2007 तक सऊदी अरब का दौरा किया।

हज

विदेश राज्य मंत्री ने मई 2007 में सऊदी हरब की यात्रा की। इस दौरान उन्होंने हज से संबंधित विषयों पर विचार-विमर्श किया और वर्ष 2007 के लिए वार्षिक हज करार पर हस्ताक्षर किया। भारतीय हज समिति के एक प्रतिनिधिमंडल ने जून 2007 में राज्य का दौरा किया और हज कार्यों से संबंधित विभिन्न सऊदी एजेंसियों के साथ विचार-विमर्श किया। विदेश मंत्री श्री प्रणब मुखर्जी ने 11 मई 2007 को नई दिल्ली में प्रथम अखिल भारतीय वार्षिक हज सम्मेलन का उद्घाटन किया। द्वितीय अखिल भारतीय वार्षिक हज सम्मेलन हैदराबाद में 8

सितम्बर 2007 को आयोजित किया गया। निजी टूर संचालकों के पंजीकरण की व्यवस्था जो कि हज 2003 से शुरू हुई थी, निजी टूर संचालकों द्वारा हजयात्रियों के लिए बेहतर सेवा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से हज, 2007 में जारी रही। दिसंबर, 2007 में कुल 1,57,000 भारतीय हजयात्री हज पर गए जिनमें से 1,10,000 ने भारतीय हज समिति के माध्यम से सऊदी अरब की यात्रा की। 47,000 अन्य भारतीय हज यात्री निजी टूर संचालकों के माध्यम से गए। केन्द्रीय अल्पसंख्यक मामलों के मंत्री श्री ए.आर. अंतुले ने 14 दिसम्बर 2007-3 जनवरी 2008 तक सऊदी अरह में एक 28 सदस्यीय हज सद्भावना प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया।

संयुक्त अरब अमीरात

प्रधानमंत्री के निमंत्रण पर संयुक्त अरब अमीरात के उप राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री तथा दुबई के शासक शेख मोहम्मद बिन राशिद अल मकतुम 25-26 मार्च 2007 को भारत की यात्रा पर आए। उनके साथ संयुक्त अरब अमीरात के विदेश मामलों, आन्तरिक, श्रम, उद्योग एवं आर्थिक मंत्री के साथ-साथ एक उच्च प्रोफाइल व्यापार एवं व्यवसाय प्रतिनिधिमंडल भी भारत आया। इस यात्रा के पूर्व अधिकारी स्तर की संयुक्त आयोग की एक प्रारंभिक बैठक आयोजित हुई।

यात्रा के दौरान पांच समझौता ज्ञापन और प्रोतोकॉल पर हस्ताक्षर किए गए, नामतः 1) मानकीकरण एवं माप विद्या के क्षेत्र में तकनीकी सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन; 2) औद्योगिक संबंध विकसित करने की रूपरेखा पर करार; 3) दोहरे कराधान के परिहार से संबद्ध करार को संशोधित करने पर प्रोतोकॉल; 4) अमीरात सिक्योरिटीज एंड कमोडिटीज अथॉराटी (ईएससीए) और भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) के बीच सहायता एवं पारस्परिक सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन; 5) प्रत्यायन कार्यकलापों के क्षेत्र में समझौता ज्ञापन।

भारत से वर्ष के दौरान हुए उच्च स्तरीय दौरों में-मई और अक्टूबर 2007 में प्रवासी वाणिज्य एवं उद्योग राज्य मंत्री, अश्विनी कुमार के दौरे शामिल हैं। नागर विमानन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) प्रफुल्ल पटेल ने नवंबर 2007 में दुबई एयर शो और एयरोस्पेस प्रदर्शनी में सम्मिलित हुए जैसा कि पांच सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल के साथ रक्षा राज्य मंत्री पल्लम राजु ने भाग लिया था। संयुक्त अरब अमीरात की ओर से हुए दौरों में सुरक्षा से संबंधित मामलों में सहयोग पर विचार विमर्श करने के लिए गृह सचिव के साथ बैठक में भाग लेने के लिए 28-30 मई 2007 तक मेजर जनरल सैफ अब्दुल्ला अल शाफर, अंडर सेक्रेट्री, आंतरिक मंत्रालय की भारत की यात्रा शामिल है। प्रथम भारत-संयुक्त अरब अमीरात के प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। नौवें भारत-संयुक्त अरब अमीरात संयुक्त आयोग की 5-6 जून 2007 को नई दिल्ली में आयोजित बैठक में भाग लेने के लिए विदेश मंत्री शेख अब्दुल्लाह ने संयुक्त अरब अमीरात के एक प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। विदेश मंत्री ने इस बैठक की सह-अध्यक्षता की।

दो भारतीय नौसेना पोत, आईएनएस राजपूत और आईएनएस बेतवा अगस्त 2007 में वहां सद्भावना यात्रा पर गए।

गैर कानूनी ढंग से रह रहे व्यक्तियों को नियमित करने या उनके मूल देश को वापस करने के लिए जून 2007 में संयुक्त अरब अमीरात की सरकार ने राजक्षमा योजना की घोषण की। कुल 70,000 भारतीय कामगारों ने इस अवसर का लाभ उठाया और वापस भारत लौट आए।

यमन

भारत-यमन संयुक्त समिति बैठक का अप्रैल 2007 में दिल्ली में आयोजित छठें सत्र में यमन के प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व वहां के योजना एवं अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग उप मंत्री ने किया। संयुक्त आयोग की बैठक में भारतीय पक्ष का नेतृत्व विदेश मंत्रालय के सचिव (पूर्व) ने किया। जून 2007 में तीसरे साना अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी (सिएक्स-2007) एसौचैम ने एक विशेष भारतीय पवेलियन लगाया जिसमें कई भारतीय कंपनियों ने भाग लिया।

प्रवासी भारतीय कार्य मंत्री श्री व्यालार रवि 20-21 अक्टूबर 2007 तक एक 3 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल के साथ साना की यात्रा की। यमन के पुलिस सेवा क्षेत्र के उप मंत्री के नेतृत्व में एक दो सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने गृह मंत्रालय द्वारा आपदा जोखिम प्रशमन पर आयोजित द्वितीय एशियाई मंत्री स्तरीय सम्मेलन में भाग लेने के लिए 7-8 नवम्बर 2007 तक नई दिल्ली की यात्रा की।

भारत-खाड़ी सहयोग परिषद (जीसीसी)

तृतीय भारत जीसीसी व्यापार सम्मेलन 29-30 मई 2007 को मुम्बई में आयोजित की गई। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री, श्री कमलनाथ और सऊदी अरब के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री डा. हाशिम अब्दुल्ला यमनी तथा ओमान सल्तनत के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री मकबुल बिन अली सुलतान ने इस सम्मेलन की सह-अध्यक्षता की। इसमें जीसीसी राज्य और सचिवालय के प्रतिनिधियों, फिक्की, सीआईआई और औद्योगिक परामर्श के लिए खाड़ी संगठन तथा जीसीसी चैम्बर्स फेडरेशन के प्रतिनिधि ने भाग लिया।

इस सम्मेलन का विषय वस्तु "भारत-जीसीसी निवेश के अवसर" था जिसमें विशेष रूप से भू-संपदा विकास, ऊर्जा, पेट्रो केमिकल्स

एवं अवसंरचना पर विशेष ध्यान दिया गया था। सम्मेलन में लिए गए महत्वपूर्ण निर्णयों में- कृषि उत्पादन के क्षेत्र में संपर्क विकसित करना और जीसीसी देशों को भारत से आपूर्ति करना, भारत-जीसीसी, एफटीए शीघ्र करने को बढ़ावा देना, एसएमई संयुक्त उपक्रम को प्रोत्साहित करने के लिए शुरू में लगभग 50 मिलियन अमरीकी डालर की पंजी से एक होल्डिंग कंपनी स्थापित करना शामिल है।

पश्चिमी एशिया और उत्तरी अफ्रीका

अल्जीरिया

भारत और अल्जीरिया संबंधों की शुरूआत अल्जीरियाई मुक्ति संग्राम (1954-62) के दिनों से हुई थी जब भारत ने संयुक्त राष्ट्र संघ एवं अन्य अन्तर्राष्ट्रीय मंचों में अल्जीरिया की स्वतंत्रता के कारणों का समर्थन किया था। दोनों देशों के बीच राजनीतिक संबंध अनुकरणीय रहे हैं और अपने-अपने राष्ट्रीय हित के सभी महत्वपूर्ण मुद्दों पर अल्जीरिया और भारत ने हमेशा एक दूसरे का साथ दिया है।

अल्जीरिया के ऊर्जा एवं खनन मंत्री डा. चाकिब खेलील के आमंत्रण पर पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्री श्री मुरली देवड़ा ने अल्जीरिया में 20-22 अप्रैल 2007 तक एक उच्च स्तरीय 12 सदस्यीय ऊर्जा प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। इस प्रतिनिधि स्तरीय बैठक के दौरान चर्चा की गई विभिन्न मुद्दों को दर्शाने वाला सहमत कार्यवृत्त पर दोनों मंत्रियों ने हस्ताक्षर किया। मुरली देवड़ा ने अल्जीरिया के राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री से भी मुलाकात की। उन्होंने हमारे प्रधानमंत्री जी का एक पत्र अल्जीरिया के राष्ट्रपति का सौंपा।

विदेश मंत्री श्री प्रणब मुखर्जी ने सितम्बर 2007 में हुई 62वें संयुक्त राष्ट्र महासभा की बैठक के दौरान अल्जीरिया के विदेश मंत्री मुराद मेडेसी से मिले। बैठक के दौरान दोनों पक्ष विशेष रूप से आर्थिक संबंधों पर ध्यान केंद्रित करते हुए द्विपक्षीय सहयोग बढ़ाने पर सहमत हुए। आतंकवाद से पीड़ित दोनों देशों को इससे होने वाले खतरों पर उनके बीच विचारों की समानता रही।

अल्जीरियाई संसद में भारत के साथ एक 15 सदस्यों वाले संसदीय मैत्री दल बनाई गई है जिसमें सत्ताधारी प्रेसीडेंसियल गठबंधन के दलों सहित सात राजनीतिक दलों के सदस्य हैं। संसद के कार्यकरण की हमारी प्रणाली का अध्ययन करने के लिए एक संसदीय सरकारी प्रतिनिधिमंडल ने दिसंबर 2007 में भारत का दौरा किया।

अल्जीरिया की राष्ट्रीय तेल कंपनी सौनाट्रैक के एक प्रतिनिधिमंडल ने 6-7 नवंबर 2007 को नई दिल्ली में आयोजित "भारत-अफ्रीका हाइड्रोकार्बन सम्मेलन एवं प्रदर्शनी" में भाग लिया।

जनवरी-जून 2007 की अवधि के दौरान अल्जीरिया को भारत का निर्यात 207 मिलियन अमरीकी डालर की रही जबकि भारत को अल्जीरिया का निर्यात 267 मिलियन अमरीकी डालर का था।

कई भारतीय कंपनियों ने अल्जीरिया में महत्वपूर्ण ठेके प्राप्त किए। भारतीय रेलवे निर्माण कंपनी (इरकॉन) ने 108 किमी. लंबी रेल लाइन का निर्माण करने के लिए 240 मिलियन अमरीकी डालर का ठेका प्राप्त किया। हाल के दिनों में अल्जीरिया में किसी भारतीय कंपनी द्वारा प्राप्त किया गया पहला सबसे बड़ा ठेका है। इरकॉन ने अल्जीरिया में इसी प्रकार की दो परियोजना 1980 मे की थी। इरा कंस्ट्रक्शन ग्रुप, एक भारतीय निर्माण कंपनी ने अल्जीरिया के तिजी ओउजो में 3000 शय्या वाले एक हॉस्टल का निर्माण करने के लिए 21 मिलियन अमरीकी डालर का ठेका प्राप्त किया। एक अन्य भारतीय निर्माण एवं सिविल इंजीनियरिंग फर्म, पटेल इंजीनियरिंग लि. ने अल्जीरिया के नेशनल एजेंसी फॉर डैम से 153 मिलियन अमरीकी डालर के मूल्य का एक ठेका प्राप्त किया। यह परियोजना एक बांध का डिजाइन तैयार करने और निर्माण करने की है जो कि अस्का इनसात कंस्ट्रक्शन (एक टर्की कंपनी) के साथ संयुक्त उपक्रम में है। नागपुर, महाराष्ट्र स्थित ट्रांसटेल स्ट्रक्चस लि. ने अल्जीरिया में 110 किमी.लंबे खंड में ऑप्टिक फाइबर का एक संचरण लाइन बिछाने के लिए एक ठेका प्राप्त किया। यह परियोजना 20 मिलियन अमरीकी डालर के मूल्य की है।

भारत ने अल्जीरिया में 2-7 जून 2007 तक आयोजित 40वें अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेले में भी भाग लिया। आईटीपीओ की छतरी के अन्तर्गत भारतीय कंपनियों ने मेले में भाग लिया।

जिबूटी

जिबूटी, भारत के साथ विशेष रूप से शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्रों में अपने द्विपक्षीय संबंधों को उन्नत बनाने के इच्छुक है। जिबूटी दूसरा ऐसा देश है जिसने दूर-औषधि एवं दूर-शिक्षा पर पान अफ्रीकी ई-नेटवर्क को कार्यान्वित करने के लिए टेलीकम्यूनिकेशंस कंसलटेंट ऑफ इंडिया लि. के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया है। अली सबियह में सीमेंट संयंत्र के लिए एक्जिम बैंक ने 10 मिलियन अमरीकी डालर की एक अन्य ऋण-श्रृंखला दी है जिससे कि परियोजना में भारत का हिस्सा बढ़कर 20 मिलियन अमरीकी डालर हो गया।

एडेन की खाड़ी और लाल सागर में भारतीय उपस्थिति वर्ष के दौरान नौसेना के सात पोतों के दौरे और अमरीका और जिबूटी में स्थित फ्रेंच फ्लोटिल्ला के साथ भारतीय नौसेना द्वारा शुरू की गई संयुक्त अभ्यासों में, परिलक्षित होता है। इस दौरे का चरम बिन्दु "वरुणा" नामक अक्टूबर 2007 में हुआ अभ्यास था जिसमें आईएनएस ब्यास, ज्योति और राजपूत पश्चिमी बेड़ा के

तीन भारतीय पोतों ने भाग लिया। वर्ष के दौरान आईएनएस तरंगिणी, आईएनएस तीर और आईएनएस जलश्वा ने भी जिबूटी बंदरगाह की यात्रा की।

फ्रेंच भाषा में शीर्षक के साथ महात्मा गाँधी के 50 दुर्लभ फोटोग्राफों की एक प्रदर्शनी जिबूटी में 15-18 नवंबर 2007 तक आयोजित की गई। जिबूटी की स्वतंत्रता के 30वीं वर्षगांठ और भारत की स्वतंत्रता के 60वीं वर्षगांठ के स्मरणोत्सव पर भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित एक 12 सदस्यीय बिहू लोक नृत्य मंडली ने 15 नवंबर 2007 को जिबूटी में प्रदर्शन किया।

मिस्र

अफ्रीकी महाद्वीप में भारत के सर्वाधिक महत्वपूर्ण व्यापार साझेदारों में से मिस्र पारंपरिक रूप से एक रहा है। अमरीका और इटली के बाद भारत, मिस्र का तीसरा सबसे बड़ा व्यापार साझेदार और मिस्र के उत्पादों का सबसे बड़े आयातक के रूप में उभरा है। वर्ष 2006 में द्विपक्षीय व्यापार 1.747 बिलियन अमरीकी डालर का रहा।

मिस्र के पर्यटन मंत्री मोहम्मद जोहीर गार्रानाह ने 18-19 अप्रैल 2007 को भारत की यात्रा की। पर्यटन पर संयुक्त कार्य दल की तीसरी बैठक 19 अप्रैल 2007 को नई दिल्ली में आयोजित हुई।

पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्री, मुरली देवड़ा ने 22-25 अप्रैल 2007 तक मिस्र में एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। उन्होंने प्रधानमंत्री का भी एक पत्र राष्ट्रपति होसनी मुबारक को सौंपा। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री, मीरा कुमार ने 4-8 जून 2007 तक मिस्र की यात्रा की।

विदेश कार्यालय परामर्श का सातवां सत्र नई दिल्ली में 22 जून 2007 को आयोजित की गई। मिस्र के प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व वहां के एशियाई मामलों के सहायक विदेश मंत्री शावकी इस्माइल ने और भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व सचिव (पूर्वी) ने किया। विदेश कार्यालय परामर्श के दौरान राजनयिक, सरकारी/सेवा पासपोर्ट धारकों के लिए वीजा की आवश्यकता से परस्पर छूट पर करार के पाठ को अंतिम रूप दिया गया।

वित्त मंत्रालय और पोत परिवहन मंत्रालय के प्रतिनिधिमंडल द्वारा मई 2007 में की गई मिस्र की यात्रा के दौरान दोहरे कराधान के परिहार से संबद्ध करार के प्रारूप और नए मर्चेंट शिपिंग करार पर विचार-विमर्श किया गया। गृह मंत्रालय, विदेश मंत्रालय और विधि एवं न्याय मंत्रालय के पांच सदस्यों वाली मिश्रित भारतीय प्रतिनिधिमंडल द्वारा 26-29 मई 2007 तक की गई काहिरा की यात्रा के दौरान प्रत्यर्पण संधि, पारस्परिक विधिक सहायता संधि और सजायाफ्ता बंदियों को आदान-प्रदान करने पर करार के पाठ को अंतिम रूप दिया गया।

गेहूं के आयात से संबंधित मुद्दों के समन्वय पर मिस्र के अधिकारियों के साथ विचार-विमर्श करने के लिए टी. नन्द कुमार, सचिव (खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण) के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ने 12-24 अगस्त 2007 तक काहिरा की यात्रा की। पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय के अपर सचिव, एस. सुदर्शन ने 5-6 सितम्बर 2007 तक काहिरा की यात्रा की। सचिव, संस्कृति के नेतृत्व में एक दो-सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने 27-29 अक्टूबर 2007 तक एलेक्जेंड्रिया की यात्रा की और बिबलियोथिका एलेक्जेंड्रिया के अधिकारियों के साथ वार्ता की।

फ्लैग ऑफीसर कमांडर-इन-चीफ सदर्न नवल कमांड के वाइस एडमिरल सुनील के. दामले ने 9-13 सितम्बर 2007 तक मिस्र की यात्रा की। उच्च पाठ्यक्रम, आर्मी वार कॉलेज के के अठारह अधिकारियों ने 11-13 सितम्बर 2007 तक काहिरा की यात्रा की।

मिस्र के स्वास्थ्य एवं जनसंख्या मंत्री, हातेम एल गबली 23-25 अक्टूबर 2007 तक निजी दौरे पर नई दिल्ली आए। उन्होंने स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री, अंबुमणि रामदास से अक्टूबर 2007 में मुलाकात की और स्वास्थ्य देखभाल और फार्मास्यूटिकल्स क्षेत्र में द्विपक्षीय सहयोग की संभावनाओं पर विचार-विमर्श किया।

इजरायल

वर्ष 2007, भारत और इजरायल के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना की 15वीं वर्षगाठ के रूप में मनाई गई। दोनों देशों के बीच बहुआयामी संबंध विभिन्न क्षेत्रों में दौरे और प्रतिनिधिमंडल के आदान-प्रदान के जरिए और मजबूत हुए।

उद्योग राज्य मंत्री अश्वनी कुमार ने 4-7 अगस्त, 2007 तक इजरायल में प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। यात्रा के दौरान उन्होंने इजराइल के राष्ट्रपति शायमन पेरेज, व्यापार, उद्योग और श्रम मंत्री एलीयाहू इशाय और परिवहन तथा सड़क संरक्षा मंत्री शॉल मोफेज से मुलाकात की।

पश्चिमी एशिया और मध्य पूर्व शांति प्रक्रिया के लिए भारत सरकार के विशेष दूत श्री सी.आर. गरेखान ने फरवरी और सितम्बर, 2007 में इजरायल की यात्रा की। उन्होंने उप प्रधान मंत्री और विदेश मंत्री तिजिपी लिवनी और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों से मुलाकात की।

इजरायल से वहां के परिवहन मंत्री शाउल मोफाज ने मार्च 2007 में भारत की यात्रा की; इजरायल के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार इलान मिजराही ने अक्टूबर 2007 में भारत की यात्रा की। इजरायल के आंतरिक मंत्री मीर शीट्रिट ने आपदा जोखिम प्रशमन पर 7-8 नवंबर 2007 को नई दिल्ली में आयोजित दूसरे एशियाई मंत्रीस्तरीय सम्मेलन में भाग लेने के लिए भारत का दौरा किया।

वर्ष के दौरान किए गए अन्य अधिकारी स्तरीय आदान-प्रदान में

आतंकवाद से मुकाबला करने पर संयुक्त कार्य दल की वार्ता का छठा दौर और नई दिल्ली में मार्च 2007 में आयोजित अप्रसार पर बातचीत का तीसरा दौर; आईएनएस सुजाता और आईएनएस शार्दूल-दो भारतीय नौसेना प्रशिक्षण पोत द्वारा हाइफा, इजरायल में 23-27 सितम्बर 2007 तक बंदरगाह यात्रा शामिल है।

इजरायल के सेंट्रल ब्यूरो ऑफ स्टेटिस्टिक्स के अनुसार जनवरी-सितम्बर 2007 की अवधि के दौरान द्विपक्षीय व्यापार के आंकड़े 2440.3 मिलियन अमरीकी डालर थी जो कि पिछले वर्ष की समान अवधि की तुलना में कुल मिलाकर 22.87% अधिक थी। वर्ष 2007 के दौरान गुजरात, महाराष्ट्र, मेघालय, मिजोरम और अन्य राज्यों के व्यापार प्रतिनिधिमंडल ने इजरायल का दौरा किया।

वर्ष के दौरान अन्य महत्वपूर्ण वाणिज्यिक घटनाक्रम में शामिल है- इजरायल में काम करने वाले पहले भारतीय बैंक के रूप में जून 2007 में तेल अवीव में स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की शाखा का उद्घाटन; इजरायल में भारतीय कंपनियों द्वारा उत्पादन किए जा रहे फार्मास्यूटिक्ल्स, टायर और सिंचाई उपकरणों के क्षेत्रों में निवेश एवं अधिग्रहण; और भारत में अवसंरचना एवं भू-संपदा क्षेत्र में इजरायली कंपनियों द्वारा बड़े पैमाने पर निवेश।

भारत और इजरायल के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना के 15वें वर्षगांठ और साथ ही भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति का 60वीं वर्षगांठ मनाने के लिए तेल अवीव स्थित भारतीय दूतावास ने भा.सा.स.परि. के सहयोग से 16-22 अगस्त 2007 तक "भारत महोत्सव" का आयोजन किया। इसके अलावा तेल अवीव में एक फिल्म महोत्सव भी 18-30 अगस्त 2007 तक इस अवसर पर आयोजित किया गया।

भारत-इजरायल सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अन्तर्गत भारत में अध्ययन करने के लिए चार इजरायली छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान की गई। पांच भारतीय छात्रों ने इजरायली सरकार द्वारा पेशकश की गई पारस्परिक छात्रवृत्ति स्कीम के तहत इजरायली संस्थानों में प्रवेश लिया है। प्रवासी भारतीय कार्य मंत्रालय द्वारा आयोजित "नो इंडिया प्रोग्राम" (केआईपी) के तहत भारतीय मूल के तीन इजरायली युवाओं ने 29 अगस्त-15 सितम्बर 2007 तक भाग लिया।

तेल अवीव स्थित दूतावास में तीन सेवा प्रदाताओं के माध्यम से 15 अप्रैल 2007 से वीजा आवेदन सेवाओं का आउटसोर्सिंग का कार्य प्रारंभ हो गया है। भारत की यात्रा करने के लिए वीजा की मांगों में हो रही निरंतर वृद्धि के बीच तेल अवीव स्थित दूतावास ने अप्रैल-अक्टूबर 2007 की अवधि के दौरान 19,346 वीजा जारी किए। इसी अवधि के दौरान इजरायल में भारतीय मूल के व्यक्तियों के 51 ओसीआई पंजीकरण प्रमाण-पत्र और 7 पीआईओ कार्ड जारी किए गए।

भारतीय समुदाय के कार्यक्रलापों में हमने अपनी सक्रिय भागीदारी जारी रखी और विभिन्न कार्यक्रमों को सहायता दी जिनमें शामिल है- महाराष्ट्र से आने वाले भारतीय यहूदी समाज द्वारा इजरायल में प्रकाशित एक मराठी तिमाही पत्रिका "मायबोली" के संपादकीय बोर्ड द्वारा लोड (इजरायल) में आयोजित 19वीं वार्षिक मायबोली स्नेह सम्मेलन (1 अप्रैल 2007); कोचिनी मूल के यहूदी समुदाय द्वारा नेवातीम में आयोजित भारतीय-कोचिनी लोकगीत संध्या (9 अगस्त 2007); लोड में भारतीय-यहूदी सिनागोग का वर्षगांठ समारोह (30 जुलाई, 2007) और रामले में मागेन शालोम सिनागोग (3 सितम्बर 2007); और डिमोना में "हेरिटेज म्यूजियम फॉर इंडियन जूवरी" का उद्घाटन (9 सितम्बर 2007)।

जोर्डन

शाह अब्दुल्ला-II इब्न अल हुसैन की पिछले वर्ष भारत की हुई ऐतिहासिक राजकीय यात्रा से जोर्डन के साथ द्विपक्षीय संबंधों में आई गति वर्ष 2007 में घटे महत्वपूर्ण घटनाक्रमों से और मजबूत हुआ।

विदेश राज्य मंत्री श्री ई.अहमद ने 26-28 सितम्बर 2007 तक जोर्डन की यात्रा की और भारत के राष्ट्रपति की ओर से जोर्डन के शाह को लिखा गया एक पत्र सौंपा जिसमें सभी क्षेत्रों में जोर्डन के साथ द्विपक्षीय संबंधों को सुदृढ़ करने की भारत की इच्छा व्यक्त की गई थी। शाह अब्दुल्ला ने पिछले वर्ष भारत की हुई अपनी सफल यात्रा को आगे सुदृढ़ करने की जोर्डन की इच्छा और भारतीय नेताओं के साथ अपनी बैठक के विषय में राष्ट्रपति को स्मरण दिलाया।

आवास एवं शहरी गरीबी उन्मूलन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) कुमारी शैलजा ने एशिया-प्रशांत आवास एवं शहरी विकास मंत्रियों के ब्यूरो के अध्यक्ष के रूप में ब्यूरो की दूसरी बैठक की अध्यक्षता करने के लिए 27-28 अक्टूबर 2007 को अम्मान की यात्रा की।

भारतीय उद्योग परिसंघ का एक प्रतिनिधिमंडल अपने अध्यक्ष के नेतृत्व में मई 2007 में डेड सी में मध्य पूर्व विश्व आर्थिक मंच में भाग लिया।

जोर्डन से ऊर्जा एवं प्राकृतिक संसाधन मंत्री डा. खालिद अल श्रीडेह ने नई दिल्ली में 7-8 अक्टूबर 2007 को आयोजित द्वितीय एशियाई मंत्री स्तरीय आपदा प्रशमन सम्मेलन में भाग लेने के लिए भारत का दौरा किया।

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आईसीसीआर) ने 26-29

जुलाई, 2007 तक आयोजित 25वें जेराश महोत्सव में भाग लेने के लिए एक सांस्कृतिक मंडली जोर्डन भेजा। जोर्डन उच्च घराने के और एक सुविख्यात चित्रकार शरीफाह हिन्द नासर ने आईसीसीआर द्वारा आयोजित कार्यक्रम के अन्तर्गत अपनी चित्रकलाओं की एक प्रदर्शनी 21-28 नवंबर 2007 तक नई दिल्ली में लगायी। सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अन्तर्गत भारत में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए जोर्डन के कई छात्रों को छात्रवृत्तियां प्रदान की गई।

जोर्डन के लिए भारतीय निर्यात ने पूर्व वर्ष की तेजी को कायम रखा और पहले की अपेक्षा 37% की ओर अधिक वृद्धि वर्ष के दौरान दिखी। भारत के लिए जोर्डन के निर्यात में समान अवधि में 19% की वृद्धि हुई। हालांकि व्यापार संतुलन जोर्डन के पक्ष में जारी रहा।

जोर्डन के इशीदिया में 570 मिलियन अमरीकी डालर की लागत से फास्फोरिक अम्ल संयंत्र स्थापित करने के लिए इफको ने जोर्डन फास्फेट माइनिंग कंपनी (जेपीएमसी) के साथ 1 नवंबर 2007 को एक करार पर हस्ताक्षर किया। जोर्डन में सूचना प्रौद्योगिकी, वित्तीय सेवा एवं प्राणी विज्ञान के क्षेत्रों में निवेश आमंत्रित करने के लिए जोर्डन निवेश बोर्ड ने 14 देशों में से एक भारत को चिन्हित किया है। जोर्डन निवेश बोर्ड के एक प्रतिनिधिमंडल ने नवंबर 2007 में भारत की यात्रा की। अकबा विशेष आर्थिक जोन प्राधिकरण ने अपने विशेष आर्थिक जोन में निवेश को बढ़ावा देने के लिए जून 2007 में एक प्रतिनिधिमंडल भारत भेजा। अकबा विकास निगम ने मुम्बई के सिटीस्केप में भाग लेने के लिए 18-20 नवंबर 2007 तक एक प्रतिनिधिमंडल भारत भेजा।

लेबनान

भारत और लेबनान ने संसदीय लोकतंत्र, मुक्त एवं बहुलवादी समाज, गुट-निरपेक्षता, क्षेत्रीय एवं विश्व शांति के प्रति अपनी प्रतिबद्धता, मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था और वैयक्तिक उद्यम के लिए सम्मान जैसी कई समानताओं पर आधारित सौहार्द्रपूर्ण एवं मैत्री संबंधों को जारी रखा। हालांकि इन संबंधों में मुख्यतः द्विपक्षीय कार्यकलापों में कमी और लेबनान में मौजूदा राजनीतिक अवरोध के कारण अभी गति आनी है।

फिलिस्तीनी शरणार्थी शिविर नाहर-अल-बारेद के पुनर्वास और पुनर्निर्माण के लिए अन्तर्राष्ट्रीय मदद लेने की लेबनान की सरकार के अपील के उत्तर में भारत ने 6,00,000 अमरीकी डालर तक की सहायता देने का वायदा किया है।

3.8 मिलियन अमरीकी डालर की लागत से 31 मार्च 2007 को एक नया चांसरी भवन खरीदा गया है।

सत्याग्रह शताब्दी समारोहों के भाग के रूप में मिशन ने लेबनान के विभिन्न महत्वपूर्ण शहरों में महात्मा गाँधी के फोटो की एक प्रदर्शनी और श्याम बेनेगल द्वारा निर्देशित "दी मेकिंग ऑफ दी महात्मा" फीयर फिल्म का स्क्रीनिंग किया।

लीबिया

भारत-लीबिया द्विपक्षीय संबंध दोनों ओर से हुए उच्च स्तरीय दौरों के साथ वर्ष के दौरान मजबूत हुए। पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्री श्री मुरली देवड़ा ने 30 जनवरी-2 फरवरी 2007 तक लीबिया की यात्रा की और लीबिया के नेता कर्नल मुआम्मार अल-गद्दाफी से मुलाकात की। विदेश मंत्री श्री प्रणब मुखर्जी ने 26-27 मई 2007 को लीबिया की यात्रा की और लीबियाई नेता कर्नल मुआम्मार अल-गद्दाफी से मुलाकात की। विदेशी मंत्री की मई 2007 में हुई लीबिया यात्रा के दौरान एक द्विपक्षीय निवेश संरक्षण करार और एक सांस्कृतिक-सहयोग करार पर हस्ताक्षर किए गए। एशियाई मामलों के लीबिया के मंत्री मोहम्मद बुर्रानी ने विदेश कार्यालय परामर्शों के लिए 22-26 मार्च 2007 तक भारत की यात्रा की। इस यात्रा के दौरान राजनीतिक परामर्शों पर एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

भारत-लीबिया संयुक्त आयोग का 10वां सत्र नई दिल्ली में 12 जुलाई 2007 को आयोजित की गई। लीबिया के पक्ष का नेतृत्व आर्थिक, व्यापार एवं निवेश मंत्री डा. अली अब्दुलाजीज अल-एस्सावी ने किया जबकि भारतीय पक्ष का नेतृत्व वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री श्री कमलनाथ ने किया। मंत्री और उनके प्रतिनिधिमंडल ने आईटी कंपनियों के साथ तालमेल करने के लिए बंगलौर की भी यात्रा की।

भारत और लीबिया के बीच द्विपक्षीय व्यापार में पूर्व वर्ष की तुलना में वर्ष 2006-07 के दौरान काफी प्रगति देखने को मिली। पूर्व वर्ष के 115.23 मिलियन अमरीकी डालर की तुलना में वर्ष 2006-07 के दौरान द्विपक्षीय व्यापार 221.09 मिलियन अमरीकी डालर रही।

पेट्रोलियम मंत्री ने लीबियाई कार्मिकों को तेल क्षेत्र में 100 प्रशिक्षण स्लाटों की पेशकश की।

लीबिया में भारतीय कंपनियां और सार्वजनिक क्षेत्र के तेल उपक्रम-तेल एवं पाइप लाइन, आवास, आईटी प्रशिक्षण इत्यादि जैसी विकास कार्यकलापों में लगी रहीं। भेल ने जनरल विद्युत कंपनी के साथ मिलकर 600 एमवी गैस टर्बाइन विद्युत परियोजना पूरी की। ऑयल विदेश लिमिटेड बोली के चौथे दौर में ऑपरेटर के रूप में अर्हता प्राप्त की जबकि निवेशक के रूप में ऑयल इंडिया और इंडियन ऑयल कारपोरेशन ने अर्हता पाया है। लीबिया के विद्युत, जल एवं गैस मंत्रालय सिटी गैस परियोजना

और पाइन लाइन का निर्माण करने के लिए एक संयुक्त उपक्रम लगाने को मंजूरी दी गई और दोनों पक्ष एक समझौता ज्ञापन को अन्तिम रूप देने के लिए बातचीत कर रहे हैं। 4000 आवास इकाइयों का निर्माण करने के लिए डीएल कंस्ट्रक्शन ने दो ठेके प्राप्त किए हैं। भारतीय व्यापार संवर्धन संगठन के तत्वावधान में 22 भारतीय कंपनियों ने अप्रैल 2007 में आयोजित त्रिपोली अन्तर्राष्ट्रीय मेले में भाग लिया और भारतीय अधिकारियों/व्यापार/वाणिज्य के 13 प्रतिनिधिमंडलों ने लीबिया की यात्रा की।

मोरक्को

भारत और मोरक्को के बीच संबंधों में प्रगति और मजबूती सभी क्षेत्रों में जारी रही। "ऊर्जा और उद्योग के क्षेत्रों में दक्षिण-दक्षिण सहयोग-चुनौतियां एवं अवसर" पर मई 2007 में एक संगोष्ठी में भाग लेने के लिए मानद अतिथि के रूप में उद्योग राज्य मंत्री डा. अश्वनी कुमार ने मोरक्को की यात्रा की। बैठक के दौरान मोरक्को के उद्योग मंत्री ने मोरक्को में भारतीय कंपनियों की बढ़ती संख्या पर संतोष व्यक्त किया।

विदेश सेवा संस्थान के डीन ने 5-8 नवंबर 2007 तक मोरक्को की यात्रा की और वरिष्ठ सरकारी अधिकारियों के साथ बैठकें की।

भारत और मोरक्को के बीच द्विपक्षीय व्यापार में उल्लेखनीय वृद्धि देखने को मिली और वर्ष 2006 के दौरान यह 711 मिलियन अमरीकी डालर से ऊपर पहुंच गया। जनवरी-सितम्बर 2007 की अवधि के दौरान भारत और मोरक्को के बीच व्यापार विनिमय 606.6 मिलियन अमरीकी डालर का रहा। महिन्द्रा एंड महिन्द्रा ने मोरक्को को उपयोगिता वाहनों की अपनी निर्यात शुरू की और टाटा कंसलटेंसी सर्विसेज (टीसीएस) ने कासा ब्लांका में अपना कार्यालय खोला। 19-24 अप्रैल 2007 तक मेक्कनेस में आयोजित द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय कृषि मेले में मैसर्स महिन्द्रा एंड महिन्द्रा द्वारा निर्मित स्कार्पियो वाहन के वितरक मैसर्स मेडीऑटो और किर्लोस्कर के स्थानीय वितरकों ने क्रमशः यूटिलिटी वाहनों और कृषि उपकरणों को प्रदर्शित किया।

इंजीनियरी उत्पादों एवं सेवाओं के निर्यात को प्रोत्साहित करने के लिए इंजीनियरिंग निर्यात संवर्धन परिषद के एक 14 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने 20-23 नवंबर 2007 तक मोरक्को की यात्रा की।

फेज, मोरक्को में 8 जून 2007 को आयोजित विश्व पवित्र संगीत महोत्सव में भारत की कर्नाटिक गायक वसुमति बद्रीनाथन ने प्रदर्शन किया और 9 अगस्त 2007 को आयोजित 29वें आसिलाह अन्तर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक महोत्सव में सरोद वादक उस्ताद अमजद अली खान ने प्रदर्शन किया।

फिलिस्तीन

भारत फिलिस्तीनी लोगों के अपने स्वयं की गृह भूमि की वैध आकांक्षाओं को अपना अबाधित समर्थन देने के प्रति प्रतिबद्ध रहा और संयुक्त राष्ट्र संघ के संगत संकल्प, चतुर्दिक रोडमैप और अरब शांति पहल के अनुसार व्यापक वार्ता प्रक्रिया फिर से शुरू करने के अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय के सभी प्रयासों में शामिल हुआ।

सचिव (पूर्वी) ने 16 मई 2007 को फिलिस्तीन की यात्रा की और राष्ट्रपति महमूद अब्बास और उप प्रधानमंत्री डा. अज्जाम अहमद से मुलाकात की। फिलिस्तीनी संस्था निर्माण के लिए भारतीय सहायता के मुद्दे पर उन्होंने उप विदेश मंत्री डा. अहमद साबोह के साथ भी प्रतिनिधिस्तरीय बैठकें की।

फिलिस्तीन को राजनीतिक, सामानों एवं तकनीकी सहायता देने की भारत की प्रतिबद्धता के दायरे के अन्दर विदेश राज्य मंत्री श्री ई.अहमद ने 27-28 सितम्बर 2007 को फिलिस्तीन की यात्रा की और फिलिस्तीन के उप विदेश मंत्री के साथ वार्ता की।

मध्य पूर्व शांति प्रक्रिया के विशेष दूत सी.आर. गरेखान ने फरवरी और सितम्बर 2007 के दौरान दो बाद इस क्षेत्र का दौरा किया।

अन्नापोलिस में 27-28 नवंबर 2007 को आयोजित मध्य पूर्व शांति सम्मेलन में भाग लेने के लिए भारत को आमंत्रित किया गया। केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री कपिल सिब्बल ने, जिन्होंने भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। सम्मेलन के दौरान 27 नवंबर 2007 को राष्ट्रपति महमूद अब्बास से मुलाकात की।

भारत ने दिसंबर, 2007 में पेरिस में आयोजित फिलिस्तीन पर अन्तर्राष्ट्रीय डोनर्स सम्मेलन में भाग लिया। हमने फिलिस्तीन के विकास परियोजनाओं के लिए पेरिस डोनर्स सम्मेलन में 5 मिलियन अमरीकी डालर देने का वचन दिया है और अपने आइटेक कार्यक्रम के अन्तर्गत 400 फिलिस्तीनी अधिकारियों को प्रशिक्षण देंगे।

भारत ने घोषणा की है है कि वह फिलिस्तीन भूभाग में एक ब्वॉएज वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, एक कार्डियक शल्य केन्द्र, एक साफ्टवेयर टेक्नोलॉजी एवं औद्योगिक पार्क, प्रधानमंत्री सचिवालय और एक भारतीय अध्ययन केन्द्र और भारतीय अध्ययन पीठ के निर्माण के लिए भी धन देगा। नई दिल्ली में फिलिस्तीनी दूतावास और आबुदीस में एक ब्वॉएज स्कूल के निर्माण की प्रक्रिया शुरू हो गई है।

सूडान

अप्रैल 2007 में भारतीय रेल निर्माण कंपनी (इरकॉन) ने 170 कि.मी. लंबी खार्तुम-वाड मेदानी स्टैंडर्ड गेज जाइन के लिए

तकनीकी करार को अंतिम रूप दिया है जो कि 150 मिलियन अमरीकी डालर की एक्जिम बैंक के भारत सरकार समर्थिक रियायती ऋण द्वारा वित्तपोषित होगी।

मई 2007 में सूडान के कृषि बैंक ने अप्रैल 2005 में ओस्लो डोनर्स सम्मेलन में वचनबद्ध भारतीय 100 मिलियन अमरीकी डालर की एक्जिम बैंक ऋण-श्रृंखला के अंतर्गत ट्रैक्टर के लिए टेंडर आमंत्रित किया है। एसकेडी स्थिति में 550 ट्रैक्टर की खरीद को जैसी की सूचना है अंतिम रूप दे दिया गया है।

जुलाई, 2007 में खार्तुम में एक्जिम बैंक और सूडान के वित्त एवं राष्ट्रीय आर्थिक मंत्रालय ने, भारत के 100 मिलियन अमरीकी डालर की ओस्लो प्रतिबद्धता की शेष 52 मिलियन अमरीकी डालर की ऋण श्रृंखला पर हस्ताक्षर किया। शिल्लुक समुदाय के एल्डर्स के अनुरोध और राजदूतावास के अनुमोदन पर जुलाई 2007 में भी ओएनजीसी विदेश लि. ने अपर नील राज्य के फाशडोडा काउंटी के कोडोक शहर को एक शक्तिशाली जेनरेटर दान स्परूप दिया।

अगस्त 2007 में सूडान के निवेश राज्य मंत्री एल सीमैह एल सिद्दीग अल नुर ने सूडान में भारतीय निवेश को बढ़ावा देने के लिए भारत में एक व्यापार प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया।

अगस्त 2007 में टेलीकम्युनिकेशंस कंसलटेंट इंडिया लि. और सूडान मास्टर टेक्नोलॉजी लि. ने सूडान में एसएसटी आपरेशंस को सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी सहायता देने के लिए 18 मिलियन अमरीकी डालर के ठेके पर हस्ताक्षर किए।

उत्तरी एवं दक्षिणी सूडान में बाढ़ राहत के लिए में 1,00,000 अमरीकी डालर मूल्य के शिविर एवं दवाइयों की राहत सामग्री की अगस्त 2007 में घोषणा की गई और वर्ष के अंत तक पूरा कर लिया गया।

अगस्त 2007 में सूडान ऑयल डे (31 अगस्त) के अवसर पर खार्तुम और जुबा में मुम्बई की रंग-फुहार गीत एवं नृत्य मंडली का ओएनजीसी ने प्रदर्शन प्रायोजित किया।

सितंबर 2007 में टेलीकम्यूनिकेशंस कंसल्टेंट इंडिया लि. ने सूडान में प्रस्तावित टेक्नोलॉजी सिरी के लिए वर्ष 2004 की उसकी व्यवहार्यता रिपोर्ट को अद्यतन करने के लिए सूडान के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के साथ एक करार पर हस्ताक्षर किया।

अक्टूबर 2007 में वापकोस ने सूडान आपातकालीन परिवहन एवं अवसंरचना विकास परियोजना के अंतर्गत दक्षिणी सूडान के विभिन्न शहरों को 40 मिलियन अमरीकी डालर की जल एवं विद्युत आपूर्ति परियोजना के लिए विश्व बैंक प्रशासित मल्टी डोनर ट्रस्ट फंड से एक कंसल्टेंसी ठेका प्राप्त किया।

भारत पहला एशियाई देश है जिसने जुबा में अक्टूबर 2007 में अपना प्रधान कोंसलावास खोला।

नवंबर 2007 में सूडान के ऊर्जा एवं खनन मंत्री डा. अवद अहमद अल जाज के नेतृत्व में एक पांच सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने नई दिल्ली में आयोजित (6-7 नवंबर 2007) प्रथम भारत-अफ्रीका हाइड्रोकार्बन शिखर बैठक में भाग लिया। मंत्री अल जाज ने सूडान के राष्ट्रपति उमर अल बशीर का एक संदेश प्रधानमंत्री को सौंपा।

नवंबर 2007 में, ओटावा के फोरम ऑफ फेडरेशन की सहायता से अन्तर-राज्य परिषद सचिवालय, गृह मंत्रालय द्वारा नई दिल्ली में आयोजित (5-7 नवंबर 2007) चौथे अन्तर्राष्ट्रीय संघवाद सम्मेलन में भाग लेने के लिए उत्तरी एवं दक्षिणी सूडान के एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल ने भाग लिया।

भारतीय ओस्लो लाइन आफ क्रेडिट के अंतर्गत सूडान रेलवे कॉरपोरेशन के साथ लोकोमोटिव संविदा को अंतिम रूप देने के लिए टाटा इंटरनेशनल लि. का एक प्रतिनिधिमंडल ने नवंबर 2007 के मध्य में सूडान का दौरा किया।

सीरिया

भारत और सीरिया के बीच हमेशा से सभी स्तरों विशेष रूप से पुराने सभ्यतामूलक मूल्यों, समाजवादी एवं धर्मनिरपेक्ष अभिविन्यासों; गुट निरपेक्ष आंदोलन की सदस्यता और कई अन्तर्राष्ट्रीय और क्षेत्रीय मुद्दों पर एक जैसी बोधगम्यता की समानताओं पर आधारित राजनीतिक स्तरों पर सौहार्द्रपूर्ण एवं मैत्रीपूर्ण सबंध रहे हैं।

सीरिया के विदेश मंत्री, वालिद अल मुआल्लेम ने सीरियाई राष्ट्रपति बंशर असाद की भारत की यात्रा की तैयारी के लिए 13-15 अगस्त 2007 तक भारत के दौरे पर आए।

पिछले कुछ वर्षों में भारत-सीरिया वाणिज्यिक विनिमयों में अच्छी गति देखने को मिली है। भारत 252.64 मिलियन अमरीकी डालर के मूल्य के निर्यात के साथ छठें स्थान पर रहा जो 2005-06 में 7.46% की और वृद्धि कर 271.49 अमरीकी डालर हो गया।

द्विपक्षीय व्यापार भारत के पक्ष में रहा। सीरिया के लिए भारत के निर्यात में मुख्यतः मानव निर्मित धागे और वस्त्र, मशीनरी और उपकरण, दवाइयां एवं अच्छे रसायन, परिवहन उपकरण, जूट और जूट उत्पाद, धातु के उत्पाद, प्लास्टिक एवं लिनोलियम उत्पाद, रबर निर्मित उत्पाद और इलेक्ट्रानिक सामान शामिल हैं। लेकिन सीरिया से आयात ज्यादातर कच्ची रुई, दलहन, असंसाधित ऊन और फास्फेट तक सीमित है।

ट्यूनीशिया

इस अवधि के दौरान भारत और ट्यूनिशिया के बीच द्विपक्षीय संबंध मैत्रीपूर्ण एवं सौहार्द्रपूर्ण बने रहे। विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय मंचों में पदों के लिए भारत और ट्यूनिशिया द्वारा एक दूसरे के उम्मीदवारी को समर्थन देने के लिए अच्छे सहयोग रहे हैं।

विदेश राज्य मंत्री श्री ई. अहमद ने भारत-ट्यूनिशिया संयुक्त आयोग के 10वें सत्र की सह-अध्यक्षता करने के लिए एक उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। दोनों देशों ने वायु सेवाओं और लघु एवं मध्यम आकार के उद्यम के क्षेत्रों में दो करार पर हस्ताक्षर किए। इन विचार-विमर्श के दौरान एक सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम (2007-09) पर भी हस्ताक्षर किए गए।

इस अवधि के दौरान द्विपक्षीय व्यापार में काफी वृद्धि हुई। वर्ष 2006-07 के दौरान दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार पूर्व वर्ष के 183.72 अमरीकी डालर की तुलना में 258.85 मिलियन अमरीकी डालर रही जिसके परिणामस्वरूप 40.89% की वृद्धि हुई।

पिछले वर्ष भारत में फास्फेट और फास्फोरिक एसिड की आपूर्ति करने के लिए 200 मिलियन अमरीकी डालर की भारत-ट्यूनिशियाई-भारतीय उर्वरक एस.ए. शुरू की गई जिसके लिए बोली चल रही है। यह ट्यूनिशिया में पहला भारतीय निवेश है। स्खीरा-III के अन्तर्गत एक अन्य भारत-ट्यूनिशिया संयुक्त उपक्रम परियोजना के लिए बातचीत प्रगति पर है। ऊपर उल्लिखित दो ट्यूनिशई कंपनी नामतः जीसीटी और सीपीजी के अलावा परियोजना में तीन भारतीय कंपनियां अर्थात राष्ट्रीय केमिकल्स एवं उर्वरक लि., कृषक भारतीय कॉपरेटिव लि. और मिनरल्स एवं मेटल्स ट्रेडिंग कंपनी शामिल है। इस प्रयोजनार्थ एक संयुक्त कार्य दल स्थापित हो चुकी है जिसकी पहली बैठक शीघ्र होने की आशा है।

तेल एवं प्राकृतिक गैस के क्षेत्र में संयुक्त कार्य दल की पहली बैठक में भाग लेने के लिए एक चार सदस्यीय ट्यूनिशियाई प्रतिनिधिमंडल ने 2-3 अगस्त 2007 को भारत की यात्रा की।

अरब लीग

भारत-अरब लीग द्विपक्षीय वार्ता का तीसरा दौर नई दिल्ली में 9-10 मई 2007 को आयोजित किया गया। अरब लीग महासचिव के कैबिनेट के प्रमुख हेशाम युसफ ने अरब लीग के प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया जबकि भारतीय पक्ष का नेतृत्व सचिव (पूर्वी) ने किया। अरब राज्यों के साथ सहयोग के लिए एक समझौता ज्ञापन पर कार्य शुरू किया गया है।

■■

अफ्रीका (सहारा से दक्षिण) 6

पूर्वी और दक्षिणी अफ्रीका

पूर्वी एवं दक्षिणी अफ्रीका के प्रति भारत का दृष्टिकोण ऐतिहासिक संबंधों और अतीत की मजबूत राजनीतिक आधारशिलाओं द्वारा निर्धारित एवं अभिप्रेरित होता है। हमारी भागीदारी सुदृढ़ हुई और पैन-अफ्रीकी स्तर सहित अन्य स्तरों अर्थात द्विपक्षीय, क्षेत्रीय एवं बहुपक्षीय स्तरों पर हमारे सम्पर्कों को और संवर्धित करने के लिए अनेक पहलकदमियाँ की गईं।

भारत ने इस क्षेत्र से होने वाली अनेक उच्च स्तरीय यात्राओं की मेजबानी कीः

- इथोपिया के प्रधान मंत्री मेलेस जेनावी ने 5-7 नवंबर 2007 तक नई दिल्ली में संघवाद पर आयोजित सम्मेलन में भाग लेने के लिए यहाँ का दौरा किया।
- कामरोस संघ के राष्ट्रपति श्री अहमद अब्दुल्ला मुहम्मद साम्बी ने 3-8 नवंबर 2007 तक संघवाद पर आयोजित चौथे अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लेने के लिए भारत का दौरा किया।
- मारीशस के प्रधान मंत्री डा. नवीनचंद्र रामगुलाम 8-9 जनवरी 2008 तक नई दिल्ली में आयोजित छठे प्रवासी भारतीय दिवस समारोहों के अवसर पर मुख्य अतिथि थे।

भारत की ओर से प्रधान मंत्री डा. मनमोहन सिंह ने नवंबर 2007 में दक्षिण अफ्रीका का दौरा किया और दूसरे भारत-ब्राजील-दक्षिण अफ्रीका (आईबीएसए) शिखर सम्मेलन में भाग लिया।

इस वर्ष भारत की हुई महत्वपूर्ण यात्राओं में शामिल हैंः

- कृषि मंत्री, एरीट्रिया (अप्रैल)
- खनिज एवं ऊर्जा मंत्री, दक्षिण अफ्रीका (अप्रैल)
- न्याय एवं संवैधानिक विकास मंत्री, दक्षिण अफ्रीका (अप्रैल)
- विदेश मंत्री, दक्षिण अफ्रीका (जुलाई)
- कृषि प्रजनन एवं मात्स्यिकी मंत्री, मेडागास्कर (जुलाई)
- कृषि एवं खाद्य सुरक्षा मंत्री, लेसोथो (अगस्त)
- विदेश राज्य मंत्री, युगांडा (सितंबर)
- गृह मंत्री, दक्षिण अफ्रीका (सितंबर)
- कृषि एवं भूमि मामलों के मंत्री, दक्षिण अफ्रीका (सितंबर-अक्तूबर)
- जाम्बिया, दक्षिण अफ्रीका, नामीबिया, मोजाम्बिक, लेसोथो, मलावी, स्वाजीलैंड, बोत्सवाना, तंजानिया, उगांडा, मारीशस तथा केन्या के संसद सदस्यों ने सितंबर 2007 में नई दिल्ली में आयोजित 53वें राष्ट्रमंडल संसदीय सम्मेलन में भाग लिया।
- कोमरोस संघ, इथोपिया, मलावी, मोजाम्बिक, नामीबिया, मारीशस, तंजानिया, दक्षिण अफ्रीका के मंत्रिस्तरीय शिष्टमंडलों सहित अन्य शिष्टमंडलों ने नवंबर 2007 में आयोजित प्रथम भारत अफ्रीका हाइड्रोकार्बन सम्मेलन एवं प्रदर्शनी में भाग लिया।
- संचार विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री, बोत्सवाना (अक्तूबर)
- खान एवं ऊर्जा मंत्री, इथोपिया (नवंबर)
- खनिज संसाधन उप मंत्री, मोजाम्बिक (नवंबर)

भारत सेः

- कृषि राज्य मंत्री की उगांडा यात्रा (मई)
- उच्च शिक्षा मंत्री की जंजीबार (तंजानिया संयुक्त गणराज्य) की यात्रा (मई)
- विदेश मंत्री की इथोपिया यात्रा (जुलाई)
- विदेश राज्य मंत्री श्री आनंद शर्मा की मोजाम्बिक यात्रा (जुलाई)
- संप्रग एवं कांग्रेस अध्यक्ष की दक्षिण अफ्रीका यात्रा (अगस्त)
- पोत परिवहन, सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री की मारीशस यात्रा (अक्तूबर)
- सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री की मारीशस यात्रा (नवंबर)
- प्रवासी भारतीय कार्य मंत्री की मोजाम्बिक यात्रा (नवंबर)

भारत इस क्षेत्र में मानव संसाधन के विकास में निरन्तर लगा

हुआ है। भारतीय तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग (आइटेक) कार्यक्रम के अन्तर्गत इस क्षेत्र के देशों को प्रशिक्षण, विशेषज्ञों की प्रतिनियुक्ति तथा परियोजनाओं में सहायता दी जाती है। मंत्रालय के "अफ्रीका को सहायता" कार्यक्रम के अन्तर्गत परियोजनाओं के रूप में अनेक देशों को सीधी सहायता दी जाती है ताकि इन देशों के संसाधनों को सम्पूरित और वहां की क्षमताओं को विकसित किया जा सके। मंत्रालय ने "पैन अफ्रीकी ई-नेटवर्क" चलाया है जो दूर शिक्षा एवं दूर चिकित्सा सेवाओं को प्राथमिकता देते हुए सभी 53 अफ्रीकी देशों के राज्याध्यक्षों के बीच उपग्रह और फाइबर ऑप्टिक नेटवर्क के द्वारा सम्पर्क स्थापित करके ई-सेवाएं उपलब्ध कराने की एक महत्वाकांक्षी योजना है। कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य में 3500 सैनिक, दक्षिणी सूडान में 3000 सैनिक तथा इथोपिया और इरीट्रिया में लगभग 600 सैनिक भेजकर भारत अफ्रीका में शांति रक्षा प्रयासों में सबसे बड़े योगदानकर्ताओं में से एक था। अलग-अलग देशों के साथ व्यापार और निवेश संबंधों में दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति हुई। क्षेत्रीय आर्थिक समुदायों के साथ संस्थागत सहयोग की रूपरेखा में विशिष्ट परियोजनाओं की पहचान करने में महत्वपूर्ण प्रगति हुई। पैन-अफ्रीकी परियोजना भागीदारी सम्मेलन और अफ्रीका में क्षेत्रीय सम्मेलन का आयोजन करने की परंपरा को आगे बढ़ाया गया। सभी स्तरों पर अफ्रीका के साथ जारी सहयोग को आगे ले जाने के लिए निर्णय लिया गया कि भारत अप्रैल 2008 में नई दिल्ली में भारत अफ्रीका मंच शिखर सम्मेलन की मेजबानी करेगा।

बोत्सवाना

दिसम्बर 2006 में राष्ट्रपति फेस्टस मोगा की भारत यात्रा के दौरान लिए गए निर्णयों पर ठोस अनुवर्ती कार्रवाई की गई। बोत्सवाना ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत को स्थाई सदस्य बनाए जाने का समर्थन किया। बोत्सवाना के संचार विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री पेलोमोनी वैन्सन-मोईतोई ने बोत्सवाना में साइबर सिटी की स्थापना के संबंध में चर्चा करने के लिए अक्टूबर 2007 में भारत का दौरा किया। बोत्सवाना के खनिज ऊर्जा एवं जल संसाधन मंत्री पीएचके केडी केल्वे ने 26-27 अप्रैल 2007 तक मुम्बई में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय हीरा सम्मेलन- "खान से बाजार 2007" में भाग लिया।

कोमरोस

कोमरोस संघ के अध्यक्ष अहमद अब्दुल्ला मोहम्मद शाम्बी ने 3-8 नवम्बर 2007 तक संघवाद पर आयोजित चौथे अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लेने के लिए भारत का दौरा किया। सम्मेलन के दौरान अतिरिक्त समय में राष्ट्रपति शाम्बी ने भारतीय राष्ट्रपति से मुलाकात की। चर्चाओं के दौरान राष्ट्रपति साम्बी ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थाई सदस्यता के लिए भारत की उम्मीदवारी के प्रति स्पष्ट समर्थन व्यक्त किया। राष्ट्रपति महोदया ने कोमरोस की विकास आवश्यकताओ को पूरा करने में भारत के समर्थन को दुहराया। कोमरोस में एक व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्र, माइक्रो, लघु तथा मझोले उपक्रम की स्थापना सहित अन्य दुपक्षीय परियोजनाएं चलाई जाने से संबंधित चर्चाओं पर और प्रगति हुई।

इरीट्रिया

इरीट्रिया के कृषि मंत्री अरेफेन बेरहे जी मेधिन ने विशेष दूत के रूप में 5-7 अप्रैल तक भारत का दौरा किया। उन्होंने विदेश राज्य मंत्री श्री आनंद शर्मा तथा कृषि राज्य मंत्री के साथ चर्चाएं की और इसके साथ ही उन्होंने कृषि एवं लघु उद्योग से जुड़े संस्थानों का दौरा भी किया। वर्ष 2007 के दौरान अनेक भारतीय नौसैनिक पोतों ने इरीट्रिया का सद्भावना दौरा किया। जिसमें शामिल थे 13-16 फरवरी 2007 तक आईएनएस तीर एवं आईएनएस सुजाता, 1-5 सितम्बर 2007 तक आईएनएस शार्दूल आईएनएस कृष्णा और आईएनएस सुजाता तथा 3-5 अक्टूबर तक प्रशिक्षण पोत आईएनएस तरंगिणी। इन दौरों में नौसैनिक पोतों ने इरीट्रिया नौसेना के कार्मिकों को पोतों के अनुरक्षण के संबंध में प्रशिक्षण दिया और इरिट्रया के नौसैनिक पोतों के साथ संयुक्त अभ्यास भी किए।

इथोपिया

3-6 जुलाई 2007 की विदेश मंत्री श्री प्रणब मुखर्जी की इथोपिया यात्रा के साथ ही हमारे संबंध और सुदृढ़ हुए। इस यात्रा के दौरान दोनों पक्षों ने 5 समझौतों पर हस्ताक्षर किए, यथा संयुक्त मंत्रिस्तरीय आयोग की स्थापना, द्विपक्षीय निवेश संवर्धन एवं संरक्षण करार, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी क्षेत्र में सहयोग, विदेश कार्यालय परामर्शों तथा शैक्षिक आदान-प्रदान से संबंद्ध प्रोतोकाल, इथोपिया के क्षमता निर्माण मंत्री तेफेरा वालिवा के साथ विदेश मंत्री ने 6 जुलाई 2007 को भारत की पैन अफ्रीकी ई-नेटवर्क परियोजना के अन्तर्गत आदिस अबाबा विश्वविद्यालय में दूर शिक्षा परियोजना तथा ब्लैक लायन अस्पताल में दूर शिक्षा परियोजना का उद्घाटन किया। विदेश मंत्री ने इथोपिया में चीनी उद्योग के विकास के लिए पहली किश्त के रूप में 122 मिलियन अमरीकी डालर के ऋण किश्तों, आइटेक स्लॉट्स को बढ़ाकर 25 से 50 करने तथा ब्लैक लायन अस्पताल के लिए एक सिटीस्कैन मशीन दान करने की घोषण की। 122 मिलियन अमरीकी डालर की प्रथम ऋण किश्त को जारी करने से संबंधित समझौते पर 4 अक्टूबर 2007 को भारतीय एक्जिम बैंक तथा इथोपिया के वित्त मंत्रालय के बीच नई दिल्ली में हस्ताक्षर किए गए।

इथोपिया के प्रधानमंत्री मेलेश जेनाबी ने 5-7 नवम्बर 2007 तक नई दिल्ली में संघवाद पर आयोजित सम्मेलन में एक बड़े शिष्टमंडल का नेतृत्व किया। उन्होंने प्रधानमंत्री से मुलाकात की जिन्होंने इथोपिया में उच्च शिक्षण के लिए उत्कृष्ट केन्द्रों का विकास किए जाने में सहायता देने के इथोपिया के प्रधानमंत्री

मारीशस के प्रधानमंत्री, डा. नवीनचंद्र रामगुलाम 9 जनवरी 2008 को राष्ट्रपति भवन में भारत की राष्ट्रपति, प्रतिभा देवीसिंह पाटील से मुलाकात करते हुए।

विदेश मंत्री, प्रणव मुखर्जी 5 जुलाई 2007 को इथियोपिया की अपनी यात्रा के दौरान इथियोपिया के विदेश मंत्री, सियोम मेस्फिन के साथ करारों पर हस्ताक्षर करते हुए।

के अनुरोध पर अपनी सहमति जताई। इथोपिया के प्रधामंत्री ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने स्थाई सदस्यता के भारत के दावे का खुले दिल से समर्थन किया।

निवेश के लिए पंजीकरण कराने वाली 265 कंपनियों में से 43 कंपनियों ने वहां अपना कार्य आरंभ कर दिया है जिससे वहां भारत का निवेश 464 मिलियन अमरीकी डालर हो गया है। कैडिला फार्मास्यूटिकल ने 100 प्रकार की दवाओं के उत्पादन के लिए 100 मिलियन अमरीकी डालर की लागत से आदिस अबाबा के पास एक आधुनिक भेषज संयंत्र का उद्घाटन किया है।

वित्तीय वर्ष 2006-07 के दौरान भारत और इथोपिया के बीच कुल व्यापार 125.7 मिलियन अमरीकी डालर का हुआ। भारत से इथोपिया को 114.4 मिलियन अमरीकी डालर का निर्यात किया गया जबकि भारत में इथोपिया से 11.3 मिलियन अमरीकी डालर का आयात हुआ।

कीनिया

वर्ष 2007 के दौरान भारत और कीनिया के बीच अनेक द्विपक्षीय वार्ताओं का आदान-प्रदान हुआ। भारत से हुई यात्राओं में एक है, इको पर्यटन क्षेत्र में सहयोग की संभाव्यता का पता लगाने के लिए महाराष्ट्र सरकार के वन मंत्री बब्बन राव पचपुते की 25-28 अप्रैल 2007 तक की यात्रा। मानव संसाधन राज्य मंत्री श्रीमती बी पुरन्देश्वरी देवी ने नैरोबी में आयोजित द्वितीय ई-शिक्षण अफ्रीकी सम्मेलन में भाग लेने के लिए 27 मई से 1 जून 2007 तक नैरोबी का दौरा किया। कीनिया के कृषि मंत्रालय के एक छः' सदस्यीय शिष्टमंडल ने सूती वस्त्र उद्योग के संबंध में अध्ययन दौरा करने के लिए 1-5 जुलाई 2007 तक भारत का दौरा किया। कीनिया के पुलिस प्रशिक्षण अकादमियों का एक 4 सदस्यीय शिष्टमंडल 26-29 नवम्बर 2007 तक पुलिस प्रशिक्षण केन्द्र नई दिल्ली और हैदराबाद अध्ययन दौरे पर आया। कायम्बू यूनिटी फाइनेन्स कॉपरेटिव यूनियन लिमिटेड के एक 12 सदस्यीय शिष्टमंडल ने सहकारी आन्दोलन और डेयरी प्रसंस्करण का अध्ययन करने के लिए महाराष्ट्र का दौरा किया। कीनिया पुलिस के एक 4 सदस्यीय शिष्टमंडल ने 27 नवम्बर-1 दिसम्बर 2007 तक भारत का दौरा किया।

कीनिया औद्योगिक अनुसंधान विकास संस्थान (केआईआरडीआई) और भारत के कैमटेक एसोसिएट्स प्रा.लि. के बीच केआईआरडीआई के जरिए कीनिया को सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के अन्तरण को क्रियान्वित करने के लिए 15 अक्टूबर 2007 को एक समझौता ज्ञापन संपन्न किया गया। इस परियोजना के जरिए 300 आईसीटी उद्यमियों का विकास किया जाएगा और इस पर कैमटेक को अनुमानतः 252000 डालर की लागत आएगी। एक भारतीय कंपनी भारत को मुम्बासा में तरल पेट्रोलियम गैस संयंत्र स्थापित करने के लिए केन्या की पाइप लाइन कंपनी से 30 मिलियन अमरीकी डालर का ठेका मिला है।

लेसोथो

मसेरू में भारतीय सेना की प्रशिक्षण टीम की उपस्थिति भारत और लेसोथो के बीच गहन विश्वास और मैत्री का एक सतत प्रतीक है। लेसोथो सरकार के निमंत्रण पर भारतीय सेना की प्रशिक्षण टीम के कार्यकाल को वर्ष 2009 तक बढ़ा दिया गया है। राष्ट्रीय खनिज विकास निगम ने लेसोथो में पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी की स्थापना के लिए कार्य आरंभ कर दिया है। सीडेक नेरोथोली पॉलिटेक्निक में सूचना प्रौद्योगिकी की स्थापना किए जाने के संबंध में एक व्यवहारिता अध्ययन पूरा किया है जिसका वित्त पोषण भारत सरकार द्वारा किया जाएगा। भारत लेसोथो संयुक्त आयोग को पुनः सक्रिय बनाया जा रहा है। लेसोथो के कृषि एवं खाद्य सुरक्षा मंत्री लेसोले मोकोमा ने 27-30 अगस्त 2007 तक भारत का दौरा किया। लेसोथो के स्थानीय शासन मंत्री डा. पोन्तसो एम सेकातले ने 11-12 अक्टूबर 2007 तक भारत का दौरा किया। राष्ट्रीय असेम्बली के सभापति न्लहोई एलिस मोत्समाई और मुख्य न्यायाधीश महापेला लेबोहांग लेहोहला ने लखनऊ में आयोजित विश्व के मुख्य न्यायधीशों के 8वें अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लेने के लिए दिसम्बर 2007 में भारत का दौरा किया।

मेडागास्कर

मेडागास्कर के कृषि, प्रजनन और मात्स्यिकी मंत्री मैरियस रातोलोजानाहारी ने 22-26 जुलाई 2007 तक भारत का दौरा किया। चर्चाओं में मुख्य रूप से कृषि, कृषि-अभियांत्रिकी बीज तकनीकी को आधुनिक और विविधतापूर्ण बनाने सहित कृषि प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन क्षमता निर्माण और विशेषज्ञों के आदान-प्रदान में द्विपक्षीय सहयोग पर बल दिया गया। भारत ने मेलागेसी प्रेसिडेंसी के लिए एक इन्टरनेट परियोजना स्थापित करने पर सहमति व्यक्त की है जिसके अन्तर्गत राष्ट्रपति कार्यालय को अन्तानानारिबो में अन्य सरकारी मंत्रियों के कार्यालयों से जोड़ा जाएगा।

मलावी

मलावी ने नई दिल्ली में अपना पहला राजनयिक मिशन खोला और भारत में अपने पहले उच्चायुक्त को नियुक्त किया। आईटेक सहायता कार्यक्रम के अंतर्गत असैनिक प्रशिक्षण स्लाट्स की संख्या वर्ष 2006 में 10 से बढ़ाकर वर्ष 2007 में 15 कर दी गई। मलावी ने ग्रामीण विकास परियोजना के लिए 30 मिलियन अमरीकी डालर का ऋण दिए जाने के अनुरोध को पुनः दोहराया। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद द्वारा प्रायोजित मणीपुरी मार्शल आर्ट मंडली ने जुलाई 2007 में मलावी में अपना प्रदर्शन दिया।

प्रधानमंत्री, डा. मनमोहन सिंह 15 अक्तूबर 2007 को अबूजा नाइजीरिया में एक स्वागत समारोह में नाइजीरिया के राष्ट्रपति, उमारू मूसा यार अदूआ के साथ।

विदेश राज्य मंत्री, आंनद शर्मा 10 मई 2007 को नई दिल्ली में बेनीन की विदेश मंत्री, मरियम-अलदजी बोनी डायलो से मुलाकात करते हुए।

मारीशस

पोत परिवहन सड़क परिवहन तथा राजमार्ग मंत्री श्री टी.आर. बालू ने 15-16 अक्तूबर 2007 तक मारीशस का दौरा किया। यात्रा के दौरान उन्होंने मारीशस समुद्री प्रशिक्षण अकादमी का उद्घाटन किया। पोत परिवहन क्षेत्र में दोनों देशों के बीच सहयोग के क्षेत्रों का पता लगाने के लिए एक संयुक्त कार्य दल का भी गठन किया।

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री श्रीमती मीरा कुमार ने 2-5 नवंबर 2007 तक मारीशस का दौरा किया। यात्रा के दौरान सामाजिक प्रतिरक्षा के क्षेत्र में एक समझौता ज्ञापन सम्पन्न किया गया। इस समझौता ज्ञापन का उद्देश्य सामाजिक कल्याण, सामाजिक सुरक्षा तथा समाज के कमजोर वर्गों के समग्र विकास के क्षेत्र में दोनों देशों के बीच सहयोग को बढ़ावा देना है। रक्षा राज्य मंत्री एम.एम. पल्लमराजू ने 31 अक्तूबर - 3 नवंबर 2007 तक मारीशस का दौरा किया। बिहार के मुख्य मंत्री श्री नितीश कुमार ने भारतीय मूल के लोगों के वैश्विक संगठन (गोपिओ) द्वारा आयोजित ''डायसपोरा सप्ताह'' के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में 26 जुलाई से 1 अगस्त 2007 तक मारीशस का दौरा किया। मारीशस के प्रधानमंत्री श्री नवीनचन्द्र रामगुलाम ने 26 मई 2007 को जेएसएस तकनीकी शिक्षा महाविद्यालय की आधारशिला रखी। यह अकादमी जेएसएस महाविद्यापीठ, मैसूर से संबद्ध है।

विश्व हिन्दी सचिवालय के कार्यकारी बोर्ड की पहली बैठक 24-25 मई 2007 तक मारीशस में हुई। भारत के विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और मारीशस के तृतीयक शिक्षा आयोग के बीच चौथा कंसोर्टियम करार 18 अप्रैल 2007 को संपन्न किया गया। इस करार में मारीशस में तृतीयक शिक्षा क्षेत्र की उदीयमान आवश्यकताओं और चुनौतियों से निपटने का प्रावधान किया गया है।

जून 2007 में भारतीय सेना के 2 सदस्यीय दल ने लघु शस्त्रों तथा क्लोज क्वार्टर बैटलफील्ड रेंज की अवस्थिति और निर्माण के संबंध में मारीशस पक्ष को सलाह देने के लिए वहां का स्थल दौरा किया। भारतीय नौसेना के जल सर्वेक्षण पोत सर्वेक्षक ने 10 मार्च-12 अप्रैल 2007 की अवधि के दौरान भू-आधारित समुद्रीय आयोग तथा पोर्ट माथुरिन बंदरगाह, रोड्रिग्स के लिए तीन स्थानों पर जाकर जल सर्वेक्षण का कार्य किया। जल सर्वेक्षण चार्ट, भू-आधारित समुद्री उद्योग के आंकड़े सितंबर 2007 में मारीशस सरकार को सौंपे गए। भारतीय तट रक्षक जहाज 'समर' ने 26-29 अगस्त 2007 तक मारीशस का सद्भावना दौरा किया। यात्रा के दौरान इसने 27 अगस्त 2007 को मारीशस के समुद्री तट पर समुद्री प्रदूषण से मुकाबला करने के लिए मारीशस के राष्ट्रीय तटरक्षकों के साथ एक दिवसीय संयुक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।

मंगलौर रिफाइनरीज एंड पेट्रोकेमिकल्स लिमिटेड और मारीशस के स्टेट ट्रेडिंग कार्पोरेशन ने अगले तीन वर्षों में मारीशस की पेट्रोलियम संबंधी सभी आवश्यकताओं की आपूर्ति करने के लिए 6 जुलाई 2007 को नई दिल्ली में 2 बिलियन अमरीकी डालर के अनुबंध पर हस्ताक्षर किए।

वित्तीय वर्ष 2006-07 के दौरान भारत और मारीशस के बीच द्विपक्षीय व्यापार 751.04 मिलियन अमरीकी डालर का था। भारत से मारीशस को 736.53 मिलियन अमरीकी डालर (333275.78 लाख रू.) का निर्यात किया गया जबकि मारीशस से भारत में 14.51 मिलियन अमरीकी डालर (6565.80) का आयात हुआ।

मोजाम्बिक

द्विपक्षीय संबंधों को बढ़ावा देने की गति इस वर्ष भी जारी रही। अपर सचिव (कोयला) के नेतृत्व में तीन सदस्यीय शिष्टमंडल ने संयुक्त कार्य दल की बैठक में भाग लेने के लिए 2-7 अप्रैल 2007 तक मोजाम्बिक का दौरा किया तथा एक ''कार्य योजना'' पर हस्ताक्षर किया। विदेश राज्य मंत्री श्री आनंद शर्मा ने 2 जुलाई 2007 को भारतीय उद्योग परिसंघ द्वारा आयोजित भारत अफ्रीका परियोजना भागीदारी के क्षेत्रीय सम्मेलन में भाग लेने के लिए प्रमुख भारतीय व्यावसाइयों के साथ मोजाम्बिक का दौरा किया। मोजाम्बिक के खनिज संसाधन उप मंत्री ने 6-7 नवंबर 2007 को नई दिल्ली में आयोजित भारत-अफ्रीका हाइड्रोकार्बन सम्मेलन में भाग लेने के लिए भारत का दौरा किया। भारत सरकार की होल इन द वाल परियोजना के अंतर्गत जाम्बेरी प्रान्त के माकूबा और गाजा प्रान्त के चिबूतो में एक-एक ''इंटरनेट कियोस्क-लर्निंग स्टेशन'' की स्थापना की गई। 10 सितंबर 2004 को हस्ताक्षरित 20 मिलियन अमरीकी डालर की ऋण श्रृंखला के अंतर्गत ग्रामीण जल ड्रिलिंग, विद्युतीकरण, ड्रिप सिंचाई तथा खाद्य प्रसंस्करण परियोजनाओं के लिए 14 मिलियन अमरीकी डालर का भुगतान किया जा चुका है। 17 अगस्त 2007 को सम्पन्न 20 मिलियन अमरीकी डालर के ऋण में से 3.8 मिलियन अमरीकी डालर का भुगतान गाजा प्रांत में ग्रामीण विद्युतीकरण परियोजना के लिए किया गया है। मोजाम्बिक में 10.68 मिलियन अमरीकी डालर का भारतीय विदेशी प्रत्यक्ष निवेश हुआ है। मोजाम्बिक सरकार ने एचएमटी (आई) द्वारा निर्मित और भारत सरकार द्वारा उपहार स्वरूप दिए गए काजू प्रसंस्करण संयंत्र को स्थापित किए जाने हेतु स्थान की पहचान कर ली है। नाम्पूला प्रान्त की राजधानी नाम्पूला सिटी में पहली बार भारतीय फिल्म महोत्सव का आयोजन किया गया।

वित्तीय वर्ष 2006-07 के दौरान भारत और मोजाम्बिक के बीच 220.03 मिलियन अमरीकी डालर का द्विपक्षीय व्यापार हुआ। भारत से मोजाम्बिक को 197.72 मिलियन अमरीकी डालर का

निर्यात किया गया जबकि मोजाम्बिक से भारत में 28.32 मिलियन अमरीकी डालर का आयात किया गया।

नामीबिया

भारत और नामीबिया के बीच द्विपक्षीय संबंध घनिष्ठ और मैत्रीपूर्ण रहे। नामीबिया ने संयुक्त राष्ट्र, राष्ट्रमंडल तथा अन्य क्षेत्रीय और अंतराष्ट्रीय मंचों पर निरंतर भारत का समर्थन किया और यह विस्तारित संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थाई सदस्यता के लिए भारत की उम्मीदवारी का प्रमुख समर्थक रहा है। दोनों देशों के बीच अनेक उच्चस्तरीय यात्राएं हुईं। आंध्र प्रदेश विधान सभा के अध्यक्ष तथा राष्ट्रमंडल संसदीय संघ की कार्यकारी समिति के सदस्य के आर. सुरेश रेड्डी ने 2-3 फरवरी 2007 तक नामीबिया का दौरा किया। राष्ट्रीय परिषद के अध्यक्ष तथा सीपीए की कार्यकारी समिति के सदस्य अस्सर कपेड़े के नेतृत्व में नामीबियाई संसद के दोनों सदनों के संयुक्त संसदीय शिष्टमंडल ने 21-30 सितंबर 2007 तक नई दिल्ली में आयोजित 53वें राष्ट्रमंडल संसदीय सम्मेलन के अवसर पर भारत का दौरा किया। नामीबिया के व्यापार और उद्योग मंत्री इमैनुअल न्गात्जिएको ने 1-4 जुलाई 2007 तक मपूतो में भारत-अफ्रीका परियोजना भागीदारी पर आयोजित सीआईआई सम्मेलन के लिए नामीबियाई शिष्टमंडल का नेतृत्व किया। मंत्री महोदय ने निम्नलिखित क्षेत्रों में भारतीय निवेशकों को आमंत्रित कियाः अवसंरचना विकास, खनन, खाद्य प्रसंस्करण, ''हरित योजना'' कृषि परियोजनाएँ, चीनी एवं लघु एवं मझोले उद्यमों में संयुक्त उपक्रम, गैस एवं ऊर्जा, विद्युत उत्पादन एवं विरतण।

रवांडा

बीएचईएल द्वारा निष्पादित की जाने वाली विद्युत परियोजना के लिए 20 मिलियन डालर की प्रथम किश्त के रूप में सरकार से सरकार को दिए गए ऋण के लिए एक्जिम बैंक करार पर हस्ताक्षर करने के साथ ही रवांडा के साथ हमारे संबंध और सुदृढ़ हुए। कृषि राज्य मंत्री श्री कांति लाल भूरिया ने 30 मई-1 जून 2007 तक रवांडा का दौरा किया। इस यात्रा के दौरान कृषि एवं पशुपालन के क्षेत्र में सहयोग के लिए रवांडा के कृषि एवं पशुधन संसाधन मंत्रालय के बीच 31 मई 2007 को एक समझौता ज्ञापन सम्पन्न किया गया।

सेशल्स

सेशल्स ने राष्ट्रमंडल सचिव के चुनावों सहित विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय निकायों में होने वाले चुनावों के लिए हमारी उम्मीदवारी का जोरदार समर्थन किया। 25 सितंबर 2007 को विदेश कार्यालय परामर्श आयोजित किया गया। तट रक्षक पोत 'समर' सेशल्स के तट रक्षकों के साथ संयुक्त अभ्यास करने के लिए सितंबर 2007 में पोर्ट विक्टोरिया गया। मई 2007 में सेशल्स के लघु वाणिज्यिक उद्यमों के दो सदस्यीय शिष्टमंडल ने कोचीन में आयोजित छठे वार्षिक राष्ट्रमंडल-भारत लघु वाणिज्यिक प्रतिस्पर्धा कार्यक्रम में भाग लिया।

दक्षिण अफ्रीका

दक्षिण अफ्रीका, जो हमारा एक सामरिक भागीदार है, के साथ भारत के संबंध और सुदृढ़ और विविधतापूर्ण हुए। राजनैतिक स्तर पर निर्मित मजबूत मैत्री की अभिव्यक्ति अनेक उच्चस्तरीय दौरों में हुई और जिसकी परिणति 17 अक्तूबर 2007 को प्रीटोरिया में आयोजित दूसरे आईबीएसए शिखर सम्मेलन के रूप में हुई जिसमें प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह ने भी भाग लिया। बहुपक्षीय मुद्दों विशेष रूप से संयुक्त राष्ट्र प्रणाली में सुधार तथा विश्व व्यापार संगठन के दोहा दौर पर दोनों देशों के बीच उपयोगी सहयोग हुआ। दोनों देशों ने वीजा, पुलिस सहयोग, राजनयिकों के प्रशिक्षण तथा कृषि सहयोग के क्षेत्र में अनेक करारों को अंतिम रूप दिए जाने पर चर्चा की।

संप्रग एवं कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी ने 21-23 अगस्त 2007 तक अफ्रीका का दौरा किया। यात्रा के दौरान उन्होंने अन्य बातों के साथ-साथ पूर्व राष्ट्रपति नेल्सन मंडेला, राष्ट्रपति थाबोमबेकी के साथ मुलाकात की और केपटाउन विश्वविद्यालय में गाँधी व्याख्यानमाला के अंतर्गत उद्घाटन व्याख्यान दिया। उन्होंने संसद में अफ्रीकी नेशनल कांग्रेस, कॉकस को भी संबोधित किया।

अनेक मंत्रिस्तरीय यात्राएं भी हुईं - विदेश राज्य मंत्री श्री आनंद शर्मा की जोहान्सबर्ग और केपटाउन में भारत-दक्षिण अफ्रीका परियोजना भागीदारियों पर सीआईआई सम्मेलनों का उद्घाटन करने के लिए; महिला एवं बाल विकास राज्य मंत्री श्री रेणुका चौधरी की अप्रैल 2007 में डरबन में आयोजित चौथे विश्व महिला कांग्रेस में भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए; विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री श्री कपिल सिब्बल की केपटाउन में आयोजित विश्व आर्थिक मंच की बैठक के लिए; उद्योग राज्य मंत्री डा. अश्विनी कुमार ने इंडियन मर्चेंट्स चैम्बर द्वारा आयोजित ''इंडिया कॉलिंग'' सम्मेलन और जोहान्सबर्ग में इंजीनियरिंग निर्यात संवर्धन परिषद द्वारा आयोजित भारतीय इंजीनियरिंग प्रदर्शनी (आईएनडीईई 2007) में भाग लेने के लिए अगस्त और अक्तूबर 2007 में दो बार दक्षिण अफ्रीका का दौरा किया।

दक्षिण अफ्रीका की ओर से वहाँ के न्याय एवं संवैधानिक विकास मंत्री ब्रिगिट सिल्विया मबांदला ने 1-4 अप्रैल 2007 तक भारत का दौरा किया। खनिज एवं ऊर्जा मंत्री बी.पी. सोंजिका ने अंतर्राष्ट्रीय हीरा सम्मेलन - 'माइंस टू मार्केट 2007' में भाग लेने के लिए 26-27 अप्रैल 2007 तक मुम्बई का दौरा किया। विदेश मंत्री डा. एन ड्लामिनी जुमा ने आईबीएसए वार्ता

मंच के त्रिपक्षीय आयोग की चौथी बैठक में भाग लेने 16-17 जुलाई 2007 तक नई दिल्ली का दौरा किया। प्रेसीडेंसी के मंत्री डा. एसोप पहद ने भारत-दक्षिण अफ्रीका सीईओ मंच की चौथी बैठक में भाग लेने के लिए अगस्त 2007 में मुम्बई का दौरा किया और उन्होंने 8-11 अक्तूबर 2007 तक के लिए भी भारत आने वाले एक व्यापार शिष्टमंडल का नेतृत्व किया। गृहमंत्री नोसीविवे मपीसा-नकूला ने 5-7 अप्रैल 2007 तक भारत का दौरा किया। कृषि एवं भूमि मामलों के मंत्री एल. जिंगवाना ने 29 सितंबर-5 अक्तूबर 2007 तक भारत का दौरा किया। फ्री स्टेट के प्रधानमंत्री फ्रांसिस बीट्रिस मार्सोफ ने निवेश एवं व्यापार संवर्धन मिशन के लिए 8-12 सितंबर 2007 तक भारत का दौरा किया।

दक्षिण अफ्रीकी सेना प्रमुख लेफ्टीनेंट जनरल सोली जचारिया ने 10 से 14 सितंबर 2007 तक भारत की द्विपक्षीय यात्रा की। भारतीय नौसेना के एक शिष्टमंडल ने भारत-दक्षिण अफ्रीका गणराज्य नौसेना स्टाफ चर्चा में भाग लने के लिए सितंबर 2007 में दक्षिण अफ्रीका का दौरा किया। अक्तूबर 2007 में भारत में आयोजित विश्व सैन्य खेलों में दक्षिण अफ्रीका का पर्याप्त प्रतिनिधित्व था। राष्ट्रीय रक्षा कालेज, नई दिल्ली के एक शिष्टमंडल ने मई 2007 में दक्षिण अफ्रीका का दौरा किया और दक्षिण अफ्रीकी राष्ट्रीय रक्षा कालेज का शिष्टमंडल नवंबर 2007 में भारत आया।

व्यापार एवं उद्योग मंत्री एलिजाबेथ थबेथे 13-17 नवंबर 2007 तक 20 सदस्यीय शिष्ट मंडल के प्रमुख के रूप में भारत आईं। उन्होंने एसएमई एक्स्पोजीशन, टेकमार्ट में भाग लिया और माइक्रो, लघु एवं मझोले उपक्रमों के हमारे मंत्री से मुलाकात की।

वर्ष 2007-08 की अवधि के दौरान भारत और अफ्रीका के बीच होने वाले क्रियाकलापों में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई। कुल विपक्षीय व्यापार 4 बिलियन अमरीकी डालर को पार कर गया। भारत द्वारा दक्षिण अफ्रीका को किए जाने वाला निर्यात वर्ष 2005-06 के 1.52 बिलियन अमरीकी डालर से बढ़कर वर्ष 2006-07 में 2.24 बिलियन अमरीकी डालर हो गया। अर्थात 47 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। पहली बार भारत मई 2007 में जोहान्सबर्ग में आयोजित फ्यूचरेक्स -आईसीटी प्रदर्शनी जो दक्षिण अफ्रीका का एक प्रमुख आईसीटी आयोजन है, में भारत ने ''भागीदार देश'' के रूप में भाग लिया। मई 2007 में भी जोहान्सबर्ग और केपटाउन में दो सम्मेलनों का आयोजन किया जिनमें आईसीटी और अवसंरचना क्षेत्रों पर विशेष बल दिया गया। इन सम्मेलनों के दौरान सीआईआई ने यूवाईएफ, ई-टेकवीनी नगर पालिका और दक्षिण अफ्रीकी नगर स्थानीय विकास एजेंसी के साथ तीन समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए। भारत जुलाई 2007 में अफ्रीका बिग सेवन व्यापार मेले में भी एक 'भागीदार देश' था। अगस्त 2007 में मुम्बई आधारित भारतीय मर्चेंट्स चेम्बर ने जोहान्सबर्ग में 'इंडिया कॉलिंग' सम्मेलन का आयोजन किया। तत्पश्चात जोहान्सबर्ग ने इंजीनियरिंग निर्यात संवर्धन परिषद द्वारा आयोजित 'आईएनडीईई 2007' की मेजबानी की जिसमें रिकार्ड 175 भारतीय कम्पनियों ने भागीदारी की।

दक्षिण अफ्रीका में भारतीय निवेश में लगातार वृद्धि हो रही है। माना जाता है कि भारतीय कंपनियाँ दक्षिण अफ्रीका में 2 बिलियन अमरीकी डालर की परियोजनाएँ निष्पादित कर रही हैं। दक्षिण अफ्रीका में भारत की बढ़ती व्यावसायिक उपस्थिति को ध्यान में रखते हुए एक छत्र निकाय की आवश्यकता महसूस की जा रही थी। तदनुसार मार्च 2007 में योजना आयोग के उपाध्यक्ष की जोहान्सबर्ग की यात्रा के दौरान भारतीय व्यावसायिक मंच का शुभारम्भ किया गया। 47 भारतीय कंपनियों ने पहले ही इसमें पंजीकरण करा लिया है और सीआईआई इस मंच का सचिवालय उपलब्ध करा रहा है। दोनों देशों के बीच उत्तरोत्तर बढ़ते व्यावसायिक एवं आर्थिक क्रियाकलाप में एक महत्वपूर्ण घटना थी प्रिटोरिया में अक्तूबर 2007 में भारत-दक्षिण अफ्रीका सीमाशुल्क संघ (एसएसीयू) पीटीए के लिए पहले दौर की वार्ता का आयोजन।

केजेडएन, यूएनआईएसए तथा विटवाटरर्स रैंड विश्वविद्यालयों के कुलपतियों की भारत यात्रा के साथ ही दोनों देशों के बीच शैक्षिक आदान-प्रदान और संवर्धित हुआ। अफ्रीका में भारतीय अध्ययन केन्द्र स्थापित करने के विट्स विश्वविद्यालय के निर्णय और केजेडएन विश्वविद्यालय में गाँधी-लुथुली पीठ की स्थापना से शैक्षिक क्रियाकलाप को और गति मिलेगी। जहाँ तक सांस्कृतिक संबंधों का प्रश्न है पहली बार भारत जोहान्सबर्ग शहर में आयोजित आर्ट्स एलाइव नगर महोत्सव में भागीदार देश बना जिसमें अगस्त-सितंबर 2007 में भारतीय साहित्य मंचीय कलाओं, खानपान, सिनेमा, वस्त्रों और शिल्प की प्रदर्शनियाँ आयोजित की गई। दक्षिण अफ्रीका के कला और संस्कृति मंत्री डा. पाल्लो जार्डन ने 7-10 दिसंबर 2007 तक भारत का दौरा किया। अपनी यात्रा के दौरान उन्होंने ''स्क्रेचेज ऑन द फेस'' शीर्षक के अंतर्गत दक्षिण अफ्रीकी कलाओं की प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

वित्तीय वर्ष 2006-2007 के दौरान भारत और दक्षिण अफ्रीका के बीच कुल 4718.15 मिलियन अमरीकी डालर का द्विपक्षीय व्यापार हुआ। भारत से दक्षिण अफ्रीका को 2246.49 मिलियन अमरीकी डालर का निर्यात किया गया जबकि 2471.66 मिलियन अमरीकी डालर का आयात हुआ।

स्वाजीलैंड

स्वाजीलैंड के उपक्रम एवं रोजगार मंत्री ने दोनों देशों के बीच व्यापार और निवेश की संभावनाओं का पता लगाने के लिए एक बड़े व्यावसायिक शिष्टमंडल के नेता के रूप में 12-19 अगस्त 2007 तक भारत का दौरा किया। स्वाजीलैंड ने भारत सरकार

के होल इन द वाल कार्यक्रम के अंतर्गत इंटरनेट कियोस्क - लर्निंग स्टेशन स्थापित किए जाने में अपनी गहरी रुचि दिखाई है।

तंजानिया

वर्ष 2007-08 के दौरान भारत और तंजानिया के बीच द्विपक्षीय संबंध सौहार्दपूर्ण एवं मैत्रीपूर्ण रहे। तंजानिया के अनेक उच्चस्तरीय शिष्टमंडलों ने भारत का दौरा किया। उद्योग, व्यापार एवं विपणन मंत्री बासिल म्राम्बा ने 16-18 मई 2007 तक नई दिल्ली में आयोजित भारत-तंजानिया संयुक्त व्यापार समिति की दूसरी बैठक के लिए तंजानियाई शिष्टमंडल का नेतृत्व किया। दोनों पक्ष भारत और तंजानिया के बीच विद्यमान व्यापार और आर्थिक संबंधों को और संवर्धित करने पर सहमत हुए। इसके अतिरिक्त संबंधित भारतीय संसदीय संस्थाओं एवं समितियों के साथ विचार-विनिमय करने के लिए तंजानिया के अनेक संसदीय प्रतिनिधिमंडलों ने भी भारत का दौरा किया।

भारत तंजानिया आर्थिक संबंधों को और सुदृढ़ बनाने की दिशा में भी महत्वपूर्ण प्रगति हुई। लघु उद्योग विकास संगठन (एसआईडीओ) दारेस्लाम में एक लघु उद्योग सूचना केंद्र स्थापित किया गया। विदेश मंत्रालय द्वारा वित्तपोषित इस परियोजना का क्रियान्वयन भारतीय राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम ने किया। भारत सरकार द्वारा वित्तपोषित दो अन्य बड़ी परियोजनाओं यथा दारेस्लाम प्रौद्योगिकी संस्थान में आईसीटी में उत्कृष्टता केंद्र की स्थापना और दारेस्लाम में पैन-अफ्रीकी ई-नेटवर्क परियोजना के अंतर्गत दूर शिक्षा तथा दूर चिकित्सा केंद्रों की स्थापना, के क्रियान्वयन की दिशा में भी प्रगति हुई।

भारतीय समूहों और व्यावसायिक कंपनियों के प्रति तंजानिया में रुचि बढ़ रही है। तंजानिया में भारतीय व्यवसाय की उपस्थिति को संवर्धित करने में सबसे महत्वपूर्ण घटना थी 1 अक्तूबर 2007 को तंजानिया रेलवे के प्रचालन का कार्य तंजानिया रेलवे लिमिटेड (टीआरएल) को सौंपना जिसमें भारतीय कंपनी राइट्स की हिस्सेदारी 51 प्रतिशत की है जबकि शेष 49 प्रतिशत की हिस्सेदारी तंजानिया सरकार की है।

निजी निवेश के मोर्चे पर रिलाइंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड ने संयुक्त अरब अमीरात में पंजीकृत रिलाइंस इंडस्ट्रीज मिडल ईस्ट नामक पूर्णतः सहयोगी कंपनी के जरिए गल्फ अफ्रीका पेट्रोलियम कारपोरेशन में बड़ी हिस्सेदारी और प्रबंधन का नियंत्रण प्राप्त किया। तंजानिया में टाटा केमिकल्स अरूसा क्षेत्र के लेक नेट्रान क्षेत्र में सोडा राख कर्षण संयंत्र का निर्माण करने के लिए तंजानिया राष्ट्रीय विकास निगम के साथ एक संयुक्त उद्यम में काम कर रहा है।

वित्तीय वर्ष 2006-07 के दौरान भारत और तंजानिया के बीच कुल 386.94 मिलियन अमरीकी डालर का द्विपक्षीय व्यापार हुआ।

उगांडा

अनेक उच्चस्तरीय यात्राओं के आदान-प्रदान के साथ द्विपक्षीय संबंध घनिष्ठ बने रहे। कृषि राज्य मंत्री कांति लाल भूरिया ने 28-30 मई 2007 तक उगांडा का दौरा किया। उनकी यात्रा के दौरान उगांडा के कृषि, पशुपालन एवं मात्स्यिकी मंत्रालय के साथ कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों में सहयोग पर एक समझौता ज्ञापन सम्पन्न किया गया। महिला एवं बाल विकास राज्य मंत्री श्रीमती रेणुका चौधरी, महिला एवं बाल विकास से संबद्ध राष्ट्रमंडल संसदीय मंच को संबोधित करने तथा राष्ट्रमंडल महिला मामलों की मंत्रियों की आठवीं बैठक में भाग लेने के सिलिसले में 6-15 जून 2007 तक कम्पला में थी। विदेश राज्य मंत्री श्री आनन्द शर्मा ने सीआईआई द्वारा आयोजित ''भारत अफ्रीका परियोजना भागीदारी, 2007'' पर क्षेत्रीय सम्मेलन में भाग लेने के लिए 28-30 जून 2007 तक उगांडा का दौरा किया।

प्रधान मंत्री डा. मनमोहन सिंह ने 23-25 नवंबर 2007 तक कंपाला में आयोजित चोगम 2007 में भाग लिया। उगांडा के प्रथम उप प्रधान मंत्री इरिया कटेगाया ने भारत-ईएसी मंत्रिस्तरीय बैठक में भाग लेने के लिए 19-24 फरवरी 2007 तक भारत का दौरा किया। उगांडा के आंतरिक मामलों के मंत्री रूहकाना रुगुंडा आएजैक मुसम्बा ने उगांडा के राष्ट्रपति योवेरी के मुसेवेनी के विशेष प्रतिनिधि के रूप में 5-17 सितंबर 2007 तक नई दिल्ली का दौरा किया।

उगांडा में उपहार स्वरूप दो ''होल इन द वाल'' स्टेशनों की स्थापना करने से संबंधित समझौता ज्ञापन पर 14 मई 2007 को कंपाला में हस्ताक्षर किए गए। उगांडा सरकार ने अयागो नदी पर बनाए जाने वाली 200-300 मेगावाट पनबिजली परियोजना के लिए 350 मिलियन अमरीकी डालर के अनुदान/रियायती ऋण का अनुरोध किया है जिसके लिए बीएचईएल ने 1 जुलाई 2006 को कंपाला में उगांडा सरकार के साथ एक समझौता ज्ञापन संपन्न किया। आर्थिक कार्य विभाग ने 350 मिलियन अमरीकी डालर में से पहली किश्त के रूप में 50 मिलियन अमरीकी डालर का अनुमोदन कर दिया है। कंपाला चोगम का आयोजन करने के लिए उगांडा को दी जाने वाली सहायता के एक भाग के रूप में भारत सरकार ने उन्हें दो एक्जीक्यूटिव बसें और कचरा उठाने वाले 12 ट्रक उपहार स्वरूप दिए। भारत ने उगांडा में बाढ़ पीड़ितों के लिए राहत सहायता के रूप में 1 करोड़ रुपया दिया।

सीआईआई द्वारा भारत-अफ्रीका परियोजना भागीदारी 2007 पर एक क्षेत्रीय सम्मेलन ''स्ट्रैंथनिंग पार्टनरशिप्स'' का आयोजन 29 जून 2007 तक कंपाला में किया गया।

जाम्बिया

द्विपक्षीय संबंधों का सकारात्मक वातावरण बना रहा। जाम्बिया अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर निरंतर भारत को समर्थन देता रहा है, विशेषकर विभिन्न चुनावों में भारत के उम्मीदवारों को। जहाँ तक आर्थिक क्षेत्र का प्रश्न है जाम्बिया ने 10 मिलियन अमरीकी डालर की ऋण श्रृंखला का पूर्ण उपयोग किया है। खनन क्षेत्र में भारतीय समूह वेदांता कोनकोला के ताम्र खानों में 1 बिलियन अमरीकी डालर के निवेश की परियोजनाएँ चला रहा है। सीमेंट और चीनी उद्योगों में पीटीए बैंक द्वारा वित्तपोषित परियोजनाओं तथा 125 मिलियन अमरीकी डालर वाली जाम्बिया-भारत इस्पात परियोजना में भी भारतीय संयंत्र एवं मशीनों का उपयोग किया जा रहा है। इस वर्ष दोहरे कराधान के परिहार से संबद्ध करार के प्रारूप को अंतिम रूप दिया जा चुका है। प्रतिनियुक्तियों और प्रशिक्षण छात्रवृत्तियों के रूप में रक्षा एवं असैनिक क्षेत्रों (60 स्लाट्स) में आइटेक के अंतर्गत सहयोग जारी है।

जिम्बाब्वे

जून 2006 में हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापन के अंतर्गत 5 मिलियन अमरीकी डालर की भारत-जिम्बाब्वे एसएमई परियोजना के क्रियान्वयन में पर्याप्त प्रगति हुई। हरारे प्रौद्योगिकी संस्थान में अवस्थित भारत-जिम्बाब्वे टूल एवं डाई कार्यशाला में मशीनें लगाए जाने तथा हरारे में लघु उद्यम विकास निगम सार्वजनिक सुविधा केंद्र बनाने का कार्य पूरा होने वाला है। सांस्कृतिक क्षेत्र में भारत ने 1-6 मई 2007 तक हरारे में आयोजित वार्षिक हरारे अंतर्राष्ट्रीय कला महोत्सव में भाग लेना जारी रखा। भारत ने 24 अगस्त से 2 सितंबर 2007 तक हरारे में आयोजित वार्षिक जिम्बाब्वे अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में भी भाग लिया। हरारे में रैनबक्सी और टोरेंट की प्रतिनिधि शाखाओं के साथ-साथ भेषज क्षेत्र में भारतीय कंपनियों की मजबूत उपस्थिति बनी रहीं। माउंट डार्बिन में ''ग्रेफैक्स कॉटन'' का सूत एवं ओटन संयंत्र का उद्घाटन 12 जुलाई 2007 को उपराष्ट्रपति ज्वाएस मुजूरू द्वारा किया गया। उन्होंने माउंट डार्बिन में ही ग्रेफेक्स कॉटन के एक अन्य खाद्य तेल संयंत्र की भी आधारशिला रखी। सनयाती में ग्रेफैक्स कॉटन द्वारा स्थापित खाद्य तेल संयंत्र और हरारे (जिम्बाब्वे) में सरफेस निवेशों ने अपने कार्य जारी रखे।

क्षेत्रीय/उपक्षेत्रीय संगठन

भारत-अफ्रीका क्षमता निर्माण प्रतिष्ठान (एसीबीएफ)

भारत ने हरारे आधारित भारत-अफ्रीका क्षमता निर्माण प्रतिष्ठान (एसीबीएफ) के साथ विचार-विनिमय करना और इसकी बैठकों में भाग लेना जारी रखा। अफ्रीका में सतत विकास और गरीबी उपशमन के लिए एसीबीएफ एक प्रमुख संस्था है। भारत एसीबीएफ का पूर्णकालिक सदस्य बनने वाला पहला एशियाई देश है।

भारत-कोमेसा (पूर्वी एवं दक्षिणी अफ्रीका के लिए साझा बाजार)

भारत-कोमेसा संयुक्त विज्ञप्ति, जिस पर पिछले वर्ष अक्तूबर में हस्ताक्षर किए गए थे, का सुव्यवस्थित तरीके से क्रियान्वयन किया जा रहा है। विभिन्न क्षेत्रों में आर्थिक सहयोग, सूचना प्रौद्योगिकी, भेषज, ऊर्जा तथा औद्योगिक क्षेत्रों में विशेषज्ञों की प्रतिनियुक्ति जैसे सहयोग के क्षेत्र क्रियान्वयन के विभिन्न चरणों में हैं। कोमेसा सचिवालय ने कोमेसा क्षेत्र के लिए एक व्यापक ऊर्जा मास्टर योजना बनाने के भारत क प्रस्ताव पर सकारात्मक उत्तर दिया। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी क्षेत्र में सहयोग पर एक करार बातचीत के अंतिम चरणों में है। सीआईआई और सीबीसी (कोमेसा व्यवसाय परिषद) वास्तविक सहयोग के लिए एक समझौता ज्ञापन पर बातचीत कर रहे हैं। कोमेसा देशों में पुनर्खरीद व्यवस्था के आधार पर उर्वरक उत्पादन, लघु उद्योग विकास, कृषि एवं सिंचाई सुविधाओं का विकास, लघु एवं मझोले उपक्रमों के लिए प्रौद्योगिकी अंतरण तथा क्षमता निर्माण के प्रस्तावों पर कोमेसा सचिवालय द्वारा सक्रियता से विचार किया जा रहा है। कोमेसा के साथ व्यापक आर्थिक सहयोग करार सम्पन्न किए जाने के संबंध में वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय में सक्रियता से विचार किया जा रहा है।

भारत-ईएसी (पूर्वी अफ्रीकी समुदाय)

फरवरी 2007 में ईएसी मंत्रिस्तरीय प्रतिनिधि मंडल की भारत यात्रा के पश्चात दोनों पक्षों द्वारा जारी संयुक्त विज्ञप्ति में रेलवे, दूर संचार, ऊर्जा, पूंजी बाजार विकास तथा पर्यटन के संबंध में भारत और ईएसी के बीच सहयोग परियोजनाओं को भी शामिल किया गया था। ईएसी ने विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी क्षेत्र में सहयोग के लिए करार के प्रारूप का अनुमोदन कर दिया है और इस पर हस्ताक्षर किए जाने के तौर-तरीकों के संबंध में निर्णय लिया जा रहा है। दोनों पक्ष इन परियोजनाओं के क्रियान्वयन को मानीटर करने के लिए दारेस्लाम में मिलते रहे हैं।

अफ्रीका के विकास के लिए नई भागीदारी (एनईपीएडी)

क्षेत्रीय स्तर पर भारत ने एनईपीएडी के साथ अपनी बातचीत में तेजी लाई है जिसका उद्देश्य उच्चस्तरीय सामरिक भागीदारी की स्थापना करना और निजी क्षेत्र संवर्धन, पर्यावरण, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा अवसंरचना जैसे प्राथमिकता जैसे क्षेत्रों में एनईपीएडी को सहायता प्रदान करना है।

पैन-अफ्रीकी संसद

मिडरैंड, दक्षिण अफ्रीका में स्थित पैन-अफ्रीकी संसद के साथ क्रियाकलाप बढ़ाने के भी प्रयास किए गए। पैन-अफ्रीकी संसद ने भारत के साथ संसदीय आदान-प्रदानों और भारत के साथ सहयोग को गहन बनाने में रुचि दिखाई है।

भारत-दक्षिण अफ्रीकी विकास समुदाय मंच (एसएडीसी)

भारत-एसएसडीसी मंच की शुरुआत अप्रैल 2006 में की गई थी। 4 सदस्यीय तकनीकी टीम ने एसएडीसी सचिवालय का दौरा

किया और इसने सचिवालय अधिकारियों के साथ विचार-विमर्श करने के पश्चात ग्यारह परियोजनाओं की पहचान की है जिनमें से सात को प्राथमिकता दी जाएगी यथा क्षेत्रीय सिंचाई एवं जल प्रबंधन के साथ मरूभूमि कृषि का विकास; कृषि उत्पादों का मूल्य संवर्धन; विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी उद्यमी पार्क पर अध्ययन; कांगो बेसिन से जलाभाव वाले एसएडीसी क्षेत्र के देशों में जल पहुँचाने पर व्यवहार्यता अध्ययन; एसएडीसी सचिवालय को बैंक ग्राह्यता एवं तकनीकी सहायता दिए जाने के लिए क्षेत्रीय नीतिगत जल अवसंरचना विकास कार्यक्रम में परियोजनाओं के लिए तकनीकी सहायता- एसएडीसी सचिवालय के लिए नेटवर्क इंजीनियर तथा आईसीटी विशेषज्ञों की तैनाती। एसएडीसी सचिवालय यने वर्ष 2008 में भारत से परियोजनाओं का संयुक्त क्रियान्वयन करने का अनुरोध किया है।

पश्चिमी अफ्रीका

भारत ने पश्चिमी अफ्रीकी देशों के साथ पारम्परिक रूप से अपने घनिष्ठ और सौहार्दपूर्ण संबंधों को संवर्धित करना जारी रखा। इस वर्ष प्रधान मंत्री डा. मनमोहन सिंह ने नाइजीरिया की महत्वपूर्ण यात्रा की जिससे दोनों देशों के बीच संबंधों को एक नया स्तर मिला भारत ने न सिर्फ द्विपक्षीय स्तर पर बल्कि क्षेत्रीय तथा संस्थागत स्तर पर भी इस क्षेत्र के साथ अपने संबंधों को और गहन बनाया। विदेश मंत्री प्रणब मुखर्जी ने जुलाई 2007 में इथोपिया की अपनी यात्रा के दौरान अफ्रीकी संघ के अध्यक्ष प्रोफेसर अल्फा उमर कोनारे के साथ मुलाकात की और भारत तथा अफ्रीका के बीच बृहत्तर सहयोग तथा अप्रैल 2008 में भारत में भारत-अफ्रीकी शिखर सम्मेलन के आयोजन के प्रस्तावों पर विषद चर्चा की। प्रधान मंत्री नाइजीरिया यात्रा के दौरा इकोवास आयोग के अध्यक्ष ने उनसे मुलाकात की और भारत तथा इकोवास के बीच सहयोग को और गहन बनाने की अपनी इच्छा व्यक्त की।

विदेश मंत्रालय ने अपने आर्थिक राजनय के एक महत्वपूर्ण भाग के रूप में सीआईआई द्वारा आयोजित भारत-अफ्रीकी परियोजना भागीदारी सम्मेलनों में अपनी सक्रिय भागेदारी जारी रखी। वर्ष 2007 के दौरान सीआईआई ने दक्षिण अफ्रीका, मोजाम्बिक, उगांडा तथा आइवरी कोस्ट में चार क्षेत्रीय सम्मेलनों का आयोजन किया। ये सम्मेलन इस लिहाज से सफल हुए कि दोनों क्षेत्रों के व्यवसाइयों के बीच महत्वपूर्ण भागीदारी हुई तथा अनेक व्यावसायिक क्षेत्रों में संयुक्त पहलकदमियों के बारे में विचार किया गया और इससे ब्रांड इंडिया को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान मिला।

टीम-9, जो भारत और पश्चिमी अफ्रीका के 9 देशों के बीच एक तकनीकी आर्थिक सहयोग उपक्रम है, ने पश्चिमी अफ्रीका के अनेक महत्वपूर्ण देशों के साथ भारत के संबंधों को गहन बनाने के लिए प्रभावी प्रोत्साहन उपलब्ध कराना जारी रखा। यह अंगोला, बेनिन, चाड, कोड डी आइवर, कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य, कांगो गणराज्य, गैबोन तथा घाना जैसे देशों से भारत में हुई मंत्रिस्तरीय यात्राओं से स्पष्ट है।

अंगोला

अंगोला और भारत के बीच द्विपक्षीय संबंध घनिष्ठ और मैत्रीपूर्ण रहे। लंबे समय से अंगोला में चले आ रहे गृह युद्ध की वर्ष 2002 में समाप्ति के पश्चात दोनों देशों के बीच क्रियाकलापों में निरंतर वृद्धि हुई है। अंगोला के उप प्रधान मंत्री एग्वीनाल्डो जेइम ने 25-28 अप्रैल 2007 तक मुम्बई में हीरों पर आयोजित ''माइंस मार्केट कांफ्रेंस'' में भाग लेने के लिए भारत का दौरा किया। विदेश राज्य मंत्री श्री आनंद शर्मा ने 8-9 जून 2007 तक अंगोला का दौरा किया। भारतीय स्टेट बैंक, जिसने 18 अप्रैल 2005 को लुआंडा में अपना एक प्रतिनिधि कार्यालय खोला था, ने भारत से ट्रैक्टरों की आपूर्ति किए जाने के लिए 5 मिलियन अमरीकी डालर का व्यावसायिक ऋण दिया।

बेनिन

बेनिन के साथ सहयोग संवर्धन जारी रहा। बेनिन की विदेश मंत्री मैडम मैरियम अलादजी बोनी डिआलो ने 9 मई 2007 को भारत का दौरा किया। भारत सरकार ने बेनिन को 50 लाख रुपयों की दवाइयाँ उपहार स्वरूप दी जिसकी काफी सराहना हुई।

कैमरून

कैमरून सरकार द्वारा भारत के साथ सहयोग की क्षमताओं का उपयोग किए जाने को विशेष महत्व देने के साथ ही कैमरून के साथ हमारे संबंध और समृद्ध हुए। कैमरून वाणिज्य परिसंघ के एक शिष्टमंडल ने 22-30 नवंबर 2007 का भारत का दौरा किया और सीआईआई के साथ सहयोग पर एक समझौता ज्ञापन सम्पन्न किया। कैमरून के व्यवसाइयों ने सीआईआई द्वारा आयोजित सम्मेलनों में भी भाग लिया। कैमरून के विदेश मंत्रालय के आधिकारिक शिष्टमंडल ने विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग की संभावनाओं का पता लगाने के लिए जुलाई 2007 के प्रथम सप्ताह में भारत का दौरा किया। उन्होंने वित्त मंत्रालय, वाणिज्य मंत्रालय तथा विदेश मंत्रालय के अधिकारियों और सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र के अनेक उपक्रमों के साथ चर्चा की।

मध्य अफ्रीकी गणराज्य

हाइड्रोकार्बन्स पर भारत-अफ्रीका सम्मेलन एवं प्रदर्शनी में भाग लेने के लिए 5-11 नवंबर 2007 तक मध्य अफ्रीकी गणराज्य के खान, ऊर्जा एवं हाइड्रोकार्बन मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों की भारत यात्रा से मध्य अफ्रीकी गणराज्य के साथ भारत के संबंधों को कुछ गति मिली।

चाड

वाणिज्य, उद्योग एवं विमान मंत्री युसुफ अब्बासलाह के नेतृत्व

में एक शिष्टमंडल, जिसमें चाड गणराज्य के विदेश मामलों के उप मंत्री जिद्दाह मोऊसा आउटमैन भी शामिल थे, की 26-30 नवंबर 2007 तक की भारत यात्रा से चाड के साथ भारत के संबंधों को संवेग प्राप्त हुआ। इस शिष्टमंडल ने विदेश राज्य मंत्री तथा उद्योग एवं वाणिज्य राज्य मंत्री से मुलाकात की और एक्जिम बैंक तथा सीआईआई के साथ बैठकें की।

कोट डी आइवर

15 मार्च 2007 को आइवर के राष्ट्रपति ग्बाग्बो ने ग्रैंडबसम में सूचना प्रौद्योगिकी एवं जैव प्रौद्योगिकी के लिए महात्मा गाँधी प्रौद्योगिकी पार्क की आधार शिला रखी। इस परियोजना की स्थापना साफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क्स आफ इंडिया की सहायता से किया जा रहा है। भारत सरकार ने इस परियोजना के लिए 20 मिलियन अमरीकी डालर का ऋण मुहैया कराया है। सीआईआई ने आबिदजान में 2-3 अगस्त 2007 तक भारत-अफ्रीका परियोजना भागीदारी 2007 पर एक क्षेत्रीय सम्मेलन का आयोजन किया। इस सम्मेलन के दौरान इस बात की औपचारिक घोषणा की गई कि भारत एनआरडीसी द्वारा आबिदजान में स्थापित किए जा रहे खाद्य प्रसंस्करण प्रदर्शन केंद्र तथा अन्य लघु मशीनों का शीघ्र उद्घाटन करेगा। मैत्री तथा एकजुटता का प्रदर्शन करने के लिए भारत ने कोट डी आइवर सरकार को विषैले कचरे के पीड़ितों का इलाज करने के लिए अप्रैल 2007 में 2 करोड़ रुपये की दवाइयाँ उपहार स्वरूप दी।

कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य (डीआरसी)

भारत और कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य के बीच संबंध अत्यंत सौहार्दपूर्ण रहे तथा कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य से हुई तीन मंत्रिस्तरीय यात्राओं से इन संबंधों को गति मिली। कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य के परिवहन तथा संचार साधनों के मंत्री रेमी हेनरी कुसेयो गटांगे ने 13 से 17 अगस्त 2007 तक भारत का दौरा किया। इस यात्रा के दौरान कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य के मंत्री ने हमारे रेल मंत्री के साथ बैठक की, राइट्स और रेलवे बोर्ड के अधिकारियों के साथ चर्चा की। कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य के ऊर्जा मंत्री सोलोमोन बानामुहेरे बलिएने 20-24 अगस्त 2007 तक भारत के कार्यकारी दौरे पर आए। मंत्री महोदय ने भारत के जल संसाधन मंत्री नए एवं नवीकरणीय ऊर्जा तथा विद्युत मंत्रियों के साथ बैठकें की और कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य में इन क्षेत्रों के विकास के लिए भारत की सहायता का अनुरोध किया। कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य के उद्योग मंत्री साइमन मबोसो किआम्पटू ने 3-7 सितंबर 2007 तक भारत का दौरा किया।

कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य के राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था और वाणिज्य मंत्री ने नई दिल्ली में आयोजित सीआईआई भागीदारी शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए 13-18 जनवरी 2008 तक भारत का दौरा किया। अपनी यात्रा के दौरान उन्होंने वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री, श्री कमलनाथ के साथ मुलाकात की।

कांगो गणराज्य (आरओसी)

कांगो गणराज्य के परिवहन और नागर विमानन मंत्री श्री इमाइल ओउस्सो ने 20 जुलाई 2007 को भारत का दौरा किया। अपनी यात्रा के दौरान कांगो गणराज्य के मंत्री महोदय ने हमारे रेल मंत्री के साथ मुलाकात की। कांगो गणराज्य के मंत्री,जो 53 अफ्रीकी देशों के परिवहन मंत्रियों के समूह के अध्यक्ष हैं, ने भारत में अफ्रीकी परिवहन मंत्रियों का एक शिखर सम्मेलन आयोजित करने का प्रस्ताव रखा।

गैबोन

इस वर्ष के दौरान गैबोन के साथ भारत के मैत्रीपूर्ण संबंधों को गति मिली। गैबोन के राष्ट्रीय प्रतिरक्षा के वरिष्ठ मंत्री अली बोंगो ओन्डिम्बा ने 11 सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल के साथ 4-10 नवंबर 2007 तक भारत का दौरा किया। उन्होंने रक्षा मंत्री के साथ द्विपक्षीय चर्चा की और रक्षा प्रशिक्षण केंद्रों और उत्पादन संयंत्रों को देखा।

गाम्बिया

मई 2006 में इकोवास निवेश एवं विकास बैंक को भारत द्वारा दिए गए 250 मिलियन अमरीकी डालर के कुल ऋण में से गाम्बिया को ग्रामीण विद्युतीकरण के लिए 20 मिलियन अमरीकी डालर दिया गया। भारतीय गैर-सरकारी संगठन, तिलोनिया, राजस्थान के बेअरफुट कालेज ने युनाइटेड किंगडम आधारित गैर-सरकारी संगठन राइडर्स फार हेल्थ के साथ भागीदारी करते हुए गाम्बिया के दो गाँवों में सौर विद्युत पैनल स्थापित किया। इस परियोजना का उद्घाटन आधिकारिक रूप से गाम्बिया के उपराष्ट्रपति डा. अजाइसातोऊ न्जे-सैदी ने 3 सितंबर 2007 को किया।

गाबिया के विभाग में स्थायी सचिव डा. अमादू सोवे के नेतृत्व में एक शिष्टमंडल ने 4-6 दिसम्बर 2007 तक एवियन और पैंडेमिक एन्फ्लूएंजा पर आयोजित मंत्रिस्तरीय सम्मेलन में भाग लिया और भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय में सबंधित प्राधिकारियों के साथ बातचीत की और स्वास्थ्य क्षेत्र से जुड़े आपसी हित के मुद्दों पर चर्चा की।

घाना

इस वर्ष भारत और घाना के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध बने रहे। विदेश राज्य मंत्री श्री आनन्द शर्मा ने घाना की आजादी के स्वर्ण जयंती समारोहों के अवसर पर प्रधानमंत्री के प्रतिनिधि के रूप में 4-7 मार्च 2007 तक भारत का दौरा किया। घाना के उप विदेश मंत्री

शिरले बोचवे ने 15-17 मई 2007 तक भारत का दौरा किया। भारत सरकार ने उत्तरी घाना में आई भयंकर बाढ़ के पीड़ितों के लिए 1,53,000 अमरीकी डालर के मूल्य की दवाएँ भेंट की। जैव डीजल, ग्लिसरीन तथा कार्बनिक उत्पादन हेतु एक संयंत्र की स्थापना किए जाने के लिए घाना को इकोवास निवेश एवं विकास बैंक को भारत द्वारा दिए गए कुल 250 मिलियन अमरीकी डालर के ऋण में से 30 मिलियन अमरीकी डालर का ऋण भी दिया गया।

गिनी

भारत और गिनी के बीच संबंध सौहार्द और मैत्रीपूर्ण बने रहे। भारत ने कोनाक्री में विद्युत सेवाओं में सुधार लाने के लिए 24 अप्रैल 2007 को गिनी को 1.76 करोड़ रुपये मूल्य के 50 विद्युत ट्रांसफार्मर उपहार स्वरूप दिए। इकोवास के लिए घोषित 250 मिलियन अमरीकी डालर के ऋण के अंतर्गत गिनी को निम्नलिखित 2 परियोजनाओं के लिए निधि आवंटित की गईं- (क) 20 मिलियन अमरीकी डालर की लागत से पुनर्वास और विद्युत नेटवर्क का विस्तार (ख) 8.5 मिलियन अमरीकी डालर की लागत से शहरी परिवहन प्रणाली में सुधार।

माली

14-17 नवंबर 2007 तक बमाको, माली में आयोजित लोकतंत्रों के समुदाय की चौथी मंत्रिस्तरीय बैठक के अवसर पर भारतीय प्रतिनिधि मंडल के नेता के रूप में विदेश राज्य मंत्री श्री आनन्द शर्मा की यात्रा से माली के साथ भारत के संबंधों को बढ़ावा मिला। माली के अर्थव्यवस्था और वित्त मंत्री अबू बाकर तरावरे और खान, ऊर्जा एवं जल मंत्री हामेद दियाने सेमेगा के नेतृत्व में 9 सदस्यीय शिष्टमंडल भारत सरकार और माली सरकार के बीच एक ऋण करार पर हस्ताक्षर करने के लिए अप्रैल 2007 के पहले सप्ताह में भारत आया। माली और कोड डी आइवरी में विद्युत पारेषण और वितरण परियोनाओं के लिए 75 मिलियन अमरीकी डालर का रियायती ऋण दिया गया है।

मारितानिया

भारत और मारितानिया के बीच संबंध सौहार्दपूर्ण बने रहे। मारितानिया के कृषि और पशुपालन मंत्री कोरेरा इसागहा ने अक्तूबर 2007 में भारत का दौरा किया और उन्होंने विदेश मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों तथा व्यावसायिक समुदाय के प्रतिनिधियों के साथ मुलाकात की।

मारीतानियाँ के कृषि और पशुपालन मंत्री इसाधा कोरेटा ने 4-6 दिसम्बर 2007 तक एवियन और पैडेमिक एन्फ्लूएंजा पर नई दिल्ली में आयोजित मंत्रिस्तरीय सम्मेलन में भाग लिया।

नाइजीरिया

14-16 अक्तूबर 2007 तक प्रधान मंत्री डा. मनमोहन सिंह की नाइजीरिया यात्रा, जो 45 वर्षों के अंतराल के बाद हुई अत्यंत महत्वपूर्ण द्विपक्षीय यात्रा थी, के साथ ही नाइजीरिया के साथ हमारे संबंधों को नई ऊंचाइयाँ मिली। यात्रा के दौरान दोनों देश भारत और नाइजीरिया के बीच एक ऐसी सामरिक भागीदारी बनाने पर सहमत हुए जिसमें द्विपक्षीय राजनीतिक, आर्थिक, व्यापारिक, सुरक्षा, सांस्कृतिक, शैक्षिक, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा अंतर्राष्ट्रीय आयामों को शामिल किया गया है। सामरिक भागीदारी पर व्यापक अबूजा घोषणा जारी की गई। प्रधान मंत्री ने 15 अक्तूबर 2007 को नाइजीरियाई नेशनल असेम्बली के संयुक्त सत्र को संबोधित किया और उन्होंने 21वीं सदी में भारत, नाइजीरिया और अफ्रीका के साथ भारत की भागीदारी का उल्लेख किया। यात्रा के दौरान निम्नलिखित करारों पर हस्ताक्षर किए गए:

- विदेश सेवा संस्थान और नाइजीरियाई विदेश सेवा अकादमी के बीच समझौता ज्ञापन।
- इंडियन कौंसिल आफ वर्ल्ड अफेयर्स तथा नाइजीरियाई अंतर्राष्ट्रीय मामले संस्थान के बीच समझौता ज्ञापन।
- विदेश कार्यालय परामर्शों से संबंध प्रोतोकाल।
- रक्षा सहयोग पर समझौता ज्ञापन।

प्रधान मंत्री ने नाइजीरिया में भारतीय निवेश को और बढ़ावा देने के उद्देश्य से नाइजीरिया को 100 मिलियन अमरीकी डालर का ऋण देने का प्रस्ताव किया। प्रधान मंत्री ने यह घोषणा भी कि आइटेक तथा अन्य कार्यक्रमों के अंतर्गत नाइजीरिया को दी जाने वाली छात्रवृत्तियों की संख्या को बढ़ाकर 50-75 कर दिया जाएगा। रक्षा मामलो में सहयोग हमारे सहयोग का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र रहा जिसके अंतर्गत अनुदेशकों, राष्ट्रीय रक्षा अकादमी और राष्ट्रीय रक्षा कालेज के कैडेटों, खेल टीमों का आदान-प्रदान किया गया, विशेष कार्रवाइयों एवं साहसिक गतिविधियों में नाइजीरियाई सैन्य बल के कार्मिकों का प्रशिक्षण, 1 मिलियन अमरीकी डालर मूल्य की रक्षा संचार उपकरणों का दान, राष्ट्रीय रक्षा अकादमी को एक ट्राफी ''इंडिया कप'' तथा नाइजीरियाई रक्षा संस्थाओं में 2 आईटी प्रयोगशालाओं की स्थापना का अनुमोदन किया गया। प्रधान मंत्री की नाइजीरिया यात्रा के दौरान रक्षा सहयोग से संबंद्ध समझौता ज्ञापन सम्पन्न किए जाने से हमारे दीर्घावधिक संबंधों को संस्थागत रूप प्रदान किया गया है। भारत की निजी और सार्वजनिक क्षेत्र की अनेक बड़ी कम्पनियाँ नाइजीरियाई अर्थव्यवस्था के विविध क्षेत्रों में अपनी जगह बना रही हैं। नाइजीरिया भारत का सबसे बड़ा व्यापार भागीदार है

और यह नाइजीरियाई गैर तेल निर्यातों के चौथा सबसे बड़ा गंतव्य बनकर उभरा है।

सेनेगल

सेनेगल के साथ भारत के संबंधों में इस वर्ष के दौरान महत्वपूर्ण सुधार आया। 10 मई 2007 को टीम-9 शीर्षक के अंतर्गत भारत सरकार द्वारा प्रस्तावित 11 मिलियन अमरीकी डालर ऋण के भाग के रूप में सेनेगल के राष्ट्रपति अब्दुलए वादे को 5.3 मिलियन अमरीकी डालर दोहरे केबिन वाले 300 ध्वनि ग्रह, एकल केबिन वाले 50 ध्वनि ग्रह और 50 टाटा सफारी सौंपे गए। 25 अक्तूबर 2007 को राष्ट्रपति अब्दुलए वादे ने 5.7 मिलियन अमरीकी डालर मूल्य के खाद्य प्रसंस्करण उपकरण सौंपे जाने के अवसर पर होने वाले समारोहों की अध्यक्षता की। ये उपकरण ग्रामीण महिलाओं एवं युवाओं में वितरित किए जाने हैं। इकोवास निवेश एवं विकास बैंक को भारत द्वारा दिए गए 250 मिलियन अमरीकी डालर के कुल ऋण में से सेनेगल को दोनों ओर चलने वाली तीन गाड़ियों की खरीद के लिए 15 मिलियन अमरीकी डालर का नया ऋण आमंत्रित किया गया।

मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री एम.ए.ए. फातमी के नेतृत्व में छह सदस्यीय शिष्टमंडल ने सभी के लिए शिक्षा पर आयोजित 7वीं उच्चस्तरीय समूह की बैठक में भाग लेने के लिए 10-13 दिसम्बर 2007 तक डकर का दौरा किया और द्विपक्षीय संबंधों के विकास की रूपरेखा के तहत लेनेगल में अपने समकक्ष के साथ चर्चा की। सेनेगल के खान और उद्योग मंत्री मैडिक निआंग ने 24-26 जनवरी 2008 तक भारत का दौरा किया और रसायन एवं उर्वरक मंत्री श्री राम विलास पासवान के साथ चर्चा की।

सियरा लियोन

भारत और सियरा लियोन के बीच घनिष्ठ और मैत्रीपूर्ण संबंध हैं। भारत ने सितंबर 2007 में आयोजित होने वाले राष्ट्रपति एवं संसदीय चुनावों के लिए सियरा लियोन को मई 2007 में अमिट स्याही के पैकेजेज उपहार स्वरूप दिए।

टोगो

4-7 मार्च 2007 तक अकरा की अपनी यात्रा के दौरान विदेश राज्य मंत्री आनन्द शर्मा ने टोगो के राष्ट्रपति के साथ मुलाकात की और द्विपक्षीय मुद्दों, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद विस्तार तथा पैन-अफ्रीकी उपग्रह नेटवर्क से संबंधित मुद्दों पर बातचीत की।

अफ्रीकी संघ

अफ्रीकी संघ के साथ भारत के क्रियाकलाप में इस वर्ष के दौरान वृद्धि के संकेत मिले और वर्ष 2008 में भारत में आयोजन के लिए प्रस्तावित भारत-अफ्रीका शिखर सम्मेलन में चर्चा करने के लिए सहयोग के क्षेत्रों पर कार्य करने के लिए कार्यकारी समूह की दो बैठकें हुईं। कार्यकारी समूहों की ये बैठकें बारी-बारी से मार्च 2007 में नई दिल्ली में और मई 2007 में आदिस अबाबा में हुई। विदेश मंत्री प्रणब मुखर्जी ने जुलाई 2007 में इथोपिया की अपनी यात्रा के दौरान अफ्रीकी संघ के अध्यक्ष प्रोफेसर अल्फा उमर कोनारे के साथ मुलाकात की और उन्होंने भारती-अफ्रीका के बीच बेहतर सहयोग तथा वर्ष 2008 में भारत में भारत-अफ्रीका शिखर सम्मेलन आयोजित करने के प्रस्तावों पर चर्चा की।

पश्चिमी अफ्रीकी राज्यों का आर्थिक समुदाय (इकोवास)

हमारे प्रधान मंत्री की नाइजीरिया यात्रा के दौरान इकोवास आयोग के अध्यक्ष ने उनसे मुलाकात करके भारत और इकोवास के बीच सहयोग को और गहन बनाने और इकोवास परियोजनाओं में भारत की और सक्रिय भागीदारी की इच्छा व्यक्त की जिससे इकोवास के साथ हमारे संबंधों को बढ़ावा मिला। इकोवास देशों ने सदस्य देशों में अवसंरचना परियोजनाओं के लिए 250 मिलियन अमरीकी डालर के ऋण से लाभ उठाना शुरू कर दिया है। भारत ने पहले ही 11.3 मिलियन अमरीकी डालर लागत की परियोजनाओं का अनुमोदन कर दिया है।

■■

यूरोप

7

यूरोपीय संघ के सदस्य राज्य भारत के लिए अलग-अलग और साथ ही सामूहिक रूप से महत्वपूर्ण हैं। यूरोपीय संघ, जो हमेशा से आर्थिक शक्ति का केंद्र रहा है, का उदय एक राजनीतिक इकाई के रूप में हुआ है जो पूर्व की ओर फैल रहा है और जिसमें अभी 27 देश शामिल हैं। यूरोपीय संघ सुधार संधि पर 13 दिसंबर 2007 को लिस्बन में 27 सदस्य देशों की सरकारों या राष्ट्र प्रमुखों ने हस्ताक्षर किए। इसे लिसबन संधि के नाम से जाना गया और इसका उद्देश्य यूरोपीय संघ को आधुनिक संस्थाएँ मुहैया कराना और कार्यप्रणाली को अनुकूलतम बनाना है। 12 नये सदस्य देशों में से 9 देशों के सम्मिलित होने के साथ-साथ स्चेजेन क्षेत्र का विकास हुआ; नये सदस्य देशों में से तीन देश अर्थात साइप्रस, बुल्गारिया और रोमानिया बाद में सम्मिलित होंगे। यूरोपीय संघ भारत का सबसे बड़ा व्यापार भागीदार है और इसका द्विपक्षीय व्यापार वर्ष 2006 में 46 बिलियन यूरो को पार कर गया। भारत और यूरोपीय संघ दोनों ओर महत्वपूर्ण आवागमन वाले निवेश भागीदार हैं। यूरोपीय संघ से भारत को कुल एफडीआई प्रवाह 10.86 बिलियन अमरीकी डालर है (जो अगस्त 1991 से फरवरी 2007 के कुल एफडीआई प्रवाह का 24% है)। भारतीय निवेश भी अच्छी तरह बढ़ रहा है खास तौर से यूनाइटेड किंगडम, जर्मनी और इटली में। भारत का यूरोप के साथ संबंध व्यापार और आर्थिक दृष्टि से संचालित संबंधों के एक क्षेत्र से सभी क्षेत्रों की ओर बढ़ रहा है। भारत का संबंध यूरोप के देशों में से प्रत्येक के साथ मजबूत और बहुआयामी हो रहा है। उदाहरण के लिए ऊर्जा, विज्ञान प्रौद्योगिकी और संस्कृति के क्षेत्र में संबंध काफी अच्छे हो रहे हैं। भारत और यूरोप नयी सार्वभौमिक चुनौतियों का सामना करने के लिए साझे दृष्टिकोणों के विकास के लिए कार्य कर रहे हैं।

भारत का यूरोपीय देशों के साथ वार्ताओं में वर्ष 2007 में उल्लेखनीय गतिशीलता आई है। इटली, नीदरलैंड, जर्मनी, पुर्तगाल, ब्रिटेन और फ्रांस के साथ शिखर-स्तर पर वार्ताएँ हुई हैं। मंत्रिस्तरीय और अधिकारी स्तरीय वार्ताओं में भी वृद्धि हुई है इसके अलावा सांसदों और सिविल समाज के आवागमन में वृद्धि हुई है।

यूरोपीय संघ के अधिकांश नये सदस्यों और पश्चिमी बाल्कन के देशों द्वारा साम्यवाद कालीन समाजवाद नियोजित अर्थव्यवस्थाओं से पल्ला झाड़कर बाजार व्यवस्थाओं को अपनाने तथा भारत के उदारीकरण जैसी नयी वास्तविकताओं के संदर्भ में भारत के संबंध को पुनः परिभाषित किये जाने की आवश्यकता थी। तथापि यूरोप की तुलना में भारत की उच्च आर्थिक विकास दर, प्रतिस्पर्धी लागतों कुल प्रौद्योगिकियों और तकनीकों की उपलब्धता, विशाल मध्यम वर्गीय बाजार और आईटी तथा भेषज सहित अन्य क्षेत्रों में हमारे द्वारा प्राप्त की गई उत्कृष्टता, उन देशों के विभिन्न सेक्टरों मे निवेश करने की भारतीय कंपनियों की क्षमता और बढ़ती आयु वाले उन देशों की जनसंख्या और कम होते शैक्षिक और श्रम बल के कारण मध्यम और पूर्वी यूरोपीय देशों की रुचि पुनः भारत में जगी। इनमें से अधिकांश देशों के साथ हमारा व्यापार तेजी से बढ़ रहा है और इसमें पारंपरिक पण्यों की जगह इंजीनियरिंग सामान एवं मूल्य-संवर्धित वस्तुओं को शामिल किया जा रहा है। भारत में उच्च प्रौद्योगिकी निर्माण, पेट्रोलियम में अपारंपरिक ऊर्जा, जैव-प्रौद्योगिकी और नैनो-प्रौद्योगिकी एवं इंजीनियरिंग क्षेत्र में सहयोग की संभावनाओं तथा साथ ही गहरे समुद्र में मछली पकड़ने और खाद्य प्रसंस्करण जैसे क्षेत्र व्यापार और निवेश में सहयोग की नयी संभावनाओं को जन्म दे रहे हैं। स्कैन्डिनेवियाई देशों ने भी भारतीय स्टाक बाजार तथा वित्तीय दस्तावेजों को अपने विशाल निवेश कार्यों के लिए सुरक्षित और लाभदायक निवेश के रूप में देखना आरंभ कर दिया है। पूर्व के पूर्वी यूरोप की अपेक्षाकृत उच्च विकास दर और एक गतिशील तथा आर्थिक रूप से तथा जीवंत भारत से उत्पन्न नई संभावनाओं से भारत और यूरोप के बीच आपसी लाभ के लिए सक्रियता बढ़ रही है।

आस्ट्रिया

आस्ट्रिया गणराज्य के यूरोपीय संघ और अंतर्राष्ट्रीय मामलों के संघीय मंत्री डा उरसुला प्लासनिक ने 15-18 मार्च 2007 तक भारत का सरकारी दौरा किया। आस्ट्रिया के विज्ञान एवं प्रौद्यागिक संघीय मंत्री जोहानेस हान ने 28-30 नवंबर 2007 तक भारत का दौरा किया। इस यात्रा के दौरान विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी क्षेत्र में सहयोग पर करार संपन्न किया गया।

आस्ट्रिया के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संघीय मंत्री जोहानेस हान ने 29 नवंबर-1 दिसंबर 2007 तक भारत का दौरा किया। उन्होंने भारत के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री कपिल सिब्बल के साथ मुलाकात की और दोनों मंत्रियों ने 29 नवंबर 2007 को विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी पर एक करार पर हस्ताक्षर किए। आस्ट्रियाई मंत्री बंगलौर और आगरा भी गए।

आस्ट्रिया के आर्थिक एवं श्रम संघीय मंत्री मार्टिन बारटेंस्टीन ने संयुक्त आर्थिक आयोग की बैठक में भाग लेने के लिए 9-14 दिसंबर 2007 तक भारत का दौरा किया। आस्ट्रियाई मंत्री ने वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री कमलनाथ के साथ भी वार्ता की। अपनी यात्रा के दौरान उन्होंने रेल मंत्री लालू प्रसाद यादव, नयी एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री बिलास मुत्तेमवार, श्रम एवं रोजगार मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) आस्कर फर्नांडीस तथा दिल्ली की मुख्य मंत्री श्रीमती शीला दीक्षित के साथ मुलाकात की।

बेल्जियम

भारत और बेल्जियम के संबंध घनिष्ठ और सौहार्दपूर्ण हैं तथा समीक्षाधीन वर्ष के दौरान यह और भी समृद्ध हुए हैं।

बेल्जियम के साथ भारत का आर्थिक संबंध लगातार बढ़ रहा है - वर्ष 2003-04 के दौरान द्विपक्षीय व्यापार लगभग 5.78 बिलियन अमरीकी डालर का था। जो बढ़कर 2005-06 के दौरान 7.6 बिलियन अमरीकी डालर का हो गया। दोनों देशों की कंपनियों के बीच संयुक्त उपक्रमों की स्थापना करने की प्रवृत्ति लगातार बढ़ रही है। अगस्त 1991 से जून 2006 की अवधि के दौरान भारत में लगभग 152 मिलियन अमरीकी डालर का विदेशी प्रत्यक्ष निवेश किया गया। हाल ही में बेल्जियम में भारत द्वारा किया जाने वाला निवेश भारत में बेल्जियम की कंपनियों द्वारा किए जाने वाले निवेश से अधिक हो गया है। बेल्जियम और उत्तरी यूरोप के अन्य बाजारों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अनेक भारतीय कंपनियों विशेषकर आईटी एवं साफ्टवेयर क्षेत्र की कंपनियों ने वहाँ अपने केंद्र बनाए हैं। भारतीय कंपनियों ने बेल्जियम की अनेक कंपनियों का अधिग्रहण भी किया है।

नागर विमानन मंत्री प्रफुल्ल पटेल ने मई 2007 में बेल्जियम का दौरा किया जिसके दौरान नई दिल्ली और मुम्बई को जोड़ते हुए ब्रसेल्स हवाई अड्डे होकर न्यूयार्क और अटलांटा के लिए जेट एयरवेज की सेवाएँ शुरू करने से संबंधित करार संपन्न किया गया।

वित्त मंत्री पी. चिदम्बरम 17 सितंबर 2007 को बेल्जियम गए थे।

बुल्गारिया

बुल्गारिया के प्रधान मंत्री सर्गेई स्तानीशेव ने 10-15 सितंबर 2007 तक भारत का सरकारी दौरा किया। यात्रा के दौरान निम्नलिखित संधियाँ/करार/समझौता ज्ञापन संपन्न किए गएः सजायाफ्ता व्यक्तियों के हस्तांतरण पर संधि, आपराधिक मामलों में पारस्परिक कानूनी सहायता पर संधि, द्विपक्षीय निवेश संवर्धन एवं संरक्षण करारन के संस्तुत करने के लिए प्रोतोकॉल, सिविल एवं व्यावसायिक मामलों में पारस्परिक विधिक सहायता पर संधि, आर्थिक सहयोग पर करार, श्रम संबंधों, रोजगार और सामाजिक सुरक्षा के क्षेत्रों में सहयोग संवर्धित करने पर मंशा प्रोतोकॉल। भारतीय राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम लिमिटेड और बुल्गारिया लघु एवं मझोले उपक्रम संवर्धन एजेंसी के बीच समझौता ज्ञापन।

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी से संबद्ध भारत-बुल्गारिया मंच की तीसरी बैठक 25 अक्तूबर 2007 को नई दिल्ली में हुई। ई-शासन, प्राद्योगिकी पार्क, आईसीटी शिक्षा अनुसंधान तथा विकास एवं सूचना सुरक्षा के प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में दोनों देशों के बीच आईसीटी सहयोग को और बढ़ाने पर सहमति हुई। घनिष्ठ क्रियाकलाप और भावी सहयोगी परियोजनाओं के तीव्र क्रियान्वयन के लिए इन क्षेत्रों में विशेष समूहों का गठन करने का निर्णय लिया गया।

भारत-बुल्गारिया संयुक्त विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी समिति के पांचवे सत्र का आयोजन 12 नवंबर 2007 को नई दिल्ली में किया गया।

बुल्गारिया गणराज्य के स्वास्थ्य मंत्री प्रो. रादोस्लाव गाईदार्शकी ने नई दिल्ली में एवियन एवं पेंडेमिक इन्फ्लुएंजा पर आयोजित मंत्रिस्तरीय सम्मेलन में भाग लेने के लिए 2-7 दिसंबर 2007 तक भारत का दौरा किया।

क्रोएशिया

विदेश राज्य मंत्री श्री आनंद शर्मा ने 18-20 सितंबर 2007 तक क्रोएशिया का दौरा किया। इस यात्रा के दौरान राजनयिक और सरकारी पासपोर्ट धारकों के लिए वीजा उन्मुक्ति से संबंधित एक करार संपन्न किया गया।

साइप्रस

लोक सभा अध्यक्ष के नेतृत्व में एक संसदीय प्रतिनिधिमंडल ने राष्ट्रमंडल संसदीय संघ मध्य वर्षीय बैठक में भाग लेने के लिए 16-21 अप्रैल 2007 तक लीमासोल, साइप्रस का दौरा किया। विदेश मंत्री श्री प्रणब मुखर्जी ने 24-26 मई 2007 तक साइप्रस का दौरा किया। यात्रा के दौरान निम्नलिखित करार संपन्न किए गएः अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद, संगठित अपराध तथा मादक द्रव्यों के गैरकानूनी व्यापार का मुकाबला करने से संबद्ध करार। राजनयिक और सरकारी/सेवा पासपोर्टों के लिए वीजा अनिवार्यता समाप्त करने पर करार तथा वर्ष 2007-10 के लिए सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम।

चेक गणराज्य

उप सेना अध्यक्ष ने 10-13 जुलाई 2007 तक चेक गणराज्य का दौरा किया। यात्रा का उद्देश्य रक्षा संबंधों में सहयोग के नए क्षेत्रों का पता लगाना था।

राष्ट्रपति, प्रतिभा देवीसिंह पाटील, मुख्य अतिथि फ्रांस के राष्ट्रपति, निकोलस सरकोजी और प्रधानमंत्री, डा. मनमोहन सिंह 26 जनवरी 2008 को नई दिल्ली में राष्ट्रपति द्वारा आयोजित "एट होम" समारोह में।

विदेश राज्य मंत्री, आनंद शर्मा 20 सितंबर 2007 को अपनी यात्रा के दौरान क्रोएशिया गणराज्य के राष्ट्रपति स्टेपान मेसिक से मुलाकात करते हुए।

चेक गणराज्य के विदेश मंत्री कैरल स्वार्जनवर्ग ने 18-21 नवंबर 2007 तक भारत का दौरा किया। इस यात्रा के दौरान विदेश सेवा संस्थान और चेक राजनयिक अकादमी के बीच सहयोग के लिए एक समझौता ज्ञापन संपन्न किया गया।

चेक गणराज्य के सीनेट के अध्यक्ष प्रेसिल सुबोतका 2-6 दिसंबर 2007 तक वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री के साथ मुलाकात की। वे हैदराबाद भी गए और वहाँ उन्होंने आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री से मुलाकात की। उनके साथ एक बड़ा व्यावसायिक शिष्टमंडल और अनेक संसद सदस्य भी गए। यात्रा में आर्थिक, व्यापारिक और निवेश संबंधी मुद्दों पर विशेष जोर दिया गया।

डेनमार्क

डेनमार्क के विदेश मंत्री डा. पेर स्टिग मोलर ने 22-24 अक्तूबर 2007 तक भारत का सरकारी दौरा किया।

डेनमार्क के प्रधान मंत्री एंद्रफो राममुशैन 4-8 फरवरी 2008 तक भारत की राजकीय यात्रा पर आए। अपनी यात्रा के दौरान वे राष्ट्रपति, प्रधान मंत्री और संप्रग अध्यक्षा से मिले। यात्रा के दौरान द्विपक्षीय संयुक्त आयोग की स्थापना पर करार, स्वच्छ विकास तंत्र पर सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन, राजनयिक मिशन के सदस्यों की पत्नियों/पतियों के लिए एक-दूसरे देश में लाभकारी रोजगार प्राप्त करने पर करार तथा नये और नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र में सहयोग पर एक समझौता ज्ञापन संपन्न हुआ।

फिनलैंड

भारत-फिनलैंड संयुक्त बैठक का 15वाँ सत्र 19 अप्रैल 2007 को नई दिल्ली में आयोजित किया गया। दोनों पक्षों ने व्यापार संवर्धन उपायों तथा अनेक क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग सहित अपने देशों की आर्थिक स्थितियों की समीक्षा की।

फिनलैंड के साथ पर्यावरण पर संयुक्त कार्यकारी दल की चौथी बैठक 4-5 अक्तूबर 2007 तक हेलसिंकी में आयोजित की गई।

जोऊको स्केनारी के नेतृत्व में फिनलैंड की संसद और वाणिज्य समिति के 9 सदस्यीय शिष्टमंडल ने 27-30 सिंबर 2007 तक भारत का दौरा किया।

फिनलैंड के विदेश, व्यापार और विकास मंत्री श्री पाओ वैरीनेन ने 21-26 अक्तूबर 2007 तक भारत का दौरा किया। उनके साथ एक प्रतिनिधिमंडलभी आया जिसमें सरकारी और व्यवसाय जगत के प्रतिनिधि शामिल थे।

फ्रांस

भारत और फ्रांस के नेताओं के बीच नियमित क्रियाकलापों के आधार पर दोनों देशों के बीच सौहार्दपूर्ण और ठोस संबंध रहे हैं। भारत और फ्रांस के बीच वर्ष 1980 से एक सामरिक भागीदारी विद्यमान है। पारम्परिक रूप से हमारे घनिष्ठ और मैत्रीपूर्ण संबंधों की यह एक तार्किक परिणति है, जिसकी विशेषता राज्याध्यक्ष/शासनाध्यक्ष स्तरों पर नियमित उच्चस्तरीय आदान-प्रदान तथा रक्षा, नाभिकीय ऊर्जा और अंतरिक्ष जैसे सामरिक क्षेत्रों सहित अन्य प्रकार के बढ़ते व्यावसायिक आदान-प्रदान रहे हैं।

फ्रांस के राष्ट्रपति निकोलस सरकोजी ने 7-8 जून 2007 तक जर्मनी में आयोजित जी-8 शिखर सम्मेलन के दौरान अतिरिक्त समय में प्रधान मंत्री डा. मनमोहन सिंह के साथ एक बैठक की। इससे पूर्व मई 2007 में विदेश मंत्री ने फ्रांस के विदेश मंत्री बर्नाड क्रोचर के साथ हैम्बर्ग में मुलाकात की।

फ्रांस के अनुसंधान एवं उच्च शिक्षा मंत्री ने नवंबर 2007 में भारत का दौरा किया और उन्होंने मानव संसाधन विकास मंत्री श्री अर्जुन सिंह तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री श्री कपिल सिब्बल से मुलाकात की।

फ्रांस के विदेश मंत्री बर्नार्ड कोचनर ने 19-23 दिसंबर 2007 तक भारत का दौरा किया। भारत-फांस सामरिक वार्ता 4 जनवरी 2008 को हुई जिसके लिए जीन डेक्डि लेविटी फ्रांस के राष्ट्रपति के सलाहकार ने भारत की यात्रा की।

फ्रांस के राष्ट्रपति निकोलस सर्कोजी ने एक उच्च मंत्रिस्तरीय और व्यावसाइयों के प्रतिनिधिमंडलके साथ भारत की यात्रा की। मई 2007 में कार्यभार ग्रहण करने के बाद यह उनकी भारत की पहली यात्रा थी। गणतंत्र दिवस परेड पर वे माननीय अतिथि थे। प्रतिनिधिमंडलस्तरीय वार्ता के पश्चात एक सामरिक रूपरेखा वाला संयुक्त वक्तव्य जारी किया गया, यह न केवल भविष्य के सहयोग से संबद्ध था, बल्कि हमारे सामरिक भागीदारी से भी संबद्ध था। दौरे के समय 'ग्लोबल वार्मिंग' का मुकाबला करने के लिए भारत और फ्रांस के बीच एक संयुक्त घोषणा की गई। दौरे के समय रक्षा, कौंसली मामले, विकास सहयोग और तंत्रिका विज्ञान जैसे क्षेत्रों से संबद्ध करारों/समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर हुए।

यूरोपीय संघ के देशों में भारत के भागीदारों की सूची में फ्रांस का 5वाँ स्थान है। पिछले वर्षों के दौरान भारत-फ्रांस द्विपक्षीय व्यापार में उत्तरोत्तर वृद्धि होती रही है। हालांकि वर्ष 2006 में 5.6 बिलियन यूरो का भारत-फ्रांस व्यापार अभी भी क्षमता से काफी कम है। वर्ष 1991 से मार्च 2007 तक फ्रांस द्वारा अनुमोदित विदेशी निवेश लगभग 1.76 बिलियन का है जिसमें से 900 मिलियन अमरीकी डालर का वास्तविक निवेश हुआ है। फ्रांस के साथ अनुमोदित तकनीक एवं वित्तीय सहयोगी कार्यक्रमों की संख्या 915 है। अगस्त 1991 से मार्च 2007 की अवधि के दौरान फ्रांस 8वाँ सबसे बड़ा विदेशी निवेश रहा।

भारत-फ्रांस विधिक मंच की पहली बैठक 16-19 अक्तूबर 2007 तक पेरिस में हुई भारतीय प्रतिनिधिमंडलका नेतृत्व भारत के मुख्य न्यायाधीश के.जी. बालकृष्णन ने किया।

पिछले 4 दशकों से फ्रांस अंतरिक्ष के क्षेत्र में हमारा एक महत्वपूर्ण भागीदार रहा है। अंतरिक्ष के क्षेत्र में सहयोग से संबंधित संयुक्त कार्यकारी दल, जिसके सह अध्यक्ष इसरो के अध्यक्ष तथा फ्रांसीसी अंतरिक्ष एजेंसी सीएनईएस (सेंटर नेशनल डी, इटूड्स स्पेशियल्स) के अध्यक्ष हैं, की पिछली बैठक सितंबर 2007 में हैदराबाद में हुई। इनसेट 4 बी को फ्रेंच गायना के कौरू से 11 मार्च 2007 को छोड़ा गया। मेघा-ट्रापिक्स मिशन इसरो और सीएनईएस के बीच उष्ण कटिबंधीय जलवायु का अध्ययन करने के लिए भारत-फ्रांस का एक संयुक्त उपग्रह कार्यक्रम है। इसरो मेघा-ट्रापिक्स अंतरिक्ष यान का निर्माण करेगा जो भारतीय दूर संवेदी उपग्रहों के समान होगा।

रक्षा से संबद्ध उच्चस्तरीय समिति की बैठक 17-18 अक्तूबर 2007 तक नई दिल्ली में हुई संयुक्त अभियानों, सशस्त्र बलों के स्तर पर बातचीत तथा अन्य व्यावसायिक आदान-प्रदानों में लगातार वृद्धि हो रही है। गरुण श्रृंखला का पिछला हवाई अभ्यास फरवरी 2007 में और वरुण अभ्यास सितंबर 2007 में भारत में किया गया।

गुप्तकालीन कलाओं की एक प्रदर्शनी का आयोजन 2 अप्रैल-9 जुलाई 2007 तक पेरिस के प्रतिष्ठित ग्रांड में पैलेस में किया गया।

जर्मनी

भारत और जर्मनी के बीच पारम्परिक रूप से विद्यमान घनिष्ठ और मैत्रीपूर्ण संबंध 19 अक्तूबर से 1 नवंबर 2007 तक जर्मनी संघीय गणराज्य की चांसलर डा. एंजेला मेरकल की यात्रा से और गहन हुए।

प्रधान मंत्री और चांसलर महोदया ने 30 अक्तूबर 2007 को साइंस एक्सप्रेस को झंडी दिखाकर रवाना किया। इसमें 13 डिब्बे हैं और यह भारत के 56 में शहरों से हो जाएगी। भारत और जर्मनी के बीच सामरिक और वैश्विक भागीदारी का और विकास करने पर एक संयुक्त वक्तव्य प्रधान मंत्री और चांसलर मेरकल द्वारा जारी किया गया। इस दस्तावेज में न सिर्फ हमारे भावी सहयोग, बल्कि सार्वभौमिक स्तर पर हमारे साझे और रक्षित मूल्यों के संवर्धन में हमारी सामरिक भागीदारी के लिए एक रोडमैप भी उपलब्ध कराया गया है। इसके अतिरिक्त विज्ञान प्रतिरक्षा तथा बौद्धिक सम्पदा अधिकारों के क्षेत्र में अनेक करारों एवं समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए।

इस यात्रा के दौरान मुख्य कार्यकारी अधिकारियों का गोलमेज तंत्र स्थापित करने की भी घोषणा की गई और इसकी पहली बैठक मुम्बई में हुई।

जर्मनी यूरोपीय संघ में भारत का सबसे बड़ा व्यापार भागीदार, विश्व स्तर पर प्रौद्योगिक सहयोग का दूसरा सबसे महत्वपूर्ण स्रोत और एक महत्वपूर्ण निवेशक है। द्विपक्षीय व्यापार में निरंतर वृद्धि हो रही है और यह वर्ष 2006 में 10 बिलियन यूरो के आंकड़े को पार कर गया। अर्थात 39.18 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। भारत से 4.19 बिलियन यूरो का निर्यात किया गया (+23.1%) और भारत में 6.36 बिलियन यूरो का आयात हुआ (+52.5%)। वर्ष 2007 के पहले छः माह के दौरान कुल व्यापार में 15.29 प्रतिशत की वृद्धि हुई। 12.21 प्रतिशत की वृद्धि के साथ भारतीय निर्यात 2.39 बिलियन यूरो और 17.61 प्रतिशत की वृद्धि के साथ भारत का आयात 3.34 बिलियन यूरो तक पहुँच गया। विदेशी प्रत्यक्ष निवेश के लिहाज से जर्मनी-भारत में 7वाँ सबसे बड़ा निवेशक है जिसने 1991 से जून 2007 तक 1.9 बिलियन अमरीकी डालर का कुल निवेश किया। भारतीय कंपनियों में जर्मनी की कंपनियों का अधिग्रहण करने अथवा जर्मनी में सहायक कंपनियां खोलने की प्रवृत्ति में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है।

दोनों नेताओं ने अब वर्ष 2012 तक 20 बिलियन यूरो के द्विपक्षीय व्यापार का लक्ष्य निर्धारित किया है।

द्विपक्षीय संयुक्त आयोग का 16वाँ सत्र 8-19 सितंबर 2007 तक बर्लिन में आयोजित कियागया। माच से 2007 में बर्लिन में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन मेला में भारत भी एक सहभागी राष्ट्र था। सितंबर 2007 में फ्रैंकफर्ट में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय मोटर शो में भारत-दिवस का आयोजन किया गया।

वर्ष 2007 में अनेक उच्चस्तरीय यात्राएं हुईं जिसमें 4 प्रमुख संसदीय शिष्टमंडलों की भारत यात्रा शामिल हैः बुंस्टैग के अध्यक्ष के नेतृत्व में वित्त एवं विदेशी मामलों से संबद्ध समिति, सीडीयू संसदीय दल के नेता तथा जर्मन बुंस्टैग के अध्यक्ष ने भारत का दौरा किया।

शिक्षा एवं अनुसंधान संघीय मंत्री डा. एनेत श्च्वान ने 7-8 फरवरी 2007 तक आयोजित यूरोपीय संघ विज्ञान मंत्रियों की बैठक की सह अध्यक्षता करने के लिए 5-9 फरवरी 2007 तक भारत का दौरा किया।

सूचना और प्रसारण मंत्री प्रियरंजन दासमुंशी ''बर्लीनाले'' फिल्म महोत्सव 2007 के दौरान जर्मनी के विदेश मंत्री स्टेनमर के साथ ''श्रव्य-दृश्य सह निर्माण करार पर हस्ताक्षर करने के लिए 16-17 फरवरी 2007 तक जर्मनी का दौरा किया। पर्यटन और संस्कृति मंत्री श्रीमती अम्बिका सोनी ने जर्मनी का आर्थिक और प्रौद्योगिकी मंत्री माइकल ग्लास के साथ अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन

मेला 2007 का सह उद्घाटन करने के 6-10 मार्च 2007 तक बर्लिन का दौरा किया।

वैज्ञानिक और प्रौद्योगिक सहयोग भारत-जर्मन क्रियाकलापों का एक महत्वपूर्ण तत्व है। चांसलर मेरकल की यात्रा के दौरान स्थापित भारत-जर्मन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी अनुसंधान केंद्र, औद्योगिक एवं बुनियादी अनुसंधान में सहयोग को सुविधाजनक बनाएगा और यह सुनिश्चित करेगा कि महत्वपूर्ण वैज्ञानिक आविष्कारों को व्यावहारिक अनुप्रयोगों में बदला जाए।

जर्मनी के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में 5 घूर्णन पीठ की स्थापना के साथ शैक्षिक सम्पर्क भी उत्तरोत्तर बढ़ रहे हैं।

रक्षा सचिवों की पहले बैठक 20 अप्रैल 2007 को नई दिल्ली में हुई। इसके पूर्व सामरिक रक्षा सहयोग, तकनीकी सहयोग तथा सेना से सेना सहयोग पर 3 उपसमूहों की बैठकें भी हुई थीं।

भारत-जर्मनी परामर्शी समूह की 16वीं बैठक 2-4 नवंबर 2007 तक हैदराबाद में हुई।

यूनान

राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम ने 23-28 अप्रैल 2007 तक यूनान का राजकीय दौरा किया। यह राजकीय यात्रा 21 वर्षों के अंतराल के बाद हुई और इसके कई मायनों में यूनान के साथ भारत के संबंधों को सुदृढ़ बनाने में सहायता मिली। दोनों देशों ने युगों पुराने तथा पारंपरिक संबंधों को और सार्थक बनाने का प्रयास किया। यात्रा के दौरान द्विपक्षीय निवेश संवर्धन एवं संरक्षण तथा विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर दो करारसंपन्न किये गये। भारतीय राष्ट्रपति ने अपने समकक्ष डा. केरोलोस पपोउलियास के साथ मुलाकात की। एथेंस नगर के महापौर निकितास काकलामनिलास ने उन्हें एथेंस नगर के गोल्ड मेडल ऑफ मेरिट से सम्मानित किया।

यूनान क एक सरकारी पर्यटन शिष्टमंडल ने 16 अप्रैल 2007 को नई दिल्ली में आयोजित संयुक्त कार्यकारी दल की बैठक में भाग लेने के लिए भारत का दौरा किया। इसमें हुई चर्चाओं से टूर आपरेटरों, आतिथ्य-सत्कार संगठनों तथा ट्रेवल मीडिया कार्मिकों के बीच आदान-प्रदान पर्यटन व्यावसायिक स्कूल के पांच छात्रों की यूनान यात्रा तथा हमारे पर्यटन उद्योग में प्रस्तावित यूनानी निवेश सहित पर्यटन क्षेत्र में अन्य प्रकार के सहयोग को प्रोत्साहन मिला।

यूनान के उप विदेश मंत्री, पेट्रोस डुकास ने नई दिल्ली में 12-13 नवंबर 2007 तक आयोजित संयुक्त आर्थिक आयोग की 5वीं बैठक में भाग लेने के लिए 11-15 नवंबर 2007 तक भारत का दौरा किया।

हेलनिक गणराज्य के प्रधान मंत्री कोस्टास करामानलिस ने 10-13 जनवरी 2008 तक भारत का राजकीय दौरा किया। अपनी यात्रा के दौरान उन्होंने राष्ट्रपति, उप-राष्ट्रपति, प्रधान मंत्री, विदेश मंत्री संप्रग अध्यक्ष और लोक सभा में विपक्ष के नेता से मुलाकात की।

होली सी

पोप बेनेडिक्ट 16वें ने घोषणा की कि मुम्बई के आर्चविशप ओसवाल्ड ग्रेसियास को कार्डिनल बनाया जाएगा। 2 नवंबर 2007 को सेंट पीटर्स बसिलिका में कंसिस्टरी मनाया गया।

हंगरी

रक्षा से संबद्ध भारत-हंगरी संयुक्त कार्यकारी दल की पहली बैठक 25-26 अप्रैल 2007 तक हंगरी में हुई।

हंगरी के साथ विदेश कार्यालय परामर्श 25 अगस्त 2007 को बुडापेस्ट में आयोजित किया गया।

हंगरी गणराज्य के संस्कृति एवं शिक्षा मंत्री डा. इस्तवान हिलर ने 3-5 अक्तूबर 2007 तक भारत का दौरा किया।

हंगरी के प्रधान मंत्री फेरेक ग्यूरक्सनी ने 16-19 जनवरी 2008 तक भारत का राजकीय दौरा किया। आपनी यात्रा के दौरान उन्होंने राष्ट्रपति, प्रधान मंत्री, संप्रग अध्यक्ष, लोक सभा में विपक्ष के नेता, विदेश मंत्री, पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्री तथा वाणिज्य और उद्योग मंत्री के साथ बैठकें कीं। उनकी यात्रा के दौरान संपन्न किये गये करारों में शामिल हैं- स्वास्थ्य क्षेत्र में सहयोग पर समझौता ज्ञापन, मादक द्रव्यों और मनःप्रभावी पदार्थों के अवैध व्यापार की रोकथम में सहयोग पर समझौता ज्ञापन, कृषि, पौध विकास एवं संरक्षण तथा पशुपालन क्षेत्रों में सहयोग पर करार, भारत-हंगरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी कोष बनाने पर समझौता ज्ञापन तथा ओएनजीसी और एमओएल के बीच सहयोग पर समझौता ज्ञापन।

आइसलैंड

वित्त मंत्री पी. चिदंबरम ने 28-30 जून 2007 तक आइसलैंड का दौरा किया। भारत और आइसलैंड के बीच द्विपक्षीय निवेश संरक्षण और संवर्धन करार संपन्न किया गया।

आइसलैंड के साथ सतत मात्स्यिकी पर 30 जुलाई, 2007 को एक करार नई दिल्ली में संपन्न किया गया।

9 अक्तूबर, 2007 को आइसलैंड के साथ ऊर्जा क्षेत्र में सहयोग पर एक समझौता ज्ञापन संपन्न किया गया।

आइसलैंड के वित्त मंत्री, अर्नी मथेसेन ने 22-28 नवंबर 2007 तक भारत का दौरा किया। इस यात्रा के दौरान भारत गणराज्य

ब्रिटेन के प्रधानमंत्री, गार्डन ब्राउन 21 जनवरी 2008 को राष्ट्रपति प्रतिभा देवीसिंह पाटील से मुलाकात करते हुए।

भारत के उप राष्ट्रपति, एम. हामिद अंसारी 30 अक्तूबर 2007 को नई दिल्ली में
जर्मनी परिसंघीय गणराज्य के फेडरल चांसलर, डा. एन्जेला मेरकेल से मुलाकात करते हुए।

की सरकार और आइसलैंड सरकार के बीच दोहरे कराधान के परिहार और आयकरों के संबंध में राजकोषीय बंचन से संबद्ध एक करार और प्रोतोकोल संपन्न किया गया।

आयरलैंड

फरवरी 2007 में प्रवासी भारतीय कार्य मंत्री व्यालार रवि ने डब्लिन में अनिवासी भारतीयों/भारतीय मूल के लोगों से मिलने के लिए आयरलैंड का दौरा किया। आयरलैंड के राष्ट्रीय दिवस 17 मार्च को आयरलैंड के सबसे बड़े देशभक्त और राजनेता इआमोन डी वलेरा के नाम पर नई दिल्ली में एक सड़क का नामकरण करके आयरलैंड और भारत के बीच लंबे और घनिष्ठ ऐतिहासिक संबंधों को मनाया गया। आयरलैंड के न्याय राज्य मंत्री फैंक फाहे नामकरण समारोह के लिए भारत आए।

आयरलैंड के राजदूत और भारत सरकार के सचिव (संस्कृति) द्वारा भारत और आयरलैंड के बीच संस्कृति करार के अनुसमर्थन दस्तावेजों पर 11 दिसंबर 2007 को हस्ताक्षर किए गए।

इटली

इटली के प्रधान मंत्री डा. रोमानो प्रोदी ने फरवरी 2007 में भारत का दौरा किया। उनके नेतृत्व में आये एक बड़े शिष्टमंडल ने चेन्नै, बंगलौर, कोलकाता, मुम्बई और दिल्ली का दौरा किया। उनके साथ तीन मंत्री और 400 सदस्यीय व्यावसायिक शिष्टमंडल भी आया।

अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद और अंतर्राष्ट्रीय अपराध का मुकाबला करने और नवीकरणीय ऊर्जा सहयोग से संबद्ध संयुक्त कार्यकारी दल की स्थापना पर दो समझौता ज्ञापन संपन्न किये गये।

वर्ष 2007-08 की अवधि के लिए सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम भी संपन्न किया गया।

भारत-इटली संयुक्त रक्षा समिति की छठी बैठक 1-2 फरवरी 2007 तक नई दिल्ली में हुई।

सेना प्रमुख ने मार्च 2007 में इटली का दौरा किया और इटली के रक्षा मंत्री आरतुरो परीसी ने 7-10 मई 2007 तक भारत का दौरा किया।

इटली के उप प्रधान मंत्री एवं विदेश मासीमो डी अलेमा ने 10-12 अक्तूबर 2007 तक भारत का दौरा किया।

भारत से हुई इटली की अन्य यात्राओं में शामिल हैं प्रवासी भारतीय कार्यमंत्री नए एवं नवीकरणीय ऊर्जा राज्य मंत्री उद्योग राज्य मंत्री की यात्राएं।

लाटविया

विदेश राज्य मंत्री श्री आनंद शर्मा ने 27-29 मार्च 2007 तक लाटविया का सरकारी दौरा किया। लाटविया सरकार के इलेक्ट्रानिक मामालें के विशेष प्रभारी मंत्री इनागुडेले ने 8-12 अक्तूबर 2007 तक भारत का दौरा किया।

लिथुआनिया

विदेश राज्य मंत्री श्री आनंद शर्मा ने 25-26 मार्च 2007 तक लिथुआनिया का सरकारी दौरा किया। लिथुआनिया सरकार ने प्रधान कौंसल अलजिर डैश अलबर्टास दम्ब्राक्स के नेतृत्व में नई दिल्ली में अपना प्रधान कौंसलावास घराने की लिथुआनिया सरकार की मंशा की सूचना दी जिसके क्षेत्राधिकार में भारत का सम्पूर्ण भूभाग होगा। वर्तमान में भारत में लिथुआनिया का आवासीय मिशन है। इस प्रस्ताव का अनुमोदन कर दिया गया है और 10 सितंबर 2007 को लिथुआनिया सरकार को भारत सरकार की सहमति की सूचना दे दी गई।

लक्जमबर्ग

यूरोप की एक महत्वूपर्ण वित्तीय शक्ति लक्जमबर्ग के साथ इस वर्ष भारत के संबंध विकसित और विविधतापूर्ण हुए।

भारत में पोर्टफोलियों निवेश के लिहाज से लक्जमबर्ग का तीसरा स्थान है (6 बिलियन, कुल पोर्टफोलियो निवेश का 15%)। जीडीआर (ग्लोबल डिपाजिटर रिसीट्स) के लिहाज से यह पहले स्थान पर है - भरतीय कंपनियों द्वारा 100 से अधिक जीडीआर बनाए गए हैं जिन्हें लक्जमबर्ग स्टाक इक्सचेंज में सूचीबद्ध भी किया गया है।

लक्जमबर्ग की एक महत्वपूर्ण लौह एवं इस्पात कंपनी मेसर्स पाओल उर्थ ने बोकारो स्थित स्टील संयंत्र के ब्लास्ट फर्नेस के उन्नयन के लिए 100 मिलियन यूरो (580 करोड) का ठेका भारतीय इस्पात प्राधिकरण ने प्राप्त किया है।

लक्जमबर्ग के उप प्रधान मंत्री और विदेश मंत्री एस.एल. बोर्न ने फरवरी 2007 में भारत का दौरा किया। वित्त एवं न्याय मंत्री लुक फ्रीदेन ने जनवरी के तीसरे सप्ताह में भारत का दौरा किया। आर्थिक एवं विदेश व्यापार मंत्री डीनोट क्रेके ने अप्रैल 2007 में भारत का दौरा किया।

मेसेडोनिया

भारत और मेसेडोनिया के बीच पहले दौर का विदेश परामर्श कार्यालय 17 जुलाई 2007 को स्कोपजे में आयोजित किया गया।

नीदरलैंड

पिछले वर्षों के दौरान द्विपक्षीय संबंध दृढ़ और गहन हुए हैं। नीदरलैंड से हुई उच्चस्तरीय यात्राओं से संबंधों को और गति मिली है।

पिछले कुछ वर्षों के दौरान भारत और नीदरलैंड के बीच द्विपक्षीय व्यापार में निरन्तर वृद्धि हो रही है। वर्ष 2003-04 में कुल व्यापार 1.8 बिलियन अमरीकी डालर का था जो वर्ष 2006 में बढ़कर 3.04 यूरो का हो गया। पिछले अनेक वर्षों से व्यापार संतुलन भारत के पक्ष में रहा है और वर्ष 2006 में यह लगभग 769 मिलियन यूरो का था। भारत में मिलाजुलाकर नीदरलैंड द्वारा 2.6 बिलियन अमरीकी डालर (अगस्त 1991-मार्च 2007) का कुल निवेश किया गया है और नीदरलैंड भारत में चौथा सबसे बड़ा निवेशक हो गया है।

नीदरलैंड की महारानी बीट्रिक्स, युवराज विलेम-अलेक्जेंडर और राजकुमारी मैक्सिमा और विदेश मंत्री मैक्सिम वेरहाजेन तथा आर्थिक मामलों के मंत्री एम.जे.ए. वान डर होवेन तथा नीदरलैंड की 8 प्रमुख बहुराष्ट्रीय कंपनियों के मुख्य कार्यकारी अधिकारियों से सुसज्जित व्यावसायिक शिष्टमंडल के साथ अक्तूबर 2007 में भारत के दौरे पर आईं। महारानी बीट्रिक्स द्वारा दो बार राजकीय यात्रा होने के कारण यह यात्रा विशेष रूप से महत्वपूर्ण थी। इस यात्रा पर आर्थिक संबंधों पर विशेष बल दिया गया। यात्रा के दौरान दो समझौता ज्ञापनों - पहला सांस्कृतिक सहयोग पर और दूसरा भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद तथा स्टिचटिंग एम्सटर्ड-भारत महोत्सव के बीच सम्पन्न किया गया।

विदेश कार्यालय परामर्श तंत्र के कार्यों से दोनों पक्ष संतुष्ट हैं। विदेश कार्यालय परामर्श का पहला दौरा सितंबर 2007 में नई दिल्ली में आयोजित किया गया।

दोनों देशों के बीच वीजा और कौंसली मुद्दों में सुधार लाने के लिए नियमित कौंसली परामर्श किए जा रहे हैं। द्विपक्षीय विशेष सुरक्षा करारों पर वार्ता अग्रिम दौर में पहुंच गई है।

संप्रग अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी ने 8-10 जून 2007 तक नीदरलैंड का दौरा किया और नेक्सस संस्थान में एक व्याख्यान दिया।

नीदरलैंड के विदेश व्यापार मंत्री फ्रैंक हीम्सकर्क के नेतृत्व में नीदरलैंड के एक व्यापार मिशन ने 25-30 नवंबर 2007 तक भारत का दौरा किया। यह किसी देश के लिए नीदरलैंड का अब तक का सबसे बड़ा विदेश व्यापार मिशन था जिसमें लघु और मझोले उपक्रमों के 75 से अधिक प्रतिनिधि तथा पांच बड़े शहरों के उप महापौर शामिल थे।

नार्वे

शिक्षा, अनुसंधान और चर्च मामलों से संबद्ध नार्वे की 16 सदस्यीय संसदीय स्थायी समिति, जिसके प्रमुख एरिक्सन सोरेदे इने मैरी थीं, ने 23 फरवरी-3मार्च 2007 तक भारत का दौरा किया। मे-हेलेन मोलवाएर ग्रिम्सटेड की अध्यक्षता में परिवार और सांस्कृतिक मामलों से संबद्ध नार्वे की 12 सदस्यीय संसदीय स्थायी समिति ने 2-8 मार्च 2007 तक भारत का दौरा किया। अस्टोटिंग (नार्वे की संसद) के अध्यक्ष टी. जैगलैंड ने 11-17 मार्च 2007 तक लोक सभा अध्यक्ष के आमंत्रण पर भारत का दौरा किया। नार्वे के विदेश मंत्री 29-31 मार्च 2007 तक भारत के सरकारी दौरे पर आए और नार्वे के स्थानीय शासन एवं क्षेत्रीय विकास मंत्री मैग्नहिल्ड मैल्टविट क्लेपा ने 29-31 अक्तूबर 2007 तक भारत का दौरा किया।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी से संबद्ध भारत-नार्वे संयुक्त आयोग कार्य दल की पहली बैठक 14 जून 2007 को नई दिल्ली में हुई। पर्यावरण से संबद्ध भारत-नार्वे संयुक्त आयोग कार्यदल का पहला सत्र 1-2 अक्तूबर 2007 तक ओस्लो में आयोजित किया गया। इसमें चर्चा किए जाने वाले प्रमुख मुद्दों में शामिल थे, सीडीएम और अनुकूलन नीतियों सहित जलवायु परिवर्तन, स्थायी विकास तथा यूएनईपी के संदर्भ में अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण मुद्दों, जैव विविधता तथा सतत उपभोग एवं उत्पादन।

वित्त मंत्री पी. चिदम्बरम ने 23-25 अक्तूबर 2007 तक नार्वे का दौरा किया।

पोलैंड

पोलैंड के श्रम और सामाजिक विज्ञान मंत्री अन्नाकलाटा ने प्रवासी भारतीय कार्य मंत्री के निमंत्रण पर 13-15 जून 1997 तक भारत का त्रि-दिवसीय दौरा किया। चर्चा में निर्माण और कृषि जैसे क्षेत्रों में पोलैंड में भारतीय कामगारों की उपलब्धता पर विशेष बल दिया गया, क्योंकि पोलैंड में इन क्षेत्रों में कुशल कामगारों की कमी है। 11 अक्तूबर 2007 को हुई मंत्रिमंडल की बैठक में भारत गणराज्य और पोलैंड गणराज्य के बीच स्वास्थ्य और चिकित्सा क्षेत्र में द्विपक्षीय सहयोग के लिए एक समझौता ज्ञापन संपन्न करने का अनुमोदन किया गया।

पोलैंड के साथ विदेश कार्यालय परामर्श का आयोजन 31 अगस्त 2007 को वारसा में किया गया।

पर्यावरण एवं वन राज्य मंत्री एस. रघुपति ने दो प्रतिनिधियों के साथ 5-7 नवंबर 2007 तक वारसा में आयोजित यूरोप में वनों के संरक्षण पर पांचवे मंत्रिस्तरीय सम्मेलन - ''फारेस्ट्स फार क्वालिटी आफ लाइफ'' में भाग लिया।

रक्षा सहयोग के लिए भारत-पोलैंड संयुक्त कार्यकारी दल की बैठक 10-12 दिसंबर 2007 तक वारसा में हुई। के.पी. सिंह, सचिव (रक्षा उत्पादन) ने भारतीय शिष्टमंडल का नेतृत्व किया। पोलैंड की ओर से वहां के रक्षा मंत्रालय के शस्त्रीकरण एवं आधुनिकीकरण मंत्री पिओटर जेरबिंस्की भारत की यात्रा पर आए। इस दौरान रक्षा उत्पादनों में प्रौद्योगिकी के उन्नयन, रक्षा अध्ययनों में

पीएचडी कार्यक्रमों का प्रस्ताव तथा रक्षा से जुड़े अन्य प्रशिक्षण कार्यक्रमों पर बातचीत की गई।

पुर्तगाल

राजनीतिक और आर्थिक संबंधों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से पुर्तगाल के राष्ट्रपति अनिवाल कवाको सिलवा ने 10-17 जनवरी 2007 तक भारत का सरकारी दौरा किया। उनके नेतृत्व में विदेश मंत्री लुई अमाडो आर्थिक मंत्री मैनुअल पिन्हो तथा सांस्कृतिक मंत्री इसोबेल पायरस डी लीमा और 60 सदस्यीय व्यावसायिक प्रतिनिधिमंडल भी भारत आया। इस यात्रा के दौरान प्रत्यर्पण संधि, सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम तथा शैक्षिक आदान-प्रदान कार्यक्रम पर हस्ताक्षर किए गए।

प्रवासी भारतीय कार्यमंत्री ब्यालार रवि ने 1-3 फरवरी 2007 तक पुर्तगाल का दौरा किया।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी से संबद्ध भारत-पुर्तगाल संयुक्त आयोग की दूसरी बैठक 19-25 मार्च 2007 तक नई दिल्ली में हुई जिसके दौरान वर्ष 2007-09 के लिए सहयोग कार्यक्रम का भी अनुमोदन किया गया।

विदेश राज्य मंत्री आनंद शर्मा ने 10-12 जून 2007 तक लिस्बन का सरकारी दौरा किया। अपनी यात्रा के दौरान उन्होंने राष्ट्रपति कवाको सिलवा के साथ बातचीत की और पुर्तगाल की विदेश मंत्री लुई अमाडो तथा विदेश मामलों के सेक्रेटरी ऑफ स्टेट डा. जोआओ सराविनहे के साथ बैठकें की।

श्रम और रोजगार राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री आस्कर फर्नांडीस ने रोजगार और सामाजिक नीति पर दूसरे यूरोपीय संघ - भारत सेमिनार में भाग लेने के लिए 15-18 सितंबर 2007 तक पुर्तगाल के लिए 6 सदस्यीय शिष्टमंडल का नेतृत्व किया।

पुर्तगाल के प्रधान मंत्री जोश सोकरेटस ने पुर्तगाल के यूरापीय संघ के अध्यक्ष होने के नाते भारत में आयोजित होने वाले आठवें भारत-यूरोपीय संघ शिखर सम्मेलन के सिलसिले में 30 नवंबर-1 दिसंबर 2007 तक भारत का दौरा किया और प्रधान मंत्री के साथ द्विपक्षीय बातचीत की।

सर्बिया गणराज्य

विदेश राज्य मंत्री श्री आनंद शर्मा ने 16-18 सितंबर 2007 तक सर्बिया का सरकारी दौरा किया। इस यात्रा के दौरान मंत्री महोदय ने सर्बियाई राष्ट्रपति बोरिस टैडिक, सर्बियाई प्रधान मंत्री ओजिसलाव कोस्तूनिका, विदेश मंत्री वुक जेरेमिक, संसद अध्यक्ष और अन्य वरिष्ठ गणमान्य अधिकारियों से बातचीत की। यात्रा के दौरान राजनयिक और सरकारी पासपोर्ट धारकों के लिए वीजा छूट से संबद्ध करार तथा भारत के विदेश सेवा संस्थान और इसके सर्बियाई समकक्ष के बीच सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

कोसोवो के मुद्दे पर मंत्रिमंडल ने भारत के दृष्टिकोण की जानकारी दी और अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं के सम्पूर्णता और क्षेत्रीय अखंडता का पूर्ण सम्मान किया जाना चाहिए और एक पक्षीय अथवा बहुपक्षीय संघर्ष अथवा सैन्य कार्रवाइयों का सहारा लिए बिना और कोई कृत्रिम समय-सीमा निर्धारित किए बिना संबंधित पक्षों के बीच विचार-विमार्श और बातचीत के जरिए इस मुद्दे का समाधान किया जाना चाहिए।

स्लोवाकिया

विदेश राज्य मंत्री श्री आनंद शर्मा ने 22-24 मार्च 2007 तक स्लोवाक गणराज्य का दौरा किया जिसके दौरान उन्होंने स्लोवाकिया के विदेश मंत्री जान कुविस, आर्थिक मंत्री लूवोमीर जोहनाटेक, रक्षा मंत्री फ्रेटीसेक कसीकी और विदेश मामलों की स्टेट सेक्रेटरी डायरा स्त्रोफोवा के साथ मुलाकात की। इन चर्चाओं के दौरान स्लोवाकिया ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता के लिए भारतीय उम्मीदवारी के प्रति अपने समर्थन को दोहराया और व्यापार एवं निवेश, रक्षा, संस्कृति तथा अन्य क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग को बढ़ाने पर सहमति व्यक्त की। रक्षा क्षेत्र में सहयोग के लिए एक संयुक्त कार्यकारी दल का गठन करने पर सहमति हुई।

स्लोवानिया

स्लोवानिया के साथ विदेश कार्यालय परामर्श ल्जुब्लजना में 28 फरवरी 2007 को हुए।

स्पेन

स्पेन के उद्योग, पर्यटन और वाणिज्य मंत्री जीन क्लास ने 12-14 दिसंबर 2007 तक भारत का दौरा किया और उन्होंने मुम्बई में महाराष्ट्र के उद्योग मेंत्री से मुलाकात की। वे मझगांव डाक, मुम्बई में भी गए, जहां स्पेन की कंपनी नवांसिया फ्रांसीसी एमडीएल के साथ मिलकर भारतीय नौसेना के लिए छः स्कार्पिन पनडुब्बियों का निर्माण कर ही है।

सीनेट के अध्यक्ष जैवियर रोजो के नेतृत्व में 8 सदस्यीय स्पेनिश शिष्टमंडल 23 जनवरी-4 मार्च 2007 तक भारत के दौरे पर आया।

भारत-स्पेन के बीच ''स्पेनिश प्रवर्तक मामलों पर पारस्परिक विधिक सहयोग'' से संबद्ध संधि 31 मार्च 2007 से प्रवृत्त हो गई है। इस संधि पर वर्ष 2002 में हस्ताक्षर किए गए थे जिसे जुलाई 2006 में स्पेन के प्रधान मंत्री जपाटेरो की यात्रा के दौरान अंतिम रूप दिया गया।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री कपिल सिब्बल ने 12 जून 2007 को भारत का दौरा किया। उन्होंने अपने स्पेनी समकक्षों के साथ विज्ञान और प्रौद्योगिकी क्षेत्र में भारत और स्पेन के बीच सहयोग पर समझौता ज्ञापन किया।

स्वीडन

स्वीडन के विदेश मंत्री कार्ल बिल्डिट ने 1-7 मई 2007 तक भारत का दौरा किया। यात्रा के दौरान उन्होंने प्रधान मंत्री, विदेश मंत्री, रक्षा मंत्री, सूचना प्रौद्योगिकी और संचार मंत्री तथा राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार के साथ चर्चा की।

पर्यावरण एवं वन मंत्री नमो नारायण मीणा ने जलवायु परिवर्तन पर अनौपचारिक मंत्रिस्तरीय वार्ता में भाग लेने के लिए 11-14 जून 2007 तक स्वीडन का दौरा किया।

स्वीडन के विदेश व्यापार मंत्री स्टेन टाल्गफोर्स ने 1-5 सितंबर 2007 तक भारत का सरकारी दौरा किया। 3 सितंबर 2007 को शिष्टमंडल स्तर की वार्ता हुई।

स्वीडन की संसद के श्रम और वित्त पर 12 सदस्यीय दो स्थायी समितियों ने 2-9 जनवरी 2008 तक भारत का दौरा किया। उन्होंने लोक सभा की वाणिज्य और व्यापार से संबद्ध समिति के अध्यक्ष और सदस्यों तथा श्रम से संबद्ध समिति के सदस्यों के साथ मुलाकात की। स्वीडन के सांसदगण पुणे और मुम्बई भी गए।

स्विट्जरलैंड

आर्थिक मामलों से संबद्ध स्विट्जरलैंड के संघीय कौंसलर डोरिस ल्यूटहार्ट 6-2 अगस्त 2007 तक भारत की यात्रा पर आए। 6 अगस्त 2007 को शिष्टमंडल स्तरीय वार्ता हुई। भारतीय शिष्टमंडल का नेतृत्व वाणिज्य और उद्योग मंत्री श्री कमलनाथ ने किया। इस अवसर पर भारत के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय तथा स्विट्जरलैंड आर्थिक मामलों के संघीय विभाग के बीच बौद्धिक सम्पदा पर एक समझौता ज्ञापन सम्पन्न किया गया।

स्विस परिसंघ की राष्ट्रपति निसेलिन काल्मी-रे ने 5-8 नवंबर 2007 तक भारत का दौरा किया। अपनी यात्रा के दौरान उन्होंने राष्ट्रपति प्रतिभा देवी सिंह पाटिल, उपराष्ट्रपति मुहम्मद हामिद अंसारी, प्रधान मंत्री डा. मनमोहन सिंह, विदेश मंत्री प्रणब मुखर्जी के साथ चर्चा की। उन्होंने संप्रग अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गाँधी और विपक्ष के नेता एल.के. आडवाणी के साथ भी मुलाकात की। भारत- स्विट्जरलैंड मैत्री संधि पर हस्ताक्षर किए जाने की 60वीं वर्षगांठ के दौरान हुई इस यात्रा से हमारे द्विपक्षीय राजनीतिक, आर्थिक, वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिकी एवं सांस्कृतिक संबंधों को बढ़ाने में सहायता मिलेगी।

स्विट्जरलैंड के साथ विदेश कार्यालय परामर्श 31 जनवरी 2008 को सम्पन्न किया गया।

तुर्की

तुर्की के प्रधानमंत्री अली बबकन 5-9 फरवरी 2008 को भारत की यात्रा पर आए। यात्रा के दौरान दोनों देशों के बीच राजनयिक पासपोर्ट धारकों के लिए वीजा की अनिवार्यता समाप्त करने संबंधी करार संपन्न किया गया।

युनाइटेड किंगडम

भारत और युनाइटेड किंगडम के बीच सामरिक संबंध हैं। भारत-यूके चौथी शिखर वार्ता दिल्ली में जनवरी 21, 2008 को हुई जिसके लिए प्रधानमंत्री गार्डेन ब्राउन ने भारत की यात्रा की। उनके साथ एक उच्चस्तरीय व्यापारिक शिष्टमंडल भी था। यात्रा के अंत में एक संयुक्त वक्तव्य जारी किया गया और शिक्षा के क्षेत्र में एक करार पर समझौता हुआ। सहयोग के लिए शिक्षा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, पर्यावरण और बहुपक्षीय समस्याओं के प्रति दृष्टिकोणों के विशेष क्षेत्रों की पहचान की गई। यात्रा के समय प्रधानमंत्री गार्डन ब्राउन को दिल्ली विश्वविद्यालय ने मानद डाक्टरेट प्रदान किया।

हमारे बीच विस्तृत आर्थिक सम्पर्क और घनिष्ठ राजनीतिक संबंध भी हैं। युनाइटेड किंगडम में रह रहे विशाल भारतीय समुदाय (लगभग 1.5 मिलियन) एक अन्य महत्वपूर्ण कड़ी हैं। युनाइटेड किंगडम विश्व स्तर पर हमारा चौथा सबसे बड़ा व्यापार भागीदार और यूरोपीय संघ में दूसरा सबसे बड़ा व्यापार भागीदार है जिसके साथ वर्ष 2006 में लगभग 8.5 बिलियन यूरो का दोतरफा व्यापार हुआ। 3.4 बिलियन पाउंड के आंकड़े के साथ युनाइटेड किंगडम अभी भी भारत में सबसे बड़ा और 1991 के बाद दूसरा सबसे बड़ा निवेशक है जिसने 3.6 बिलियन अमरीकी डालर का निवेश किया है (कुल विदेशी प्रत्यक्ष निवेश प्रवाह का 8.5 प्रतिशत) (अगस्त 1991-जनवरी 2007) 2004 के बाद से युनाइटेड किंगडम में हो रहे भारतीय निवेश भारत में रह रहे ब्रिटिश निवेश से अधिक है।

भारत-युनाइटेड किंगडम विदेश कार्यालय परामर्शों का आयोजन मई 2007 में लंदन में सितंबर 2007 में नई दिल्ली में किया गया।

वर्ष 2005 में गठित जेटको (संयुक्त आर्थिक एवं व्यापार समिति) की दूसरी बैठक जनवरी 2007 में हुई जिसने विशेष क्षेत्रों में 8 कार्यदलों का भी गठन किया है। इनमें शामिल हैंः उच्च प्रौद्योगिकी, आईपीआर, लेखा शास्त्र, विधिक सेवाएं, अवसंरचना, कृर्षि, व्यापार तथा स्वास्थ्य सेवाओं पर कार्य दल। जेटको की पिछली बैठक दिसंबर 2007 में लंदन में हुई।

ब्रिटिश सरकार के वित्तीय समर्थन से भारत-ब्रिटिश भागीदारी नेटवर्क की स्थापना की गई।

जनवरी 2007 में हुई चांसलर गार्डन ब्राउन की यात्रा के दौरान भारत-ब्रिटेन आर्थिक एवं वित्तीय वार्ता का शुभारंभ किया गया।

भारत-यूके गोलमेज की 10वीं बैठक 11-13 अप्रैल 2007 तक

डिचले, यूके में की गई। इसकी सह अध्यक्षता नितिन देसाई और क्रिस पैटन ने की। इस गोलमेज बैठक ने स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, अनुसंधान, वित्तीय सेवाओं, द्विपक्षीय व्यापार एवं निवेश, व्यावसायिक मुद्दों पर नई सोच और संबंधों के व्यापाक आयामों के संबंध में अनुशंसाएं कीं।

जनवरी 2004 में अवध प्रवासियों की वापसी पर संपन्न समझौता ज्ञापन को वर्ष 2007 में एक और वर्ष की अवधि के लिए नवीकृत किया गया।

यूरोपीय संघ (ईयू)

भारत के लिए यूरोपीय संघ के सदस्य राज्य अलग-अलग और सामूहिक रूप से महत्वपूर्ण हैं। एक सुदृढ़ आर्थिक भागीदार और उदीयमान राजनैतिक इकाई के रूप में यूरोपीय संघ का भौगोलिक विस्तार पूर्व की ओर हो रहा है और यह साझी विदेश एवं सुरक्षा नीति अपनाने की प्रक्रिया में है। यूरोपीय संघ भारत के लिए एक महत्वपूर्ण व्यापार, प्रौद्योगिकी और निवेश भागीदार है और यह विशाल भारतीय डायस्पोरा का घर भी है। यूरोपीय संघ भारत का सबसे बड़ा व्यापार भागीदार है (भारत के कुल विदेशी व्यापार का 1/5 हिस्सा)। द्विपक्षीय व्यापार में वर्ष 2001 से वर्ष 2006 के बीच औसतन 10 प्रतिशत की वृद्धि हुई है और वर्ष 2006 में यह 46 बिलियन यूरो को पार कर गया (भारतीय निर्यात 22.3 बिलियन यूरो और भारतीय आयात 24 बिलियन यूरो)। भारत और यूरोपीय संघ महत्वपूर्ण निवेश भागीदार भी हैं। यूरोपीय संघ से भारत में कुल 10.86 बिलियन अमरीकी डालर का विदेशी प्रत्यक्ष निवेश हुआ (कुल विदेशी प्रत्यक्ष निवेश प्रवाह का 24 प्रतिशत - अगस्त 1991-फरवरी 2007)। भारत ने भी हाल के वर्षों में यूरोपीय संघ में निवेश करना आरंभ किया है, यूके, जर्मनी और इटली में भी भारतीय निवेश में निरंतर वृद्धि हो रही है।

आठवां भारत-यूरोपीय संघ शिखर सम्मेलन 30 नवंबर 2007 को नई दिल्ली में हुआ। यूरोपीय संघ पक्ष का प्रतिनिधित्व यूरोपीय परिषद की अध्यक्ष की हैसियत से पुर्तगाल के प्रधान मंत्री जोस सोग्रेटस और यूरोपीय आयोग के अध्यक्ष जोस मेनुअल बरोसो ने किया। दोनों पक्षों ने आपसी हित के विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की जिससे वर्ष 2004 में द हेग में आयोजिकत पांचवे भारत-यूरोपीय संघ शिखर सम्मेलन में बनाया गया सामरिक संबगंध और भी सुदृढ़ हुआ। वर्ष 2005 में नई दिल्ली में आयोजित छठे शिखर सम्मेलन में एक महत्वाकांक्षी और व्यापक भारत-यूरोपीय संघ संयुक्त कार्रवाई योजना पारित की गई। इस शिखर सम्मेलन से पूर्व 29 नवंबर 2007 को भारत-यूरोपीय संघ वाणिज्य शिखर सम्मेलन और सीईओ गोलमेज बैठक का आयोजन किया गया। शिखर सम्मेलन के दौरान विज्ञान और प्रौद्योगिकी सहयोग पर एक करार को नवीकृत किया गया और विकास सहयोग में वर्ष 2007-2010 के लिए एक बहुद्देश्यीय-वार्षिक संकेतक कार्यक्रम पर दोनों पक्षों द्वारा हस्ताक्षर किये गए।

संसदीय आदान-प्रदान निरंतर बढ़ रहे हैं। यूरोपीय संसद के अध्यक्ष के आमंत्रण पर भारत के राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम ने 24 से 25 अप्रैल 2007 तक स्ट्रासबोर्ग, फ्रांस का दौरा किया और वहां यूरोपियन संसद को संबोधित किया। किसी भारतीय राष्ट्रपति द्वारा यूरापेय संसद को यह पहला संबोधन था। राष्ट्रपति महोदय ने ''डाइनामिक्स आफ यूनिटी आफ नेशंस'' पर अपना संबोधन दिया। यात्रा के दौरान उन्होंने ''अंतरिक्ष की भावी चुनौतियां'' के लिए सकारात्मक नेतृत्व पर अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष विश्वविद्यालय स्ट्रासबोर्ग में भाषण भी दिया।

यूरोपीय संसद ने भारत के साथ संबंध स्थापित करने के लिए मार्च 2007 में एक नए शिष्टमंडल का गठन किया। इस शिष्टमंडल की अध्यक्ष सुश्री नीना गिल ने अगस्त 2007 में भारत का दौरा किया।

यूरोपीय संघ को सार्क में पर्यवेक्षक राज्य के रूप में सहयोजित किया गया था और इसके प्रतिनिधियों ने 1-4 अप्रैल 2007 तक नई दिल्ली में आयोजित 14वें सार्क शिखर सम्मेलन में भाग लिया।

विदेश मंत्री प्रणब मुखर्जी ने पहली बार हैम्बर्ग, जर्मनी में मई 2007 में आयोजित एएसईएम विदेश मंत्रियों की बैठक में भाग लिया।

बर्लिन में 31 मई 2007 को यूरोपीय संघ-भारत मंत्रिस्तरीय त्रोइका की बैठक ने सामरिक भागीदारी के क्रियान्वयन में हाल में हुई प्रगति का जायजा लेने और इसे और गहन बनाने पर चर्चा करने का अवसर प्रदान किया।

भारत-यूरोपीय संघ सिविल सोसाइटी गोलमेज तंत्र की 11वीं बैठक सितंबर 2007 में नई दिल्ली में हुई। एन.एन. बोहरा और डिमिट्रिस डिमिट्रियाडिस ने इसकी सह अध्यक्षता की। सदस्यों ने सामाजिक विकास, व्यापार और निवेश तथा अक्षय ऊर्जा से जुड़े मुद्दों पर बातचीत की। भारत यूरोपीय संघ सिविल सोसाइटी इंटरनेट मंच (www.india-eu.org) का शुभारंभ एक मई 2007 को विदेश राज्य मंत्री श्री आनंद शर्मा ने किया।

भारत और यूरोपीय संघ के बीच वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक का एक नियमित तंत्र है। इसकी 14वीं बैठक 15 अक्तूबर 2007 को नई दिल्ली में हुई। 13वीं बैठक का आयोजन 2 मई 2007 को बर्लिन में किया गया था।

28-29 जून 2007 को बर्लिन में भारत-यूरोपीय संघ के बीच एक व्यापक व्यापार और निवेश करार करने पर बातचीत आरंभ

की गई। दूसरे दौर की वार्ता अक्तूबर 2007 के पहले सप्ताह में नई दिल्ली में हुई। तीसरे दौर की बातीचत 6-12 दिसंबर 2007 तक ब्रसेल्स में हुई। 30 नवंबर 2007 को भारत-यूरोपीय संघ वार्ता के दौरान दोनों पर वार्ता के वर्ष 2008 के आरंभ में पूरा करने पर सहमत हुए।

प्रथम यूरोपीय संघ-भारत मंत्रिस्तरीय विज्ञान सम्मेलन का आयोजन फरवरी 2007 में नई दिल्ली में किया गया। इस बैठक में यूरोपीय संघ के सदस्य राज्यों, विज्ञान एवं प्रौद्यागिकी विभागों से भारी संख्या में प्रतिनिधियों और भारत तथा यूरोपीय संघ के महत्वपूर्ण वैज्ञानिकों ने भाग लिया। इसमें सहयोग की महत्वपूर्ण प्राथमिकताओं और भारत-यूरापेय संघ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी सहयोग करार तथा 7वें रूपरेखा कार्यक्रम के अंतर्गत भारत-यूरोपीय संघ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी सहयोग को और गहन बनाने के तरीकों सहित संसाधनों के सहनिवेश के जरिए प्रस्तावों के समन्वित और संयुक्त निष्पादन पर चर्चा की गई। इसके परिणामस्वरूप ''नई दिल्ली विज्ञप्ति'' जारी की गई जिसमें अनुसंधान और विकास के क्षेत्र में भारत-यूरोपीय संघ सहयोग के भविष्य की रूपरेखा दी गई है।

भारत और यूरोपीय संघ के बीज जारी और भावी नीतिगत वार्ता तथा व्यावहारिक सहयोग का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। भारत-यूरोपीय संघ ऊर्जा पैनल और इसके कार्यकारी दलों की तीसरी बैठक 20 जून 2007 को ब्रसेल्स में हुई। इनर्जी पैनल की मीटिंग के पूर्व वर्ष 2007 के पहले उत्तरार्द्ध में चारों कार्यकारी दलों की बैठकें हुई थीं। कोयला से संबद्ध कार्यकारी दल के कार्यों को बढ़ाने का निर्णय लिया गया जिसमें बैठकों में क्रमशः खनन से संबंधित क्रियाकलापों और पूर्व संबंधी प्राद्योगिगियों पर विशेष बल दिया गया। दोनों पक्ष सौर ऊर्जा के क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास परएक नई फ्लैगशिप परियोजना की पहचान करने के लिए तैयार हैं। भारत अंतर्राष्ट्रीय जैव ईंधन मंच का भी सदस्य है जिसकी अब तक दो बैठकें हो चुकी हैं- जुलाई 2007 में बर्लिन में और अक्तूबर 2007 में नई दिल्ली में।

समीक्षाधीन वर्ष के दौरान संयुक्त आयोग कार्य योजना के अंतर्गत परिकल्पित संयुक्त कार्यकारी दलों की अनेक बैठकें हुईं।

■■

8 अमरीका

संयुक्त राज्य अमरीका

जुलाई 2005 में प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह की वाशिंगटन डी सी यात्रा और मार्च 2006 में राष्ट्रपति बुश की नई दिल्ली यात्रा के दौरान घोषित की गयी अनेक पहलों से भारत-संयुक्त राज्य अमरीका के द्विपक्षीय संबंध मजबूत हुए हैं। परिणामतः भारत और संयुक्त राज्य अमरीका के पारस्परिक संबंधों में आज सामरिक और सुरक्षा मुद्दे, रक्षा, आतंकवाद का विरोध, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य, व्यापार, अंतरिक्ष, ऊर्जा, समुद्री सहयोग और पर्यावरण जैसे विषय शामिल हैं। विभिन्न मुद्दों पर राजनैतिक तथा आधिकारिक स्तरों पर अक्सर होने वाले संपकों और नियमित रूप से होने वाली द्विपक्षीय वार्ता से साझे हित के क्षेत्रों से संबंधित द्विपक्षीय सहयोग में गुणात्मक रूपांतरण हुआ है।

असैनिक नाभिकीय ऊर्जा

पांच दौर की बातचीत के उपरांत 20 जुलाई, 2007 को भारत और संयुक्त राज्य ने जुलाई, 2005 और मार्च 2006 के समझौतों के क्रियान्वयन हेतु द्विपक्षीय सहयोग करार के पाठ पर अपनी सहमति व्यक्त की। 123 करार के माध्यम से हमारे सामरिक नाभिकीय कार्यक्रम और स्वदेशी तीन चरणों वाले नाभिकीय ऊर्जा कार्यक्रम और स्वदेशी नाभिकीय अनुसंधान और विकास की स्वायत्तता के सुरक्षित रखने का मूल उद्देश्य पूरा होता है। इसके माध्यम से 17 अगस्त 2006 को प्रधानमंत्री द्वारा संसद को दिए गए सभी आश्वासन पूरे होते हैं। इसमें नाभिकीय रिएक्टरों और संवर्धन और पुनः संसाधित करने सहित संबद्ध नाभिकीय ईंधन चक्र के पहलुओं को शामिल करते हुए भारत और संयुक्त राज्य के बीच पूर्ण असैनिक नाभिकीय सहयोग का प्रावधान है।

इस करार में स्पष्ट रूप से यह प्रावधान है कि यह किसी भी पक्षकार की असुरक्षित सुविधाओं को प्रभावित नहीं करेगा और इसका कार्यान्वयन इस प्रकार किया जाएगा ताकि यह हमारे द्वारा इस करार से स्वतंत्र उत्पादित, हासिल की गयी अथवा विकसित किसी सैन्य नाभिकीय सुविधा अथवा नाभिकीय सामग्री को बाधित नहीं करेगा अथवा अन्यथा उसमें हस्तक्षेप नहीं करेगा। इसमें संयुक्त राज्य के संसाधित ईंधन से प्राप्त इस्तेमाल किए गए ईंधन को पुनः संसाधित करने की अनुमति है। इस करार में एक वर्ष के भीतर इसके लिए व्यवस्थाओं और प्रक्रियाओं को तय करने का प्रावधान है।

इस करार में भारत के रिएक्टरों के आजीवन आपूर्ति में किसी प्रकार की बाधा न हो इसके लिए नाभिकीय ईंधन के सामरिक आरक्षित भंडार के विकास का प्रावधान है। इसमें 2 मार्च 2006 के आपूर्ति आश्वासन, स्थायी सुरक्षापायों के प्रति इसके संपर्क और उन सुधारात्मक उपायों के प्रावधान को पूर्ण रूप से परिलक्षित किया गया है जो भारत विदेशी ईंधन आपूर्तियों में रूकावट आने पर अपने असैनिक नाभिकीय रिएक्टरों का निर्बाध संचालन सुनिश्चित करने के लिए कर सकता है।

भारत विशिष्ट अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (आईएईए) सुरक्षोपाय करार तय करने के लिए भारत बातचीत कर रहा है। संयुक्त राज्य नाभिकीय आपूर्तिकर्ता समूह (एनएसजी) के दिशा-निर्देशों के समायोजन हेतु एनएसजी के साथ मिलकर कार्य करेगा ताकि उसके सदस्य भारत के साथ असैनिक नाभिकीय सहयोग और व्यापार कर सकें।

आतंकवाद का विरोध

आतंकवाद के विरोध पर भारत-संयुक्त राज्य संयुक्त कार्यदल की नौवीं बैठक आतंकवाद का सामना करने में द्विपक्षीय सहयोग पर चर्चा करने हेतु 29-30 नवंबर 2007 तक वाशिंगटन में आयोजित हुई।

रक्षा

रक्षा सहयोग हेतु शीर्ष संस्थागत वार्ता तंत्र भारत संयुक्त राज्य रक्षा नीति दल के तहत संयुक्त प्रौद्योगिकी दल (जेटीजी) की नौवीं बैठक 10 अप्रैल 2007 को वाशिंगटन में हुई, रक्षा खरीद और उत्पादन दल (डीपीपीजी) की चौथी बैठक 30-31 मई 2007 को हवाई में हुई, वरिष्ठ प्रौद्योगिकी सुरक्षा दल की चौथी बैठक 26 नवंबर 2007 को नई दिल्ली में हुई और सैन्य सहयोग दल (एमसीजी) की आठवीं बैठक 11-13 दिसंबर, 2007 को हवाई में हुई। भारत-संयुक्त राज्य रक्षा संयुक्त कार्य दल (डीजेडब्ल्यूजी) की दौ बैठकें आयोजित हुईं- पहली अप्रैल 2007 में नई दिल्ली में और दूसरी नवंबर 2007 में वाशिंगटन में। भारत द्वारा संयुक्त राज्य से पहली बार पानी का जहाज लिए जाने के मामले में यूएसएस ट्रेंटन 17 जनवरी 2007 को भारतीय नौसेना को सौंपा गया। उसे आईएनएस जलश्वा के तौर पर तैनात किया गया है। दोनों देशों के रक्षा बलों ने द्विपक्षीय अभ्यास किए

और बहुपक्षीय अभ्यासों में भाग लिया। संयुक्त राज्य की कंपनियों ने 9-13 फरवरी, 2007 तक बंगलौर में आयोजित एयरो एंडिया शो में भाग लिया। भारत-संयुक्त राज्य संयुक्त सैन्य अभ्यास 8-26 सितंबर 2007 तक अलास्का में किए गए।

अंतरिक्ष

असैनिक अंतरिक्ष सहयोग पर भारत-संयुक्त राज्य संयुक्त कार्यदल की दूसरी बैठक फरवरी, 2007 में वाशिंगटन डी सी में हुई। अंतरिक्ष विज्ञान, पृथ्वी संबंधी प्रेक्षण तथा पृथ्वी विज्ञान, आंकड़ा नीति, लैंड सेट डेटा कांटीन्यूटी मिशन, निर्यात नियंत्रण इत्यादि जैसे व्यापक विषयों पर गहन चर्चा हुई। संयुक्त कार्यदल ने जीपीएस के प्रयोग और अंतरिक्ष आधारित अवस्थिति, नौवहन और समय-निर्धारण प्रणाली तथा अनुप्रयोग में संयुक्त राज्य-भारत सहयोग पर एक संयुक्त वक्तव्य को स्वीकार किया।

व्यापार और अर्थव्यवस्था

संयुक्त राज्य अमरीका भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार और अग्रणी विदेशी निवेशक बना हुआ है। 2006 के दौरान माल और वस्तुओं पर कुल द्विपक्षीय व्यापार 2005 में 26.76 बिलियन अमरीकी डालर की तुलना में 31.91 बिलियन अमरीकी डालर रहा जिसमें 17% की वृद्धि हुई है। 2007 के पहले 9 महीनों के दौरान माल और वस्तुओं में कुल द्विपक्षीय व्यापार 29.64 बिलियन अमरीकी डालर था। संयुक्त राज्य भारत में विदेशी प्रत्यक्ष निवेशकों में से एक सबसे बड़ा निवेशक बना हुआ है। अगस्त 1991 से जुलाई 2007 तक संयुक्त राज्य अमरीका से संचयी एफडीआई प्रवाह 6215 मिलियन अमरीकी डालर रहा। संयुक्त राज्य से एफडीआई अंतर्प्रवाह भारत में होने वाले कुल वास्तविक एफडीआई अंतर्प्रवाह का लगभग 12% है। संयुक्त राज्य भारत में अग्रणी पोर्टफोलियो निवेशक है। 2006-07 के दौरान संयुक्त राज्य अमरीका द्वारा किया गया पोर्टफोलियो निवेश 2240 मिलियन अमरीकी डालर था। संयुक्त राज्य विदेश में होने वाले भारतीय निवेश का सर्वाधिक महत्वपूर्ण गंतव्य भी है। 1996 और मार्च 2007 के बीच भारतीय कंपनियों ने मुख्यतः विनिर्माण और गैर वित्तीय सेवाओं में संयुक्त राज्य में 2727 मिलियन अमरीकी डालर का निवेश किया।

संयुक्त राज्य व्यापारिक प्रतिनिधि (यूएसटीआर) के तौर पर भारत में अपनी पहली यात्रा पर सूसन श्वाब ने अप्रैल 2007 में वाणिज्य और उद्योग मंत्री कमलनाथ के साथ भारत-संयुक्त राज्य व्यापार नीति मंच की बैठक में सह अध्यक्षता की। द्विपक्षीय व्यापार के संवर्धन और निवेश बनाए रखने के लिए सामरिक सिफारिशें और अंतर्दृष्टियां प्रदान करने के लिए निजी क्षेत्र सलाहकार समूह (पीएसएजी) के गठन का निर्णय लिया गया था। इस मंच की उद्घाटन बैठक सितंबर 2007 में न्यूयार्क में हुई। भारत और संयुक्त राज्य अमरीका ने संयुक्त राज्य के लघु व्यापार और भारत के लघु और मझोले उद्यमों के बीच सामरिक संपर्क स्थापित करने के लिए पारस्परिक व्यापार और अवसरों के संवर्धन हेतु जनवरी 2007 में एक आशय पत्र पर हस्ताक्षर किए। वाणिज्य और उद्योग मंत्री कमलनाथ ने "ग्लोबल इंडिया सम्मिट" में भाग लेने के लिए जून 2007 में वाशिंगटन डी सी की यात्रा की। संयुक्त राज्य के ट्रेजरी सेक्रेटरी हेनरी पॉलसन जूनियर ने 27-31 अक्तूबर, 2007 तक भारत की यात्रा की। सेक्रेटरी पॉलसन और वित्त मंत्री पी चिदंबरम ने नई दिल्ली में भारत-संयुक्त राज्य वित्तीय और आर्थिक मंच की बैठक में सह अध्यक्षता की। सेक्रेटरी पॉलसन की यात्रा का उद्देश्य भारत में सड़कों, बंदरगाहों, हवाई अड्डों और अन्य अवसंरचनात्मक परियोजनाओं में निवेश करने हेतु संयुक्त राज्य की कंपनियों के लिए अवसरों का पता लगाना था।

रतन टाटा और बिलियन हैरिसन की सह-अध्यक्षता में 24 सितंबर 2007 को न्यूयार्क में भारत-संयुक्त राज्य सीईओ मंच की एक बैठक हुई; इससे पूर्व सरकार से सरकार के साथ आर्थिक वार्ता बैठक हुई।

विदेश सचिव की सह-अध्यक्षता में उच्च प्रौद्योगिकी सहयोग दल (एचटीसीजी) की पांचवीं बैठक फरवरी, 2007 में वाशिंगटन में आयोजित हुई। नैनो टैक्नोलोजी पर एक कार्यदल और चिकित्सा उपकरणों और औषधि संबंधी मसलों पर चर्चा करने हेतु एक उप-दल की स्थापना की गयी।

भारत और संयुक्त राज्य ने भारत-संयुक्त राज्य विमानन सहयोग कार्यक्रम (एसीपी) की स्थापना हेतु जून 2007 में एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए जो कि भारत के नागर विमानन मंत्रालय और यूएस ट्रेड डेवलपमेंट एजेंसी (यूएसटीडीए) और फेडरल एविएशन एजेंसी (एफएए) के बीच एक सार्वजनिक निजी- भागीदारी है। भारत के शहरी विकास मंत्रालय और संयुक्त राज्य के परिवहन विभाग के बीच सार्वजनिक परिवहन के क्षेत्रों में सहयोग के विस्तार हेतु सितंबर 2007 में एक सहयोग समझौते (एमओसी) पर हस्ताक्षर हुए।

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) पर संयुक्त राज्य-भारत संयुक्त कार्यदल (जेडब्ल्यूजी) की तीसरी बैठक जुलाई, 2007 में वाशिंगटन डीसी में हुई।

कृषि पर द्विपक्षीय जानकारी पहल (एकेआई) के तहत सहयोग के चार क्षेत्रों विश्वविद्यालय क्षमता निर्माण, खाद्य प्रसंस्करण एवं वितरण, जैव प्रौद्योगिकी और जल प्रबंधन पर ध्यान केंद्रित करने के लिए कार्य योजना को अंतिम रूप दिया गया है और उसे क्रियान्वित किया जा रहा है। एकेआई के तहत गठित बोर्ड की पांचवीं बैठक फरवरी, 2006 की कार्य योजना के क्रियान्वयन की समीक्षा हेतु जून 2007 में वाशिंगटन डीसी में हुई।

ऊर्जा और पर्यावरण

संयुक्त राज्य के ऊर्जा सचिव बोडमेन ने मार्च 2007 में भारत की यात्रा की। भारत-संयुक्त राज्य ऊर्जा वार्ता के तहत कोयला कार्यदल की बैठक जून 2007 में वाशिंगठन डीसी में हुई। विदेश मंत्री प्रणब मुखर्जी ने अमरीकी राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू बुश द्वारा बुलाई गयी ऊर्जा सुरक्षा और जलवायु परिवर्तन पर प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं की बैठक में प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया जिसका आयोजन 27 सितंबर 2007 को हुआ।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी तथा स्वास्थ्य

इस वर्ष के दौरान भारत-संयुक्त राज्य विज्ञान और प्रौद्योगिकी सहयोग और सुदृढ़ हुआ है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी सहयोग हेतु करार योवा राज्य, परड्यू विश्वविद्यालय और ओहियो राज्य विश्वविद्यालय के साथ संपन्न किए गए हैं। जन शक्ति प्रशिक्षण से नाभिकीय सुरक्षा, रिएक्टर डिजाइन, लाइसेंसिंग और अन्य विनियामक पक्षों संबंधी सहयोग में और वृद्धि हुई है। पहली बार दो युवा भारतीय वैज्ञानिकों को संयुक्त राज्य नाभिकीय विनियामक आयोग में एक वर्ष का प्रशिक्षण प्राप्त हुआ। भारत-संयुक्त राज्य टीकाकरण कार्यक्रम को और 5 वर्ष के लिए बढ़ा दिया गया है। अंतर्राष्ट्रीय नैदानिक जांच मानकों को हासिल करने के लिए संयुक्त राज्य के विश्वविद्यालयों के साथ क्षमता निर्माण हेतु भारत-संयुक्त राज्य सहयोग विकसित किया जा रहा है। भारत और संयुक्त राज्य, भारत में 2 जन-स्वास्थ्य विद्यालयों की स्थापना में सहयोग कर रहे हैं। आयुष विभाग द्वारा नामांकित दो विशेषज्ञों द्वारा अनेक चिकित्सा विद्यालयों में लगातार तीसरे वर्ष के लिए आयुर्वेद पर बुनियादी पाठ्यक्रम का शिक्षण किया जा रहा है। भारत-संयुक्त राज्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंच और अमेरिकन फिजिकल सोसाइटी ने अगले दो वर्षों के दौरान 12 संकाय और 20 छात्रों की यात्रा के सहायतार्थ नया कार्यक्रम आरंभ किया।

कनाडा

कनाडा ने भारत के साथ अपने राजनैतिक और आर्थिक संबंध सुदृढ़ करने की अपनी प्रतिबद्धता को दोहराया है। कनाडा से भारत आने वाले महत्वपूर्ण आगन्तुकों में नागरिकता और उत्प्रवासन मंत्री मॉन्टे सोलबर्ग (9 जनवरी), अवसंरचना प्रतिनिधिमंडल के प्रमुख के तौर पर अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मंत्री के संसदीय सचिव टेड मेंजीज (12-16 मार्च), अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मंत्री डॉ डेविड एमर्सन (18-19 अप्रैल), कनाडा सुरक्षा आसूचना सेवा (सीएसआईएस) के निदेशक जेम्स जुड (5-8 जून), नागरिकता और उत्प्रवासन मंत्री डायन फिनले (2 नवंबर), कनाडा की क्वीन्स प्रिवी काउंसिल के अध्यक्ष और अंतर-सरकारी मामलों के मंत्री और पश्चिमी आर्थिक विविधिकरण मंत्री रोना एम्ब्रोज (5-7 नवंबर) शामिल थे।

भारत से कनाडा आने वाले आगन्तुकों में सुबोधकांत सहाय, राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), खाद्य प्रसंस्करण एवं उद्योग मंत्रालय (16-19 फरवरी), कमल नाथ, वाणिज्य और उद्योग मंत्री (16-17 जून), कांति लाल भूरिया, कृषि राज्य मंत्री (18-23 जून), डॉ आर चिदंबरम, प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार (26-29 जून), व्यालर रवि, प्रवासी भारतीय मामलों के मंत्री (25-28 सितंबर) और जी. के. पिल्लई, वाणिज्य सचिव (19-21 सितंबर) शामिल थे। हरियाणा के मुख्यमंत्री बी. एस. हूडा ने 16-18 अक्तूबर 2007 तक कनाडा की यात्रा की।

सामरिक वार्ता

अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा शाखा के सहायक उपमंत्री और विदेश विभाग तथा अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, कनाडा के राजनैतिक निदेशक कोलीन स्वोर्डस ने सामरिक मुद्दों पर भारत-कनाडा वार्ता के तीसरे दौर के आयोजन हेतु 11-15 नवंबर 2007 तक भारत की यात्रा की।

रक्षा

भारतीय राष्ट्रीय रक्षा कालेज के एक प्रतिनिधिमंडल ने 20-26 मई 2007 तक कनाडा की यात्रा की।

आतंकवाद का विरोध

आतंकवाद के विरोध पर भारत-कनाडा संयुक्त कार्यदल की आठवीं बैठक और भारत-कनाडा सुरक्षा वार्ता 20-22 मार्च 2007 तक ओटावा में हुई। संयुक्त कार्यदल ने क्षेत्रीय और वैश्विक संदर्भों में आतंकवाद के उस खतरे पर चर्चा की जिसका सामना दोनों देशों ने किया और द्विपक्षीय सहयोग को सुदृढ़ करने के लिए अनेक उपायों पर सहमति व्यक्त की।

एयर इंडिया जांच

एयर इंडिया बम कांड पर गठित न्यायमूर्ति जॉन मेजर जांच आयोग ने 2007 के दौरान अपनी सुनवाई जारी रखी। इसकी रिपोर्ट 2008 के आरंभ में मिलने की आशा है।

पर्यावरण

पर्यावरण और वन राज्य मंत्री एन.एन. मीणा ने ओजोन सतह को नष्ट करने वाले पदार्थों पर मॉंट्रियल प्रोतोकोल के पक्षकारों की 19वीं बैठक में भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया जिसका आयोजन सितंबर 2007 में मॉंट्रियल में हुआ। इस सम्मेलन के दौरान पर्यावरण सहयोग के लिए भारत-कनाडा मंच के गठन हेतु एक द्विपक्षीय करार पर हस्ताक्षर हुए। कनाडा के पर्यावरण उपमंत्री माइकेल हॉरगन ने 15 अक्तूबर, 2007 को दिल्ली में आयोजित स्वच्छ विकास और जलवायु पर एशिया-प्रशांत भागीदारी की दूसरी मंत्रिस्तरीय बैठक में भाग लेने के लिए भारत की यात्रा की। कनाडा को भारत के समर्थन से स्वच्छ विकास और जलवायु पर एशिया-प्रशांत भागीदारी के सातवें सदस्य के रूप में शामिल किया गया था।

द्विपक्षीय निवेश संवर्धन और संरक्षण करार (बीआ ईपीए)

भारत कनाडा बीआईपीए हेतु पाठ को अंतिम रूप देने के लिए बातचीत 2007 में संपन्न हुई।

कनाडियाई कंपनियों का अधिग्रहण

मूल रूप से कनाडियन कंपनी नोवेलिस इंक (अब संयुक्त राज्य में पंजीकृत) का अधिग्रहण लगभग 6 बिलियन अमरीकी डालर की लागत पर आदित्य बिड़ला ग्रुप कंपनी हिंडालको इंडस्ट्रीज लिमिटेड द्वारा किया गया। अप्रैल 2007 में एस्सार ग्लोबल लिमिटेड ने अपनी पूर्णतः स्वामित्व वाली सहायक एस्सार स्टील होल्डिंग लिमिटेड "एस्सार" के माध्यम से लगभग 1.85 बिलियन कनाडियाई डॉलर (लगभग 1.7 बिलियन अमरीकी डालर) की लागत पर एल्गोमा स्टील का अधिग्रहण किया।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी

प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार डॉ. आर. चिदंबरम ने 26-29 जून 2007 तक कनाडा की यात्रा की। इस यात्रा की अनुवर्ती कार्रवाई के रूप में वैज्ञानिक सचिव, प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार का कार्यालय, डॉ. एस. के. सिक्का के नेतृत्व में एक 3 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने 24-29 सितंबर 2007 तक कनाडा की यात्रा की तथा विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार और कनाडियन लाइट सोर्स इंक, सस्कैचीवान विश्वविद्यालय, कनाडा के बीच सिन्क्रोट्रॉन विज्ञान के क्षेत्र में भारत-कनाडा द्विपक्षीय वैज्ञानिक सहयोग हेतु आशयपत्र पर हस्ताक्षर किए।

जैव प्रौद्योगिकी

पांच अधिकारियों के एक प्रतिनिधिमंडल और नौ जैव प्रौद्योगिकी कंपनियों ने सितंबर 2007 में कनाडा की यात्रा की। इस यात्रा के दौरान पादप जैव प्रौद्योगिकी के निर्धारित क्षेत्र में अनुसंधान हेतु संयुक्त निधि स्थापित करने के लिए जैव प्रौद्योगिकी विभाग और राष्ट्रीय अनुसंधान परिषद-प्लांट बायो-टैक्नोलॉजी इंस्टीट्यूट, सस्कैटून, कनाडा के बीच एक करार पर हस्ताक्षर हुए।

लैटिन अमरीका और कैरीबियन (एलएसी)

भारत और लैटिन अमरीकी देशों के बीच संबंधों में निरंतर प्रगति हुई। अनेक उच्च स्तरीय आवागमन यात्राओं से इन देशों के साथ जारी संपर्क में गति आई। इन यात्राओं में जून 2007 में ब्राजील के राष्ट्रपति लुई इनैसियो लूला द सिल्वा और सितंबर 2007 में मैक्सिको के राष्ट्रपति फिलिप कॉल्डेरॉन हिनोजोसा की यात्राएं शामिल थीं। क्यूबा, ग्वाटेमाला, अलसल्वाडोर, ब्राजील के विदेश मंत्रियों ने भी भारत की यात्रा की। भारत से इस क्षेत्र में होने वाली यात्राओं में क्यूबा, डॉमिनिकन गणराज्य, ग्वाटेमाला, कोलंबिया और इक्वाडोर में होने वाली यात्राएं शामिल थीं। नए बाजारों तक पहुंचने की हमारी पहलों के अनुरूप एलएसी क्षेत्र में भारतीय व्यापार मिशनों और वाणिज्यिक प्रतिनिधिमंडलों की यात्राओं की व्यवस्था की गयी। प्रमुख भारतीय व्यापार कंपनियों ने अपने संचालन तेल और गैस क्षेत्र में त्रिनिडाड और टोबैगो, मैक्सिको, ब्राजील, कोलंबिया में तथा बोलिविया में लौह अयस्क क्षेत्र में आरंभ किए। इसी प्रकार सूचना प्रौद्योगिकी और फार्मा क्षेत्र की कंपनियां अनेक लैटिन अमरीकी देशों में सक्रिय हुईं। एलएसी देश इन घटनाक्रमों के प्रति अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर रहे हैं और ग्वाटेमाला, कोस्टारिका, निकारागुआ और अलसल्वाडोर द्वारा दिल्ली में नए आवासीय मिशन खोले जा रहे हैं। भारत ने ग्वाटेमाला में एक नया मिशन खोलने की अपनी मंशा की घोषणा की है।

एलएसी क्षेत्र से 26 देशों ने संयुक्त राष्ट्र महासभा के पटल पर भारत के प्रारूप संकल्प को सह-प्रायोजित किया जिसमें 2 अक्तूबर को महात्मा गांधी की जयंती अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के तौर पर मनाए जाने का प्रस्ताव किया गया था।

इस दौरान हुए द्विपक्षीय संपर्क की मुख्य बातें निम्नानुसार हैं

एंटीगुआ और बारबुडा

भारतीय नौसैनिक जलयान आईएनएस तरंगिनी ने अटलांटिक महासागर में अपने नाविक प्रशिक्षण अभियान पर 19-24 अप्रैल 2007 तक एंटीगुआ की यात्रा की। प्रधानमंत्री बाल्डविन स्पेन्सर ने जलयान पर आयोजित स्वागत समारोह में भाग लिया।

बोलिविया

बोलिविया के साथ द्विपक्षीय संबंध सौहार्दपूर्ण बने रहे। जिंदल स्टील और पावर लिमिटेड को बोलिविया में एल म्यूटन लौह अयस्क परियोजना के लिए 2.1 बिलियन अमरीकी डालर का ठेका प्राप्त हुआ। इस परियोजना में 40 वर्ष की अवधि के लिए 20 बिलियन टन लौह अयस्क का दोहन शामिल है। 400 मिलियन डालर का वार्षिक राजस्व जिंदल और बोलिवियन सरकार के बीच 50:50 के अनुपात में बंटेगा। यह लैटिन अमरीका में किसी भारतीय कंपनी द्वारा अब तक हासिल किया गया सबसे बड़ा ठेका है।

ब्राजील

सितंबर 2006 में आरंभ की गयी सामरिक भागीदारी को 2007 के दौरान और अधिक सुदृढ़ किया गया। राष्ट्रपति लूला ने 3-5 जून 2007 तक भारत की आधिकारिक यात्रा की। इस यात्रा के दौरान 7 करारों पर हस्ताक्षर हुए। 4 जून 2007 को नई दिल्ली में हुई लाल किला घोषणा में रक्षा, अंतरिक्ष और तेल क्षेत्रों सहित विभिन्न क्षेत्रों में सबंधों को मजबूत बनाने के लिए द्विपक्षीय समाधान और संयुक्त राष्ट्र तथा विश्व व्यापार संगठन जैसे बहुपक्षीय मंचों में सहयोग जारी रखने की पुनः पुष्टि की गयी। यात्रा के दौरान नई दिल्ली में सीईओ मंच आरंभ किया गया।

राष्ट्रपति लूला को 5 जून 2007 को अंतर्राष्ट्रीय समझबूझ के लिए जवाहर लाल नेहरू पुरस्कार प्रदान किया गया।

तृतीय भारत-ब्राजील संयुक्त आयोग की बैठक 12-14 अप्रैल 2007 को नई दिल्ली में आयोजित हुई। इसकी सह अध्यक्षता ब्राजील के विदेश मंत्री सेल्सो एमोरिन और भारत की ओर से विदेश मंत्री द्वारा की गयी। संयुक्त आयोग की बैठक में 2010 तक के लिए 10 बिलियन अमरीकी डालर का द्विपक्षीय व्यापार लक्ष्य निर्धारित किया गया।

चिली

विदेश कार्यालय परामर्श 5 अप्रैल 2007 को नई दिल्ली में आयोजित हुए। मार्च 2006 में हस्ताक्षरित भारत और चिली के बीच अधिमानी व्यापार करार (पीटीए) 16 अगस्त 2007 को चिली के राष्ट्रपति द्वारा अनुसमर्थित किए जाने के उपरांत प्रभावी हुआ। इस करार के तहत भारत चिली की 178 मदों को अधिमानी ड्यूटी प्रदान करेगा और चिली 296 भारतीय मदों को अधिमानी ड्यूटी प्रदान करेगा। औसत ड्यूटी छूट 20% है। चिली पहला लैटिन अमरीकी देश है जिसके साथ भारत ने पीटीए पर हस्ताक्षर किए हैं। भारत और चिली के बीच 29-30 अगस्त 2007 को नई दिल्ली में वायुसेवा करार पर हस्ताक्षर हुए।

कोलंबिया

विदेश राज्य मंत्री आनंद शर्मा ने 19-21 जून 2007 तक कोलंबिया की यात्रा की। पर्यटन और संस्कृति मंत्री अंबिका सोनी ने संयुक्त राष्ट्र विश्व व्यापार संगठन के 17वीं आम सभा में भाग लेने के लिए 25-29 नवंबर 2007 तक कार्टाजीना, कोलंबिया की यात्रा की। भारत एशिया से ईरान के साथ यूएनडब्ल्यूटीओ की कार्यकारी परिषद में चुना गया था और इसके पश्चात उसे सर्वसम्मत से 2008-09 की अवधि के लिए परिषद का अध्यक्ष चुना गया। शहरी विकास मंत्री जयपाल रेड्डी ने 27-31 मई 2007 तक कोलंबिया में मैट्रो बस प्रणाली के अध्ययन हेतु उस देश की यात्रा की। इस यात्रा के दौरान परिवहन प्रणाली में सहयोग के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर हुए। कोलंबिया के रक्षा मंत्री ने 25-28 नवंबर 2007 तक भारत की यात्रा की और भारत के रक्षा मंत्री, विदेश मंत्री और गृह मंत्री से मुलाकात की। संजय किर्लोस्कर के नेतृत्व में भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) से एक आठ सदस्यीय व्यापारिक प्रतिनिधिमंडल ने 22 अगस्त 2007 को बोगोटा में और 24 अगस्त 2007 को मेडेलिन में भारत और कोलंबियाई व्यापारियों के बीच संयुक्त व्यापार मंचों में भाग लेने के लिए 21-23 अगस्त 2007 तक कोलंबिया की यात्रा की।

कोस्टारिका

14 जून 2007 को कोस्टारिका की सरकार ने एक राजपत्रित अधिसूचना जारी की जिसमें कोंसली मसलों पर देशों की ग्रुप 3 की सूची में भारत को शामिल करने की घोषणा की गयी जिसके अनुसार अब भारतीय राष्ट्रिकों को कोस्टारिका में 30 दिन तक ठहरने के लिए कोस्टारिका के वीजा हेतु आवेदन की आवश्यकता नहीं है यदि उनके पास संयुक्त राज्य अथवा यूरोपीय संघ का वैध वीजा हो अथवा वे वहां के निवासी हों।

क्यूबा

लगातार हुए क्रियाकलापों और दोनों पक्षों की ओर से हुई उच्च स्तरीय यात्राओं के परिणामस्वरूप 2007 में क्यूबा के साथ भारत के संबंधों में नई गति आई। संयुक्त आयोग की छठी बैठक फरवरी, 2007 में हवाना में आयोजित हुई। क्यूबा के विदेश मंत्री फिलिप पेरेज रोक ने 11-12 अप्रैल 2007 को भारत की यात्रा की। नवीन और अक्षय ऊर्जा के केंद्रीय मंत्री विलास मुट्टेमवार ने 22-25 मई 2007 तक क्यूबा की यात्रा की। इस यात्रा के दौरान नवीन और अक्षय ऊर्जा क्षेत्र में सहयोग जारी रखने के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर हुए। 25-30 अक्तूबर, 2007 तक हवाना में द्वितीय भारतीय फिल्मोत्सव का आयोजन हुआ।

डॉमिनिकन गणराज्य

विदेश राज्य मंत्री आनंद शर्मा की फरवरी, 2007 में हुई डॉमिनिकन गणराज्य की यात्रा से भारत और डॉमिनिकन गणराज्य के बीच संबंध सुदृढ़ हुए।

इक्वाडोर

विदेश राज्य मंत्री आनंद शर्मा की 21-23 जून 2007 तक हुई इक्वाडोर की यात्रा से भारत-इक्वाडोर संबंधों में गति आई। मंत्री ने इक्वाडोर को भारत द्वारा सामान्य औषधियों के दान की घोषणा की।

गुयाना

भारत ने इस अवधि के दौरान गुयाना को ऋण पत्र संबंधी सहायता प्रदान की। भारत सरकार ने जॉर्ज टाउन और उसके आस-पास 50 चौराहों पर अत्याधुनिक यातायात लाइट तंत्र हेतु 2.1 मिलियन अमरीकी डालर की वित्तीय सहायता प्रदान की जिसे औपचारिक रूप से 21 जुलाई, 2007 को प्रधानमंत्री सैमुअल हिंड्स ने शुरू किया। वित्त सचिव डॉ. डी. सुब्बाराव के नेतृत्व में एक 2 सदस्यीय भारतीय प्रतिनिधिमंडल ने 15-17 अक्तूबर, 2007 तक जॉर्जटाउन में आयोजित वित्त मंत्रियों की राष्ट्रमंडल बैठक में भाग लिया। एक 10 सदस्यीय भोजपुरी संगीत और नृत्य मंडली ने भारतीय आगमन दिवस के महीने भर चलने वाले 169वें वर्षगांठ समारोह में भाग लेने के लिए 9-18 मई 2007 तक गुयाना की यात्रा की।

प्रधानमंत्री, डा. मनमोहन सिंह 4 जून 2007 को नई दिल्ली में
ब्राजील के राष्ट्रपति, लूइज इनासियो लूला दा सिल्वा के साथ मुलाकात करते हुए।

मैक्सिको के राष्ट्रपति, फेलिप काल्डेरान हिनोजोसा 10 सितंबर 2007 को नई दिल्ली में एक स्वागत समारोह में
राष्ट्रपति, प्रतिभा देवीसिंह पाटील और प्रधानमंत्री, डा. मनमोहन सिंह के साथ।

मैक्सिको

2007 के दौरान भारत-मैक्सिको संबंधों की मुख्य बात 10-11 सितंबर 2007 को भारत में मैक्सिको के राष्ट्रपति फिलिप डी. जीसस काल्डेरोन हिनोजोसा की राजकीय यात्रा थी। यह यात्रा 22 वर्ष के उपरांत हुई। यह मैक्सिको के नये राष्ट्रपति के रूप में काल्डेरोन की प्रथम एशिया यात्रा थी और भारत को इस क्षेत्र के पहले गंतव्य स्थान के रूप में चुना गया था। भारत-मैक्सिको संबंधों का उन्नयन "विशेषाधिकार प्राप्त भागीदारी" के तौर पर किया गया। दोहरे कराधान से बचाव, पारस्परिक विधिक सहायता और प्रत्यर्पण संधि संबंधी तीन करारों पर हस्ताक्षर हुए। दोनों पक्षों ने इस बात पर ध्यान देते हुए कि उनके बीच आर्थिक सहयोग उनके संबंधों की सुदृढ़ता के अनुरूप नहीं है, 2010 तक अपने द्विपक्षीय व्यापार को बढ़ाकर 5 बिलियन अमरीकी डालर करने की सहमति व्यक्त की।

पेरू

द्विपक्षीय संबंध निरंतर बढ़ते रहे। पेरू ने हाइड्रोकार्बन क्षेत्र में निवेश हेतु भारतीय कंपनियों द्वारा की गयी पहलों का स्वागत किया। भारत सरकार ने 15 अगस्त को पेरू के दक्षिणी भाग को प्रभावित करने वाले भूकंप द्वारा मचाई गयी तबाही को दृष्टिगत रखते हुए मानवीय सहायता के तौर पर 5,00,000 अमरीकी डालर का नकद दान किया। सीआईआई और सीएचईएमईएक्ससीआईएल के व्यापार प्रतिनिधिमंडलों ने इस अवधि के दौरान पेरू की यात्रा की।

सूरीनाम

प्रवासी भारतीय मामलों के मंत्री वयालर रवि ने भारतीय आगमन दिवस के 134वें वर्षगांठ समारोह में भाग लेने के लिए 2-5 जून 2007 तक सूरीनाम की यात्रा की। इस वर्ष के दौरान सूरीनाम से रक्षामंत्री और गृहमंत्री ने भारत की यात्रा की।

त्रिनिडाड एवं टोबैगो

प्रवासी भारतीय मामलों के मंत्री वयालर रवि ने भारतीय आगमन दिवस के 162वें वर्षगांठ समारोह में भाग लेने के लिए 29 मई से 1 जून 2007 तक त्रिनिडाड एवं टोबैगो की यात्रा की। बैंक ऑफ बड़ौदा ने 17 अक्तूबर, 2007 को पोर्ट-ऑफ-स्पेन में अपनी शाखा खोली।

भारत- मध्य अमरीका

विदेश मंत्री प्रणब मुखर्जी ने संयुक्त राष्ट्र महासभा के साथ-साथ न्यूयार्क में मध्य अमरीका एकीकृत तंत्र (एसआईसीए) के विदेश मंत्रियों से मुलाकात की। एसआईसीए के विदेश मंत्रियों ने अगली भारत-एसआईसीए बैठक के लिए 2008 में भारत की यात्रा हेतु विदेश मंत्री के आमंत्रण को स्वीकार किया। जबकि अलसल्वाडोर और कोस्टारिका, निकारागुआ ने 2008 में नई दिल्ली में राजदूतावास खोलने की घोषणा की, दूसरी ओर होन्डुरास ने एक मानद कोंसलावास खोलने की अपनी योजना की घोषणा की। होन्डुरास, निकारागुआ और अलसल्वाडोर में भारतीय सहायता से तीन सूचना प्रौद्योगिकी केंद्रों की स्थापना करने पर सहमति व्यक्त की गयी है। द्विपक्षीय परामर्शों के उपरांत अलसल्वाडोर, होंडुरास और निकारागुआ ने भारतीय राष्ट्रिकों के लिए अपनी वीजा व्यवस्थाओं में छूट दी है।

■■

संयुक्त राष्ट्र संघ एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगठन 9

संयुक्त राष्ट्र तंत्र के मध्य भारत ने एक महत्वपूर्ण और प्रभावी भूमिका निभाना जारी रखा। वर्ष 2007 में भारत की पसंद का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र संगठन के सुधार को क्रियान्वित करना रहा। इसमें निम्नलिखित शामिल है- सुरक्षा परिषद में सुधार, महासभा को पुनः सक्रिय करना, आर्थिक एवं सामाजिक परिषद (इकोसोक) में सुधार और अन्तर्राष्ट्रीय विकास से जुड़े मुद्दों के संबंध में संयुक्त राष्ट्र संघ की निर्णायक भूमिका की वापसी, अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद पर व्यापक अभिसमय को लागू और अंगीकार करने के प्रयास, वैश्विक आतंकवादरोधी रणनीति को क्रियान्वित करना, पश्च-संघर्ष शांति निर्माण प्रक्रियाओं का बेहतर प्रबंधन, आपदा प्रबंधन के लिए प्रभावकारी आपात राहत का प्रावधान और अन्तर्राष्ट्रीय मानवाधिकार के मुद्दों का समान प्रबंध करना। संगठन के अन्दर सुधार में संयुक्त राष्ट्र संघ में बेहतर प्रबंधन और बजटीय रीति को लागू करने का प्रयास शामिल है।

एक महत्वपूर्ण घटनाक्रम में भारत ने महात्मा गाँधी के जन्मदिन 2 अक्टूबर को अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रूप में मनाने के प्रस्तावित संकल्प को 15 जून 2007 को संयुक्त राष्ट्र महासभा के 61वें सत्र द्वारा स्वीकार करना था। इस संकल्प को 142 देशों द्वारा सह-प्रायोजित किया गया और जिसके आधार पर पहली बार 62वें सत्र के दौरान 2 अक्टूबर 2007 को एक अनौपचारिक पूर्ण बैठक में अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस मनाया गया।

महासभा का 62वां सत्र

विदेश मंत्री श्री प्रणब मुखर्जी, जिन्होंने 62वें महासभा के आम बहस में 23 सितंबर से 2 अक्टूबर 2007 तक भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया, ने महासभा में अपने संबोधन में निम्नलिखित मुद्दों का उल्लेख कियाः जलवायु परिवर्तन के मुद्दे पर भारत की स्थिति और संयुक्त राष्ट्र के विषयों के अन्दर और आम किन्तु भिन्न-भिन्न उत्तरदायित्वों के सिद्धांत और अपनी-अपनी क्षमताओं के अनुसार इसका हल ढूंढे जाने की आवश्यकता; गरीबी एवं अल्प विकास जो कि वर्तमान दौर की मुख्य चुनौती रही है; अपर्याप्त सरकारी विकास सहायता की समस्या और अन्तर्राष्ट्रीय रूप से सहमत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संरचनाओं का व्यापक सुधार; दोहा में व्यापार वार्ता की शीघ्र एवं समुचित प्रगति के लिए सुस्पष्ट अनिवार्यता सूचक के रूप में विकासशील देशों के लिए विशेष एवं अलग व्यवहार के प्रति अधिक झुकाव के सिद्धांत। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र लोकतंत्र कोष में भारत द्वारा 10 मिलियन अमरीकी डालर देने की वचनबद्धता की भी घोषणा की। संयुक्त राष्ट्र के सुधारों पर विदेश मंत्री ने कहा कि ये सुधार अवश्यम्भावी रूप से अधूरे रह जाएंगे जब तक कि सुरक्षा परिषद का व्यापक सुधार और विस्तार और महासभा में फिर से जीवंत करने का कार्य नहीं किया जाता है। उन्होंने, अन्य बातों के साथ-साथ सदस्यता के स्थायी और अस्थायी दोनों श्रेणियों में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार की आवश्यकता को दोहराया। विदेश मंत्री ने अपनी यात्रा के दौरान सार्क देशों की मंत्री स्तरीय बैठक की मेजबानी की और गुट-निरपेक्ष आंदोलन, एशियाई सहयोग वार्ता, भारत-ब्राजील-दक्षिण अफ्रीका पहल, आउटरीच 5, ब्राजील-रूस-भारत-चीन (बीआरआईसी) और मध्य अमरीकी एकीकरण पहल की मंत्री स्तरीय बैठकों में भाग लिया। इन बैठकों के अलावा विदेश मंत्री ने श्रीलंका के राष्ट्रपति, फिलीस्तीन राष्ट्रीय प्राधिकरण के राष्ट्रपति और मारीशस के प्रधान मंत्री से भेंट की। उन्होनें कई विदेश मंत्रियों या उनके समकक्ष के साथ-साथ 62वें महासभा के अध्यक्ष, संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव, आम सुरक्षा एवं विदेश नीति के लिए यूरोपीय संघ उच्च प्रतिनिधि और नाटो के महासचिव के साथ भी द्विपक्षीय बैठकों में भाग लिया।

भारतीय प्रतिनधिमंडल के गैर-सरकारी सदस्य के रूप में 62वें संयुक्त राष्ट्र महासभा के सत्र में 19 संसद-सदस्यों ने भाग लिया और कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर भारतीय दृष्टिकोण को स्पष्ट किया।

महासभा में राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक मुद्दे

संगठन के कार्यों पर महासचिव की रिपोर्ट, महासभा को जीवंत बनाना, शांतिरक्षण, उत्प्रवासन एवं विकास के मुद्दों, कई संयुक्त राष्ट्र मिशनों के अधिदेश की समीक्षा, शांति निर्माण एवं सामाजिक एवं मानवीय मुद्दों से संबंधित कार्यसूची मदों पर भारत ने संयुक्त राष्ट्र महासभा की पूर्ण बैठक में अपने विचारों को रखा। भारत ने अन्तर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी की वार्षिक रिपोर्ट से संबंधित मुद्दे और मध्य पूर्व, अफगानिस्तान में स्थित, महासागर एवं समुद्री कानून तथा सुरक्षा परिषद का सुधार और विस्तार जैसे राजनीतिक मुद्दों पर अपने विचार रखे।

मध्य पूर्वः भारत, मध्य-पूर्व मुद्दों पर संयुक्त राष्ट्र द्वारा संयुक्त राष्ट्र महासभा में और जहां व्यवहार्य हो, सुरक्षा परिषद में विचार कराने के लिए सक्रिय रहा। वार्ता की प्रक्रिया फिर से शुरू करने

और हिंसा तथा प्रति-हिंसा के चक्र को शीघ्र समाप्त करने की आवश्यकता पर भारत के दृष्टिकोण को बार-बार विभिन्न मंचों में उठाया गया। संयुक्त राष्ट्र महासभा के 62वें सत्र में 30 नवंबर 2007 को विदेश राज्य मंत्री श्री ई. अहमद ने कार्यसूची की मद संख्या 17 और 18, "मध्य पूर्व में स्थिति" और "फिलीस्तीन का प्रश्न" पर एक वक्तव्य दिया। चतुर्थ समिति में मध्य पूर्व से संबंधित मुद्दों पर विचार-विमर्श के दौरान भारतीय प्रतिनिधिमंडल द्वारा भी वक्तव्य दिए गए।

अफगानिस्तानः भारत महासभा और सुरक्षा परिषद दोनों में अफगानिस्तान मुद्दे पर विचार-विमर्श करने में शामिल रहा है। भारत ने 5 नवंबर 2007 को अफगानिस्तान पर वार्षिक महासभा संकल्प पर विचार-विमर्श किया और सुरक्षा परिषद में नियमित चर्चा में भी भाग लिया। संयुक्त राष्ट्र महासभा के 62वें सत्र के आम बहस के दौरान 23 सितंबर 2007 को विदेश मंत्री ने संयुक्त राष्ट्र महासचिव और अफगानिस्तान के राष्ट्रपति हामिद करजई द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित एक उच्च स्तरीय कार्यक्रम में भाग लिया।

आतंकवादः आतंकवाद का सामना भारत के लिए संयुक्त राष्ट्र में प्राथमिकता का एक विषय रहा है। अभी दो प्रक्रियाएँ चल रही हैं:

- भारत द्वारा वर्ष 1996 में ही प्रस्तावित अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद पर एक व्यापक अभिसमय को अंतिम रूप दिया जाना, और
- संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा सितंबर 2006 में अंगीकार की गई वैश्विक आतंकवाद-रोधी रणनीति।

अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद पर एक व्यापक अभिसमय पर करार को कराने के प्रयासों में भारत अग्रणी रहा है। संयुक्त राष्ट्र वैश्विक आतंकवाद-रोधी रणनीति के क्रियान्वयन पर पूर्ण सदस्यों की एक अनौपचारिक बैठक दिसंबर, 2007 में आयोजित की गई ताकि अभी तक प्राप्त हुई उपलब्धियों का जायजा लिया जाए और सितंबर 2008 में होने वाली आतंकवाद-रोधी रणनीति की समीक्षा के पूर्व दस माह में की जाने वाली कार्रवाई निश्चित की जा सके।

संयुक्त राष्ट्र शांतिरक्षण कार्यकलापों में भारत सबसे लम्बी अवधि तक और सबसे अधिक सैन्यबल मुहैया कराने वाला देश रहा है। संयुक्त राष्ट्र के प्रारंभ से किए गए 63 शांतिरक्षण अभियानों में से 43 अभियानों में 100,000 से अधिक भारतीय सैन्यदल, सैन्य पर्यवेक्षक और असैनिक पुलिस अधिकारियों ने भाग लिया है। दिसंबर, 2007 की समाप्ति तक संयुक्त राष्ट्र शांतिरक्षण के 17 चल रहे अभियानों में से 11 में 9357 कार्मिकों (493 पुलिस अधिकारियों सहित) की तैनाती के साथ भारत, संयुक्त राष्ट्र शांतिरक्षण अभियानों में तीसरा सबसे बड़ा सैन्यदल मुहैया कराने वाला देश रहा है। ये सैन्यबल विविध क्षेत्रों में जैसे कि कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य, सूडान, इथोपिया-एरीट्रिया सीमा, लेबनान गोलन हाइट्स और लाइबेरिया जहां भारत ने संयुक्त राष्ट्र की पहली पूर्णतः महिला गठित पुलिस इकाई भेजा है।

सुरक्षा परिषद

भारत ने अफगानिस्तान में स्थिति, जलवायु परिवर्तन एवं सुरक्षा तथा प्राकृतिक संसाधन एवं सुरक्षा जैसी विषयात्मक चर्चा जैसे हित के विशेष मुद्दों पर ही संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की चर्चाओं में भाग लिया।

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद सुधारः 61वें महासभा सत्र के उत्तरार्ध में समतुल्य प्रतिनिधित्व के प्रश्न पर और सुरक्षा परिषद की सदस्यता में वृद्धि एवं अन्य मामलों पर खुले कार्य समूह (ओईडब्ल्यूजी) में अनौपचारिक विचार-विमर्श शुरू हुआ था। आकार, श्रेणी, क्षेत्रीय प्रतिनिधित्व, वीटो और कार्यप्रणाली, और परिषद और महासभा के बीच संबंध, इन पांच बिन्दुओं पर महासभा के अध्यक्ष द्वारा नियुक्त पांच सदस्यों द्वारा कई बैठक फरवरी-मार्च 2007 में आयोजित की गई। इन सदस्यों के द्वारा रिपोर्ट अप्रैल और जून 2007 में प्रस्तुत की गई।

सितम्बर 2007 में संयुक्त राष्ट्र महासभा के 61वें सत्र की समाप्ति पर भारत, ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका और कई अफ्रीकी, कैरिबियाई और प्रशांत द्वीप समूह सहित 27 देशों ने सुरक्षा परिषद सुधार पर एक प्रक्रिया संबंधी संकल्प पटल पर रखा था। हालांकि संकल्प मतदान के लिए नहीं रखा गया था, लेकिन 61वें सत्र की समाप्ति पर अंगीकार की गई ओईडब्ल्यूजी रिपोर्ट में इसने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभायी जिसमें इस पर अन्तर'सरकारी बातचीत के संदर्भ के साथ-साथ एक"ठोस परिणाम " प्राप्त करने के प्रति प्रतिबद्धता व्यक्त की गई थी। इस प्रक्रिया पर नवंबर और दिसंबर, 2007 सहित आगे कार्रवाई की गई जबकि सुरक्षा परिषद सुधार पर क्रमशः संयुक्त राष्ट्र महासभा की पूर्ण बैठक में और इस मुद्दे पर ओईडब्ल्यूजी की बैठक में विचार-विमर्श किया गया। सुरक्षा परिषद सुधार पर संयुक्त राष्ट्र महासभा की पूर्ण बैठक, जो कि 12-14 नवंबर 2007 तक आयोजित की गई, लगभग 90 से अधिक देशों ने वक्तव्य दिया और जिनमें से जबरदस्त बहुमत ने मूलतत्व आधारित, परिणामोन्मुख, अन्तर-सरकारी बातचीत शुरू करने की मांग की।

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद सुधार के मुद्दों पर विचार-विमर्श और बहस में भाग लेने के अलावा भारत ने इस मुद्दे पर जी-4 (ब्राजील, भारत, जर्मनी और जापान) के अन्दर और संयुक्त राष्ट्र संघ के अधिक से अधिक सदस्यों के साथ परामर्श जारी रखा।

संयुक्त राष्ट्र संघ में प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस का अनुपालन

प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस, संयुक्त राष्ट्र संघ में 2 अक्टूबर

2007 को मनाया गया। संयुक्त राष्ट्र महासभा की एक अनौपचारिक पूर्ण बैठक में सांसद और संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन की अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गाँधी ने संबोधित किया और महात्मा गाँधी के इस विचार कि शक्ति सदाचार से आती है न कि बल से और परिणाम तथा उसे प्राप्त करने के साधन को अलग कर नहीं दिखा जा सकता है, को स्मरण करते हुए महात्मा गाँधी के संदेशों की कभी न समाप्त होने वाली तर्क संगतता पर प्रकाश डाला।

विदेश मंत्री की अध्यक्षता में एक गोलमेज विचार-विमर्श 2 अक्टूबर 2007 को संयुक्त राष्ट्र परिसर में आयोजित किया गया जिसमें कई प्रख्यात लोगों, जिनमें प्रो. अमर्त्य सेन, डा. जॉन नैश, रे. जेस्से जैक्शन, डा. जीन शार्प और इला गाँधी शामिल थे, ने भाग लिया। सोनिया गाँधी ने संयुक्त राष्ट्र संघ में महात्मा गाँधी पर एक फोटो प्रदर्शनी का उद्घाटन किया और इस अवसर पर गाँधीजी पर एक फिल्म का भी प्रदर्शन किया गया। संयुक्त राष्ट्र डाक प्रशासन (यूएनपीए) ने अक्टूबर 2007 के दौरान प्रयोग में लाने के लिए एक विशेष अपवर्तित टिकट जारी किया।

आर्थिक मुद्दे

भारत, यह सुनिश्चित करने के लिए कि विकास का लक्ष्य संयुक्त राष्ट्र के केन्द्रबिन्दु में रहे, संयुक्त राष्ट्र महासभा के द्वितीय समिति में सक्रिय भूमिका निभाना जारी रखा। आर्थिक, सामाजिक और संबंधित क्षेत्रों में शिखर बैठकों विशेष रूप से 2005 के विश्व शिखर सम्मेलन और प्रमुख संयुक्त राष्ट्र सम्मेलनों में की गई प्रतिबद्धताओं के क्रियान्वयन पर द्वितीय समिति मुख्यतः केंद्रित थी। अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक एवं वित्तीय प्रणाली के दृष्टिदोष और अन्तर्राष्ट्रीय शासन व्यवस्था में विकास के आयाम पर ज्यादा बल देने की कोशिश में, विशेष रूप से आर्थिक एवं सामाजिक परिषद (इकोसोक) के माध्यम से, समूह 77 के अन्य विकासशील देशों के सहयोग से संयुक्त राष्ट्र में महत्तर भूमिका निभाने के लिए भारत को आगे किया गया है।

आर्थिक एवं सामाजिक परिषद (इकोसोक)

आर्थिक एवं सामाजिक परिषद (इकोसोक) के वर्ष 2007 का सार्थक सत्र जुलाई, 2007 में जिनेवा में आयोजित किया गया। इकोसोक को मजबूत बनाने और उच्चस्तरीय खंड में दो नये घटकों अर्थात वार्षिक मंत्रिस्तरीय समीक्षा (एएमआर) और एक द्विवार्षिक विकास सहयोग फोरम (डीसीएफ) को अधिदेशित करने की वर्ष 2006 के महासभा संकल्प को अंगीकार किए जाने के बाद यह पहला सत्र था।

संयुक्त राष्ट्र के मुख्य सम्मेलनों और आर्थक, सामाजिक और संबंधित क्षेत्रों में हुए शिखर बैठकों के परिणामों को कार्यान्वित करने पर वार्षिक मंत्री स्तरीय समीक्षा में देशों द्वारा स्वेच्छा से राष्ट्रीय प्रस्तुति की व्यवस्था है। समीक्षा के लिए छह देश- घाना, बारबाडोस, कम्बोडिया, केप वर्दे, इथोपिया और बांग्लादेश स्वेच्छापूर्वक सहमत हुए।

सत्र में, द्विवार्षिकी विकास सहयोग फोरम शुरू किया गया जो सहस्त्राब्दि विकास लक्ष्यों सहित अन्तर्राष्ट्रीय रूप से सहमत विकास लक्ष्यों के कार्यान्वयन को बढ़ाने पर पर केंद्रित होगा। पहला द्विवार्षिक फोरम वर्ष 2008 में न्यूयार्क में आयोजित किया जाएगा। इकोसोक ने अल्प विकसित देशों की भूमिका की सूची में से सामोओ के क्रमिक विकास को मंजूरी देने के एक संकल्प को भी अंगीकार किया।

ब्रेटन वुड्स संस्थान, वर्ल्ड ट्रेड ऑर्गनाइजेशन और संयुक्त राष्ट्र व्यापार एवं विकास सम्मेलन (अंकटाड) के साथ इकोसोक की उच्च स्तरीय स्प्रिंग बैठक 16 अप्रैल 2007 को न्यूयार्क में आयोजित हुई। भारत का प्रतिनिधित्व वित्त सचिव ने किया।

एशिया और प्रशांत के लिए संयुक्त राष्ट्र आर्थिक एवं सामाजिक आयोग (यूनेस्कैप)

यूनेस्कैप का 63वां वार्षिक सत्र, अल्माटी, कजाकिस्तान में 17-23 मई 2007 तक आयोजित किया गया। यह सत्र इस्केप की 60वीं वर्षगांठ के साथ मनाया गया। सत्र में भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व उद्योग राज्य मंत्री, डा. अश्वनी कुमार ने किया।

महात्मा गाँधी के 2 अक्टूबर 2007 को जन्मदिन की वर्षगांठ पर प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस मनाने के लिए आयोजित एक विशेष समारोह में बैंकाक के भारतीय दूतावास द्वारा भेंट स्वरूप दी गई महात्मा गाँधी की आवक्ष प्रतिमा का पंचायती राज, युवा कार्य एवं खेलकूद और पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्री, श्री मणिशंकर अय्यर ने यूनेस्कैप परिसर में अनावरण किया।

अपराध निवारण एवं आपराधिक न्याय आयोग (सीसीपीसीजे)

अपराध निवारण एवं आपराधिक न्याय आयोग के 23-27 अप्रैल 2007 तक वियना में आयोजित 16वें सत्र में भारत ने सक्रियता से भाग लिया। आपराधिक न्याय प्रणाली को बेहतर बनाने के उद्देश्य से आपराधिक प्रक्रिया संहिता का पिछले दो वर्षों में भारत सरकार द्वारा किए गए संशोधनों से सत्र को अवगत कराते हुए भारतीय प्रतिनिधिमंडल के नेता ने "अपराध निवारण एवं आपराधिक न्याय में संयुक्त राष्ट्र मानदंडों एवं मानकों का प्रयोग एवं प्रवर्तन" पर पूर्ण बैठक को संबोधित किया।

स्वापक औषधियों पर आयोग (सीएनडी)

सीएनडी का 50वां सत्र 12-16 मार्च तक वियना में आयोजित किया गया। इस सत्र में "पूर्व-संसाधित रसायनों को नियंत्रित करने की नई चुनौतियां" विषयवस्तु पर चर्चा की गई। "चिकित्सकीय एवं वैज्ञानिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रयुक्त स्वापकों की मांग और आपूर्ति के बीच संतुलन की

आवश्यकता" और "गैर-कानूनी औषधि उत्पादन में प्रयुक्त पूर्व-संसाधित रसायनों के स्रोतों की पहचान" पर भारत द्वारा उठाए गए संकल्पों को व्यापक समर्थन मिला और सर्वसम्मति से पारित किया गया।

पर्यावरण एवं सतत विकास के मुद्दे

संयुक्त राष्ट्र प्रणाली के अन्दर सतत विकास के लिए कार्यसूची 21 और जोहान्सबर्ग कार्यान्वयन योजना के कार्यान्वयन की समीक्षा और बढ़ावा देने वाला एक उच्च स्तरीय आयोग, सतत विकास आयोग के कार्य में भारत ने भाग लिया। आयोग का 15वां सत्र 30 अप्रैल-11 मई 2007 तक न्यूयार्क में आयोजित किया गया जबकि इसकी तैयारी के लिए अन्तर-सरकारी बैठक 27 फरवरी-2 मार्च 2007 तक आयोजित हुआ। सतत विकास के लिए ऊर्जा, जलवायु, परिवर्तन, वायु प्रदूषण/वातावरण और औद्योगिक विकास की विषयवस्तु पर सत्र मुख्यतः केन्द्रित था। भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के सचिव डा. प्रदिप्तो घोष ने किया। विचार-विमर्श के पश्चात किसी निष्कर्ष पर सहमति नहीं हो सकी।

भारत ने संयुक्त राष्ट्र वानिकी मंच के 7वें सत्र में भी भाग लिया जो कि 16-27 अप्रैल 2007 को न्यूयार्क में आयोजित किया गया। भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के वानिकी महानिदेशक एवं विशेष सचिव जी.के. प्रसाद ने किया। इस बैठक में सभी प्रकार के वनों पर गैर-कानूनी बाध्यकारी दस्तावेज को अंगीकार किया गया जिसका लक्ष्य वैश्विक क्रियाकलापों के माध्यम से सतत वन प्रबंधन को बढ़ावा देना है।

भारत ने जलवायु परिवर्तन पर ''द फ्यूचर इन आवर हैंड्सः एड्रेसिंग द लीडरशिप चैलेंज ऑफ क्लाइमेट चेंज'' नामक एक अनौपचारिक उच्च-स्तरीय कार्यक्रम में भाग लिया, जिसे संयुक्त राष्ट्र महासभा के 62वें सत्र में सामान्य बहस के दौरान, संयुक्त राष्ट्र महासचिव द्वारा 24 सितम्बर 2007 को आयोजित किया गया था। प्रधानमंत्री के विशेष दूत के रूप में वित्त मंत्री श्री पी. चिदम्बरम ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

भौगोलिक नामों के मानकीकरण पर 21-30 अगस्त 2007 को न्यूयार्क में आयोजित 9वें संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन में भारत ने भाग लिया। भारतीय सर्वेक्षण में उप निदेशक ने भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया;

लैंडलाक्ड विकासशील देशों की विशेष आवश्यकताओं पर अल्माटी कार्य योजना के कार्यान्वयन की होने वाली पंचवर्षीय समीक्षा की तैयारी विषयक दो बैठकों में भारत ने भाग लिया। अपर वोल्टा (जून-2007) और मंगोलिया (अगस्त 2007) में हुई बैठक में क्रमशः पारगमन परिवहन अवसंरचना और अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार एवं व्यापार सुविधा पर बल दिया गया। भारत ने कार्यक्रम को कार्यान्वित करने के लिए और अधिक वित्तीय एवं तकनीकी संसाधन जुटाने की आवश्यकता पर बल दिया)।

विकास के लिए वित्तपोषण पर न्यूयार्क में अक्टूबर 2007 में आयोजित द्विवार्षिक उच्च-स्तरीय बैठक में भारत ने भाग लिया जिसमें विकासशील देशों द्वारा मांटेर्री सहमति के तहत की गई प्रतिबद्धताओं का ज्यादा से ज्यादा कार्यान्वयन करने की आवश्यकता पर बल दिया गया।

वियना जलवायु परिवर्तन सम्मेलन (क्योटो प्रोतोकॉल के तहत एनेक्स-I पक्षकारों के लिए आगे की प्रतिबद्धताओं पर तदर्थ कार्य दल का चौथा सत्र और अभिसमय के कार्यान्वयन में वृद्धि कर जलवायु परिवर्तन का हल ढूंढने के लिए दीर्घकालिक सहयोग कार्यकलाप वार्ता के अन्तर्गत चौथी कार्यशाला) में भारत ने भाग लिया। भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व आर.एच. ख्वाजा, अपर सचिव, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय ने किया।

भारत ने 15 अक्तूबर, 2007 को स्वच्छ विकास एवं जलवायु के लिए एशिया-प्रशांत सहभागिता पर द्वितीय मंत्रिस्तरीय बैठक की मेजबानी की जिसमें आस्ट्रेलिया, कनाडा, चीन, भारत, जापान, कोरिया गणराज्य और अमरीका के मंत्रीगण एवं उच्चस्तरीय प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस सहभागिता ने सरकारी तौर पर एक नए सहभागी के रूप में कनाडा का गर्मजोशी से स्वागत किया। बैठक ने नई दिल्ली विज्ञप्ति जारी की, जो गत दो वर्षों में सहभागिता की उपलब्धियों का सार प्रस्तुत करता है। आठ कार्यबल कार्रवाई योजना और उनके आनुषंगिक 110 परियोजनाओं के अलावा 18 परियोजनाओं और कार्यकलापों की फ्लैगशिप पोर्टफोलियों को मंजूरी दी गई। एशिया-प्रशांत ऊर्जा प्रौद्योगिकी केन्द्र की भी स्वीकृति दी गई।

बाली, इंडोनेशिया में 13-14 दिसंबर, 2007 तक संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन पर फ्रेमवर्क अभिसमय (यूएनएफसीसीसी) के पक्षकारों के आयोजित 13वें सम्मेलन और क्योटो प्रोतोकॉल (सीओपी/एमओपी) के पक्षकारों की आयोजित तीसरी बैठक में भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व श्री कपिल सिब्बल, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी एवं भू-विज्ञान मंत्री ने किया। इस प्रतिनिधि मंडल में मंत्रालय के अधिकारी शामिल थे। सम्मेलन में, दीर्घकालिक सहयोगी कार्यकलापों के माध्यम से यूएनएफसीसीसी की पूर्ण, प्रभावकारी एवं सतत कार्यान्वयन करने में समर्थ होने के लिए एक गहन प्रक्रिया शुरू करने की बाली कार्य योजना पर सहमति हुई। एक तदर्थ कार्यदल कोपेनहेगेन में दिसंबर, 2009 में आयोजित होने वाले यूएनएफसीसीसी की सीओपी-15 तक अपने कार्य पूरा कर लेने के लिए सख्त समय सीमा के साथ स्थापित किया गया। बाली कार्य योजना के अनुकूलन पर संवर्धित क्रियाकलापों का उल्लेख है जो कि प्रौद्योगिकी विकास एवं अंतरण तथा वित्तीय संसाधनों के प्रावधान से संबंधित विकासशील देशों के लिए एक महत्वपूर्ण अनिवार्यता है।

बड़ी अर्थ व्यवस्था वाले देशों की बैठक (एमईएम) के मंच के तहत, विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाशिंगटन डीसी में

आयोजित हुई। इसके उद्घाटन सत्र में विदेश मंत्री श्री प्रणब मुखर्जी ने भारत का प्रतिनिधित्व किया जबकि सरकार के प्रमुख वैज्ञानिक सलाहकार डा. आर. चिदम्बरम ने अधिकारियों के प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया जिसमें मंत्रालय के अधिकारीगण शामिल थे। यूएनएफसीसीसी को जलवायु परिवर्तन पर अन्तर्राष्ट्रीय वार्ता के मंच के रूप में स्वीकार करते हुए यह सहमति हुई कि एमईएम बहुपक्षीय वार्ताओं को मजबूती से सहारा देने के लिए कार्य करेगा।

द्वितीय एमईएम, जो 30-31 जनवरी 2008 को होनोलुलू में संपन्न हुआ, में डा. आर. चिदम्बरम ने भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। इसमें चर्चा, बाली कार्ययोजना के संदर्भ में उन मसलों पर केंद्रित रही जो कि बड़ी अर्थव्यवस्था वाले देशों के नेताओं द्वारा संभावित समाधान किया जा सकता है।

मानवीय मुद्दे

भारत ने संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रदत्त मानवीय सहायता के समन्वय पर संयुक्त राष्ट्र महासभा की चर्चाओं में भाग लिया। समूह-77 देशों की ओर से भारत ने "प्राकृतिक आपदाओं के लिए मानवीय सहायता में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग, राहत से विकास तक" पर वर्ष में रखे जाने वाले एक संकल्प का प्रस्ताव किया। यह संकल्प, प्राकृतिक आपदाओं के बाद राहत से विकास तक संक्रमण की स्थितियों पर ध्यान केंद्रित करने और निरन्तर ध्यान देने की आवश्यकता पर बल देता है। समूह-77 के सदस्य देशों के अलावा कई अन्य देशों ने भी सह-प्रायोजक के रूप में इससे जुड़कर संकल्प का समर्थन किया है।

आपदा जोखिम प्रशमन

सदस्य, राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के नेतृत्व में एक उच्च-स्तरीय प्रतिनिधिमंडल ने 5-7 जून 2007 तक जेनेवा में आयोजित आपदा जोखिम प्रशमन के वैश्विक प्लेटफार्म की पहली बैठक में भाग लिया। वैश्विक प्लेटफार्म की स्थापना आपदा प्रशमन के लिए अन्तर-एजेंसी कार्य दल के उत्तरवर्ती तंत्र के रूप में महासभा द्वारा की गई है।

विकास के लिए संयुक्त राष्ट्र के प्रचालनात्मक कार्यकलाप

संयुक्त राष्ट्र द्वारा विकास के लिए किए जाने वाले कार्यकलापों में भारत सक्रिय रुचि लेता है। पहले की तरह भारत ने कार्यक्रम वाले देश की भूमिका और राष्ट्रीय विकास योजनाओं और प्राथमिकताओं के अनुसार देश द्वारा संचालित प्रोग्रामिंग के सिद्धांत की महत्ता पर बल दिया। संयुक्त राष्ट्र के विकास सहायता कार्यक्रम में शर्त लगाने का विरोध करने के लिए अन्य विकासशील देशों के प्रयासों का भी भारत ने समर्थन किया। संयुक्त राष्ट्र महासभा का 62वाँ सत्र "त्रिवार्षिकी व्यापक नीति समीक्षा" पर महासभा के संकल्प के जरिए सदस्य राज्यों द्वारा संयुक्त राष्ट्र विकास प्रणाली के लिए दिए गए त्रिवार्षिकी दिशानिर्देश पर ध्यान केंद्रित किया। इस संकल्प पर विचार-विमर्श और बातचीत में भारत ने सक्रिय भूमिका निभाई।

सामाजिक एवं मानवाधिकार संबंधी मुद्दे

मानवाधिकार आयोग के स्थान पर मार्च 2006 में संयुक्त राष्ट्र महासभा संकल्प द्वारा स्थापित नई मानवाधिकार परिषद की उत्पत्ति कार्यकलाप एवं रुचि का केन्द्र रहा। परिषद ने अपनी संरचना एवं कार्यप्रणाली से संबंधित महत्वपूर्ण निर्णयों को अंगीकार कर जून में अपने कार्यों का पहला वर्ष पूरा किया जिसे बाद में महासभा द्वारा स्वीकार किया गया। परिषद ने म्यांमा में आपातकालीन मानवाधिकार स्थितियों पर विचार-विमर्श करने के लिए अक्टूबर में एक विशेष सत्र भी बुलाया। मानवाधिकार और मूल्यों के प्रति अपनी पारंपरिक प्रतिबद्धता को ध्यान में रखते हुए भारत, संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार प्रणाली की सुधार और उसे सुदृढ़ करने की प्रक्रिया में भारत ने सक्रियता से भाग लिया।

भारत ने अपंग व्यक्तियों के अधिकार पर संयुक्त राष्ट्र अभिसमय पर 1 अक्टूबर 2007 को अनुसमर्थन किया।

संयुक्त राष्ट्र की गैर-सरकारी संगठनों पर समिति का सत्र पुनः मई 2007 में प्रारंभ हुआ। वर्ष 2007 के दौरान इकोसोक स्थिति के लिए एनजीओ समिति ने 13 भारतीय गैर-सरकारी संगठनों की सिफारिश की है।

उत्प्रवासन

भारत ने उत्प्रवासन एवं विकास पर वैश्विक मंच की प्रथम बैठक ब्रसेल्स में 9-11 जुलाई, 2007 तक आयोजित की गई। इससे विकास पर उत्प्रवासन के सकारात्मक प्रभाव और उत्प्रवासन पर विकास का सकारात्मक प्रभाव को बढ़ाने के लिए अभिकल्पित एक नई वैश्विक प्रक्रिया की शुरूआत हुई।

चुनाव

मई 2007 में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 2007-2010 की तीन वर्षों की अवधि के लिए मानवाधिकार परिषद में सर्वाधिक मत प्राप्त करने वाले भारत का पुनः चयन किया गया।

भारत का, नवंबर 2007 में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी) की शासी निकाय में चयन किया गया।

अप्रैल 2007 में इकोसोक के 16 आनुषांगिक निकायों के चुनावों में भारत का चुनाव (1) चार वर्षों के कार्यकाल के लिए महिलाओं की स्थिति पर आयोग; (2) 3 वर्षों के कार्यकाल के लिए एचआईवी/एड्स (यूएन एड्स) पर संयुक्त राष्ट्र संयुक्त कार्यक्रम के कार्यक्रम समन्वय बोर्ड; और (3) 4 वर्षों के कार्यकाल के लिए संयुक्त राष्ट्र ह्यूमन सेटलमेंट प्रोग्राम (यूएन-हैबीटेट) के शासी परिषद में किया गया।

डा. एस. राजन का चुनाव संयुक्त राष्ट्र समुद्री कानून अभिसमय के पक्षकार राज्यों की जून 2007 में हुई 17वीं बैठक के दौरान

हुए चुनावों में कमीशन ऑन दी लिमिट्स ऑफ दी कांटिनेंटल शेल्फ में किया गया।

डा. अर्जुन सेन गुप्ता का चुनाव 17 सितंबर 2007 को विकास के अधिकारों पर मानवाधिकार परिषद के अन्तर-सरकारी कार्य दल के अध्यक्ष के रूप में किया गया।

वी.एन.कौल, भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक का चुनाव नवंबर 2007 में संयुक्त राष्ट्र की स्वतंत्र लेखा-परीक्षा परामर्शदात्री समिति में किया गया।

संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी मिशन में प्रथम सचिव नागेश सिंह का चुनाव संयुक्त राष्ट्र प्रशासनिक एवं बजटीय प्रश्नों पर परामर्शदात्री समिति में नवंबर 2007 में किया गया।

संयुक्त राष्ट्र औद्योगिक विकास संगठन (यूनिडो)

भारत ने संयुक्त राष्ट्र औद्योगिक विकास संगठन (युनीडो) की वियना में 2-4 मई 2007 को आयोजित युनीडो के कार्यक्रम एवं बजट समिति के 23वें सत्र और 25-27 जून 2007 को आयोजित इसके औद्योगिक विकास बोर्ड के 33वें सत्र में भाग लिया।

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री, श्री कमलनाथ 3-7 दिसंबर, 2007 तक आयोजित युनीडो महा सम्मेलन के 12वें सत्र में औद्योगिक विकास मंच के प्रमुख वक्ता थे। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री ने युनीडो महासभा को संबोधित भी किया।

संयुक्त राष्ट्र मानव अधिवास कार्यक्रम

आवास एवं शहरी गरीबी उन्मूलन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) कुमारी शैलजा ने 16-20 अप्रैल 2007 को नैरोबी में आयोजित यूएन-हैबीटेट के शासी परिषद की 21वीं बैठक में भाग लेने के लिए एक प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। वह सर्वसम्मति से यूएन-हैबीटेट के 21वीं शासी परिषद की अध्यक्षा निर्वाचित हुई।

मध्य प्रदेश के मुख्य मंत्री शिवराजसिंह चौहान ने ''जल आपूर्ति एवं सेनिटेशन में गरीब समर्थक शासन'' पर यूएन-हैबीटेट शासी परिषद की बैठक के दौरान आयोजित एक समानान्तर कार्यक्रम में भाग लेने के लिए 17-18 अप्रैल 2007 तक एक प्रतिनिधिमंडल के साथ नैरोबी की यात्रा की।

निरस्त्रीकरण एवं अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा मामले

सामूहिक विनाश के सभी हथियारों विशेष रूप से नाभिकीय हथियारों का वैश्विक, भेदभावरहित और प्रमाणनीय उन्मूलन के प्रति भारत की वचनबद्धता की झलक इसके नीतिगत उद्घोषणाओं और राजनयिक पहलकदमियों में मिलती रही। विभिन्न बहुपक्षीय एवं क्षेत्रीय मंचों पर निरस्त्रीकरण एवं अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा से संबंधित मुद्दों पर भारत का दृष्टिकोण, भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा हितों और इन चुनौतियों का सामना करने के लिए सहयोगात्मक प्रयासों को बढ़ावा देने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय के साथ मिलकर कार्य करने की उसकी परंपरा पर आधारित है।

क्षेत्रीय स्तरों पर भारत ने आसियान क्षेत्रीय मंच (एआरएफ) और एशिया में आपसी क्रियाकलाप और विश्वासोत्पादक उपायों से संबंधित सम्मेलन (सीका) में भाग लिया।

निरस्त्रीकरण मामले पर भारत के दृष्टिकोण का प्रसार करने के उद्देश्य से निरस्त्रीकरण के क्षेत्र में सक्रिय प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय एवं गैर सरकारी संगठनों के साथ नियमित संपर्क बनाए रखे।

संयुक्त राष्ट्र महासभा (यूएनजीए)

विदेश मंत्री तथा भारतीय प्रतिनिधिमंडल के नेता श्री प्रणब मुखर्जी ने संयुक्त राष्ट्र महासभा में वर्ष 2007 के अपने संबोधन में भारत की, विश्वव्यापी भेदभाव रहित और व्यापक नाभिकीय निरस्त्रीकरण के प्रति लंबे समय से चली आ रही प्रतिबद्धता को दोहराया और साथ ही आतंकवाद और सामूहिक विनाश के हथियारों के प्रसार के बीच संबंध द्वारा उत्पन्न वास्तविक खतरों का सामना करने के प्रयासों को सघन करने का अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय से आह्वान किया।

भारत ने संयुक्त राष्ट्र महासभा की पहली समिति के 62वें सत्र, जो कि निरस्त्रीकरण तथा अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों से संबंधित है, में सक्रिय भूमिका निभाना जारी रखा। आम बहस के दौरान भारतीय प्रतिनिधि ने इस बात पर बल देते हुए कि नाभिकीय निरस्त्रीकरण के कार्य में आगे बढ़ने की उन देशों की विशेष जिम्मेदारी है जिनके शस्त्रागार सबसे बड़े हैं, नाभिकीय हथियार मुक्त विश्व के प्रति भारतीय प्रतिबद्धता को दोहराया।

अराजक तत्वों द्वारा सामूहिक विनाश के हथियारों को प्राप्त करने और इनका दुरुपयोग करने की संभावना से उत्पन्न गंभीर वैश्विक खतरों के संबंध में बढ़ती अंतर्राष्ट्रीय चिन्ताओं को स्वीकार करते हुए "आतंकवादियों को सामूहिक विनाश के हथियारों को प्राप्त करने से रोकने के उपाय" पर भारत के प्रस्ताव को सर्वसम्मति से पारित किया गया जैसा कि पिछले पांच सत्रों के दौरान हुआ था।

भारत ने "नाभिकीय हथियारों के प्रयोग पर रोक से संबद्ध अभिसमय" को पुनः पेश किया जिसे कि वर्ष 1982 से प्रति वर्ष पारित किया जा रहा है। इस प्रस्ताव में निरस्त्रीकरण सम्मेलन से एक ऐसे अन्तर्राष्ट्रीय अभिसमय के संबंध में बातचीत शुरू करने का आह्वान किया गया है जो नाभिकीय हथियारों की प्रमुखता को कम करने की दिशा में पहले कदम के रूप में किसी भी स्थिति में नाभिकीय हथियारों की के प्रयोग और प्रयोग की धमकी पर रोक लगा पाएगा। 1998 में भारत द्वारा पहली बार प्रस्तुत प्रस्ताव "नाभिकीय खतरों में कमी" को भी पुनः पटल पर रखा गया जिसमें नाभिकीय सिद्धांतों की समीक्षा करने और नाभिकीय हथियारों के अनचाहे और अचानक उपयोग के जोखिम को कम करने हेतु तत्काल कदम उठाने का आह्वान किया गया

है। पूर्व वर्षों की भांति दोनों प्रस्ताव बहुसंख्यक मतों से पारित किया गया।

निरस्त्रीकरण पर सम्मेलन

निरस्त्रीकरण सम्मेलन (सीडी) की बैठक में 22 जनवरी-30 मार्च 2007, 14 मई-29 जून 2007 और 30 जुलाई-14 सितम्बर 2007 तक जेनेवा में आयोजित हुई। नाभिकीय हथियारों अथवा अन्य नाभिकीय विस्फोटक यंत्रों के लिए विखंडन सामग्री के उत्पादन का निषेध करने वाली भेदभाव रहित बहुपक्षीय संधि पर बातचीत करने और निरस्त्रीकरण सम्मेलन की कार्यसूची के तीन अन्य महत्वपूर्ण मुद्दे अर्थात नाभिकीय निरस्त्रीकरण, अन्तरिक्ष में शस्त्रों की होड़ को रोकने और बिना नाभिकीय हथियार वाले राज्यों के लिए नकारात्मक सुरक्षा आश्वासन पर पर्याप्त विचार-विमर्श करने का प्रस्ताव वर्ष 2007 सत्र के 6 अध्यक्षों (पी-6) ने सम्मेलन में प्रस्तुत किया। विचार-विमर्श के दौरान भारत ने निरस्त्रीकरण सम्मेलन के लिए एक ऐसी कार्ययोजना बनाने में मदद करने के लिए रचनात्मक दृष्टिकोण अपनाया जिसमें इसके सभी सदस्य राज्यों के हित और प्राथमिकताएं प्रदर्शित होती है।

अन्तर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (आईएईए)

आईएईए के शासी बोर्ड की नियमित एवं विशेष बैठकों के माध्यम से और साथ ही सितम्बर 2007 में आईएईए के 51वें वार्षिक सम्मेलन में भाग लेकर भारत आईएईए के विचार-विमर्शों में सक्रिय भाग लिया। वर्ष 2007 और 2008 के लिए एजेंसी के बजट पर लंबे समय तक चली बातचीत के दौरान भारत ने इस संकल्पना का समर्थन किया कि एजेंसी के संसाधनों में वृद्धि की जाए। आईएईए के 51वें वार्षिक आम सम्मेलन में पारित नाभिकीय शक्ति, नाभिकीय सुरक्षा, सुरक्षोपाय, तकनीकी सहयोग इत्यादि पर महत्वपूर्ण प्रस्तावों को तैयार करने में भारत ने सहयोग किया। भारत ने नाभिकीय शक्ति के विकास से संबंधित कार्यकलाप और शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए इसके उपयोग के साथ-साथ सुरक्षा एवं संरक्षा का भी समर्थन किया। भावी प्रौद्योगिकी के संदर्भ में भारत ने, अभिनव नाभिकीय रिएक्टर एवं ईंधन चक्र (इन्प्रो), लघु एवं मध्यम रिएक्टरों और उनका नाभिकीय प्रमुखता को कम करने और हाइड्रोजन उत्पादन में अनुप्रयोग, शोध संबंधी विलयन और थोरियम चक्र पर अन्तर्राष्ट्रीय परियोजना को प्रोत्साहित किया। भारत ने आईएईए की सार्थकता वाले विभिन्न क्षेत्रों में उसके सदस्य राज्यों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना जारी रखा।

भारत ने निम्नलिखित करारों का अनुसमर्थन किया और आईएईए के महानिदेशक को मार्च 2007 में अनुसमर्थन के दस्तावेज सौंपेः (1) आईटीईआर परियोजना के संयुक्त कार्यान्वयन के लिए इंटरनेशनल थर्मोन्यूक्लियर एक्सपेरिमेंटल रिएक्टर इंटरनेशनल फ्यूजन एनर्जी ऑर्गनाइजेशन स्थापित करने पर करार, और (2) आईटीईआर परियोजना के संयुक्त कार्यान्वयन के लिए आईटीईआर इंटरनेशनल फ्यूजन एनर्जी आर्गनाइजेशन की सुविधा एवं उन्मुक्ति पर करार/ भारत ने नाभिकीय सामग्री की भौतिक सुरक्षा पर अभिसमय में संशोधन का भी अनुसमर्थन किया; अनुसमर्थन के दस्तावेज 19 सितम्बर 2007 को महानिदेशक, अन्तर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी को प्रस्तुत किए गए।

अध्यक्ष, परमाणु ऊर्जा आयोग और सचिव, परमाणु ऊर्जा विभाग ने 17-21 सितम्बर 2007 तक आईएईए के 51वें आम सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। भारत के पहल पर अभी तक का पहला, लघु एवं मध्यम रिएक्टरों पर प्रस्ताव आम सम्मेलन में पारित किया गया। इस आम सम्मेलन के दौरान भारत, आईएईए और वियतनाम के बीच एक त्रिपक्षीय समझौता ज्ञापन को अंतिम रूप दिया गया जिसमें भारत द्वारा वियतनाम को भाबाट्रोन-II (कैंसर के उपचार के लिए स्वदेशी कोबाल्ट-60 टेलीथेरेपी यूनिट) दानस्वरूप देने का प्रावधान है।

आईएईए के महानिदेशक डा. मोहम्मद एल-बारादेइ ने 8-12 अक्टूबर 2007 तक भारत की यात्रा की और अन्य बातें के साथ-साथ उन्हें भारत के आर्थिक विकास में ऊर्जा की बढ़ रही मांगों से और साथ ही उस संदर्भ में भारत के ऊर्जा मिश्र में नाभिकीय शक्ति के अंशदान को बढ़ाने की भारत की योजना से उन्हें अवगत कराया।

रासायनिक हथियार अभिसमय (सीडब्ल्यूसी)

वर्ष के दौरान भारत ने दी हेग में रासायनिक हथियारों पर निषेध (ओपीसीडब्ल्यू) के लिए संगठन में सक्रिय भूमिका निभाना जारी रखा। भारत अपनी प्रतिबद्धताओं के अनुरूप अभिसमय के अन्तर्गत अपने सभी दायित्वों को निभाना जारी रखा। अभिसमय के अन्तर्गत भारत, अपने रासायनिक हथियारों को नष्ट करने में समय सीमा के अनुसार आगे बढ़ रहा है। दी हेग में 5-9 नवंबर 2007 तक सीडब्ल्यूसी के पक्षकार राज्यों के 12वें सम्मेलन और कार्यकारी परिषद के सत्रों में भारत ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सीडब्ल्यूसी के द्वितीय समीक्षा सम्मेलन, जो वर्ष 2008 में होना है, के लिए स्थापित ओपन इन्डेड वर्किंग ग्रुप (आईडब्ल्यूजी) में भी सक्रियतापूर्वक भाग लिया।

वर्ष 2007 अभिसमय का 10वां वर्ष था। इस महत्वपूर्ण मील के पत्थर को समारोहपूर्वक मनाने के लिए भारत ने दिसंबर, 2007 में गुजरात के बड़ोदरा में सीडब्ल्यू सी निरीक्षण एवं सत्यापन पर एक राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किया। विश्व के विभिन्न भागों में आयोजित कई कार्यक्रमों में भारत द्वारा सीडब्ल्यूसी के अंतर्गत की गई प्रतिबद्धताओं के लिए उसकी सराहना की गई।

जैविक हथियार अभिसमय (बीडब्ल्यूसी)

जेनेवा में 20 नवंबर से 8 दिसंबर, 2006 तक आयोजित जैविक हथियार अभिसमय के पक्षकार राज्यों के छठे समीक्षा सम्मेलन में लिए गए निर्णय के अनुसार, विशेषज्ञों की वार्षिक बैठक 20-24 अगस्त 2007 को जेनेवा में आयोजित की गई।

कतिपय पारंपरिक हथियारों से संबंधित अभिसमय (सीसीडब्ल्यू)
भारत उन कतिपय पारंपरिक हथियारों के प्रयोग पर रोक अथवा प्रतिबंध लगाने से संबंधित अभिसमय का एक पक्षकार है जिनका उपयोग काफी खतरनाक और अंधाधुंध प्रभाव वाला हो सकता है। भारत ने इसके सभी प्रोतोकॉलों का अनुसमर्थन किया है। भारत ने अभिसमय के अनुच्छेद 1 में संशोधन का भी अनुसमर्थन किया है।

सीसीडब्ल्यू पर अभिसमय के उच्च संविदाकारी पक्षकारों की वार्षिक बैठक 7-13 नवंबर 2007 तक जेनेवा में आयोजित की गई। समूह में युद्ध सामग्री के प्रयोग को विनियमित करने का मुद्दा बैठक में छाया रहा। इस बैठक में यह निर्णय लिया गया कि समूह में युद्ध सामग्री के मानवीय प्रभाव को तत्काल हल करने के प्रस्ताव पर बातचीत करने के लिए सरकारी विशेषज्ञों के एक दल की बैठक वर्ष 2008 में आयोजित की जाएगी।

युद्ध के विस्फोटक अवशेषों से संबंधित सीसीडब्ल्यू के प्रोतोकॉल पर पहली वार्षिक बैठक 5 नवंबर 2007 को जेनेवा में आयोजित हुई। खतरनाक सुरंगों, धोखों से लगाए गए विस्फोटकों और अन्य तरीकों के उपयोग पर रोक अथवा प्रतिबंध लगाने से संबद्ध सीसीडब्ल्यु के संशोधित प्रोतोकॉल-II के पक्षकार राज्यों की वार्षिक बैठक भी 6 नवंबर 2007 को जेनेवा में आयोजित की गई। भारत ने संशोधित प्रोतोकॉल-II के प्रावधानों के कार्यान्वयन के लिए अपने द्वारा की गई कार्रवाइयों और विस्फोटक सुरंगों से मुक्त विश्व की कल्पना के प्रति अपनी वचनबद्धता के बारे में बैठक को बताया। भारत ने जोर्डन में ओटावा अभिसमय के पक्षकार राज्यों की 8वीं वार्षिक बैठक में पर्यवेक्षक के रूप में मानव-रोधी सुरंगों पर भेदभाव रहित, सार्वभौमिक और वैश्विक प्रतिबंध लगाने के उद्देश्य की अपनी वचनबद्धता पर बल देने के लिए भाग लिया।

लघु अस्त्र और हल्के हथियार (एसएएलडब्ल्यू)
भारत ने, लघु अस्त्र एवं हल्के हथियारों के सभी रूपों के अवैध कारोबार पर जुलाई, 2001 में आयोजित संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन में अंगीकार की गई कार्ययोजना के क्रियान्वयन सहित प्रभावी हल की खोज में सक्रियतापूर्वक भाग लेना जारी रखा। वर्ष 2007 में भारत ने 27-31 अगस्त 2007 तक जेनेवा में आयोजित "लघु अस्त्र एवं हल्के हथियारों के हस्तांतरण नियंत्रण सिद्धांतों" पर एक अनौपचारिक बैठक में भाग लिया।

बाह्य अंतरिक्ष मामले

भारत ने बाह्य अंतरिक्ष के शांतिपूर्ण उपयोगों पर संयुक्त राष्ट्र समिति के 5-16 जून 2007 तक वियना में आयोजित 50वें सत्र में सक्रियता से भाग लिया। सत्र में अंतरिक्ष मलबा प्रशमन दिशानिर्देशों को पारित किया गया। अंतरिक्ष के शांतिपूर्ण उपयोगों पर समिति की वैज्ञानिक एवं तकनीकी उप-समिति की 12-23 फरवरी, 2007 तक वियना में आयोजित बैठक के दौरान भारत ने इस बात पर बल दिया कि बाह्य अंतरिक्ष का शांतिपूर्ण उपयोग करने की संकल्पना का उल्लंघन करने वाले नए उपक्रम लगाने की कोशिश किए बिना मात्र शांतिपूर्ण प्रयोजनों के लिए बाह्य अंतरिक्ष को बनाए रखना प्रत्येक राष्ट्र की जिम्मेदारी होनी चाहिए।

गुट निरपेक्ष आन्दोलन (नाम)

संयुक्त राष्ट्र महासभा के 62वें सत्र में आम बहस के दौरान 28 सितम्बर 2007 को गुट निरपेक्ष आंदोलन के समन्वय ब्यूरो की मंत्री स्तरीय बैठक आयोजित की गई। बैठक में अन्योन्यक्रियात्मक रूप में, "गुट निरपेक्ष आंदोलन के कार्य के लिए क्षमता को पुनः जुटाने के लिए ठोस उपाय" पर चर्चा की गई। विदेश मंत्री, श्री प्रणब मुखर्जी ने इस मंत्री स्तरीय बैठक में भाग लिया। उन्होंने नाम के प्रति भारत की प्रतिबद्धता की पुष्टि की और गुट निरपेक्ष आंदोलन और समूह-77 के बीच, दोनों संगठनों में फिर से नई ऊर्जा का संचार करने के लिए और अधिक प्रभावकारी समन्वय की आवश्यकता पर बल दिया। विदेश मंत्री ने संयुक्त राष्ट्र महासभा के सत्र के दौरान 25 सितंबर 2007 को आयोजित फिलीस्तीन पर नाम की मंत्री स्तरीय समिति में भी भाग लिया।

राष्ट्रमंडल

भारत राष्ट्रमंडल का सबसे बड़ा सदस्य और इसका पांचवा सबसे बड़ा वित्तीय योगदानकर्ता है। भारत ने राष्ट्रमंडल तकनीकी सहयोग कोष में अपने वार्षिक अंशदान को वर्ष 2005-06 के 800,000 ब्रिटिश पाउंड (जीबीपी) से बढ़ाकर 2007-08 में 9,00,000 ब्रिटिश पाउंड कर दिया है। भारत राष्ट्रमंडल कनेक्ट्स विशेष स्वैच्छिक कोष, जिसका सृजन शासन प्रमुखों द्वारा राष्ट्रमंडल देशों के बीच डिजिटल विभाजन को पाटने के लिए नवंबर 2005 में हुई माल्टा राष्ट्रमंडल शासन प्रमुखों की बैठक (चोगम) का सबसे बड़ा (1 मिलियन यूरो डालर की प्रतिबद्धता के साथ) अंशदाता है और इसके कार्य योजना को आगे ले जाने के लिए स्थापित संचालन समिति का सदस्य है। राष्ट्रमंडल के विकासशील देशों के लिए भारत की तकनीकी सहायता में वृद्धि और वृद्धि करने के लिए, भारत ने आइटेक और स्केप के अन्तर्गत चुनिन्दा पाठ्यक्रमों में 50-75 स्लॉट देने और कॉमनवेल्थ कनेक्ट प्रोग्राम के अन्तर्गत छः माह की अवधि के लिए पांच आईसीटी विशेषज्ञों की पेशकश की है। भारत ने अफ्रीका और दक्षिण एशिया के लघु एवं मध्यम उद्यमों के प्रबंधकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम भी संचालित की है। न्यूयार्क स्थित कामनवेल्थ संयुक्त कार्यालय, जो संयुक्त राष्ट्र के कार्यकलापों में कामनवेल्थ लघु राज्यों की भागीदारी को सुकर बनाता है, का भारत एक प्रमुख समर्थक और अंशदाता बना हुआ है। भारत ने कामनवेल्थ ऑफ लर्निंग में अपना अंशदान 24 मिलियन रुपये से वर्ष 2007 से 40 मिलियन रुपये कर दिया है। भारत ने चंडीगढ़ स्थित राष्ट्रमंडल युवा कार्यक्रम के एशिया केन्द्र को राजीव गाँधी राष्ट्रीय युवा विकास संस्थान, श्रीपेरुम्बदुर के सहयोग से एक उत्कृष्ट केन्द्र के रूप में उन्नत बनाने की जिम्मेवारी लेने का प्रस्ताव किया है।

भारत ने कामनवेल्थ कनेक्ट्स प्रोग्राम के भाग के रूप में 23-24 मार्च 2007 को हुई कामनवेल्थ कनेक्ट्स इंटरनेशनल ई-पार्टनरशिप शिखर बैठक की मेजबानी की। छठा राष्ट्रमंडल-भारत लघु व्यवसाय प्रतियोगितात्मक विकास कार्यक्रम कोच्ची में आयोजित किया गया और सीआईआई द्वारा राष्ट्रमंडल अध्ययन सम्मेलन 25-30 मार्च 2007 तक आयोजित किया गया।

भारत ने 21-30 सितंबर 2007 तक नई दिल्ली में आयोजित 53वें कामनवेल्थ पार्लियामेंटरी एशोसिएशन सम्मेलन की मेजबानी जिसमें 53 राष्ट्रमंडल देशों के 800 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस सम्मेलन का औपचारिक रूप से उद्घाटन 25 सितंबर 2007 को राष्ट्रपति प्रतिभा देवी सिंह पाटिल द्वारा किया गया।

वित्त मंत्री ने 15-17 अक्टूबर 2007 तक गुयाना में आयोजित राष्ट्रमंडल वित्त मंत्रियों की बैठक में भाग लिया। राष्ट्रमंडल के महासचिव ने मार्च 2007 में और पुनः सितंबर 2007 में भारत की यात्रा की। महिला एवं बाल विकास राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) ने कंपाला, युगांडा में 11-14 जून 2007 तक आयोजित आठवें राष्ट्रमंडल वीमेंस अफेयर्स मंत्रियों की बैठक में भाग लिया। विधि एवं न्याय मंत्री ने 4-5 अक्तूबर, 2007 को लंदन में आयोजित न्याय मंत्री ने राष्ट्रमंडल विधि मंत्रियों की बैठक में भाग लिया।

प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह ने राष्ट्रमंडल शासन प्रमुखों की (चोगम) 23-25 नवंबर 2007 तक कंपाला (उगांडा) में आयोजित बैठक में भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। विदेश मंत्री, श्री प्रणब मुखर्जी ने 21-22 नवंबर 2007 को चोगम पूर्व राष्ट्रमंडल विदेश मंत्रियों की बैठक में भाग लिया। विदेश राज्य मंत्री श्री आनन्द शर्मा ने भारत का "यूथ डायलॉग" और "स्पोर्ट्स ब्रेकफास्ट" में प्रतिनिधित्व किया जिसकी अध्यक्षता उगांडा के राष्ट्रपति ने की थी। उद्योग राज्य मंत्री श्री अश्वनी कुमार ने कंपाला में 20-22 नवंबर 2007 तक आयोजित राष्ट्रमंडल व्यापार फोरम में सीआईआई, फिक्की और एसौचैम के संयुक्त प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। लंदन में भारत के उच्चायुक्त कमलेश शर्मा का कंपाला में चोगम के दौरान राष्ट्रमंडल के अगले महासचिव के रूप में चयन किया गया।

लोकतांत्रिक समुदाय (सीओडी)

विदेश राज्य मंत्री श्री आनन्द शर्मा ने बमाको, माली में 14-17 नवंबर 2007 तक आयोजित लोकतांत्रिक समुदाय के चतुर्थ मंत्रीस्तरीय सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधिमंडल के चतुर्थ मंत्री स्तरीय सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। 100 से अधिक देशों से आए सहभागियों ने लोकतंत्र को आगे बढ़ाने और लोकतांत्रिक संस्थाओं को सुदृढ़ करने के प्रस्ताव पर विचार-विमर्श किया और "लोकतंत्र, विकास और गरीबी कम करने" के विशेष विषय-वस्तु पर बमाको घोषणा-पत्र अंगीकार किया।

आसियान क्षेत्रीय मंच

भारत, आसियान क्षेत्रीय मंचो की नियमित बैठकों और सदस्य राज्यों द्वारा आयोजित विश्वासोत्पादक तंत्र के क्रियाकलापों में सक्रियतापूर्वक भाग लेना जारी रखा । 14 वें आसियान क्षेत्रीय मंच की मनीला में आयोजित मंत्री स्तरीय बैठक में विदेश मंत्री श्री प्रणब मुखर्जी ने भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया।

"संयुक्त राष्ट्र शांतिरक्षणः चुनौतियां एवं भविष्य" पर एक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी अप्रैल 2007 में नई दिल्ली में आयोजित की गई जो कि 13वें आसियान क्षेत्रीय मंच मंत्री स्तरीय बैठक द्वारा सक्रियातपूर्वक अनुमोदित विश्वासोत्पादक उपाय था।

एशिया में क्रियाकलाप और विश्वासोत्पादक उपायों पर सम्मेलन (सीका)

भारत एशिया में क्रियाकलाप और विश्वासोत्पादक उपायों पर सम्मेलन (सीका) का एक संस्थापक सदस्य है और सीका की बैठकों में सक्रियता से भाग लेना जारी रखा। भारत ने सीका सचिवालय में अपने एक वरिष्ठ राजनयिक को द्वितीय स्थान पर भेजा। सीका सचिवालय के कार्यकारी निदेशक दिसंबर 2007 में राजकीय यात्रा पर भारत आए। सीका के गठन की 15वीं वर्षगांठ के अवसर पर भारत के प्रधान मंत्री ने कजाख्स्तान गणराज्य के राष्ट्रपति को एक बधाई संदेश भेजा।

अंतर्राष्ट्रीय कानून और विकास

भारत, संयुक्त राष्ट्र महासभा की छठीं समिति, जो कि अन्तर्राष्ट्रीय विधि से संबंधित मामलों पर केंद्रित है, की चर्चाओं में सक्रियता से भाग लेना जारी रखा। अन्तर्राष्ट्रीय विधि की अन्य चर्चाओं जिनमें भारत ने भाग लिया निम्नलिखित हैः

संयुक्त राष्ट्र में न्याय प्रशासन

संयुक्त राष्ट्र में इस विषय पर हुई चर्चा में यह स्वीकार किया गया कि अनौपचारिक एवं औपचारिक दोनों प्रणाली वाली एक स्वतंत्र, पारदर्शी, व्यवसायिक प्रणाली की आवश्यकता है।

महासागर एवं समुद्री कानून

समुद्री कानून पर संयुक्त राष्ट्र अभिसमय के प्रावधानों के क्रार्यान्वयन संबंधी करार के पक्षकार राज्यों की अनौपचारिक परामर्शों का छठां दौर, जो कि फैले मत्स्य भंडार और उच्च प्रवासी मत्स्य भंडार के संरक्षण और प्रबंधन से संबंधित है, की बैठक करार के राष्ट्रीय, क्षेत्रीय, उप-क्षेत्रीय और वैश्विक कार्यान्वयन की समीक्षा करने के लिए बुलाई गई थी।

आक्रमण पर कार्य दल

वर्ष 2007 में रोम संविधि के अन्तर्गत आक्रमण के अपराध पर विशेष कार्य दल की तीन बैठकें संपन्न हुई। इनके समक्ष मुख्य प्रश्न यह था कि कैसे आक्रमण के कृत्य को पारिभाषित किया जाए और न्यायालय के क्षेत्राधिकार को कैसे प्रवर्तित किया जाए।

अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद के विरूद्ध व्यापक अभिसमय

अभिसमय के प्रारूप के मूल प्रावधानों पर व्यापक रूप से सहमति हो गई है। तथापि "विदेशी कब्जों के विरुद्ध लोगों की लड़ाई" के दौरान किए गए कृत्यों को अभिसमय के क्षेत्राधिकार से बाहर रखने की इच्छा रखने वाले कुछ देशों द्वारा जोर देने के कारण अभिसमय पर आगे की प्रगति रुक गई है।

संयुक्त राष्ट्र चार्टर तथा संगठन की भूमिका को सुदृढ़ करने पर विशेष समिति

संयुक्त राष्ट्र की भूमिका को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से, विशेष समिति ने अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा को उसके सभी रूपों में बनाए रखने के प्रश्न से संबंधित सभी प्रस्तावों पर विचार करना जारी रखा।

शांतिरक्षण अभियानों के संपूर्ण प्रश्न का उसके सभी स्वरूपों में व्यापक समीक्षाः संयुक्त राष्ट्र के अधिकारियों और मिशन में लगे विशेषज्ञों के आपराधिक उत्तरदायित्व पर तदर्थ समिति

संयुक्त राष्ट्र के अधिकारियों एवं मिशन में लगे विशेषज्ञों के आपराधिक उत्तरदायित्व पर तदर्थ समिति का पहला सत्र अप्रैल 2007 में आयोजित किया गया। शांतिरक्षण में लगे कार्मिकों द्वारा किए गए यौन शोषण एवं दुर्व्यवहार के सभी मामलों में ''शून्य सहिष्णुता नीति'' अपनाने का सभी प्रतिनिधिमंडलों ने समर्थन किया। संयुक्त राष्ट्र के अधिकारियों और मिशन में लगे विशेषज्ञों के आपराधिक उत्तरदायित्वों पर अन्तर्राष्ट्रीय अभिसमय पर बातचीत करने के मुद्दे पर हमारे प्रतिनिधिमंडल का यह मत था कि ऐसी संभावना पर विचार-विमर्श करना असामयिक है और तदर्थ समिति को मूल विषयों पर केंद्रित होना चाहिए और बाद के चरणों में बाकी चीजों पर विचार करना चाहिए। 62वें सत्र के दौरान कानूनी विशेषज्ञों के दल की रिपोर्ट पर विचार-विमर्श जारी रखने के उद्देश्य से एक कार्यदल गठित किया गया है।

आईएमओ विधिक समिति

केन्या, नैरोबी में आयोजित आईएमओ के राजनयिक सम्मेलन ने रेक रिमुवल पर अभिसमय (2007) के अंतिम पाठ को पारित किया।

बाह्य अंतरिक्ष के शांतिपूर्ण उपयोगों पर संयुक्त राष्ट्र समिति की विधिक उप समिति

बाह्य अंतरिक्ष के शांतिपूर्ण उपयोगों पर संयुक्त राष्ट्र समिति की विधिक उप समिति, अंतरिक्ष संबंधी कानून को तैयार करने में लगा रहा और यह अंतरिक्ष संबंधी कानून को तैयार करने में उभरने वाले मुद्दों पर चर्चा करने के एक मंच के रूप में भी कार्य करता रहा। विधिक एवं संधि प्रभाग ने 26 मार्च-5 अप्रैल 2007 तक वियना में आयोजित समिति के 46वें सत्र में भाग लिया। कार्यसूची के पारंपरिक मदों पर विचार-विमर्श करने के अलावा, अंतरिक्ष की गतिविधियों में निजी भागीदारी से संबंधित राष्ट्रीय विधायन पर इस वर्ष बल दिया गया। 47वें सत्र के दौरान "बाह्य अंतरिक्ष के शांतिपूर्ण खोज और उपयोग से संबंधित राष्ट्रीय विधायन पर सूचना के सामान्य आदान-प्रदान" नामक एक नए कार्यसूची मद पेश करने का निर्णय लिया गया। इसने, एफएओ द्वारा अक्टूबर 2007 में रोम स्थित अपने मुख्यालय में एफएओ संविधान के अनुच्छेद 14 के अंतर्गत सांविधिक निकाय की प्रकृति में, एफएओ की रूपरेखा के बाहर के निकाय में परिवर्तन करने की प्रक्रिया पर आयोजित विधि विशेषज्ञों के अनौपचारिक दल की बैठक में भी भाग लिया।

यूनेस्को विधिक समिति

यूनेस्को के 34वें आम सम्मेलन के अवसर पर यूनेस्को विधिक समिति की बैठक अक्टूबर 2007 में पेरिस में आयोजित की गई। विधिक एवं संधि प्रभाग ने इस बैठक में भाग लिया।

एफएओ विधि विशेषज्ञ दल

इसने, एफएओ द्वारा अक्टूबर 2007 में रोम स्थित अपने मुख्यालय में एफओ संविधान के अनुच्छेद 14 के अंतर्गत सांविधिक निकाय की प्रकृति में बदलाव कर एफएओ की रूपरेखा के बाहर के निकाय में करने की प्रक्रिया पर आयोजित विशेषज्ञों की अनौपचारिक दल की बैठक में भी भाग लिया।

संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय व्यापार कानून आयोग (अनसिटराल)

अनसिटराल के 40वें सत्र के दौरान एक कार्यदल के जरिए आयोग ने सुरक्षित कारोबार पर विधायी दिशानिर्देश के प्रारूप टिप्पणियों को अंतिम रूप देना जारी रखा जिन्हें बाद में पारित किया जाएगा। सत्र के अंतिम 4 दिनों में आयोग का 40वाँ वार्षिक सत्र मनाने के लिए एक सम्मेलन का आयोजन किया गया।

समुद्री परिवहन कानून

विधि एवं संधि प्रभाग के संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय व्यापार कानून आयोग (अनसिटराल) के कार्य दल-III (समुद्री परिवहन कानून) के उन्नीसवें और बीसवें सत्र, जो क्रमशः 16-27 अप्रैल 2007 तक न्यूयार्क, अमरीका में और 15-25 अक्टूबर 2007 तक वियना, आस्ट्रिया में आयोजित किए गए। समुद्र द्वारा मालों की अन्तर्राष्ट्रीय ढुलाई से संबंधित मौजूदा कानूनों की समीक्षा करने के उद्देश्य से कार्यदल एक नए अभिसमय पर बातचीत कर रहा है ताकि प्रौद्योगिकी के विकास के कारण उभरे क्षेत्रों में व्यावहारिक बदलाव लाया जा सके।

अन्तर्राष्ट्रीय मानवीय कानून

अन्तर्राष्ट्रीय रेडक्रॉस एवं रेडक्रीसेन्ट पर 30वां अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन 26-30 नवंबर 2007 तक जेनेवा में आयोजित हुई जिसमें अन्तर्राष्ट्रीय आपदा राहत एवं प्रारंभिक रिकवरी सहायता को घरेलू सुविधाजनक बनाने एवं विनियमित करने के दिशानिर्देश पारित किए गए जो कि

आईसीआरसी द्वारा विचार हेतु कई वर्षों से लंबित था। इस वर्ष क्लस्टर युद्ध सामग्री पर एक कानूनी बाध्यकारी दस्तावेज पर बातचीत करने के निर्णय पर पहुँचना अन्तर्राष्ट्रीय मानवीय कानून पर एक अन्य महत्वपूर्ण घटनाक्रम था। विधि एवं संधि प्रभाग आइसीआरसी के अन्दर अन्तर्राष्ट्रीय मानवीय कानून के विकास में और साथ ही पारंपरिक हथियारों पर अभिसमय से संबंधित बैठकों में भी भाग ले रहा है।

अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरण कानून

कार्टाजेना प्रोताकॉल के अनुच्छेद 27 के संदर्भ में तदर्थ ओपेन-इंडेड वर्किंग ऑन लायबिलिटी एंड रिड्रेस की 19-23 फरवरी 2007 तक मांट्रियल, कनाडा में आयोजित तीसरी बैठक और इसी विषय पर 22-26 अक्टूबर 2007 तक मांट्रियल, कनाडा में आयोजित चतुर्थ बैठक में विधि एवं संधि प्रभाग ने भाग लिया। बैठक में किसी जीवित परिवर्तित जीव के सीमा पार आवाजाही से हुई क्षति के लिए दायित्व एवं समाधान पर भावी कानूनी व्यवस्था के विभिन्न तत्वों पर चर्चा की गई।

विधि एवं संधि प्रभाग ने जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क अभिसमय के पक्षकारों की 3-14 दिसंबर 2007 तक बाली, इंडोनेशिया में आयोजित सम्मेलन में भाग लिया। बैठक में, अन्य बातों के साथ-साथ वचनबद्ध अवधि 2008-2012 और उससे आगे ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने की एक दीर्घकालिक कार्ययोजना और इस संबंध में एक नई संधि पर बातचीत करने की आवश्यता पर चर्चा की गई।

अंटार्कटिका

वर्ष के दौरान, 30वें अंटार्कटिका संधि परामर्शदात्री समिति की 30 अप्रैल-11 मई 2007 तक नई दिल्ली, भारत में आयोजित बैठक में विधि एवं संधि प्रभाग ने भाग लिया। इस बैठक में कई मुद्दों पर चर्चा हुई। विधिक एवं सांस्थानिक कार्यदल की भी 30 अप्रैल-4 मई 2007 तक संबंधित मुद्दों पर विचार-विमर्श करने के लिए बैठक हुई।

निजी अन्तर्राष्ट्रीय कानून

समीक्षाधीन अवधि के दौरान भारत सिविल अथवा वाणिज्यिक मामलों में विदेश में साक्ष्य लेने पर (1970) और सिविल अथवा वाणिज्यिक मामलों में न्यायिक और न्यायेतर दस्तावेजों का विदेशों में प्रसार करने हेतु क्रमशः 8 अप्रैल 2007 और 1 अगस्त 2007 को हेग अभिसमय में सम्मिलित हुआ। न्याय तक अन्तर्राष्ट्रीय पहुंच (1980), न्यायालयों के चुनाव संबंधी करार (2005) और सिविल अथवा वाणिज्यिक मामलों में निर्णयों की मान्यता और प्रवर्तन (1971) और अन्तर्राष्ट्रीय बाल व्यपहरण के सिविल पहलुओं पर अभिसमय (1980) भारत द्वारा उनका पक्षकार बनने के लिए विचारधीन है।

प्रत्यर्पण एवं अन्य अंतर्राष्ट्रीय न्यायिक सहायता

विधि एवं संधि प्रभाग ने दूसरे देशों के साथ प्रत्यर्पण संधि, आपराधिक करार करने के लिए कई द्विपक्षीय वार्ताओं में भाग लिया। आपराधिक मामलों में पारस्परिक सहायता पर सार्क अभिसमय का प्रारूप तैयार किया गया और प्रभाग ने 10-12 सितंबर 2007 तक कोलंबो, श्रीलंका में अभिसमय के प्रारूप पर चर्चा के लिए बुलाई गई सार्क सदस्य राज्यों के विधि सलाहकारों की बैठक में भी भाग लिया। प्रभाग ने प्रत्यर्पण के कई अनुरोधों और घरेलू के साथ-साथ विदेशी क्षेत्राधिकार से प्राप्त अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के अन्य अनुरोधों की जांच की और उन्हें कानूनी सलाह प्रदान की।

बंदियों/सजायाफ्ता लोगों के अंतरण संबंधी करार

भारत, मिस्र, फ्रांस, श्रीलंका, हांगकांग, इजरायल और कोरिया के साथ द्विपक्षीय करार तैयार कर रहा है जो बातचीत के विभिन्न चरणों में है।

अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद, राष्ट्रपार संगठित अपराध एवं मादक दवाओं के अवैध व्यापार का सामना करने संबंधी करार

भारत उपर्युक्त विषय पर साइप्रस, इटली, श्रीलंका, संयुक्त अरब अमीरात, मालदीव और वियतनाम के साथ द्विपक्षीय करार का पाठ तैयार करने की प्रक्रिया में है और जो कि बातचीत के विभिन्न चरणों में हैं।

सार्क

सार्क मंच के अंतर्गत, विधि एवं संधि प्रभाग ने कई वार्ताओं में भाग लिया जिसके परिणामस्वरूप नई दिल्ली में अप्रैल 2007 को आयोजित सार्क शिखर सम्मेलन के दौरान सार्क विकास कोष के गठन संबंधी करार पर हस्ताक्षर किए गए। प्रभाग, सार्क खाद्य बैंक और सार्क विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए सार्क के करारों को अंतिम रूप देने में भी शामिल रहा जिन पर वर्ष के दौरान हस्ताक्षर किए गए। सार्क सचिवालय में 29 नवंबर 2007 को निवेश पर सब-ग्रुप की हुई बैठक में और आपराधिक मामलों में पारस्परिक विधिक सहायता पर सार्क करार के लिए वार्ता में भी प्रभाग ने भाग लिया।

बिमस्टेक

विधि एवं संधि प्रभाग ने बिमस्टेक जेडब्ल्यूजी-विधिक एवं विधि प्रवर्तन मुद्दों पर सीटीटीसी सब-ग्रुप की 19-20 अप्रैल 2007 को तीसरी बैठक आयोजित की। बैठक के दौरान हुई चर्चाओं के परिणामस्वरूप आतंकवाद, संगठित अपराध और मादक दवाओं के अवैध व्यापार का सामना करने के करार के पाठ को अंतिम रूप दिया गया। बिमस्टेक सदस्य राज्यों के बीच आपराधिक मामलों में पारस्परिक विधिक सहायता संबंधी करार के प्रश्न पर भी बैठक में विचार किया गया।

प्रभाग ने विमस्टेक व्यापार वार्ता समिति (टीएनसी) की 14वीं और 15वीं बैठकों में भी भाग लिया जो क्रमशः 18-23 जून 2007 तक पारो, भूटान में और 24-26 सितम्बर 2007 तक ढाका, बांग्लादेश में आयोजित की गई। टीएनसी द्वारा उठाए गए मुद्दों में अन्य के साथ-साथ बिमस्टेक मुक्त व्यापार क्षेत्र संबंधी रूपरेखा करार पर मालों के व्यापार संबंधी करार की विधिक पुनरीक्षा, उत्पत्ति के नियमों पर कार्य दल, सीमा शुल्क प्रक्रिया एवं सहयोग और सुरक्षोपाय के मुद्दे शामिल थे।

द्विपक्षीय वार्ताओं में सहभागिता

वर्ष के दौरान त्रिनिदाद एवं टोबैगो, हेलेनिक गणराज्य, लीबिया, इथोपिया, आइसलैंड, मेक्सिको और कनाडा के साथ द्विपक्षीय निवेश संवर्धन करार पर वार्ता पूरी की गई और हस्ताक्षर किये गए। बातचीत कनाडा, सेनेगल और बुल्गारिया के साथ भी पूरी की गई और करार हस्ताक्षर किये जाने के लिए तैयार है। प्रभाग ने जापान, कोरिया, श्रीलंका, मारीशस, यूरापेय संघ और आसियान के साथ मुक्त व्यापार करार पर भी बातचीत में भाग लिया। सिंगापुर के साथ व्यापक आर्थिक सहयोग करार को संशोधित करने वाले प्रोतोकॉल को अंतिम रूप दिया गया और वह हस्ताक्षर के लिए तैयार है।

विधि एवं संधि प्रभाग ने वर्ष के दौरान कई रक्षा सहयोग करारों, नाभिकीय ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग के अंतर्राष्ट्रीय सहयोग पर करार; विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी करारों की जांच की।

वर्ष के दौरान भारत ने दूसरे देशों के साथ कई बहुपक्षीय/द्विपक्षीय संधि/करारों पर हस्ताक्षर/अनुसमर्थन किया। इनमें अन्य के साथ-साथ शामिल थेः प्रवर्तित गुमशुदगी से सभी व्यक्तियों की सुरक्षा के लिए अंतर्राष्ट्रीय अभिसमय; सार्क विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए करार; विकलांग व्यक्तियों के अधिकारों पर अभिसमय; सार्क खाद्य बैंक की स्थापना संबंधी सार्क करार; ट्रांस-एशिया रेल नेटवर्क पर अन्तर-सरकार करार; खेल-कूद में मादक औषधि के प्रयोग के विरुद्ध अन्तर्राष्ट्रीय अभिसमय और भारत-भूटान मैत्री संधि। विस्तृत सूची परिशिष्ट-XI पर दी गई है। वर्ष 2007 के दौरान जारी पूर्ण शक्तियों के दस्तावेजों की एक सूची परिशिष्ट-XII पर और अनुसमर्थन के दस्तावेजों की एक सूची परिशिष्ट-XIII पर दी गई है।

■■

बहुपक्षीय आर्थिक संबंध

10

सार्क

दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संघ (सार्क) की स्थापना एक क्षेत्रीय सहयोगात्मक ढांचा विकसित करने के उद्देश्य से क्षेत्र के देशों के सामूहिक निर्णय की अभिव्यक्ति के रूप में 1985 में की गई थी। फिलहाल सार्क में आठ सदस्य राष्ट्र हैं नामतः अफगानिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, भारत, नेपाल, मालदीव, पाकिस्तान और श्रीलंका।

भारत ने 14वें सार्क शिखर सम्मेलन की 3-4 अप्रैल 2007 को नई दिल्ली में मेजबानी करते हुए इसकी अध्यक्षता ग्रहण की। अपने इतिहास में पहली बार सार्क ने अफगानिस्तान को आठवें सदस्य के रूप में शामिल कर अपनी सदस्यता का विस्तार किया। इसके साथ ही यह एक ऐसा पहला शिखर सम्मेलन था जहां कि क्षेत्र से बाहर के पांच पर्यवेक्षक-चीन, जापान, कोरिया गणराज्य, अमरीका और यूरोपीय संघ को सम्मेलन में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया। सार्क में पर्यवेक्षक के रूप में ईरान का भी स्वागत किया गया। मंत्रियों के परिषद की 29वीं बैठक (7-8 दिसंबर 2007) में मारीशस को सार्क के पर्यवेक्षक के रूप में शामिल किए जाने के अनुरोध को मंजूरी दी गई।

शिखर सम्मेलन के दौरान राज्याध्यक्षों/शासनाध्यक्षों ने वास्तविक, आर्थिक और लोगों का लोगों के साथ संपर्कों के माध्यम से अन्तरा-क्षेत्रीय संपर्क को समुन्नत बनाने पर सहमति दी। वास्तविक संपर्क के मामले में एक महत्वपूर्ण निर्णय सार्क क्षेत्रीय बहुविध परिवहन अध्ययन को अफगानिस्तान तक विस्तार करना था। आर्थिक संपर्क के लिए, सार्क देशों ने सार्क विकास कोष (एसडीएफ) को शीघ्र प्रचालनात्मक बनाने और व्यापार सुविधा उपायों के कार्यान्वयन के लिए अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की। शासनाध्यक्षों ने सूचना का आदान-प्रदान कर सुरक्षा प्रमुखों के बीच बैठकों की संख्या में वृद्धि कर सुरक्षा नेटवर्क को सुदृढ़ करने पर सहमति व्यक्त की और आपराधिक मामलों में पारस्परिक विधिक सहायता पर करार को अंतिम रूप देने के लिए कार्य करने के भारत के प्रस्ताव पर विचार किया।

शिखर सम्मेलन के दौरान दक्षिण एशियाई विश्वविद्यालय और एक सार्क खाद्य बैंक स्थापित करने के लिए दो महत्वपूर्ण करारों पर हस्ताक्षर किए गए। नेताओं ने विकास के चार महत्वपूर्ण मुद्दों नामतः जल (बाढ़ नियंत्रण सहित); ऊर्जा; खाद्य एवं पर्यावरण पर आगे बढ़ने पर भी सहमति व्यक्त की।

मंत्रिपरिषद की 29वीं बैठक में 14वें सार्क शिखर सम्मेलन के दौरान लिए गए निर्णयों के कार्यान्वयन की समीक्षा की गई। परिषद ने एक अंतरिम सेल के माध्यम से तत्काल सार्क विकास कोष को प्रचालनीय बनाने के लिए निर्देश जारी किया; जलवायु परिवर्तन पर घोषणा पत्र को पारित किया; मारीशस को पर्यवेक्षक की स्थिति प्रदान की। सार्क के अगले महासचिव के रूप में भारत के डा. शील कांत शर्मा की नियुक्ति की और सार्क वीजा उन्मुक्ति योजना (एसवीईएस) को फिर से जांच करने के लिए उत्प्रवासन प्राधिकारियों को निदेश दिया।

14वें सार्क शिखर सम्मेलन द्वारा उत्पन्न गतिशीलता को कायम रखने की गति निम्नलिखित के माध्यम से सुनिश्चित की गई- (क) गैर-पारस्परिक ढंग से हमारी भूमिका का निर्वहन करने के लिए हमारे सजग प्रयास; (ख) कार्य व्यापार अर्थात परिवहन, वित्त एवं सुरक्षा के लिए विषयों का चयन; (ग) लोगों का लोगों के साथ तालमेल को बढ़ाना; (घ) दक्षिण एशियाई विश्वविद्यालय और सार्क विकास कोष की स्थापना में तेजी लाना; और (ड.) खाद्य बैंक के माध्यम से खाद्य सुरक्षा के सांस्थानिकरण की गति तेज करना।

भारत ने सार्क देशों के परिवहन मंत्रियों की पहली बैठक (29-31 अगस्त 2007) की मेजबानी की, जिसमें एशियाई विकास बैंक द्वारा तैयार की गई और वित्तपोषित सार्क क्षेत्रीय बहुविध परिवहन अध्ययन रिपोर्ट पर चर्चा की गई। कुछ प्रायोगिक उप-क्षेत्रीय और क्षेत्रीय परियोजनाओं की पहचान की गई, जैसे बीरगंज-कटिहार-सिंघाबाद-रोहनपुर-चटगांव, जोगबनी, बिराटनगर और अगरतला लिंक के साथ; काठमांडू-बीरगंज-कोलकाता/हल्दिया; अगरतला-अखौरा-चटगांव; फुएंटशोलिंग से हाशिमारा तक रोड संपर्क; कोलम्बो और चेन्नई के बीच रेल गलियारा; कोलंबो और कोचीन तथा कोलंबो और तूतीकोरिन के बीच नौका सेवा; माले-नई दिल्ली और इस्लामाबाद-नई दिल्ली के बीच हवाई संपर्क; और फएंटशोलिंग में आधुनिक सीमा पार करने की सुविधा स्थापित करना।

भारत ने 14-15 सितम्बर 2007 तक वित्त मंत्रियों की बैठक की और इसके पूर्व वित्त सचिवों की बैठक की मेजबानी की। बैठक में दक्षिण एशिया में पूंजी बाजार का विकास; सार्क विकास कोष

की स्थापना; निवेशों का प्रोत्साहन एवं सुरक्षा; और सीमा-शुल्क के क्षेत्र में सहयोग जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा की गई। सार्क विकास कोष के अंतर्गत मंत्रियों ने कार्यान्वयन हेतु सामाजिक क्षेत्र में तीन क्षेत्रों की पहचान की नामतः मातृत्व एवं बाल स्वास्थ्य टीकाकरण सहित; महिलाओं का सशक्तीकरण और शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने के प्रति लक्षित क्षमता निर्माण।

गृह मंत्रियों की बैठक (भारत, 23-25 अक्टूबर 2007) में सीमा पार अपराधों विशेष रूप से आतंकवाद, स्वापक एवं मनः प्रभावी पदार्थों और महिलाओं और बच्चों के अवैध व्यापार से संबंधित मुद्दों पर विचार-विमर्श किया गया। सामाजिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए भारत ने महिलाओं एवं बच्चों के अवैध व्यापार पर सार्क अभिसमय को क्रियान्वित करने के लिए क्षेत्रीय कार्यबल की पहली बैठक (जुलाई 2007); सार्क क्षेत्र में सूक्ष्म वित्तपोषण एवं महिला आर्थिक सशक्तीकरण पर सम्मेलन (जुलाई, 2007) और सार्क सामाजिक चार्टर को क्रियान्वित करने के लिए राष्ट्रीय समन्वय समिति की बैठक (सितम्बर 2007) की मेजबानी की।

सार्क के सदस्य-राज्यों द्वारा क्षेत्र के विकास के लिए उपयोग में लायी जाने वाली सार्क विकास कोष ने अपनी स्थापना पर 29 नवंबर 2007 को तृतीय अन्तर-सरकारी बैठक आयोजित की जिसमें करार के प्रारूप को अंतिम रूप दिया गया। 29वें सार्क मंत्री परिषद ने यह निर्णय लिया कि उपलब्ध कोष से चिन्हित परियोजनाओं को क्रियान्वित करने के लिए सार्क सचिवालय में एक अस्थायी सेल का गठन किया जाएगा। भारत ने पहले ही सार्क विकास कोष में 100 मिलियन राशि देने की प्रतिबद्धता व्यक्त की है। परिषद ने यह निर्णय लिया कि सार्क विकास कोष परियोजनाओं का वित्तपोषण करने का कार्य परिषद के अगले सत्र से पूर्व करना शुरू कर दें।

हमने गौरवशाली दक्षिण एशिया विश्वविद्यालय को नई दिल्ली में स्थापित करने की सार्क में पहल किया है। नई दिल्ली में विश्वविद्यालय के लिए भूमि अधिग्रहीत करने, इसके निर्माण की देख-रेख करने और इसके चार्टर, उप-विधियों, कार्य योजना, शासन संरचना, पाठ्यक्रम पाठ्यचर्चा इत्यादि निर्धारित करने के लिए दो वर्षों की अवधि के लिए एक प्रोजेक्ट कार्यालय स्थापित करने का कार्य शुरू हो चुका है।

भारत और भूटान के बीच इस वर्ष की समाप्ति तक भारत के अतिविशिष्ट तीन-चार अस्पतालों को प्रत्येक सार्क देश के एक-दो अस्पतालों के साथ जोड़ने की एक अभिनव परियोजना शुरू हो चुकी है। टेली-मेडिसिन परियोजना का अन्य सार्क देशों से जबरदस्त समर्थन मिला है और इसे चरणबद्ध तरीकों से शुरू किया जाएगा।

सार्क प्रक्रिया में संस्कृति के माध्यम से लोगों को शामिल करने की भारत द्वारा की गई पहल को हाल में दिसंबर, 2007 में नई दिल्ली में आयोजित प्रथम सार्क सांस्कृतिक महोत्सव में बड़ी सराहना मिली है। सार्क फ्यूजन बैंड उत्सव, लोकगीत उत्सव, सार्क कार रैली फोटो-प्रदर्शनी और खाद्य उत्सव सहित कई सांस्कृतिक कार्यक्रम दिसंबर, 2007 के प्रथम सप्ताह में आयोजित किए गए। स्कूल एवं विश्वविद्यालय दोनों के छात्रों के लिए छात्र और संकाय आदान-प्रदान पर एक अभिनव परियोजना आयोजित की गई। एक सार्क फैशन शो आयोजित किया गया जिसमें प्रत्येक सार्क देश के दो-दो डिजाइनरों ने अपने-अपने संग्रहों को प्रदर्शित किया।

समृद्ध दक्षिण एशियाई वस्त्र बुनाई और हस्तशिल्प की परंपरा को कायम रखने के उद्देश्य से वस्त्र एवं हस्तशिल्प संग्रहालय ने "दक्षिण एशिया की वस्त्र परंपराओं" पर एक प्रदर्शनी शिल्प संग्रहालय में 7 दिसंबर, 2007 को अपने कार्यकलापों से शुरू किया। एक हैंडलूम एवं हस्तशिल्प के बिक्री केन्द्र दो सप्ताह के लिए लगाया गया जिसमें प्रत्येक सार्क देशों के 5-5 प्रतिभागियों ने भाग लिया और अपने क्षेत्रीय हस्तशिल्पों की बिक्री की।

जल, ऊर्जा, खाद्य एवं पर्यावरण जैसे राजनीतिक रूप से संवेदनशील क्षेत्रों में प्रगति सुनिश्चित करने के लिए भारत ने छोटी-छोटी क्षेत्रीय, उप-क्षेत्रीय परियोजनाओं की पहचान की है, जिसकी पूर्णता अवधि छोटी हो और तत्काल लाभ मिलने शुरू हो जाएं। इनमें 300 आवास प्रति सार्क सदस्य राज्य के लिए सौर ग्रामीण विद्युतीकरण पर परियोजना, वर्षा-जल संचयन, वनों का संरक्षण और कृषि-व्यवसाय में क्षमता-निर्माण और दलहन की उच्च पैदावार हेतु संवर्धित नाइट्रोजन निर्धारण के लिए राइजोबियम बैक्टिरिया के अनुकूलतम उपयोग के प्रोतोकॉल को बांटना शामिल है।

सशक्त जलवायु परिवर्तन, जिसका प्रतिकूल प्रभाव दक्षिण एशिया को प्रभावित कर सकता है पर चिन्ता व्यक्त करते हुए 29वें सार्क मंत्रिपरिषद ने जलवायु परिवर्तन पर सार्क घोषणा पत्र को पारित किया जिसे कि बाली में राष्ट्रपति गयूम ने पढ़ा था। प्रत्येक सदस्य राज्य के ग्रामीण आंतरिक प्रदेशों के उन्नयन के अनुभव को भी सार्क मांडेल ग्राम पर सूचना के आदान-प्रदान के माध्यम से बांटा गया।

सार्क के नए महासचिव, भारत के डा. शील कांत शर्मा, 1 मार्च 2008 से सार्क सचिवालय का कार्यभार ग्रहण करेंगे। चूंकि हमें वर्ष 2008 में श्रीलंका को अध्यक्षता सौंप देनी है, भारत सार्क को बातचीत करने से कार्यान्वयन स्तर तक ले जाने के प्रति प्रतिबद्ध है।

14वें सार्क शिखर सम्मेलन, नई दिल्ली में सार्क देशों के नेता।

विदेश मंत्री, प्रणब मुखर्जी 26 सितम्बर 2007 को न्यूयार्क में इब्सा पहल की बैठक में ब्राजील के विदेश मंत्री सेल्सो एमोरियम और दक्षिण अफ्रीका के विदेश मंत्री, एन. लामिनी जूमा के साथ।

आसियान-भारत संबंध

भारत का आसियान देशों के साथ अपने बहुआयामी संबंधों को मजबूत और प्रगाढ़ बनाने के लिए एकाग्र होना उसके "पूर्वोन्मुख" नीति का महत्वपूर्ण आधार स्तम्भ है। भारत, आसियान देशों, की क्षेत्र में शांति और स्थिरता बनाए रखने की साझी रुचि वाले सुरक्षा परिप्रेक्ष्य के अभिमुखीकरण को भी बांटता है। भारत-आसियान सहयोग को आगे बढ़ाने के लिए विभिन्न परियोजनाएं कार्यान्वयन की प्रक्रिया में है।

भारत द्वारा अंग्रेजी भाषा प्रशिक्षण केन्द्र (सीईएलटी) कंबोडिया, लाओ पीडीआर और वियतनाम में स्थापित किए गए हैं।

भारत-आसियान मीडिया के आदान-प्रदान कार्यक्रम के अन्तर्गत, आसियान के 15 पत्रकारों ने जून-जुलाई 2007 में भारत की यात्रा की।

विदेश सेवा संस्थान द्वारा अगस्त 2007 में आसियान राजनयिकों के लिए एक विशेष प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें 23 युवा राजनयिकों ने भाग लिया।

आसियान देशों के 100 छात्रों ने अर्थात सभी दस आसियान देशों में से प्रत्येक के दस-दस छात्र, आधुनिक एवं प्राचीन भारत के साइट्स एंड साउंड्स के दौरे पर दिसंबर 2007 में भारत आए।

1 मिलियन के प्रारंभिक अंशदान के साथ भारत-आसियान विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विकास कोष शीघ्र कार्य करना शुरू कर देगा। यह कोष भारत और आसियान शोधकर्ताओं के बीच सामरिक गठजोड़ के विकास में सहायता देगी और इससे आगे सहयोगात्मक शोध और विकास को बढ़ावा मिलेगा।

छठीं भारत-आसियान शिखर बैठक नवंबर 2007 को सिंगापुर में आयोजित हुई। प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह ने भारत और आसियान देशों के बीच सहयोग बढ़ाने के विभिन्न उपायों की पेशकश की। इन उपायों में -भारत-आसियान व्यापार लक्ष्य वर्ष 2010 तक 50 बिलियन तक प्राप्त करने, भारत और आसियान के बीच यात्रा करने वाले व्यवसायियों के लिए वीजा व्यवस्था को सरल बनाना, भारत-आसियान स्वास्थ्य देखभाल पहल, निम्न दर पर मूल औषधियां प्रदान कर शुरू करना और प्रायोगिक परियोजनाओं को शुरू करने के लिए भारत आसियान ग्रीन फंड स्थापित करना, आसियान के साथ विस्तारित मुक्त आकाश नीति का अनुसरण करना, वर्ष 2010 तक आसियान क्षेत्र से भारत में 1 मिलियन पर्यटकों का लक्ष्य और दोनों देशों के सांसदों के लिए आदान-प्रदान के विशेष कार्यक्रम शुरू करना शामिल है।

भारत-आसियान मुक्त व्यापार करार

वर्ष 2007 के दौरान व्यापार वार्ता समिति (टीएनसी) की तीन बैठकें आयोजित की गई। प्रस्तावित भारत-आसियान मुक्त व्यापार करार में शामिल सभी मुद्दों पर सभी की सहमति प्राप्त करने के प्रयास जारी हैं। बड़ी संख्या में भारत के जीविका-निर्वाह करने वाले किसानों के हितों को सुरक्षित रखना, भारत की कोशिश रही है। सिंगापुर में 21 नवंबर 2007 को आयोजित छठीं भारत आसियान बैठक में, सभी पक्ष मुक्त व्यापार करार पर मार्च 2008 तक बातचीत पूरा करने के लिए कार्य करने पर सहमत हैं।

पूर्वी एशिया शिखर बैठक (ईएएस)

प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह ने सिंगापुर में 21 नवंबर 2007 को आयोजित छठीं भारत-आसियान शिखर बैठक के साथ-साथ आयोजित पूर्वी एशिया शिखर बैठक में भाग लिया। तृतीय पूर्वी एशिया शिखर बैठक ऊर्जा, पर्यावरण, जलवायु परिवर्तन और दीर्घकालिक विकास के मुद्दों पर केंद्रित थी। शिखर बैठक में भाग लेने वाले 16 नेताओं ने (आसियान देश, भारत, चीन, जापान, आरओके, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड) जलवायु परिवर्तन, ऊर्जा और पर्यावरण पर सिंगापुर घोषणा पर हस्ताक्षरित किए।

नोबल पुरस्कार विजेता प्रो. अमर्त्य सेन की अध्यक्षता में नालंदा मेंटर ग्रुप की पहली बैठक जुलाई, 2007 में सिंगापुर में संपन्न हुई। नालंदा मेंटर ग्रुप ने इस विश्वविद्यालय को पुनः स्थापित करने के लिए एक रोडमैप प्रदान किया जो कि स्नातकोत्तर अध्ययन पर जोर देते हुए शोध एवं शिक्षण के उत्कृष्ट केन्द्र बनने पर केंद्रित है। इसमें दर्शन शास्त्र एवं बौद्ध अध्ययन, क्षेत्रीय इतिहास, व्यापार एवं प्रबंध अध्ययन, अन्तर्राष्ट्रीय संबंध एवं शांति अध्ययन और भाषाओं के अध्ययन के विभाग होंगे। यह एक अंतर्राष्ट्रीय संधि के माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के रूप में स्थापित किया जाएगा।

पूर्वी एशिया में एक व्यापक आर्थिक भागीदारी (सीईपीईए) की दिशा में अध्ययन के प्रयास जारी रहे। यह भी निर्णय लिया गया कि आसियान की आर्थिक शोध संस्थान और पूर्वी एशिया (ईआरआईए) को अस्थाई रूप से आसियान सचिवालय में अवस्थित कर दिया जाए।

ईएएस ऊर्जा मंत्रियों की अगस्त 2007 में सिंगापुर में हुई बैठक में ऊर्जा बचत लक्ष्यों एवं कार्य योजना को स्वैच्छिक आधार पर तैयार करने में सहयोग करने और क्षेत्र में जैव-ईंधनों पर सहयोग को बढ़ाने का निर्णय लिया गया।

बहुक्षेत्रीय तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग के लिए बंगाल की खाड़ी की पहल (बिमस्टेक)

भारत ने 22-23 मई 2007 को नई दिल्ली में एक बैठक की

मेजबानी की जिसमें बिमस्टेक मौसम एवं जलवायु केन्द्र, जिसे कि नोएडा, भारत में स्थापित किए जाने का प्रस्ताव है, के संगम ज्ञापन को अंतिम रूप दिया गया।

भारत ने "आपदा प्रबंधन में भू-सूचना अनुप्रयोग" पर 12-16 नवंबर 2007 तक देहरादून स्थित इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ रिमोट सेंसिंग (आईआईआरएस) में बिमस्टेक देशों की एक विशेष प्रशिक्षण कार्यशाला की मेजबानी की।

एशियाई विकास बैंक ने "बिमस्टेक परिवहन अवसंरचना एवं संभारतंत्रीय अध्ययन" आयोजित किया। विस्तृत अध्ययन के सहमत प्राथमिकता वाले क्षेत्र हैं- बांग्लादेश और भारत के बीच थाईलैंड तक सड़क एवं रेल संपर्क म्यांमा होकर गुजरते हुए जिनके गलियारों का संपर्क भूटान और नेपाल से हो; परिवहन अवसंरचना एवं सेवाओं का मॉडल आकलन; अन्तर-बिमस्टेक यात्रियों की यात्रा के लिए हवाई परिवहन केन्द्र; और बंगाल की खाड़ी के तट के साथ-साथ बिमस्टेक के बड़े बंदरगाह। आशा है कि एशियाई विकास बैंक बिमस्टेक कार्य दल को जनवरी 2008 में अन्तिम रिपोर्ट प्रस्तुत कर देगा।

प्रस्तावित बिमस्टेक व्यापार, वीजा योजना पर विचार करने के लिए विशेषज्ञ दल की दो बैठकें 1-2 फरवरी, 2007 को काठमांडू में और 27 नवंबर 2007 को ढाका में आयोजित की गई।

बिमस्टेक मुक्त व्यापार करार पर बातचीत वर्ष के दौरान जारी रहे। व्यापार वार्ता समिति की 14वीं और 15वीं बैठक क्रमशः 18-23 जून 2007 तक पारो, भूटान में और 24-26 सितंबर 2007 तक ढाका, बांग्लादेश में संपन्न हुई।

बिमस्टेक क्षेत्र में आतंकवाद से मुकाबला और राष्ट्रपार अपराध (सीटीटीसी) का भारत एक अग्रणी देश है। आतंकवाद से मुकाबला और राष्ट्रपार अपराध पर बिमस्टेक संयुक्त कार्य दल की तीसरी बैठक 16-17 जनवरी 2007 को म्यांमा में संपन्न हुई। विधिक एवं विधि प्रवर्तन पर बिमस्टेक जेडब्ल्यूजी-सीटीटीसी उप-दल की तीसरी बैठक 19-20 अप्रैल 2007 तक नई दिल्ली में संपन्न हुई। बैठक में "अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद, राष्ट्रपार संगठित अपराध और मादक दवाओं का अवैध व्यापार का सामना करने पर बिमस्टेक अभिसमय" के प्रावधानों के पाठ पर सहमति हुई।

कृषि सहयोग पर बिमस्टेक की प्रथम विशेषज्ञ दल बैठक 14-16 मार्च 2007 तक म्यांमा में संपन्न हुई। कृषि सहयोग पर बिमस्टेक की अगली विशेषज्ञ दल बैठक की मेजबानी वर्ष 2008 में भारत करेगा।

द्वितीय बिमस्टेक शिखर बैठक जो कि वर्ष 2007 के प्रारंभ में भारत में होनी थी, कि तिथि में परिवर्तन किया गया है क्योंकि प्रस्तावित तिथि कुछ सदस्यों के लिए सुविधाजनक नहीं थी। सभी बिमस्टेक सदस्य देशों से परामर्श कर भारत द्वितीय बिमस्टेक शिखर बैठक की मेजबानी करेगा।

एशिया-प्रशांत व्यापार करार (एपीटीए)

एशिया-प्रशांत व्यापार करार की मंत्रिपरिषद की दूसरी बैठक 26 अक्टूबर 2007 को गोवा में संपन्न हुई। वार्ता का चौथा दौर शुरू करने की घोषणा की गई। स्थाई समिति को मंत्रिपरिषद की तीसरी बैठक तक वार्ता पूरी कर लेने का निदेश दिया गया है (अक्टूबर 2009 तक होनी निश्चित है)। शुल्क रहित उपायों, व्यापार सुविधा, सेवाओं एवं निवेश जैसे अन्य क्षेत्रों में वार्ता का विस्तार करने के लिए स्थाई समिति द्वारा प्रक्रिया तय की जानी है। इस प्रयोजनार्थ एपीटीए के विषय क्षेत्र को मंत्रियों द्वारा व्यापक बनाया गया है। आप्टा के लिए मालों के उद्गम के प्रमाणन और सत्यापन के लिए प्रचालन प्रक्रियाओं के एक सामान्य सेट को अनुमोदित किया गया और उसे 1 जनवरी 2008 से कार्यान्वित किए जाने का निर्णय लिया गया। स्थाई समिति और सचिवालय इस करार की सदस्यता में विस्तार करने के लिए आवश्यक कार्रवाई शुरू करेगा और सचिवालय के आप्टा से संबंधित कार्यकलापों पर सदस्य राष्ट्रों द्वारा सकारात्मक विचार किया जाना है।

मेकांग गंगा सहयोग (एमजीसी)

एमजीसी की रूपरेखा के अन्दर सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देने के लिए भारत ने 5-12 सितम्बर 2007 तक कंबोडिया, लाओपीडीआर, म्यांमा, थाईलैंड और वियतनांम से आए लगभग 100 बौद्ध तीर्थयात्रियों के एक प्रतिनिधिमंडल की मेजबानी की। तीर्थयात्रियों ने भारत में अपने प्रवास के दौरान पटना, पावापुरी, राजगीर, नालंदा, बोधगया, वाराणसी और सारनाथ की यात्रा की। तीर्थयात्रियों को भारत आने और जाने की यात्रा के उद्देश्य से एक विशेष एयर इंडिया के वायुयान को भाड़े पर लिया गया था। अन्तर्राष्ट्रीय यात्रा के साथ-साथ आवास एवं भोजन से संबंधित सभी व्यय भारत सरकार द्वारा वहन किया गया।

एशियाई सहयोग वार्ता (एसीडी)

एशियाई सहयोग वार्ता के विदेश मंत्रियों की छठीं बैठक सियाल, कोरिया गणराज्य में जून 2007 को आयोजित की गई। विदेश राज्य मंत्री, श्री ई. अहमद ने इस बैठक में भारत का प्रतिनिधित्व किया। इस बैठक में सदस्य-राष्ट्रों के बीच आईटी के विकास को बढ़ावा देने के प्रति लक्षित सियोल आईटी घोषणा पत्र को पारित किया गया। एसीडी का एक उच्च स्तरीय अध्ययन दल गठित करने का भी निर्णय लिया गया ताकि इसकी भावी दिशा तय की जा सके और सदस्य-राष्ट्रों के बीच ठोस सहयोग हो सके।

विदेश मंत्री ने न्यूयार्क में संयुक्त राष्ट्र महासभा की बैठक के दौरान सितम्बर 2007 में एसीडी की मंत्रीस्तरीय बैठक में भाग लिया। मंत्री ने एशिया महाद्वीप में क्षेत्रीय स्थिति पर चर्चा की और चल रहे सहयोग के प्रयासों की दल के साथ समीक्षा की। एसीडी के अन्दर सांस्कृतिक क्रियाकलाप शुरू करने के विचार पर मंत्री ने चर्चा की। इस दल ने एसीडी की अगली मंत्री स्तरीय बैठक अक्टूबर 2008 में अस्टाना, कजाख्स्तान में मेजबानी करने की कजाख्स्तान सरकार की पेशकश को नोट किया।

क्षेत्रीय सहयोग के लिए भारतीय महासागर रीम संघ (आईओआर-एआरसी)

तेहरान में मार्च 2007 में आयोजित मंत्रीपरिषद की सातवीं बैठक में भारतीय पक्ष ने प्रगति मैदान, नई दिल्ली में 14-27 नवंबर 2007 तक आयोजित भारतीय अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेले के भाग के रूप में एक आईओआर-एआरसी व्यापार मेला आयोजित करने की घोषणा की जिसमें सात आईओआर-एआरसी सदस्य देश अर्थात इंडोनेशिया, ईरान, दक्षिण अफ्रीका, थाईलैंड, बांग्लादेश, श्रीलंका और तंजानिया ने भाग लिया। एक क्रेता-विक्रेता बैठक भी 14 नवंबर 2007 को आयोजित की गई। मंत्रीपरिषद की बैठक में भारत ने आइटेक कार्यक्रम के अन्तर्गत (1) सूचना प्रौद्योगिकी एवं ई-शासन, और (2) लघु एवं मध्यम उद्यम पर दो विशेष प्रशिक्षण पाठ्क्रम आयोजित करने; और आईओआर-एआरसी देशों के बीच शैक्षणिक आदान-प्रदान को सुकर बनाने और सुदृढ़ करने की पेशकश की। भारत ने लघु एवं मध्यम उद्यमों पर एक विशेष प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किया।

समूह आठ (जी-8)

जर्मन जी 8 प्रेसीडेंसी के निमंत्रण पर प्रधान मंत्री ने 8 जून 2007 को जी 8 और पांच आउटरीच देशों (ब्राजील, चीन, भारत, मैक्सिको और दक्षिण अफ्रीका) की हेइलिजेनडाम्म में आयोजित शिखर बैठक में भाग लेने के लिए जर्मनी की यात्रा की। यह लगातार तीसरा वर्ष था जबकि भारत को जी 8 आउटरीच शिखर बैठक में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया है।

जी 8 और आउटरीच देशों के बीच इन चार मुद्दों पर अर्थात नवाचार, निवेश, ऊर्जा बचत और विकास, विशेष रूप से अफ्रीका में वर्ष 2007 के उत्तरार्द्ध से शुरू होकर इटली में आयोजित जी-8 की वर्ष 2009 की शिखर बैठक तक पूरी की जाने वाली उच्च स्तरीय वार्ता शुरू करना इस बैठक के एक महत्वपूर्ण परिणाम जी-8 और आउटरीच देशों की शिखर बैठक के दौरान प्रधानमंत्री ने जलवायु परिवर्तन और अन्य मुद्दों पर भाषण दिया। पांच आउटरीच देशों की जी 8 देशों के बीच साझी स्थिति का प्रचार-प्रसार करने के लिए पांच आउटरीच देशों ने आर्थिक विकास, वैश्विक शासन, अन्तर्राष्ट्रीय देशों ने आर्थिक विकास, वैश्विक शासन, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, अन्तर्राष्ट्रीय प्रवासन, जलवायु परिवर्तन और दक्षिण-दक्षिण सहयोग जैसे मुद्दों को शामिल कर एक संयुक्त स्थिति दस्तावेज प्रकाशित किया।

हेइलिजेनडाम्म में जी-8 नेताओं की ओ 5 नेताओं के साथ हुई बैठक के पूर्व ओ 5 नेता व्यापक विचार-विमर्श करने के लिए 7 जून 2007 को बर्लिन में मिले। नेताओं ने अपने-अपने उन विश्वासों की फिर से पुष्ट की कि विकासशील देशों द्वारा ऐसी रणनीति एवं पहल को समेकित करने में अवश्य भाग लेना चाहिए जिससे कि वैश्वीकरण और बढ़ते अन्तर-निर्भर विश्व की चुनौतियों का कारगर हल निकाला जा सके। वे साझी रुचि के मुद्दों पर नियमित परामर्श करने और अपनी स्थितियों को समन्वित करने पर भी सहमत हुए। हमारे प्रधानमंत्री ने जर्मनी की अपनी यात्रा के दौरान भावी जी 8 शिखर बैठकों में आउटरीच देशों द्वारा और अधिक सक्रिय भागीदारी निभाने की आवश्यकता पर बल दिया।

एशिया-यूरोप बैठक (एएसईएम)

विदेश मंत्री ने 28-29 मई 2007 को हैम्बर्ग, जर्मनी में आयोजित 8वें एएसईएम के विदेश मंत्रियों की बैठक में भाग लिया। यह एएसईएम में हमारी पहली मंत्रीस्तरीय भागीदारी थी। एशिया-यूरोप बैठक, ईयू सदस्य राज्यों एवं यूरोपीय आयोग को एशिया और आसियान सचिवालय के देशों के निकट लाने के लिए सहयोग और वार्ता की एक अनौपचारिक प्रक्रिया है। दोनों क्षेत्रों के बीच संबंधों को मजबूत बनाने के उद्देश्य से एएसईएम वार्ता राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक मुद्दों का समाधान करता है। एएसईएम प्रक्रिया के नए सदस्य के रूप में भारत को शामिल करने का निर्णय सितंबर 2006 में हेलसिंकी में आयोजित एएसईएम शिखर बैठक में लिया गया था।

भारत, ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका (इब्सा)

त्रिपक्षीय आयोग की चौथी बैठक 16-17 जुलाई, 2007 को नई दिल्ली, भारत में संपन्न हुई। भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व विदेश मंत्री ने किया और ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका के विदेश मंत्रियों ने त्रिपक्षीय बैठक में भाग लिया।

भारत-साकु-मर्कोसर एफटीए को निष्पादित करने के लिए प्रारंभिक विचार-विमर्श 6 अक्टूबर 2007 को प्रारंभ हुई। तीनों पक्षों के बीच व्यापार एवं आर्थिक संबंधों को बढ़ाने की प्रतिबद्धता की पुष्टि की गई। तीनों देशों के उच्च प्रोफाइल और विशिष्ट पैनल के संपादकों की भागीदारी के साथ संपादकों का प्रथम इब्सा सम्मेलन 3-4 सितंबर 2007 को नई दिल्ली में आयोजित हुई।

प्रधानमंत्री ने 17 अक्टूबर 2007 को प्रिटोरिया में आयोजित

इब्सा मंच की दूसरी बैठक में भाग लिया। शिखर बैठक से पूर्व एक व्यापार मंच, शैक्षिक संगोष्ठी और नई गठित संसदीय एवं महिला मंच की बैठक आयोजित हुई। शिखर बैठक में श्वाने घोषणा पत्र पारित किया गया। लोक प्रशासन एवं शासन, संस्कृति, सामाजिक मुद्दों, स्वास्थ्य एवं दवाएं, लोक प्रशासन, उच्च शिक्षा और सीमा-शुल्क एवं कर प्रशासन सहयोग जैसे क्षेत्रों में सात समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। वर्ष 2010 तक 15 बिलियन का अन्तर-इब्सा व्यापार लक्ष्य प्राप्त करने पर सहमति हुई।

आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (ओईसीडी)

आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (ओईसीडी) के महासचिव ने इस संगठन द्वारा भारतीय अर्थव्यवस्था की, की गई अब तक का पहला सर्वेक्षण जारी करने के लिए अक्टूबर 2007 में भारत की यात्रा की। वर्ष 2001 से भारत, ओईसीडी के अन्तर्गत एक अर्द्ध-स्वतंत्र निकाय ओईसीडी विकास केन्द्र का सदस्य है। भारत ने स्टील समिति (वर्ष 2000 से), राजकोषीय मामले (वर्ष 2006 से) और उपभोक्ता नीति (वर्ष 2007 से) सहित कई समितियों में पर्यवेक्षक के रूप में भाग लिया है।

एपीईसी

एपेक सदस्य पर 10 वर्षीय सदस्यता पर विलम्बन-काल समाप्त होने के साथ सितंबर 2007 में सिडनी में आयोजित एपेक शिखर बैठक में सदस्यता मुद्दे पर विचार किया गया और वर्ष 2010 तक एपेक सदस्यता पर विलम्बन जारी रखने का निर्णय लिया गया। एपेक सदस्यता पर भारत का विचार वर्ष 1991 से यह रहा है कि यदि एपेक सदस्यों के बीच सर्वसम्मति से हमारी सदस्यता का समर्थन किया जाता है तो हम एपेक से जुड़ने पर विचार करेंगे।

■■

11 तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग तथा विकास में भागीदारी

भारतीय तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग (आई टी ई सी) कार्यक्रम तथा इसके सहोदरा कार्यक्रम, अफ्रीका कार्यक्रम के लिए विशेष राष्ट्रमंडल सहायता (एस सी ए ए पी) अनुभवों की भागीदारी, प्रौद्योगिकी अंतरण तथा क्षमता निर्माण पर केन्द्रित थी; विकासशील विश्व के साथ भारत के संबंधों का यह एक महत्वपूर्ण घटक था। उनके देशों में आईटेक कार्यक्रम की उपयोगिता तथा प्रासंगिकता कार्यक्रम में भागीदारों की बढ़ती हुई संख्या से परिलक्षित होता है। साथ ही साथ यह अफ्रीका, एशिया, लैटिन अमेरिका तथा कैरिबियाई विकासशील देशों के मंत्रियों एवं अधिकारियों द्वारा अपने भारतीय समकक्षों के साथ द्विपक्षीय बैठकों अन्य विभिन्न मंचों पर बताया जाता है।

आईटेक (आई टी ई सी) और स्कॉप (एस सी ए ए पी) ने असैनिक एवं रक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अर्न्तगत भारत में सरकारी तथा निजी दोनों ही क्षेत्रों की संस्थाओं द्वारा संचालित प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए बहुत अधिक संख्या में भागीदारों निरन्तर को आकृष्ट किया। 156 विकासशील देशों के सरकारी तथा अन्य क्षेत्रों में लगभग 4700 व्यावसायिकों ने अपने लिए उपयोगी तथा महत्वपूर्ण क्षेत्रों वाले पाठयक्रमों में भाग लिया। इस मामले को सुविधाजनक बनाने के लिए केवल आई टी ई सी तथा एस सी ए ए पी के आवेदकों के लिए ही एक वेबसाइट तैयार की गई थी और इस वर्ष के दौरान इसे चालू किया गया और प्रशिक्षण कार्यक्रमों की एक विवरणिका अंग्रेजी के अतिरिक्त अरबी, फ्रेंच, पुर्तगाली, स्पेनिश और रुसी पाँच भाषाओं में निकाली गई (156 आई टी ई सी भागीदार देशों की सूची परिशिष्ट XV में दी गई है)।

असैनिक प्रशिक्षण कार्यक्रम

यह कार्यक्रम पूर्णरूपेण भारत सरकार द्वारा प्रायोजित है जिसके पैनल में 43 संस्थाएं हैं जहां कार्यरत व्यावसायिकों के लिए व्यापक आधार वाले एवं विभिन्न प्रकार के कौशल एवं विषयों पर मुख्य रूप से 220 अल्पकालिक पाठ्यक्रम संचालित किए गए।

अनिवार्यतः द्विपक्षीय होते हुए भी हाल के वर्षों में आई टी ई सी कार्यक्रम की गतिविधियों के क्षेत्र में वृद्धि हुई है और यह क्षेत्रीय एवं बहुपक्षीय संगठनों के साथ संबद्ध हुआ है। इन संगठनों एवं समूहों में दक्षिण पूर्व एशिया संघ राष्ट्र (आसियान) के सदस्य देश, जी-15, बहुक्षेत्रीय तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग के लिए बंगाल की खाड़ी की पहले (विम्सटेक), मिकांग गंगा सहयोग (एम जी सी), अफ्रीकी संघ (ए यू), एफ्रो-एशियाई ग्रामीण विकास संगठन (ए ए आर डी ओ), पैन अफ्रीकी संसद, कैरिबियाई समुदाय (कैरीकॉम) राष्ट्रमंडल तथा विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यू ओ टी) शामिल हैं।

अनुरोध के प्रत्युत्तर में वर्ष के दौरान निम्नाखित विशेष पाठयक्रम संचालित किए गएः- (i) दक्षिण भारत वस्त्र अनुसंधान संघ (एस आई टी आर ए), कोयम्बटूर द्वारा 16-30 जून 2007 तक फ्रैंकोफोन अफ्रीका अर्थात सी 4 तथा अन्य पश्चिमी अफ्रीकी देशों के लिए "कपास की खेती, गुणवत्ता पहलू तथा मूल्य वर्धन" संबंधी विशेष पाठयक्रम ; (ii) राष्ट्रमण्डल के लिए भारत के प्रशासनिक स्टाफ कालेज (ए एस सी आई) तथा राष्ट्रीय सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम संस्थान (एन आई एम एस एम ई), हैदराबाद द्वारा संयुक्त रूप से 4-15 फरवरी, 2007, 2-13 जुलाई, 2007 तथा 5-16 नवम्बर 2007 तक "अफ्रीका तथा दक्षिण एशिया में एस एम ई क्षेत्र से संबंधित ईक्विटी निधि तथा महा प्रबंधकों के लिए क्षमता विकास" पर 3 विशेष पाठयक्रम; (iii) एन आई टी, नई दिल्ली द्वारा 6 अगस्त से 26 अक्तूबर, 2007 तक 24 इक्वेडोरियनों के लिए अंग्रेजी और आई टी पर 02 विशेष पाठ्यक्रम जिसके पश्चात जनवरी 2008 में 36 इक्वेडोरियनों के लिए शुरू होने वाला दूसरा विशेष पाठ्यक्रम; (iv) राष्ट्रीय सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम संस्थान (एन आई एम एस एम ई), हैदराबाद द्वारा 27 अगस्त-5 अक्तूबर 2007 तक भारतीय महासागर रिम-क्षेत्रीय सहयोग संघ (आई ओ आर ए - आर सी) के सदस्य देशों की भागीदारों के लिए विशेष पाठ्यक्रम; (v) 26 नवम्बर 2007 से 25 जनवरी 2008 तक "बकरियो में वीर्य एवं भ्रूण का प्रत्यारोपण" के बारे में केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, माबदूम, मथुरा में मंगोलियाई वैज्ञानिकों के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम।

विदेश मंत्रालय के आई टी ई सी/ एस सी ए ए पी कार्यक्रम के अर्न्तगत असैनिक प्रशिक्षण पाठयक्रम संचालित करने वाल संस्थानों की सूची परिशिष्ट XVI में दी गई है।

रक्षा प्रशिक्षण

रक्षा सेवाओं के तीनों विंगों अर्थात थल सेना, नौसेना तथा वायुसेना से रक्षा प्रशिक्षण में बढ़ती हुई रुचि का पता चलता है जिसके अर्न्तगत 61 देशों के 572 अधिकारी/प्रशिक्षणार्थी आते हैं जो कि पिछले वर्ष के विभिन्न रक्षा प्रशिक्षण संस्थाओं में प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले 36 देशों के 388 प्रतिभागियों से अधिक है। ये पाठयक्रम सामान्य एवं विशिष्ट प्रकृति के थे और इनमें सुरक्षा और सामाजिक अध्ययन, रक्षा प्रबंधन, तोपखाना, इलैक्ट्रानिकी, यांत्रिक अभियंत्रण, समुद्री जल-सर्वेक्षण , उपद्रवरोधी एव गुरिल्ला युद्ध तथा साथ ही तीनों सेनाओं के युवा अधिकारियों के लिए आधारभूत पाठयक्रम शामिल थे। राष्ट्रीय रक्षा कॉलेज (एन डी सी), नई दिल्ली तथा रक्षा सेवा स्टाफ कालेज (डी एस एस सी), वेलिंगटन के लिए आवेदन 3;1 के अनुपात में अधिक प्राप्त हुए और यह भी देखने को मिला कि विकसित देशों के अधिकारी स्व-वित्त पोषित आधार पर भी इनमें भाग ले रहे हैं। रक्षा प्रशिक्षण की विस्तृत सूची परिशिष्ट XVII में दी गई है।

विशेषज्ञों की प्रतिनियुक्ति

सरकारों एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के अनुरोध पर असैनिक एवं रक्षा क्षेत्र में 49 विशेषज्ञ प्रतिनियुक्त किए गए और सूचना प्रौद्योगिकी, लेखा-परीक्षण, विधिक सुविज्ञता, कृषि के विविध क्षेत्रों, फार्माकॉलोजी, सांख्यिकी एव जननांकिकी, लोक प्रशासन तथा वस्त्र सहित विभिन्न क्षेत्रों में सलाह देने एवं सुविज्ञता प्रदान करने के लिए 17 देशों में पदासीन रहे। प्रशिक्षण एव सलाहकारी क्षमता में रक्षा दलों की सेवाएं लाओ पी डी आर, लेसोथो, सेशल्स और जाम्बिया द्वारा प्राप्त की गईं।

अन्य सहायता

इक्वेडोर सरकार के अनुरोध पर भारत द्वारा दान स्वरूप में दी गई। 01 मिलियन अमरीकी डालर मूल्य की दवाइयों की सपुर्दगी इस वर्ष के दौरान शुरू हुई।

विकास भागीदारी एवं परियोजना सहयोग

वर्ष 2007-08 में मुख्य रूप से पुरातात्विक संरक्षण , पर्यटन तथा आतिथ्य, सूचना प्रौद्योगिकी (आई टी) तथा लघु एवं मध्यम उद्यमों (एस एम ई) के क्षेत्रों में कई द्विपक्षीय परियोजनाएं शुरू की गईं। द्विपक्षीय सहयोग कार्यक्रम के अन्तर्गत अपने वाली परियोजनाएं चालू परियोजनाओं की दीर्घ-कालिक निरन्तरता सुनिश्चित करने के लिए अपेक्षित भौतिक अवसंचरना तथा क्षमता निर्माण की अवस्थापना पर ही केन्द्रित थीं।

क्रियान्वित की जा रही मुख्य परियोजनाओं में निम्नलिखित शामिल हैं ;-

मालदीवः आतिथ्य एवं पर्यटन अध्ययन के अध्ययन के भारत मालदीव मैत्री संकाय से संबंधित सिविल निर्माण कार्य शुरू हुआ और वर्ष 2009-10 के मध्य तक के पूरा हो जाने की आशा है।

कम्बोडियाः यूनेस्को और स्थानीय सरकारी प्राधिकारियों के अनुमोदन के पश्चात ता-पोहम मन्दिर के विश्व विरासत स्थल पर भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ए एस आई) द्वारा संरक्षण एव पुनः स्थापन कार्य तेजी से आगे बढ़ा।

इंडोनेशियाः जून 2007 में असेह स्थित निर्माण क्षेत्र में व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित करने के लिए इन्डोनेशिया सरकार के साथ एक द्विपक्षीय करार सम्पन्न हुआ।

लाओ लोक गणतंत्रीय गणराज्य (लाओ पी डी आर): (क) ए एस आई द्वारा निष्पादित किए जाने वाले वात फू के यूनेस्को विश्व विरासत स्थल पर संरक्षण एवं पुनर्स्थापन कार्य को करने के लिए लाओ पी डी आर सरकार के साथ एक द्विपक्षीय करार सम्पन्न किया गया; (ख) लाओ पी डी आर में सूचना प्रौद्योगिकी अवसंरचना को सुदृढ़ करने के लिए एक सूचना प्रौद्योगिकी परियोजना निर्बाध रूप से चलती रही; (ग) लाओ पी डी आर के 30 छात्रों को इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय दिल्ली में 3 वर्षीय मास्टर ऑफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन (एम सी ए) कार्यक्रम में निरन्तर शामिल किया गया; (घ) पायलट ग्रामीण टेली-सेंटर स्थापित करने के लिए व्यवहार्यता अध्ययन संचालित किया गया।

वियतनामः हनोई में भारत सरकार द्वारा प्रतिबद्ध एक उन्नत संसाधन केन्द्र स्थापित करने के लिए परियोजना को कार्यान्वित करने के तौर-तरीकों पर आगे बातचीत की गई।

जिम्बाब्वेः लघु एवं मध्यम उद्यम के क्षेत्र में एक केन्द्र स्थापित करने के लिए जिम्बाब्वे सरकार के साथ 2006 में हुआ एक द्विपक्षीय करार लगभग पूरा हुआ।

लैटिन अमरीकी और कैरेबीयाई (एल ए सी) क्षेत्रः सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में एल सेल्वाडोर, हांडुरास, निकारागुआ एवं जमैका में 4 सूचना प्रौद्योगिकी केन्द्र स्थापित करने के लिए एल ए सी क्षेत्र में स्थित 4 देशों के साथ करार सम्पन्न हुए।

ग्रेनाडाः ग्रेनाडा में एक सूचना प्रौद्योगिकी केन्द्र भी स्थापित किया जा रहा है।

उपर्युक्त परियोजनाओं के अतिरिक्त अन्य बहुत सी परियोजनाएं स्वास्थय देखभाल सेवाओं जैसे क्षेत्रों में क्रियान्वयन के विभिन्न चरणों में हैं तथा एन्टीगुआ और बारबुडा में एक साफ्टवेयर प्रौद्योगिकी पार्क तथा सीवेज शोधन संयंत्र स्थापित करने; असेह, इन्डोनेशिया में एक प्रशासनिक स्टाफ कालेज स्थापित करने तथा लाओ पी डी आर में एक न्यूरो-स्पेशियालिटी अस्पताल की

एक परियोजना हेतु व्यवहार्यता अध्ययन सहित अवसंरचना स्थापित करने हेतु परामर्शी सेवाएं प्रदान की जा रही हैं।

आपदा राहत के लिए सहायता

आपदा राहत सहायता के अर्न्तगत भारत ने प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित देशों को तत्काल राहत सहायता प्रदान की; (क) 2000 मी. टन चावल की एक खेप मानवीय सहायता के तौर पर जलयान से उत्तरी कोरिया भेजी गई; (ख) मंगोलिया को 5000 मी. टन चावल तथा 5000 मी. टन चीनी की आपूर्ति की गई; (ग) बोलिविया तथा सोलोमन द्वीपों में चक्रवात तथा बाढ़ों सहित प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित कई देशों को दवाइयाँ या वित्तीय सहायता दी गई; (घ) बेलीज, मैक्सिको, हैती तथा डोमिनियन रिपब्लिक को चिकित्सा एवं वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए भी कार्रवाई शुरू की गई।

■■

निवेश और प्रौद्योगिकी संवर्धन 12

निवेश और प्रौद्योगिकी संवर्धन प्रभाग का वार्षिक प्रकाशन "इंडिया डाइनेमिक बिजनेस पार्टनरः इन्वेस्टर फ्रैन्डली डेस्टीनेशन" जून 2007 में प्रकाशित किया गया और विदेश स्थित सभी मिशनों/केन्द्रों, भारत सरकार के अन्य अभिकरणों, शीष चैम्बर ऑफ कामर्स और उद्योग इत्यादि में परिचालित किया गया। इस प्रकाशन को इस उद्देश्य के साथ तैयार किया गया है कि यह अपने पाठकों को भारत की आर्थिक प्रगति, क्षेत्रवार विकास, सामाजिक एवं विधिक परिप्रेक्ष्य तथा संभावित व्यापार और निवेश के अवसरों की पूरी जानकारी दें। इसका अधिकाधिक पहुंच सुनिश्चित करने और प्रयोक्ता अनुकूल बनाने के उद्देश्य से प्रकाशन के साथ एक सीडी रूपांतर भी संलग्न किया गया है और यह जापानी, चीनी, रूसी, जर्मन, फ्रैंच, इटली स्पेनिश और अरबी भाषा में उपलब्ध है।

आईटीपी प्रभाग अपने विस्तृत निवेश तथा व्यापार ब्रीफ के जरिए बाजार की रणनीति पर सलाह देना और निर्यात के अवसरों और व्यापार की प्रवृत्तियों पर अपने उद्यमियों और नीति निर्माताओं को वैश्विक परिप्रेक्ष्य प्रदान करना जारी रखे हुए है। यह ब्रीफ विदेश स्थित अपने सभी मिशनों के लिए एक उपयोगी दस्तावेज होता है और यह भारतीय अर्थव्यवस्था में हमारे व्यापार और निवेशों से संबंधित तथ्य एवं आंकड़ों के साथ-साथ नवीनतम घटनाक्रमों की जानकारी देता है और उनके स्वयं के संवर्धनात्मक कार्यकलापों में मदद करता है।

इस प्रभाग की वेबसाइट www.indiainbusiness.nic.in जो भारतीय कूटनीति के आर्थिक और वाणिज्यिक पहलुओं के प्रति विशेष रूप से समर्पित है, को भारत में अवसरों के विषय में वैश्विक निवेशकों और व्यापारियों को व्यापक और नवीनतम सूचना प्रदान करने के उद्देश्य से नई विशिष्टताओं और हाइपरलिंकों के साथ एक नया रूप दिया गया है। यह वेबसाइट सूचना का एक उपयोगी और विश्वसनीय स्रोत है जो कि प्रभाग द्वारा बड़ी संख्या में व्यापार और निवेश से संबंधित होने वाले पूछताछों से स्पष्ट है। इससे निवेश एवं व्यवसाय के लिए आकर्षक संभावनाओं वाली एक स्थापित आर्थिक शक्ति के रूप में भारत की छवि को प्रदर्शित करने में भी मदद मिली है।

इस प्रभाग ने विदेशी निवेश संवर्धन बोर्ड, भारतीय रिजर्व बैंक, व्यापार बोर्ड और अर्थव्यवस्था में सुधार और उदारीकरण तथा निवेश की प्रक्रिया को सरल बनाने तथा भारत में विदेशी कंपनियों के द्वारा संपर्क/शाखा कार्यालय खोलने से संबंधित प्रस्तावों की प्रक्रिया तत्परता से निपटाने से संबंधित अन्य नीति संबंधी बैठकों में सक्रिय रूप से भाग लिया।

प्रभाग ने भारतीय निर्यात तथा निवेश के पहलों को बढ़ावा देने के लिए निर्यात संवर्धन परिषदों, सीआईआई, फिक्की, नासकोम, एसौचेम, वाणिज्य विभाग और डीआईपीपी जैसे व्यापार और उद्योग निकायों के साथ तालमेल किया। इन संगठनों और संबंधित सरकारी एजेंसियों द्वारा प्रकाशित पत्रिकाओं, जर्नलों और अन्य संगत सूचनाओं को विदेश स्थित भारतीय मिशनों को नियमित रूप से परिचालित किया गया ताकि उन्हें सूचना प्रौद्योगिकी, जैव प्रौद्योगिकी और फार्मास्यूटिकल्स जैसे ज्ञान-आधारित उद्योगों में हुई विभिन्न प्रगति से अद्यतन रखा जा सके।

भारत तथा विश्व के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों को विमान-सेवा से जोड़ने के अपने प्रयासों के भाग के रूप में आईटीपी प्रभाग मलेशिया, टर्की, जार्डन, ग्रीस, संयुक्त अरब अमीरात, सिंगापुर और रूस सहित कई देशों के साथ द्विपक्षीय नागर विमानन संबंधी वार्ताओं में सक्रिय रूप से भाग लिया और सकारात्मक योगदान दिया।

विदेश मंत्रालय में सितम्बर 2007 में एक नई ऊर्जा संरक्षण यूनिट स्थापित की गई है और आईटीपी प्रभाग के साथ उसे संबद्ध किया गया है। यह यूनिट, अन्य बातों के साथ-साथ संबंधित मंत्रालयों के साथ गहन समन्वय बनाए रखेगा और समुचित तथा दीर्घकालिक राजनयिक हस्तक्षेपों के माध्यम से उनके अन्तर्राष्ट्रीय कार्यकलापों में सहायता देगा। सार्वजनिक एवं निजी दोनों प्रकार की हमारी निगमित इकाइयों को विदेशों में ऊर्जा संबंधी परिसंपत्तियों को अधिगृहीत करने, भारत में नई और उभरती प्रौद्योगिकी अंतरित करने और विदेशी कंपनियों के साथ सामरिक भागीदारी निर्मित करने के प्रयासों को सहायता देने की जिम्मेवारी भी इस प्रभाग को सौंपी गई है।

इस प्रभाग ने ऊर्जा मामलों के संबंध में हुई सरकारी/गैर-सरकारी बैठकों में सक्रिय रूप से भाग लिया और अपने मिशनों के नेटवर्क के जरिए भारतीय कंपनियों के कार्य को सुकर बनाया। देश के लिए ऊर्जा संरक्षण सुनिश्चित करने के अपने प्रयासों के भाग के रूप में पैट्रोलियम मंत्रालय और भारतीय

वाणिज्य एवं उद्योग मंडल परिसंघ द्वारा 6-7 नवंबर 2007 को नई दिल्ली में संयुक्त रूप से आयोजित इंडो-अफ्रीकन हाइड्रोकार्बन प्रदर्शनी एवं सम्मेलन के दौरान कई अफ्रीकी देशों की मंत्री स्तरीय भागीदारी सुनिश्चित करने में इस प्रभाग ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

आईटीपी प्रभाग ने अमरीका-भारत कृषि ज्ञान पहल पर एक संगोष्ठी के लिए आंशिक वित्तीय सहायता प्रदान की जो कि अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक संबंधों पर भारतीय अनुसंधान परिषद (आईसीआरआइईआर) द्वारा सफलतापूर्वक नई दिल्ली में 30 अप्रैल 2007 को आयोजित की गई।

यह प्रभाग भारत के राजनीतिक, आर्थिक एवं वाणिज्यिक हितों के संवर्धन के लिए रियायती शर्तों पर लाइन्स ऑफ क्रेडिट के उपयोग की नीति के अनुसरण में सक्रियतापूर्वक लगा रहा। अप्रैल-नवम्बर 2007 की अवधि के दौरान 365 मिलियन अमरीकी डालर की एलओसी की राशि संवितरण हेतु एक करार अनुमोदित की गई। इस एलओसी से भारतीय कंपनियों को अफ्रीका, एशिया और लाटीन अमरीका के कई देशों में सेवाओं और सामानों की आपूर्ति के लिए आदेश तथा प्रोजेक्ट के कांट्रैक्ट्स हासिल करने में मदद मिली है।

■■

नीति आयोजना और अनुसंधान 13

नीति आयोजना और अनुसंधान प्रभाग, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) तथा इससे संबंधित संस्थाओं और विभिन्न विश्वविद्यालयों में अवस्थित क्षेत्रीय अध्ययन केंद्रों (एएससी) के साथ अंतःक्रिया करने के लिए एक शीर्ष बिंदु के रूप में कार्य करता है और इसे विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में अनुसंधान में विशेषज्ञता प्राप्त है।

प्रभाग ने देश के विभिन्न भागों में स्थित विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं/ विचार केंद्रों (थिंक टैंकों) को भारत के विदेश संबंधों तथा सुरक्षा से संबंधित मुद्दों पर सम्मेलनों, संगोष्ठियों के आयोजन, अनुसंधान पत्र तैयार करने, विद्वानों के आदान-प्रदान और ट्रैक-II कार्यक्रमों के लिए सहायता हेतु वित्तीय सहायता प्रदान की। नीति आयोजना तथा अनुसंधान प्रभाग द्वारा आंशिक रूप से निधि पोषित ऐसी संगोष्ठियों/सम्मेलनों/बैठकों/ अध्ययन परियोजनाओं की एक सूची परिशिष्ट XIV में दी गयी है जिनका आयोजन/निष्पादन संस्थाओं/ गैर-सरकारी संगठनों ने किया। नीतिगत अनुसंधान और विश्लेषण में विशेषज्ञता प्राप्त विशेषज्ञों और संस्थाओं का कंप्यूटरीकृत डाटाबेस भी इस प्रभाग द्वारा तैयार किया गया है और इसे नियमित आधार पर अद्यतन किया जाता है।

नीति आयोजना और अनुसंधान प्रभाग मंत्रिमंडल के लिए मासिक सार यथावत जारी करता रहा। इसमें माह के दौरान विश्व के विभिन्न देशों के साथ भारत के संबंधों का व्यापक क्षेत्र समाहित किया जाता है।

यह प्रभाग मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट का संपादन और प्रकाशन भी यथावत करता रहा। यह रिपोर्ट शेष विश्व के साथ राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों, जिनमें अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के विभिन्न पहलुओं पर सरकार के विचार शामिल हैं, में भारत के संबंधों के एक सार संग्रह का कार्य करती है।

प्रभाग ने विदेश स्थित कुछ भारतीय मिशनों और केंद्रों में स्थापित व्यापार केंद्रों के कार्यकरण और मिशनों द्वारा रिपोर्टिंग की विषय-वस्तु, क्षेत्र और आवृत्ति की भी समीक्षा की।

प्रभाग देश में आने वाले विदेशी प्रकाशनों में भारत की अन्य देशों के साथ लगने वाली सीमाओं के चित्रण की संवीक्षा के लिए भी उत्तरदायी रहा और इसने इस मामले से संबंध रखने वाले मंत्रालयों को अपना परामर्श भी दिया। इसने विभिन्न सरकारी तथा अर्ध-सरकारी कार्यालयों और अनुसंधान अध्येताओं को भारतीय सर्वेक्षण के साथ अपने सरकारी कार्य में प्रयोग के लिए मानचित्र-पत्रकों की आपूर्ति का समन्वयन भी किया। प्रभाग ने मंत्रालय के पुराने अभिलेखों को देखने के अनुसंधान अध्येताओं के अनुरोधों पर भी कार्रवाई की।

सीमा प्रकोष्ठ

मंत्रालय में एक सीमा प्रकोष्ठ की स्थापना की गयी है। यह प्रकोष्ठ सभी क्षेत्रीय प्रभागों को अंतर्राष्ट्रीय सीमा से संबंधित मुद्दों पर तकनीकी सहायता प्रदान करता है। इसने भारत की बाह्य सीमा सहित सीमा पट्टी वाले मानचित्रों के लिए एक डाटाबेस निर्मित करना आरंभ कर दिया है। वर्ष 2007-08 के दौरान इसने सीमा पट्टी वाले मानचित्रों (स्ट्रिप मैप्स) के अभिलेखन और अंकीयकरण और भारत की अंतर्राष्ट्रीय सीमा को समाहित करते हुए भारतीय सर्वेक्षण द्वारा प्रकाशित स्थलाकृतिक मानचित्रों का अंकीय तथा हार्डकापी के रूप में अभिलेखन करने का कार्य भी आरंभ किया। सीमा प्रकोष्ठ ने भारत की बाह्य सीमाओं के बारे में बातचीत रेखांकन और चिह्नांकन के लिए पड़ोसी देशों के साथ विभिन्न द्विपक्षीय अंतर्राष्ट्रीय बैठकों में भी भाग लिया है।

■■

14 प्रोतोकोल

अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय के साथ भारत के बढ़ते हुए संबंधों के परिणामस्वरुप भारत में विदेशी गणमान्य व्यक्तियों की यात्राएं अधिक हुई हैं। अप्रैल-दिसम्बर 2007 की अवधि के दौरान राज्याध्यक्ष/उप प्रधानमंत्री/शासनाध्यक्ष/विदेश मंत्री स्तर पर 78 यात्राएं हुई थीं। दिल्ली स्थित विदेश के अवासी राजनयिक मिशनों की संख्या जो 2003 में 116 थी, वर्ष 2007 में बढकर 132 हो गई है। दिल्ली स्थित राजनयिक मिशनों में विदेशी प्रतिनिधियों की संख्या में भी वृद्धि हो रही है जिसमें 2007 में 80 पदों की वृद्धि हुई। वर्ष 2007 के दौरान तीन देशों अर्थात बहरीन (फरवरी, 2007), मलावी (26 मार्च 2007) और माल्टा (19 मार्च 2007) ने दिल्ली में अपने अवासी मिशन खोलें। जर्मनी ने बंगलौर में और चीन ने कोलकाता में अपना एक कोंसलावास खोला। मुंबई में कोंसलावास खोलने के लिए तुर्की को , नई दिल्ली में कोंसलावास खोलने के लिए लिथुआनिया को तथा बंगलौर में अपना कोंसलावास खोलने के लिए जापान को अनुमति दी गई। इसके अतिरिक्त, 18 देशों को नई दिल्ली, कोलकाता, मुम्बई, बंगलौर और चेन्नई में महा कांसुल जनरल नियुक्त करने की अनुमति प्रदान की गई। प्रोतोकोल ने वर्ष 2007 के दौरान 28 प्रत्ययपत्र समारोहों, सरकारी आतिथ्य-सत्कार एवं बहुत से अन्य कार्यक्रमों का संचालन किया। प्रोतोकोल मापदण्डों एवं मानकों को सरल एवं कारगर बनाने के कार्य पर विशेष ध्यान दिया जाता रहा। पात्र विदेशी मिशनों, राजनयिकों एवं कांसुल अधिकारियों के लिए पारस्परिकता के आधार पर सेवा कर छूट की रुपरेखा को क्रियान्वित किया गया।

सम्मेलन प्रकोष्ठ ने निम्नलिखित सम्मेलनों के आयोजन में मदद की :-

- 03-04 अप्रैल 2007 को चौदहवाँ सार्क शिखर सम्मेलन, नई दिल्ली ;
- 19-20 अप्रैल 2007 को विधिक एवं कानूनी प्रवर्तन मसलों से संबद्ध बिम्सटेक जे डब्लयू
- जी-सी टी टी सी उव-समूह की तीसरी बैठक, नई दिल्ली;
- 13 और 16-17 जुलाई, 2007 को चौथी आई बी एस ए त्रिपक्षीय संयुक्त आयोग की बैठक, नई दिल्ली
- 07-08 दिसम्बर 2007 को उनतीसवीं सार्क मंत्रिपरिषद की बैठक, नई दिल्ली।

वर्ष 2007 के दौरान यात्राएं

राज्याध्यक्ष/शासनाध्यक्ष/उपराष्ट्रपति तथा समकक्ष स्तर की राजकीय यात्राएं

क्रम	गणमान्य व्यक्ति	तारीख
1	महामहिम प्रो अनिबल कैवाको सिल्वा, पुर्तगाल के राष्ट्रपति	10-17 जनवरी
2	महामहिम श्री रोमनो प्रोदी, इटली के प्रधानमंत्री	10-15 फरवरी
3	महामहिम शेख मोहम्मद बिन राशिद अल मकतूम, उपराष्ट्रपति और यू ए ई के प्रधानमंत्री, दुबई के शासक	25-26 मार्च
4	महामहिम श्री एलेक्सैण्डर लुकासेन्को, बेलारुस के राष्ट्रपति	15-17 अप्रैल
5	महामहिम श्री लुई इनासियो लूला डा सिल्वा, ब्राजील के राष्ट्रपति	03-05 जून
6	महामहिम जनरल सुरायुद चुलानॉत, थाईलैण्ड के प्रधानमंत्री	25-27 जून
7	महामहिम श्री न्यूगेन तान डुंग, वियतनाम के प्रधानमंत्री	04-06 जुलाई
8	महामहिम श्री सामदेच हुन सेन, कम्बोडिया के प्रधानमंत्री	08-11 जुलाई

9	महामहिम श्री शिंजे अबे, जापान के प्रधानमंत्री	21-23 अगस्त
10	महामहिम श्री फिलिप काल्ड्रान हिनोजोसा, मैक्सिको के राष्ट्रपति	10-11 सितम्बर
11	महामहिम श्री सेर्गेई स्टानिशेव, बुल्गारिया के प्रधानमंत्री	10-15 सितम्बर
12	महामहिम श्री ग्लोरिया माकापागल आरोया, फिलिपिन्स के राष्ट्रपति	03-06 अक्तूबर
13	महामान्या नीदरलैण्ड की महारानी बिट्रिक्स	22-27 अक्तूबर
14	महामहिम डा. अन्जेला मरकेल, जर्मनी के चांसलर	29 अक्तूबर से 01 नवम्बर
15	महामान्या श्रीमती माइकेलाइन काल्मी रे, स्विस परिसंघ के राष्ट्रपति	04-08 नवम्बर
16	महामहिम श्री सामदेच हुन सेन, कम्बोडिया के प्रधानमंत्री	07-10 दिसम्बर

राज्याध्यक्ष/शासनाध्यक्ष/उपराष्ट्रपति तथा समकक्ष स्तर द्वारा की गई सरकारी/कार्यकारी यात्राएं

क्रम	गणमान्य व्यक्ति	तारीख
1	महामहिम श्री ब्लादामीर वी पुतिन, रुसी परिसंघ के राष्ट्रपति	25-26 जनवरी
2	महामहिम श्री मामून अब्दुल गयूम, मालदीव के राष्ट्रपति	27 जनवरी से 01 फरवरी
3	महामहिम डॉ. नवीनचंद्र रामगुलाम, मॉरीशस के प्रधानमंत्री	28 जनवरी से 01 फरवरी
4	महामहिम जिग्मे खेसर नामग्येल वांगचुक, भूटान के सम्राट	07-12 फरवरी
5	महामहिम शेख सलमान बीन हामद अल खलीफा, बहरीन के राजकुमार	19-22 मार्च
6	महामान्या महा चकरी सिरीनध्रोन, थाईलैंड की राजकुमारी	05-10 मार्च
7	महामहिम जिग्मे सिंजे वांगचुक, भूटान के सम्राट	26-31 जुलाई
8	महामान्या महा चकरी सिरीनध्रोन, थाईलैंड की राजकुमारी	08-09 अगस्त
9	महामहिम श्री महिन्द्र राजापक्सा, श्रीलंका के राष्ट्रपति	12-14 अक्तूबर
10	महामहिम श्री जोस सुकरात, पुर्तगाल के प्रधानमंत्री	29 नवम्बर से 02 दिसम्बर
11	महामहिम श्री जोस मैनुएल बारॉसो, यूरोपियन कमीशन के राष्ट्रपति	29 नवम्बर से 01 दिसम्बर
12	महामहिम श्री सैयद फहाद बीन मोहम्मद अल सैद, ओमान सलतनत के उप प्रधानमंत्री	12-15 दिसम्बर

विदेश मंत्री और समकक्ष स्तर की सरकारी यात्राएं

1	महामहिम श्री दाई बींगयू, चीन के विशिष्ट प्रतिनिधि	16-20 जनवरी
2	महामहिम श्री जार्ज यो, सिंगापुर के विदेश मंत्री	21-24 जनवरी
3	महामहिम श्री रोहिता बोगोलागमा, श्रीलंका के विदेश मंत्री	30 जनवरी से 01 फरवरी
4	आर्कविशप डेसमंड टूटू, दक्षिण अफ्रीका के नोबल विजेता	29 जनवरी से 01 फरवरी
5	महामहिम श्री लीजोजिंग,चीन के विदेश मंत्री	11-14 फरवरी
6	भारत, चीन तथा रुसी परिसंघ के विदेश मंत्रियों की पांचवीं त्रिपक्षीय बैठक	14 फरवरी
7	महामहिम श्री डाटो सेरी सैयद हमीद अलबर, मलेशिया के विदेश मंत्री	14-16 फरवरी

8	महामहिम सुश्री बेनिता फेरेरो वाल्डनर, विदेशी मामलों के यूरोपीयन संघ के आयुक्त	15-20 फरवरी
9	महामहिम श्री जीन असेलर्बोन, लक्समबर्ग के उप प्रधानमंत्री तथा विदेश मंत्री	19-23 फरवरी
10	महामहिम श्री खुर्शीद महमूद कसौरी, पाकिस्तान के विदेश मंत्री	20-23 फरवरी
11	महामहिम श्री सरगेई मार्तिनोव, बेलारुस के विदेश मंत्री	21-24 फरवरी
12	महामहिम श्री फाम गिया खेम, वियतनाम के उप प्रधानमंत्री तथा विदेशमंत्री	25 फरवरी से 01 मार्च
13	महामहिम श्री रातु इपेली नाईलाटिकाउ, फिजी द्वीप के विदेश मंत्रा	03-06 मार्च
14	महामहिम श्री फ्रांसिस्को ई लाइनेज,अल सलवाडोर के विदेश मंत्री	04-09 मार्च
15	महामहिम डा. उर्सुला प्लास्निक, आस्ट्रिया के विदेश मंत्री	15-19 मार्च
16	परम माननीय डान मैकिनोन, राष्ट्रमंडल महा सचिव	21-23 मार्च
17	महामहिम श्री डाटो सेरी पंगलिमा सैयद हमीद अलबर, मलेशिया के विदेश मंत्री	09-10 अप्रैल
18	महामहिम श्री सेल्सो अमोरिम, ब्राजील के विदेश मंत्री	10-14अप्रैल
19	महामहिम श्री फिलिप पेरेज रॉकी, क्यूबा के विदेश मंत्री	11-12 अप्रैल
20	महामहिम श्री दाय बिंगुआ, चीन के विशिष्ट प्रतिनिधि	19-24 अप्रैल
21	महामहिम श्री कार्ल बिल्ड, स्वीडन के विदेश मंत्री	01-07 मई
22	महामहिम श्री होर नामहोंग, कम्बोडिया के उप प्रधानमंत्री तथा विदेश मंत्री	17-19 मई
23	महामहिम शेख अबदुल्ला बीन जायेद अल नहयान, संयुक्त अरब अमीरात के विदेश मंत्री	05-06 जून
24	(भारत, ब्राजील तथा दक्षिण अफ्रीका के विदेश मंत्रियों की) आई बी एस ए त्रिपक्षीय बैठक	14-18 जुलाई
25	महामहिम श्री वालिद अल मौलेम, सिरियाई अरब गणराज्य के विदेश मंत्री	13-15 अगस्त
26	महामहिम श्री गर्त रोसेन्थल,ग्वाटेमाला के विदेश मंत्री	25-31 अगस्त
27	महामहिम श्री मासिमो डी अलेमा, इटली के उप प्रधानमंत्री तथा विदेश मंत्री	09-12 अक्तूबर
28	महामहिम डा पेर स्टीग मोलर, डेनमार्क के विदेश मंत्री	22-24 अक्तूबर
29	महामहिम श्री अबदुल्ला शाहिद, मालद्वीप के विदेश मंत्री	27-29 अक्तूबर
30	महामहिम श्री ली कुआन यू, सिंगापुर के मंत्री मेंटर	28 अक्तूबर से 02 नवम्बर
31	महामहिम श्री जार्ज यो, सिंगापुर के विदेश मंत्री	11-12 नवम्बर
32	महामहिम श्री कारेल स्वारजेनबर्ग, चेक गणराज्य के विदेश मंत्री	18-21 नवम्बर
33	महामहिम श्री ली कुआन यू, सिंगापुर के मंत्री मेंटर	05-07 दिसम्बर
34	सार्क मंत्रीस्तरीय बैठक	03-08 दिसम्बर
35	महामहिम श्री बर्नाड काउचमर, फ्रांस के विदेश मंत्री	20-28 दिसम्बर

राज्याध्यक्ष/शासनाध्यक्ष/उप प्रधानमंत्री तथा प्रथम महिला एवं समकक्ष स्तर की निजी/पारगमन यात्राएं

1	इंडोनेशिया के उप राष्ट्रपति की यात्रा	28 जनवरी से 01 फरवरी
2	महामान्या शेख मुधी बेंट फैसल अल मेरी, बहरीन नरेश की पत्नी	30 मार्च से 06 अप्रैल

3	महामहिम श्री यावेरी कागुता मुसेविनी, यूगांडा के राष्ट्रपति	01 अप्रैल
4	महामहिम श्री एंजेल मरीन, बुल्गारिया के उप राष्ट्रपति	27 अप्रैल
5	महामहिम श्री पाल कगामे, रवांडा के राष्ट्रपति	18-19 मई
6	कुवैत के उप प्रधानमंत्री	03 जून
7	श्रीमती सरोजिनी जुगनाथ, मॉरीशस की प्रथम महिला महा वाजिरा	08-13 जून
8	महामहिम राजकुमार महा वाजिरा लोंगकॉर्न, थाईलैंड	26 जुलाई
9	महामहिम श्री ग्रैंड डयूक हेनरी, लक्जमबर्ग ग्रांड डची के राज्याध्यक्ष	25 अगस्त
10	महामहिम राजकुमार महा वजीरा लोंगकॉर्न, थाईलैंड	08 सितम्बर
11	महामहिम राजकुमार महा वजीरा लोंगकॉर्न, थाईलैंड	21 अक्तूबर
12	महामहिम श्री महमूद अब्बास, फिलिस्तीन राज्य के राष्ट्रपति	24 अक्तूबर
13	महामहिम श्री नेल्सन आडयूबर, अरुबा के प्रधानमंत्री	09-14 दिसम्बर
14	महामहिम श्री एस आर नाथन, सिंगापुर के राष्ट्रपति	10-25 दिसम्बर
15	महामहिम श्री अनिरुद्ध जुगनाथ, मॉरीशस के राष्ट्रपति	13-23 दिसम्बर

भारत के राष्ट्रपति/उप राष्ट्रपति/प्रधान मंत्री की विदेश यात्रा

1	प्रधानमंत्री की सेबू, फिलिपींस की यात्रा (पूर्व एशिया शिखर सम्मेलन)	13-15 जनवरी
2	राष्ट्रपति की स्ट्रासबोर्ग (फ्रांस) तथा ग्रीस की यात्रा	24-28 अप्रैल
3	प्रधानमंत्री की जर्मनी यात्रा (जी-8 सम्मेलन)	06-09 जून
4	प्रधानमंत्री की नाइजीरिया तथा दक्षिण अफ्रीका की यात्रा	14-18 अक्तूबर
5	प्रधानमंत्री की रुस यात्रा	11-13 नवम्बर
6	प्रधानमंत्री की सिंगापुर यात्रा (पूर्व एशिया शिखर सम्मेलन)	20-21 नवम्बर
7	प्रधानमंत्री की यूगांडा यात्रा(सी एच ओ जी एम)	22-25 नवम्बर

01-04-2007 से 18-12-2007 की अवधि के दौरान अपने प्रत्यय पत्र प्रस्तुत करने वाले विदेशी राजदूतों/उच्चायुक्तों की सूची

क्रम	**नाम/देश**	**प्रत्यय-पत्र प्रस्तुत करने की तारीख**
1	महामहिम श्री पेक यंग सुन, कोरिया गणराज्य (आर ओ के) के राजदूत	22-05-2007
2	महामहिम श्री आईहोर पोलिखा , यूक्रेन के राजदूत	22-05-2007
3	महामान्या श्रीमती तेरेसिता वी बर्नर, फिलीपिन्स की राजदूत	22-05-2007
4	महामहिम श्री मोहम्मद घासन शेखो, बहरीन के राजदूत	22-05-2007
5	महामहिम डॉ गेजा पलमई हंगरी के राजदूत	22-05-2007
6	महामहिम श्री लावल मोहम्मद डस्टीन एम ए, नाईजेरिया के उच्चायुक्त	19-07-2007
7	महामहिम श्री जान डब्लयू एच किजाजी, तन्जानिया के उच्चायुक्त	19-07-2007

8	महामहिम श्री ईआन डी ला रीवा डी गुजमान फ्रूटोस, स्पेन के राजदूत	19-07-2007
9	महामहिम श्री विल्फ्रेड केनली, माल्टा के राजदूत	19-07-2007
10	महामहिम श्री एलेम सेहाय, इरीट्रिया के राजदूत	19-07-2007
11	महामहिम श्री सैयद मेहदी नवीजादेह, ईरान इस्लामी गणराज्य के राजदूत	19-07-2007
12	महामहिम श्री मार्क कॉटे, लक्जमबर्ग के ग्रांड डची के राजदूत	26-09-2007
13	महामहिम सुश्री एन्न ओलेस्टाड, नार्वे के राजदूत	26-09-2007
14	महामहिम श्री जेरोम बोनाफोंट, फ्रांस के राजदूत	26-09-2007
15	महामहिम श्री मिगुएल एंजेल रमीरेज रामोस, क्यूबा के राजदूत	26-09-2007
16	महामहिम श्री चार्ल्स रिचार्ड वेरनोन स्टैग, यू के के उच्चायुक्त	26-09-2007
17	महामहिम श्री जीन मारी डेबाट, बेल्जियम के राजदूत	26-09-2007
18	महामान्या श्रीमती डेनियल स्माजदा, यूरोपिय संघ की राजदूत	26-09-2007
19	महामहिम श्री हरदीजस बाउमानीस,लाटविया के राजदूत (अप्रवासी)	26-09-2007
20	महामहिम श्री मार्क सोफर, इजराइल के राजदूत	12-12-2007
21	महामहिम श्री जुआन अलफ्रेडो पिंटो सवेर्डा, कोलम्बिया के राजदूत	12-12-2007
22	महामहिम श्री बॉब एच हाइन्च, नीदरलैंड के राजदूत	12-12-2007
23	महामहिम श्री हिदेकी डोमिची, जापान के राजदूत	12-12-2007
24	महामहिम श्री पाराहत होमाडोविच दूर्दयेव, तुर्केमेनिस्तान के राजदूत	18-12-2007
25	महामहिम प्रो. फेस्तुस कबेरिया, केन्या के उच्चायुक्त	18-12-2007
26	महामहिम श्री फेर्डीनान्द मालताश्चल , ऑस्ट्रिया के राजदूत	18-12-2007
27	महामान्या सुश्री इबयान माहमेद सलाह, सोमालिया की राजदूत	18-12-2007
28	महामहिम श्री झांग यान, चीन के राजदूत	18-12-2007

01-04-2007 से 18-12-2007 की अवधि के दौरान कार्यावधि पूरी हो जाने पर भारत छोड़ने वाले विदेशी राजदूतों/उच्चायुक्तों की सूची

क्रम	नाम/देश	प्रस्थान की तारीख
1	महामान्या सुश्री लारा क्यू डील रोसारियो, फिलीपीन्स की राजदूत	01-04-2007
2	महामहिम श्री टी जी नीजाजोभ, तुर्केमेनिस्तान के राजदूत	07-04-2007
3	महामान्या श्रीमती एवा एल नाजरो, तन्जानिया की उच्चायुक्त	16-05-2007
4	महामहिम श्री अब्दुल गपार इस्माइल, ब्रुनई के उच्चायुक्त	16-05-2007
5	महामहिम श्री सियावस जरगार यागहोबी, ईरान के इस्लामी गणराज्य के राजदूत	27-04-2007
6	महामहिम डॉ जत्ता स्टीफन बस्ल, ऑस्ट्रिया के राजदूत	27-05-2007
7	महामहिम श्री पेड्रो पैबलो डी बेडआउट गोरी, कोलम्बिया के राजदूत	30-06-2007

8	महामहिम श्री डॉन राफेल कोन्डो डी सारो, स्पेन के राजदूत	29-06-2007
9	महामहिम श्री गैब्रियल फासिल, इरिट्रिया के राजदूत	04-07-2007
10	महामहिम श्री जुआन कैरेटेरो इबानेज, क्यूबा के राजदूत	19-07-2007
11	महामहिम श्री फ्रानिस एस. के. ब्याह, केन्या के उच्चायुक्त	21-07-2007
12	महामहिम श्री जोर्गे हेन, चीली के राजदूत	01-08-2007
13	महामहिम श्री पॉल स्टेनीमेज, लक्जमबर्ग ग्रांड डची के राजदूत	15-08-2007
14	महामहिम श्री डेविड डेनियल, इजराइल के राजदूत	16-08-2007
15	महामहिम श्री विलियम एहलर्स, उरुग्वे के राजदूत	01-09-2007
16	महामहिम श्री जान वेस्टबोर्ग, नार्वे के राजदूत	01-09-2007
17	महामहिम श्री डामिनिक गिराड, फ्रांस के राजदूत	27-08-2007
18	महामहिम श्री फ्रांसिस्को डी कामरा गोम्स, यूरोपीयन संघ के राजदूत	31-08-2007
19	महामहिम श्री माइकेल अर्थर, यू के के उच्चायुक्त	07-09-2007
20	महामहिम श्री यासुकूनी एनोकी, जापान के राजदूत	30-09-2007
21	महामहिम श्री डॉन राफेल कोन्डो डी सारो, स्पेन के राजदूत	29-06-2007
22	महामहिम श्री ल्यूक रोकोवादा, फिजी के राजदूत	31-10-2007
23	महामहिम श्री इरीक एफ सी एच नीशे, नीदरलैंड के राजदूत	11-11-2007
24	महामहिम श्री गिलबर्ट ब्ल्यू लेने, कोटे डी आइवरी के राजदूत	18-11-2007
25	महामहिम श्री सन यूक्सी, चीन के राजदूत	11-12-2007

■■

15 कोंसली, पासपोर्ट और वीजा सेवाएं

पासपोर्ट कार्यालय

भारत में इस समय 34 पासपोर्ट कार्यालय और 15 पासपोर्ट संग्रहण केन्द्र है। 2007-08 में अमृतसर, देहरादून और कोयम्बटूर में नए पासपोर्ट कार्यालय खोलने का प्रस्ताव है। सभी पासपोर्ट कार्यालय कम्प्यूटरीकृत हैं और वे अन्तर्राष्ट्रीय नागर विमानन संगठन के दिशा निर्देशों के अनुसार मशीन मुद्रित और मशीन द्वारा पठनीय पासपोर्ट जारी करते हैं। पासपोर्ट आवेदनों को इलैक्ट्रॉनिक तरीके से स्कैन करके रखा जा रहा है।

पासपोर्ट सेवाएं

पिछले वर्षों के दौरान जारी किए गए पासपोर्टों की संख्या में पर्याप्त वृद्धि हुई है। वर्ष 2007 में कुल 49.4 लाख पासपोर्ट जारी हुए जो वर्ष 2006 में जारी कुल पासपोर्टों की तुलना में 13.1% अधिक है। 2007 में कुल 49 लाख आवेदन प्राप्त हुए जो वर्ष 2006 के इसी प्रकार के आंकड़ो की तुलना में 10.7% अधिक है। सभी पासपोर्ट कार्यालयों से प्राप्त हुए कुल राजस्व भी बढ़कर लगभग 567 करोड़ हो गया जो कि वर्ष 2006 के कुल राजस्व की तुलना में 13.8% की वृद्धि हुई। मंत्रालय आम जनता के आराम एवं सुविधा के लिए पासपोर्ट जारी करने की पद्धति को और सरल एवं तेज करने के कई उपास करता रहा है। ऐसे कुछ महत्वपूर्ण उपायों का नीचे उल्लेख किया गया है।

(क) जिला पासपोर्ट प्रकोष्ठ और स्पीड पोस्ट केन्द्रों के माध्यम से विकेन्द्रीकरण

पासपोर्ट जारी करने और इससे संबंधित सेवाओं को आवेदकों के द्वार के निकट ले जाने के लिए जिला स्तर पर जिला पासपोर्ट प्रकोष्ठ खोले गए हैं जहॉ जिलाधीश/पुलिस अधीक्षक का कार्यालय पासपोर्ट आवेदन प्राप्त करता है और संवीक्षा तथा पुलिस सत्यापन के उपरांत उन्हें पासपोर्ट जारी करने के लिए संबंधित पासपोर्ट कार्यालय में भेज देता है। इस समय 463 जिला पासपोर्ट प्रकोष्ठ हैं। पासपोर्ट आवेदन 1095 स्पीड पोस्ट केंद्रों के नेटवर्क के माध्यम से भी प्राप्त किए जाते हैं।

(ख) ऑनलाइन आवेदन

सभी पासपोर्ट कार्यालयों में ऑनलाइन पासपोर्ट आवेदन जमा कराने की प्रक्रिया आरंभ कर दी गई है।

(ग) अवसंरचना

मुम्बई, विशाखापट्टनम, गुवाहाटी, श्रीनगर, थाणे, और जालंधर में पासपोर्ट कार्यालय के निर्माण हेतु उपयुक्त भू खंड का अधिग्रहण कर लिया गया है और अमृतसर तथा सूरत में भूखंड के क्रय की प्रक्रिया जारी है। बंगलौर पासपोर्ट कार्यालय ने नए परिसर से कार्य करना आरंभ कर दिया है। लखनऊ और जयपुर पासपोर्ट कार्यालयों का निर्माण कार्य लगभग सम्पन्न होने वाला है। भुवनेश्वर स्थित पासपोर्ट कार्यालय का निर्माण पहले ही आरंभ हो चुका है।

लोक शिकायत निवारण तंत्र

सभी पासपोर्ट कार्यालयों में लोक शिकायत निवारण तंत्र को सुदृढ़ करने के उपाय किए गए हैं। आवेदकों की सहायता के लिए और शिकायतों की शीघ्र सुनवाई हेतु सुविधा और सहायक डेस्क भी स्थापित किया गया है। संयुक्त सचिव (सी. पी. वी) और मुख्य पासपोर्ट अधिकारी की कड़ी निगरानी में सी. पी. वी. प्रभाग में एक लोक शिकायत तंत्र भी मौजूद है।

पासपोर्ट अदालत

पासपोर्ट आवेदकों की शिकायतों के निवारण हेतु पासपोर्ट कार्यालय नियमित रूप से पासपोर्ट अदालतों का आयोजन करते रहे हैं। ये अदालतें पासपोर्ट संबंधी पुराने मामलों के निपटान और आवेदकों को पासपोर्ट जारी करने में भी काफी उपयोगी सिद्ध हुई हैं।

सूचना का अधिकार अधिनियम (आर. टी. आई)

आर. टी. आई के तहत आवेदकों को सूचना प्रदान करने के लिए एक केन्द्रीय जन सूचना अधिकारी और सहायक जन सूचना अधिकारी नियुक्त किये गये हैं।

वेबसाइट

1999 में स्थापित सी. पी. वी. प्रभाग की वेबसाइट www.passport.nic.in को और अधिक प्रयोक्ता उन्मुख बनाने के लिए इसे समय-समय पर अद्यतन किया जा रहा है। इसमें पासपोर्ट, वीजा, कोंसली मामलों और पी. आई. ओ. पत्र 0कों के संबंध में विस्तृत सूचना निहित है। इसमें डाउनलोड किए जा सकने वाल फार्म भी हैं। मुख्य वेबसाइट में दिल्ली में जमा किए

गए पासपोर्ट आवेदनों की स्थिति की पूछताछ संबंधी जाँच का प्रावधान भी है। सभी पासपोर्ट कार्यालयों की वेबसाइट पर स्थिति जांच से भी इसे जोडा गया है।

तत्काल योजना

तत्काल पासपोर्ट जारी करने हेतु कुछ पासपोर्ट आवेदकों की वास्तविक जरूरतों को मानते हुए 2000 में क्रियान्वित "तत्काल योजना" को और उदार बना दिया गया है। निर्धारित दस्तावेजों को जमा कराने पर बाद में पुलिस सत्यापन किए जाने के आधार पर पात्र आवेदकों को बिना बारी के पासपोर्ट जारी किए जाते हैं। वर्ष 2007 में तत्काल योजना के अन्तर्गत जारी किए गए पासपोर्टों की संख्या लगभग 4-6 लाख थी जो कि वर्ष 2006 के समतुल्य आंकड़ों की तुलना में 70% अधिक है।

कोंसली सांक्ष्यांकन

इस साल सी पी वी प्रभाग में 5,00,085 दस्तावेज साक्ष्यांकित किए जा चुके हैं जिनमें से 2,81,041 वाणिज्यिक दस्तावेज थे। यह सेवा उसी दिना बिना किसी प्रभार के प्रदान की जाती है।

वीजा जारी करना

पिछले वर्षों में हमारे मिशनों और केन्द्रों द्वारा वीजा प्रदान करने की प्रक्रिया को सरल किया गया है। अधिकांश मिशन और केंद्र या तो वीजा काउन्टर पर उसी दिन अथवा अधिकतम 48 घंटे के भीतर वीजा प्रदान करते हैं।

वीजा से छूट संबधी करार

2007 के दौरान क्रोएशिया, साइप्रस, इक्वाडोर, जापान, फिलीपीन्स और सर्बिया के साथ राजनयिक और सरकारी पासपोर्ट धारकों के लिए वीजा से छूट संबंधी करारों पर हस्ताक्षर हुए।

राजनयिक/सरकारी पासपोर्ट जारी करना

सी. पी. वी. प्रभाग ने 2006 में जारी 2444 और 25,265 पासपोर्टों की तुलना में 2007 में क्रमशः 1950 राजनयिक और 24,867 सरकारी पासपोर्ट जारी किए। सी. पी. वी प्रभाग ने वर्ष 2007 में विदेशी राजनयिक और सरकारी पासपोर्ट धारकों को 6200 वीजा जारी किए।

विदेश स्थित मिशनों/केंद्रों का कम्प्यूटरीकरण

बहरीन, टोरंटो, क्वालालम्पुर, बर्मिंघम, जेद्दाह, कोलम्बो, कैंडी और वैकूवर स्थित मिशनों/केन्द्रों में पासपोर्ट और वीजा जारी करने की प्रणाली का कम्प्यूटरीकरण पूरा हुआ। ह्यूस्टन, शिकागो, सैन फ्रांसिस्को, वाशिंगटन, मॉस्को और दोहा में पासपोर्ट और वीजा जारी करने की प्रणाली का कम्प्यूटरीकरण किया जा रहा है।

नई परियोजनाएं

मंत्रालय ने पासपोर्ट/वीजा जारी करने की प्रणाली के आधुनिकीकरण और उन्नयन की दृष्टि से अनेक परियोजनाएं आरंभ की हैं जो कि निम्नानुसार हैं :

(i) पासपोर्टों का केंद्रीकृत मुद्रण

मंत्रालय ने विदेश स्थित 111 भारतीय मिशनों/केन्द्रों के संबंध में मशीन द्वारा पठनीय पासपोर्टों (एम आर पी) के केन्द्रीकृत मद्रण हेतु परियोजना को सफलतापूर्वक क्रियान्वित किया है। बाकी बचे हुए मिशन/केन्द्र 2008 में इसके अन्तर्गत शामिल कर लिए जाएंगे।

(ii) ई-पासपोर्ट जारी करना

सरकार ने 2008 के मध्य तक पायलट परियोजना के तौर पर शुरुआत में राजनयिकों और अधिकारियों के लिए ई-पासपोर्ट जारी करने का निर्णय लिया है जिसे बायो मीट्रिक के नाम से भी जाना जाता है। इस पायलट परियोजना से प्राप्त अनुभव के आधार पर सामान्य वर्ग में ई-पासपोर्ट जारी करने की शुरुआत करने का प्रस्ताव है।

(iii) पासपोर्ट सेवा परियोजना

सरकार ने नागरिकों को समय पर, पारदर्शी, अधिक आसानी से उपलब्ध होने वाले और भरोसेमंद तरीके से पासपोर्ट संबंधी सेवाएं मुहैया कराने के उद्देश्य से इसके सूचना प्रौद्योगिकी पहलुओं सहित पासपोर्ट जारी करने की प्रणाली पर समयबद्ध अध्ययन करने का कार्य नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ स्मार्ट गवर्नमेंट (एन. आई. एस. जी.) , हैदराबाद को सौंपा है। एन. आई. एस. जी ने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत कर दी है जिसे सरकार द्वारा स्वीकार कर लिया गया है और "पासपोर्ट सेवा परियोजना" क्रियान्वित की जा रही है।

19 महीने की समयावधि में पूरी हो जाने वाली परियोजना के परिणामस्वरुप पासपोर्ट 3 दिनों के भीतर जारी होंगे और पुलिस सत्यापन की अपेक्षा वाले मामलों में सत्यापन प्रक्रिया पूरी होने के 3 दिन के भीतर जारी होंगे। तत्काल पासपोर्टों को उसी दिन जारी किये जाने की आशा है। इस प्रस्ताव में देश भर में 68 सुविधा केन्द्र होंगे जिनमें पासपोर्ट जारी करने की प्रक्रिया से स्कैनिंग, संबंद्ध बाहरी कार्य जैसे आवेदन पत्रों की आरंभिक संवीक्षा, शुल्क प्राप्त करना, दस्तावेजों की स्कैनिंग, फोटो लेना इत्यादि खुली निविदा प्रक्रिया के माध्यम से चुने हुए सेवा प्रदाता द्वारा किए जाएंगे। पासपोर्ट सुविधा केंद्रों पर मौजूद सरकारी कर्मचारी दस्तावेजों का सत्यापन करेंगे और पासपोर्ट प्रदान किया जाना है अथवा नहीं इसका निर्णय लेंगे। मुद्रण और प्रेषण जैसे अन्य क्रियाकलाप भी सरकारी कर्मचारियों द्वारा कये जाएंगे। पुलिस सत्यापन में राज्य की राजधानियों में स्थित पुलिस

प्राधिकारियों के साथ पासपोर्ट सुविधा केन्द्रों के इलैक्ट्रॉनिक संपर्क के माध्यम से गति लाई जाएगी।

(iv) वीजा कार्य की आउटसोर्सिंग

विदेश स्थित चालीस भारतीय मिशनों/केन्द्रों को वीजा आवेदन संग्रहण कार्य आउटसोर्स करने के लिए प्राधिकृत किया गया है जिनमें से 24 भारतीय मिशनों/केन्द्रों नामतः सियोल, तोक्यो, क्वालालम्पुर, वाशिंगटन, न्यूयार्क, शिकागो, ह्यूस्टन, सैन फ्रांसिस्को, तेल अवीव, बैंकॉक, पेरिस, कैनबरा, सिडनी, मेलबोर्न, फ्रैंकफर्ट, कोलम्बो, सिंगापुर, हेग, बीजींग, शंघाई, इस्लामाबाद, ढाका, चिटगोंग , मिन ने पहले से ही ठेका दे दिया।

(v) एपोस्टिल अभिसमय परियोजना का शुभारंभ

साक्ष्यांकन प्रकोष्ठ ने 29 अगस्त 2007 से एपोस्टिल परियोजना आरंभ की है और नवम्बर 2007 के अन्त तक 13,633 दस्तावेजों पर ऐसी टिप्पणी की जा चुकी है।

प्रत्यर्पण मामले और विधिक सहायता

संगठित अपराध, अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद और नशीले पदार्थों के अवैध व्यापार का सामना करने और वित्तीय और अन्य अपराधों के बढ़ते हुए अंतर्राष्ट्रीय आयामों के प्रत्युत्तर हेतु एक विधिक और संस्थागत स्वरूप प्रदान करने के लिए अनेक देशों के साथ द्विपक्षीय करार संपन्न करने की बातचीत चल रही है ताकि इस अंतर्राष्ट्रीय प्रयास को एक विधिक आधार प्रदान किया जा सके। इन कोंसुली करारों में प्रत्यर्पण संधि, आपराधिक मामलों में पारस्परिक विधिक सहायता, तथा सिविल और वाणिज्यिक मामलों में पारस्परिक विधिक सहायता शामिल है।

मेक्सिको के राष्ट्रपति की यात्रा के दौरान दोनों देशों के बीच 10 सितम्बर 2007 को नई दिल्ली में एक प्रत्यर्पण संधि पर हस्ताक्षर हुए। इसी प्रकार पुर्तगाल के राष्ट्रपति की यात्रा के दौरान 11 जनवरी 2007 को नई दिल्ली मे प्रत्यर्पण संधि पर हस्ताक्षर हुए। बेलारुस के राष्ट्रपति की यात्रा के दौरान भी 16 अप्रैल 2007 को एक प्रत्यर्पण संधि पर हस्ताक्षर हुए।

भारत और कुवैत के बीच प्रत्यर्पण संधि के अनुसमर्थन दस्तावेजों का आदान प्रदान अगस्त 2007 के महीने में कुवैत में हुआ और यह संधि 7 अगस्त 2007 को प्रभावी हुई। भारत गणराज्य और बुल्गारिया गणराज्य के बीच प्रत्यर्पण संधि 1 फरवरी 2007 से प्रभावी हुई। इस वर्ष के दौरान भारतीय आधिकारिक प्रतिनिधिमंडलों ने आपराधिक मामलो में प्रत्यर्पण संधियों और पारस्परिक विधिक सहायता पर बातचीत करने के लिए आस्ट्रेलिया,मिश्र और जर्मनी की यात्रा की।

मंत्रालय वित्तीय मामलों सहित आपराधिक और सिविल/वाणिज्यिक अपराधों दोनों के लिए विदेशी सरकारों से प्रत्यर्पण और विधिक सहायता हेतु सक्रियता से अनुरोध करता रहता है। प्रत्यर्पण हेतु अनुरोध विभिन्न देशों के साथ सम्पन्न की गई प्रत्यर्पण संधियों अथवा सम्पन्न किए गए प्रत्यर्पण करारों के तहत हमारी प्रतिबद्धताओं की वजह से किए जाते हैं। इस वर्ष के दौरान विभिन्न देशों से प्रत्यर्पण हेतु 20 अनुरोध प्राप्त हुए। इसी प्रकार भारत सरकार द्वारा बेल्जियम, कनाडा, सिंगापुर, संयुक्त अरब अमीरात, यू. के. और संयुक्त राज्य अमरीका जैसे देशों से उनके विचारार्थ 18 अनुरोध किए गए। इसी अवधि के दौरान भारत सरकार द्वारा विभिन्न देशों को चार व्यक्तियों का प्रत्यर्पण किया गया और विदेशों से चार व्यक्ति भारत में प्रत्यर्पित किए गए। उपर्युक्त के अलावा विदेश मंत्रालय को भारत में न्यायिक प्राधिकरणों/राज्य सरकारों/ जाँच एजेंसियों से विदेश में रह रहे व्यक्तियों को प्रदान किए जाने/निष्पादित किए जाने के लिए वारंट/सम्मन/नोटिस और अन्य न्यायिक प्रक्रियाएं भी प्राप्त हो रही हैं।

■■

प्रशासन और स्थापना

16

प्रशासन

भारत की विदेश नीति के प्रभावी अनुपालन के लिए विदेशों में अधिक राजनयिकों की उपस्थिति आवश्यक है। इस उद्देश्य से विदेशों में 170 आवासी भारतीय मिशन है। अक्टूबर 2007 में दो केन्द्र और खोले गए नामतः भारत का प्रधान कोसलावास जूबा, सूडान और भारत का प्रधान कोंसलावास क्वांगधू, चीन।

विदेश स्थित भारतीय मिशनों के प्रभावी कार्यकरण का एक महत्वपूर्ण घटक है स्थानीय स्तर पर भर्ती किए गए कर्मचारी। विदेश स्थित भारतीय मिशनों/केन्द्रों की कार्यप्रणाली को और आकर्षक बनाने तथा वहां रहन-सहन की लागत में होने वाली वृद्धि के कारण वेतनमानों को उपयुक्त तरीके से समायोजित करने के उद्देश्य से मंत्रालय ने ग्लोबल क्लस्टर स्कीम नामक योजना के अंतर्गत स्थानीय स्तर पर भर्ती किए गए कर्मचारियों के लिए वेतनमानों की व्यापक समीक्षा के दूसरे चरण को क्रियान्वित किया। इसके फलस्वरूप दूसरे चरण के तहत 22 देशों के मिशनों/केन्द्रों में वेतनमानों में संशोधन किया गया।

मंत्रालय की प्रशासनिक मशीनरी को सुव्यवस्थित करने के जारी प्रयासों के भाग के रूप में नीति निर्णय की प्रक्रिया को और विकेन्द्रित करने और प्रक्रियाओं को सरल बनाने के उद्देश्य से कदम उठाए गए। चिल्ड्रेन होलीडे पैसेज, भारत अस्थायी घरेलू नौकरों से संबंधित नियमावली को और उदार तथा सुव्यवस्थित बनाया गया है। भारतीय विदेश सेवा (वेतन, छुट्टी और प्रतिपूरक भत्ता) (भारतीय विदेश सेवा) (पीएलसीए) नियमावली के अद्यतन संस्करण का प्रकाशन किया गया।भारतीय विदेश सेवा (पीएलसीए) नियमावली के पुनःकल्पन और सरलीकरण की प्रक्रिया आरंभ की गयी है ताकि इसके निर्वचन में होने वाली भिन्नताओं को समाप्त किया जा सके। वर्ष 2007-08 के दौरान मंत्रालय द्वारा जारी विभिन्न अनुदेशों को संकलित करने का कार्य चल रहा है।

पदों की संख्या में की गयी कमी के कारण मानव संसाधनों के बेहद अभाव के बावजूद मंत्रालय ने पदों को समाप्त करने संबंधी सरकार के मितव्ययता संबंधी कदमों को पूर्णतः क्रियान्वित किया और अधिक से अधिक सीधी भर्ती करने के लिए स्क्रीनिंग समिति की बैठक का आयोजन किया। नई भर्तियों के लिए मांग समय से प्रस्तुत की गयी और सभी स्तरों पर मानव-शक्ति की तैनाती की आवधिक समीक्षा की गई।

विभागीय प्रोन्नति समिति की नियमित बैठकों और सुनिश्चित कैरियर पदोन्नति योजना प्रावधानों के क्रियान्वयन के जरिए मंत्रालय में कार्यरत विभिन्न संवर्गों का प्रबंधन किया गया। कर्मचारियों से संबंधित मुद्दों और उनके संभावित समाधान के तौर-तरीकों पर कर्मचारी संघों के साथ विचार-विमर्श करने के लिए संयुक्त परामर्शी तंत्र की नियमित बैठकें हुईं।

मंत्रालय में अधिकारियों/कर्मचारियों की कुल संख्या 3464 है। ब्यौरे परिशिष्ट-। पर दिए गए हैं। ये कार्मिक भारत तथा विदेश स्थित 170 मिशनों/केन्द्रों में तैनात हैं। इसमें भारतीय विदेश सेवा और भारतीय विदेश सेवा, शाखा "ख", दुभाषिया संवर्ग, विधि एवं संधि संवर्ग 8 तथा पुस्तकालय संवर्ग शामिल हैं परन्तु इसमें समूह "घ" और संवर्ग-बाह्य पद शामिल नहीं हैं।

1 अप्रैल-30 नवम्बर 2007 तक सीधी भर्ती, विभागीय प्रोन्नति और सीमित विभागीय परीक्षाओं, के जरिए विभिन्न समूहों में मंत्रालय में की गई भर्ती, जिसमें आरक्षित रिक्तियों की भर्ती भी शामिल है, का ब्यौरा परिशिष्ट-।। पर है।

परिशिष्ट-।।। में मंत्रालय के अधिकारियों की भाषा प्रवीणता संबंधी ब्यौरे दिए गए हैं।

महिला/पुरूष संबंधी मुद्दे

महिला/पुरुष समानता मंत्रालय की समग्र नीति का एक महत्वपूर्ण तत्व है। इसके अनुसरण में महिला अधिकारियों को महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व देकर समान अवसर प्रदान किया जाता है।

वर्तमान में सचिव स्तर की 7, अपर सचिव की 7 और संयुक्त सचिव स्तर की 29 महिला अधिकारी हैं। वर्तमान में राजदूत/उच्चायुक्त/स्थायी प्रतिनिधि/प्रधान/कोंसल/कार्यालय प्रमुख स्तर की कुल 23 महिला अधिकारी तैनात हैं। मंत्रालय के विभिन्न संवर्गों में महिला अधिकारियों के ब्यौरे अनुबंध-4 पर हैं।

विकलांग व्यक्ति

विकलांग कार्मिकों के लिए पर्याप्त अवसर सुनिश्चित करना और उन्हें यथोचित प्रतिनिधित्व प्रदान करना मंत्रालय का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए मंत्रालय ने विकलांगों की नियुक्ति के लिए उपयुक्त पदों की पहचान की

है जिनमें भारतीय विदेश सेवा के पद भी शामिल हैं। कुल मिलाकर मंत्रालय में विभिन्न ग्रेडों और संवर्गों में 37 विकलांग व्यक्ति हैं।

संगठनात्मक ढांचा

विदेश प्रचार प्रभाग को दो प्रभागों में बांट दिया गया है, यथा (क) विदेश प्रचार प्रभाग और (ख) लोक राजनय प्रभाग।

हैदराबाद और चेन्नै में शाखा सचिवालय की स्थापना का मुख्य उद्देश्य राज्य सरकारों को व्यापार और निवेश के संबंध में सलाह देना और राज्य सरकार; इन शहरों में अवस्थित कोंसलावासों, पासपोर्ट कार्यालयों इत्यादि के साथ संपर्क करना है।

विकास भागीदारी प्रभाग को तकनीकी सहयोग प्रभाग के साथ मिला दिया गया है।

सतर्कता

कुल 160 मामलों में से 58 मामलों की पहल 1 अप्रैल 2007 से 30 नवम्बर 2007 के बीच की गयी। इस अवधि के दौरान कुल 22 मामलों को बंद कर दिया गया - 8 मामलों में दण्ड दिया गया और 14 मामले आगे की जांच के बिना।

सतर्कता एकक ने कोंसली राजस्व के संबंध में विदेश स्थित मिशनों/केन्द्रों में कार्यरत कोंसली अधिकारियों और चांसरी प्रमुखों की कोंसली नियम-पुस्तिका में निर्धारित जिम्मेदारियों को ध्यान में लाया। मिशनों/केन्द्रों को रोकड़ संबंधी मामलों की देखरेख करने वाले कर्मचारियों से एक रोकड़ सुरक्षा/निष्ठा अनुबंध पत्र प्राप्त करने के अनुदेश दिए गए हैं।

कल्याण

कल्याण प्रभाग मंत्रालय के सभी कर्मचारियों के कल्याण और साउथ ब्लॉक, अकबर भवन तथा पटियाला हाउस में कैन्टीन सेवाओं की देखरेख करता है। वर्ष 2007-2008 के दौरान मंत्रालय के 12 कर्मचारियों का निधन हो गया जिनकी अन्त्येष्टि और कर्मचारी लाभ निधि से उन्हें धन मुहैया कराने के लिए सभी प्रकार की सहायता दी गई। प्रभाग की अनुशंसा पर विदेश मंत्रालय पत्नी संघ ने प्रत्येक मृत कर्मचारियों की विधवा को 20,000 रुपए दिए। इसके अतिरिक्त प्रत्येक को लगभग 15,000 रु. की अतिरिक्त वित्तीय सहायता भी दी गई।

मिशनों से मुख्यालय वापस आने पर मंत्रालय के कर्मचारियों को विभिन्न पब्लिक/निजी स्कूलों में नामांकन कराने, गैस कनेक्शन, राशन कार्ड और टेलीफोन कनेक्शन प्राप्त करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। कल्याण प्रभाग स्कूलों, महानगर टेलीफोन निगम इत्यादि को पत्र इत्यादि जारी करके उनकी सहायता करता रहा है।

कल्याण प्रभाग ने झंडा दिवस, साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस, रेड क्रास सशस्त्र बल और विदेश मंत्रालय कर्मचारी लाभ निधि के लिए निधियां एकत्र करने की भी व्यवस्था की।

अनुकंपा नियुक्ति

वर्ष 2007 के दौरान दो आश्रितों को अनुकंपा आधार पर अवर श्रेणी लिपिक के नियमित पदों पर नियुक्त किया गया।

शैक्षिक मामले

विदेश मंत्रालय के अधिकारियों के चार बच्चों को एमबीबीएस पाठ्यक्रमों में और 39 को इंजीनियरिंग पाठ्यक्रमों में नामांकन दिया गया जिसके लिए इस प्रभाग ने स्वास्थ्य मंत्रालय तथा मानव संसासधन विकास मंत्रालय के साथ समन्वय बनाए रखा। मंत्रालय के अधिकारियों/कर्मचारियों के बच्चों द्वारा केन्द्रीय विद्यालय में 44 सीटों का उपयोग किया गया।

सहायता अनुदान

कल्याण प्रभाग ने विदेश स्थित दो भारतीय मिशनों/केन्द्रों को मनोरंजन क्लब स्थापित करने के लिए प्रत्येक को 10000 रु. का सहायता अनुदान दिया।

कैन्टीन

कैन्टीनों ने मंत्रालय के अधिकारियों/कर्मचारियों को व्यावसायिक सेवाएं प्रदान की। इसके अतिरिक्त आगंतुक राजनयिकों, अंतर्राष्ट्रीय आगंतुकों तथा अति महत्वपूर्ण व्यक्तियों को व्यावसायिक सेवाएं प्रदान करने के लिए साउथ ब्लॉक में एक समानान्तर खान-पान आउटलेट की स्थापना की गई है।

सूचना का अधिकार

सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 के महत्व को ध्यान में रखने हेतु मंत्रालय में अलग से एक सूचना का अधिकार प्रभाग कार्य कर रहा है। संयुक्त सचिव स्तर के एक अधिकारी को केन्द्रीय लोक सूचना अधिकारी और अपन सचिव स्तर के एक अधिकारी को अपील प्राधिकारी के रूप में मनोनीत किया गया है। जनवरी-दिसम्बर 2007 के दौरान मंत्रालय में आरटीआई के 920 आवेदन (सीपीवी प्रभाग को छोड़कर) प्राप्त हुए जिन पर कार्रवाई की गई। अपील प्राधिकारी ने 71 अपीलों का निपटान किया और मंत्रालय के केन्द्रीय लोक सूचना अधिकारी 53 अपीलों में मुद्दालेह के रूप में केन्द्रीय सूचना आयोग के समक्ष उपस्थित हुए। समीक्षाधीन अवधि के दौरान आरटीआई अधिनियम के कसी भी प्रावधान के तहत सीआईसी द्वारा किसी भी अधिकारी पर कोई दण्ड नहीं लगाया गया।

इसके अतिरिक्त सीपीवी प्रभाग, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद तथा आईसीडब्ल्यूए में अलग से अपील प्राधिकारी एवं केन्द्रीय

लोक सूचना अधिकारी नामित किए गए हैं। प्रत्येक पासपोर्ट कार्यालय के प्रभारी अधिकारी को केन्द्रीय लोक सूचना अधिकारी और संयुक्त सचिव (सीपीवी) एवं मुख्य पासपोर्ट अधिकारी को अपील प्राधिकारी नामित किया गया है।

स्थापना

मंत्रालय का स्थापना प्रभाग मुख्यतः परिसम्पत्तियों के अनुरक्षण, विदेश भत्ता तथा प्रातिनिधिक भत्ते के निर्धारण, कार्यालय उपकरणों फर्नीचर एवं सरकारी वाहनों की खरीद और आपूर्ति, कलात्मक वस्तुओं की आपूर्ति, मंत्रालय के आवासीय परिसरों एवं हास्टलों के प्रबंधन, तोशाखाना के अनुरक्षण तथा स्टेशनरी की खरीद और आपूर्ति संबंधी मामलों की देख-रेख करता है।

वर्ष 2007 के दौरान इन मुद्दों को प्रशासित करने वाले नियमों, विनियमों औ प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करने के प्रयास किए गए ताकि उन्हें सरल और पारदर्शी बनाया जा सके। इस कार्य के भाग के रूप में विशेष अनुदान, क्लब सदस्यता, सरकारी वाहनों, आवास के आवंटन, विदेश स्थित मिशनों में केबल के प्रावधान, कलात्मक वस्तुओं की आपूर्ति और मुख्यालयों में उपकरणों के अनुरक्षण को प्रशासित करने वले नियमों की समीक्षा की गई और उन्हें पारदर्शी बनाया गया। वित्त मंत्रालय के अनुमोदन से मोबाइलों और आवासीय फोन के संबंध में व्यापक नीति बनाई गई है।

विदेश भत्ते की वार्षिक समीक्षा सूचीकरण योजना के अंतर्गत विदेश मंत्रालय और वित्त मंत्रालय की एक एक संयुक्त टीम द्वारा की गई। विदेश मंत्रालय ने विदेश स्थित मिशनों और अन्य परियोजनाओं तथा कार्यों के लिए प्रतिनियुक्ति कार्मिकों के लिए विदेश भत्ते की प्रणाली को तर्कसंगत बनाने के एक प्रस्ताव की पहल की है।

सूचीकरण योजना के अंतर्गत विदेश मंत्रालय और वित्त मंत्रालय की एक संयुक्त टीम द्वारा विदेश भत्ते की वार्षिक समीक्षा की गई। संयुक्त टीम ने रामल्ला, त्रिपोली और काबुल में भत्तों के स्वीकार्य स्तर के संबंध में निर्णय लेने के लिए वहाँ का दौरा किया क्योंकि इन स्थानों की मूल्य सूचियाँ उपलब्ध नहीं थी।

कस्तूरबा गांधी मार्ग और गोल मार्केट स्थित विदेश मंत्रालय के हॉस्टलों के नवीकरण की व्यापक परियोजना आरंभ की गई जिसका अभी क्रियान्वयन किया जा रहा है। इसी प्रकार द्वारका स्थित मंत्रालय के आवासीय परिसर में सुविधाओं में सुधार लाने के लिए अनेक उपाय किए गए। इन उपायों के फलस्वरूप अब उस परिसर के अधिभोग में 80% की वृद्धि हुई है। तोशाखाने में दो दशक से अधिक अवधि से पड़ी वस्तुओं को बेचने के लिए एक बड़ा अभियान भी चलाया गया। यह निर्णय भी लिया गया है कि तोशाखाना में पड़ी कुछ बेशकीमती बहुमूल्य वस्तुएं प्रदर्शन हेतु राष्ट्रीय संग्रहालय को उपलब्ध कराई जाए।

साउथ ब्लॉक और अकबर भवन को सजाने-संवारने के लिए भी अनेक पहलकदमियां की गयी। विदेश नीति उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए बेहतर तरीके से कार्य करने हेतु आधुनिक प्रौद्योगिकी के उपयोग को सुविधाजनक बनाने के लिए साउथ ब्लाक में आधुनिकतम स्थिति कक्ष का निर्माण किया गया।

जिन्ना हाउस, मुम्बई के नवीकरण की परियोजना को अंतिम रूप दिया गया और मुम्बई नगर निगम से आवश्यक अनुमोदन प्राप्त किए गए।

परियोजनाएं

परियोजना प्रभाग विदेश मंत्रालय के उपयोग हेतु भारत और विदेशों में परिसंपत्तियों के निर्माण और निर्मित परिसंपत्तियों की खरीद के लिए जिम्मेदार है। विदेशी स्टेशनों में सरकारी स्वामित्व वाली परिसंपत्तियों की मरम्मत/नवीनीकरण से संबंधित प्रस्तावों को भी परियोजना प्रभाग द्वारा ही देखा जाता है। अब तक विदेश में 79 चांसरी भवन 87 स्टेशनों में मिशन/केन्द्र प्रमुखों के आवास तथा विदेश में अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए 624 आवास सरकारी स्वामित्व में है। इसके अतिरिक्त 2 स्टेशनों में सांस्कृतिक केन्द्र और एक स्टेशन में संपर्क कार्यालय भी सरकार के स्वामित्व में है। वर्तमान में नवीनीकरण/पुनर्निर्माण की बड़ी परियोजनाओं सहित 53 निर्माण परियोजनाएं क्रियान्वयन के विभिन्न चरणों में हैं।

विदेश स्थित परियोजनाओं में मस्कट में भारतीय दूतावास परिसर के लिए निर्माण कार्य पूरा हो गया है। काठमाण्डू स्थित दूतावास परिसर और बीजिंग में आवासों, जेनेवा में भारत के स्थायी प्रतिनिधि के आवास का नवीनीकरण कार्य पूरा हो चुका है और कराची में सरकारी स्वामित्व वाली तीन परिसंपत्तियों में कार्य चल रहा है।

ब्राजीलिया, इस्लामाबाद, काबुल, ताशकंद और वारसा में निर्माण परियोजनाएँ निविदा दिए जाने के चरण में हैं। सिंगापुर, टोकियो और प्राग में पुनर्विकास परियोजनाएँ प्रगति पर हैं और यह कार्य निविदा दिए जाने के चरण में है।

वर्तमान वित्तीय वर्ष में बगोटा स्थिति दूतावास आवास के लिए निर्मित परिसम्पत्तियों की खरीद की गई है। उच्च किराया देयता वाले स्टेशनों में मंत्रालय निर्मित सम्पत्तियों की खरीद के लिए जोरदार प्रयास कर रहा है। निर्मित परिसम्पत्तियों की खरीद के लिए प्रक्रियाधीन प्रस्तावों में शामिल हैं, बगोटा, मिलान और नैरोबी में चांसरी भवन तथा हैम्बर्ग, मिलान, सोफिया और त्रिपोली में दूतावास आवास और साओ पाउलो में एक सांस्कृतिक केंद्र। इसके अतिरिक्त अनेक भारतीय मिशनों/केंद्रों से प्राप्त खरीद के प्रस्तावों पर विचार किया जा रहा है। वियतनाम और भारत के

बीच परिसंपत्तियों का आदान-प्रदान किए जाने के लिए एक समझौता ज्ञापन सम्पन किया गया है।

भारत की परियोजनाओं में विदेश मंत्रालय का भावी मुख्यालय जवाहरलाल नेहरू भवन, जो विदेश मंत्रालय का भावी मुख्यालय है, विदेश मंत्रालय के अधिकारियों के लिए चाणक्यपुरी आवासीय परिसर और कैनिंग लेन में ट्रांजिट आवास परियोजना का कार्य प्रगति पर है।

नई दिल्ली में विदेश सेवा संस्थान परिसर का निर्माण कार्य पूरा हो गया है। एशियाई अफ्रीकी विधिक परामर्शी संगठन (एएएलसीओ) परिसर, नई दिल्ली और भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आईसीसीआर) संस्कृति केन्द्र कोलकाता में चल रहा निर्माण कार्य पूरा होने वाला है। अन्य परियोजनाएं, जो क्रियान्वयन के विभिन्न चरणों में हैं, में शामिल हैं- नई दिल्ली में भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के लिए अफ्रीका हाउस परियोजना तथा विदेश भवन कोलकाता।

वर्ष 2007-08 के दौरान पूंजीगत परिव्यय के अंतर्गत 250 करोड़ रु. का आवंटन किया गया है। वर्ष 2008-09 के लिए बजट अनुमान 582 करोड़ रु. का रखा गया है ताकि अगले वित्तीय वर्ष में निर्माण चरण में पहुंचने वाली परियोजनाओं के लिए प्रावधान किया जा सके।

ई-शासन एवं सूचना प्रौद्योगिकी

बहरीन, टोरंटो, कुआलालम्पुर, बर्मिंघम, जद्दा, कोलंबो, कैन्डी और वैंकूवर स्थित मिशनों में पासपोर्ट और वीजा जारी करने की प्रणाली का कंप्यूटरीकरण कर लिया गया है। टयूस्टन, शिकागो, सैन-फ्रांसिसको, वाशिंगटन, मास्को और दोहा में पासपोर्ट और वीजा जारी करने की प्रक्रिया के कंप्यूटरीकरण का कार्य चल रहा है।

कुआलालम्पुर, बैंकाक, सिंगापुर, फ्रैंकफर्ट और मिलान में वीजा आवेदनों की प्रक्रिया की आउटसोर्सिंग पूरी हो गई है। सभी मिशनों/केन्द्रों में मशीन पठनीय पासपोर्ट जारी करने की सुविधा उपलब्ध है।

अभिलेख एवं रिकार्ड प्रबंधन

मंत्रालय के ए एण्ड आर एम प्रभाग ने अपने रेकार्डों का अंकीयकरण करने की एक परियोजना चलायी है ताकि रेकार्डों के संरक्षण, अनुरक्षण, और उन्हें आसानी से प्राप्त करने में आसानी हो सके। अंकीयकरण का दूसरा चरण वर्ष 2007 के अंत तक समाप्त हो गया। समीक्षा और बंटाई का काम चल रहा है। रेकार्डों को भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार को स्थानांतरित किया जा रहा है। एएण्डआरएम प्रभाग में मंत्रालय के सेवारत और सेवानिवृत्त अधिकारियों के लिए ब्राउसिंग सुविधा उपलब्ध है जिससे कि रेकार्डों तक पहुंच सुविधाजनक बन सके।

■■

समन्वय 17

समन्वय प्रभाग की तीन शाखाएं हैं अर्थात संसद अनुभाग, समन्वय अनुभाग और शिक्षा अनुभाग।

संसद अनुभाग

समन्वय प्रभाग विदेश मंत्रालय का संसद से संबंधित सभी कार्यों के लिए एक महत्वपूर्ण केन्द्र बिन्दु है; इन कार्यों में प्रश्न-उत्तर, आश्वासन, विदेशी संबंधों पर बहस और संसद के दोनों संदनों में रिपोर्ट प्रस्तुत करना शामिल है। समन्वय प्रभाग विदेश मंत्रालय से सम्बद्ध परामर्शदात्री समिति की बैठकों का आयोजन भी करता है और विदेश मंत्रालय से सम्बद्ध संसदीय स्थायी समिति से संबंधित कार्य तथा अन्य संसदीय समितियों का समन्वय करता है।

समन्वय अनुभाग

समन्वय प्रभाग ने नई दिल्ली में 5-7 नवंबर 2007 को संघवाद पर चौथा अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित करने में अन्तर-राज्य परिषद सचिवालय (आईएससीएस) को सहायता की। इस सम्मेलन में कोमोरोस के राष्ट्रपति, स्विटजरलैंड के राष्ट्रपति, नाइजीरिया के उप-राष्ट्रपति, इथोपिया के प्रधानमंत्री, आस्ट्रिया, कनाडा, इथोपिया, नाइजीरिया, फिलीपीन्स और स्विटजरलैंड के कैबिनेट स्तर के मंत्रीगण सहित लगभग 400 विदेशी प्रतिनिधि तथा बड़ी संख्या में भारत के अतिविशिष्टजनों और संघवाद के समर्थकों ने भाग लिया। इसका उद्घाटन प्रधानमंत्री द्वारा किया गया और भारत के राष्ट्रपति द्वारा समापन भाषण दिया गया।

संघवाद के विकास में विभिन्न देशों के अनुभवों पर बड़ी संख्या में शोधपत्र प्रस्तुत किए गए जिनमें विविधता में निर्माण एवं समावेशन, राजकोषीय संघवाद, संघीय प्रणाली में तालमेल और संघीय प्रणाली में स्थानीय सरकार शामिल है। सम्मेलन में पढ़े गए शोध पत्रों को अन्तर-राज्य परिषद सचिवालय द्वारा प्रकाशित किया जा रहा है।

समन्यव अनुभाग ने नई दिल्ली में 21-30 सितम्बर 2007 को 53वें राष्ट्रमंडल संसदीय सम्मेलन के आयोजन में लोक सभा सचिवालय को और 7-8 नवंबर 2007 को गृह मंत्रालय द्वारा दूसरे एशियाई मंत्री स्तरीय आपदा शमन सम्मेलन के आयोजन में भी सहायता की।

समन्वय अनुभाग राज्यपालों, लोक सभा अध्यक्ष, राज्य सभा उपाध्यक्ष, केन्द्रीय मंत्रियों, राज्य सरकारों के मंत्रियों, संसद सदस्यों, विधायकों, न्यायपालिका के सदस्यों, सरकारी अधिकारियों आदि द्वारा की जाने वाली यात्राओं के लिए राजनीतिक दृष्टि से अनापत्ति प्रदान करने के लिए प्राप्त सभी अनुरोधों पर कार्रवाई करता है। विदेश मंत्रालय राजनीतिक दृष्टि से स्वीकृति प्रदान करता है। अप्रैल से नवंबर 2007 के दौरान समन्वय अनुभाग ने इन दौरों के लिए वर्ष 2006 के 1592 की तुलना में 32% की वृद्धि दर्ज करते हुए, 2106 अनापत्ति प्रदान की है। यह अनुभाग विदेशी गैर अनुसूचित उड़ानों और नेवी जहाजों के दौर से संबंधित कार्यों को भी निपटाता है।

अप्रैल-नवंबर 2007 के दौरान समन्वय अनुभाग द्वारा विदेशी गैर-अनुसूचित उड़ानों के लिए वर्ष 2006 की समान अवधि की तुलना में 675 के विरूद्ध 27% की वृद्धि दर्ज करते हुए 859 अनापत्तियां, प्रदान की गई।

वर्ष के दौरान अतिविशिष्टजनों, केंद्रीय/राज्य सरकारों एवं संघ शासित क्षेत्रों के मंत्रियों एवं अधिकारियों को राजनीतिक दृष्टिकोण से अनापत्ति प्रदान करने की प्रक्रिया में तेजी लाने के लिए और अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों, संगोष्ठियों और कार्यशालाओं में भाग लेने के लिए भारत आने वाले विदेशी शोध अध्येताओं, अतिथि संकाय, शिक्षकों एवं विदेशी सहभागियों को वीजा देने में तेजी लाने के लिए समन्वय अनुभाग ने नए दिशानिर्देश जारी किया।

वर्ष के दौरान समन्वय अनुभाग ने विदेशों में अन्तर्राष्ट्रीय समारोहों में विभिन्न भारतीय खिलाड़ियों और खेल-कूद टीमों की भागीदारी के लिए और भारत में विदेशी खेल टीमों के लिए बड़ी संख्या में अनुमोदन प्रदान करने पर कार्रवाई की है। अप्रैल-नवम्बर 2007 तक समन्वय अनुभाग ने वर्ष 2006 की समान अवधि की 319 की तुलना में 27% की वृद्धि दर्ज करते हुए 345 खेल कार्यक्रमों को अनुमोदन दिया। इस प्रभाग ने विदेश स्थित भारतीय मिशन/केन्द्रों के साथ समन्वय करते हुए हैदराबाद और मुम्बई में 14-21 अक्टूबर 2007 तक आयोजित दूसरे विश्व सेना खेल (वर्ल्ड मिलिटरी गेम्स) के दौरान सेना मुख्यालय/रक्षा मंत्रालय को आवश्यक सूचना और सहायता प्रदान की।

समन्वय अनुभाग विदेशी राष्ट्रिकों को पद्म अवार्ड प्रदान करने

से संबंधित कार्यों का समन्वय करता है। समन्वय अनुभाग विदेश स्थित भारतीय मिशनों से नामांकन प्राप्त करता है और मंत्रालय की सिफारिशों से गृह मंत्रालय को सूचित करता है।

वर्ष के दौरान मंत्रालय तथा विदेश स्थित मिशनों/केन्द्रों में आतंकवाद विरोधी दिवस (21 मई), सद्भावना दिवस (20 अगस्त) और कौमी एकता सप्ताह/दिवस (19-25 नवम्बर) पूर्ण गरिमा के साथ मनाए गए। मुख्यालय और विदेश स्थित मिशनों/केन्द्रों दोनों में शपथ दिलाई गई।

अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन, संगोष्ठियां, कार्यशालाएं आयोजित करने, भारतीय टेलीग्राफ अधिनियम 1885 के तहत एमेच्योर डब्ल्यू/टी लाइसेंस प्रदान करने, विदेशों में स्थित भारत विदेश सांस्कृतिक मैत्री और सांस्कृतिक सोसाइटियों के लिए सहायता अनुदान के वास्ते अनापत्ति देने के अनुरोधों पर भी अनुभाग जांच करता है। अप्रैल-नवंबर 2007 के दौरान समन्वय अनुभाग ने वर्ष 2006 के 950 की तुलना में 25% की वृद्धि दर्ज करते हुए भारत में आयोजित 1189 सम्मेलन/संगोष्ठियों के लिए अनापत्ति जारी किया है। एक सार्वजनिक क्षेत्र संगठन, एजुकेशनल कंसल्टेंट्स ऑफ इंडिया (लि.) की बोर्ड बैठकों में पदेन निदेशक के रूप में अपर सचिव (समन्वय) ने भाग लिया और उसके मौजूदा कार्यकलापों और विदेशों में नए क्षेत्रों में हुई प्रगति पर सलाह दी।

शिक्षा अनुभाग

शिक्षा अनुभाग एमबीबीएस/बीडीएस/इंजीनियरिंग/बी.फार्मेसी और भारत के विभिन्न संस्थानों से डिप्लोमा पाठ्यक्रमों में आरक्षित सीटों पर 63 भिन्न देशों के विदेशी स्व-वित्तपोषित छात्रों, विकासशील देशों के नामांकन और प्रवेश के संबंध में कार्रवाई करता है। यह विभिन्न चिकित्सा संस्थानों और शोध पाठ्यक्रमों में इलेक्टिव प्रशिक्षण/इंटर्नशिप सहित इंजीनियरिंग, चिकित्सा, प्रबंधन, अन्य तकनीकी एवं व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेश चाहने वाले विदेशी छात्रों को राजनीतिक दृष्टिकोण से अनापत्ति प्रदान करने की भी कार्रवाई करता है।

शैक्षणिक वर्ष 2007-08 के लिए शिक्षा अनुभाग ने एमबीबीएस/बीडीएस और बीई/बी फार्मेसी पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए क्रमशः 100 और 83 आवेदन प्राप्त किए और उन पर कार्रवाई की। इसके अलावा जनवरी-नवंबर 2007 की अवधि के दौरान भारत में विभिन्न पाठ्यक्रमों को पूरा करने के लिए राजनीतिक दृष्टिकोण से अनापत्ति प्रदान करने के लिए 1200 आवेदकों को मंजूरी प्रदान की गई।

■■

विदेश प्रचार 18

विदेश प्रचार

विदेश मंत्रालय के विदेश प्रचार प्रभाग ने, जिसे मीडिया से संपर्क बनाने का कार्य दिया गया है, विदेश नीति के विभिन्न मुद्दों पर भारत सरकार की स्थिति को स्पष्ट करने और विदेश-नीति संबंधी उद्देश्यों की पूर्ति में हमारी उपलब्धियों और सफलताओं के प्रचार का कार्य जारी रखा।

वर्ष के दौरान ऐसे महत्वपूर्ण अवसर आए जब हमारे नेताओं द्वारा भारतीय विदेश नीति के पैमाने स्पष्ट किए गए थे। इस प्रकार अप्रैल 2007 में नई दिल्ली में आयोजित 14 वें सार्क शिखर सम्मलेन में प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह के वक्तव्य अक्तूबर, 2007 में दक्षिण अफ्रीका में आयोजित दूसरे आई. बी. एस. ए. शिखर सम्मेलन में उनके वक्तव्यों तथा साथ ही नवम्बर 2007 में उगाण्डा में राष्ट्रमंडल राष्ट्राध्यक्षों की बैठक में उनके वक्तव्य तथा नवम्बर 2007 में भारत-आसियान शिखर सम्मलेन में उनके भाषण से हमारी विदेश नीति के विभिन्न पक्ष परिलक्षित हुए जिनका व्यापक प्रसार इस प्रभाग द्वारा किया गया। प्रभाग द्वारा हमारी विदेश नीति के महत्वपूर्ण क्षेत्रों का प्रसार भी किया गया जैसेकि प्रधानमंत्री ने जर्मनी, नाईजीरिया, दक्षिण अफ्रीका, उगाण्डा और सिंगापुर में अपनी यात्रा के दौरान स्पष्ट किया था।

विदेश नीति के महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर विदेश मंत्री प्रणव मुखर्जी द्वारा वर्ष के दौरान विभिन्न अवसरों पर उल्लेखनीय तौर पर सितम्बर 2007 में न्यूयार्क में 62 वीं संयुक्त राष्ट्र महा सभा में अनेक देशों अर्थात् जर्मनी, कोरिया, इथिओपिया, फिलपींस, थाईलैंड, सिंगापुर, रुस, लीबिया, साइप्रस, बांग्लादेश, चीन, भूटान, बेल्जियम और संयुक्त राज्य में अपनी आधिकारिक यात्राओं के दौरान और दिसम्बर 2007 में सार्क मंत्रिपरिषद की 29 वीं बैठक में दिए गए भाषणों और वक्तव्यों के प्रचार के माध्यम से प्रकाश डाला गया था।

प्रभाग ने अहिंसा के अंतर्राष्ट्रीय वर्ष के तौर पर संयुक्त राष्ट्र द्वारा 2007 की घोषणा का व्यापक प्रचार किया। इस अवसर पर संयुक्त राष्ट्र के अनौपचारिक पूर्ण सत्र में यू. पी. ए. के अध्यक्ष द्वारा भरी सभा में दिए गए भाषण और संयुक्त राष्ट्र महासचिव बान की मून द्वारा दी गई टिप्पणियों सहित न्यूयार्क में आयोजित समारोहों के समाचारों पर प्रकाश डाला गया और भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय मीडिया मे इनका भली प्रकार समावेश किया गया। इसी प्रकार जुलाई 2007 में न्यूयार्क में विश्व हिंदी सम्मेलन के आयोजन और उसमें अंतर्राष्ट्रीय भागीदारी का भी अच्छी तरह प्रचार किया गया।

विदेश प्रचार प्रभाग ने पृष्ठभूमि ब्रीफिंग और आधिकारिक वक्तव्यों के माध्यम से उन सभी मुद्दों का व्यापक प्रचार किया जो हमारे देश की विदेश नीति की प्राथमिकताएं हैं। वर्ष के उत्तरार्द्ध में जलवायु परिवर्तन संबंधी मुद्दों पर बल दिया गया जिसके फलस्वरूप दिसम्बर 2007 में बाली में जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र सम्मलेन शामिल है। बाली सम्मेलन के दौरान जलवायु परिवर्तन और ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जनों पर भारत द्वारा व्यक्त विचारों का भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय मीडिया में अच्छा प्रचार किया गया। सुरक्षा और निशस्त्रीकरण और अंतर्राष्ट्रीय असैनिक नाभिकीय सहयोग पर भारत के विचारों पर भी प्रकाश डाला गया। वैश्विक कम्पनियों के अधिग्रहण में निजी भारतीय कम्पनियों की विश्वव्यापी सफलता सहित भारतीय अर्थव्यवस्था की निरन्तर उपलब्धियों का प्रचार विदेश मंत्रालय की वेबसाइट और विदेश मंत्रालय के नोटिस-बोर्ड पर भी किया गया।

प्रभाग की अन्य महत्वपूर्ण गतिविधि भारत में राष्ट्राध्यक्षों और शासनाध्यक्षों और विदेश मंत्रियों की होने वाली मीडिया कवरेज की व्यवस्था करना था। प्रभाग ने आगन्तुक गणमान्य व्यक्तियों के साथ संयुक्त प्रेस सम्मेलनों की व्यवस्था की और इन यात्राओं की कवरेज में भारत में आने वाले मीडिया और विदेशी मीडिया की सहायता की।

मीडिया सुविधाकरण

भारत की यात्रा करने वाले राष्ट्राध्यक्षों, शासनाध्यक्षों के साथ आने वाले विदेशी मीडिया प्रतिनिधिमंडलों और राष्ट्रपति, उप राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री के साथ विदेशी यात्रा पर जाने वाले भारतीय मीडिया प्रतिनिधिमंडलों को संभारतंत्रीय और संपर्क सहयोग प्रदान करने के तौर पर प्रेस सुविधाकरण कार्य इस प्रभाग के कार्यों का एक महत्वपूर्ण भाग है। इस वर्ष के दौरान फ्रांस और ग्रीस में राष्ट्रपति की यात्रा, जर्मनी, नाईजीरिया, दक्षिण अफ्रीका, उगाण्डा और सिंगापुर में प्रधानमंत्री की यात्रा और जर्मनी, कोरिया, इथिओपिया, फिलीपिंस, थाईलैंड, सिंगापुर, रुस, लीबिया, साइप्रस, बांग्लादेश, चीन, भूटान, बेल्जियम और संयुक्त राज्य में विदेश मंत्री की यात्रा के दौरान साथ गए मीडिया प्रतिनिधिमंडल को सुविधाएं प्रदान की गईं।

इसके अतिरिक्त प्रभाग का अधिकांश कार्य, मीडिया सलाह जारी करने, प्रेस सम्मेलनों, समारोह क्षेत्रों, बैठकों में सुविधा प्रदान करने तथा परिवहन एवं आवास हेतु सहायता उपलब्ध कराने के माध्यम से पुर्तगाल, रुस, फिनलैंड, भूटान, इटली, मालदीव, थाईलैंड, संयुक्त अरब अमीरात, ब्राजील, वियतनाम और कम्बोडिया से राष्ट्राध्यक्षों/शासनाध्यक्षों और उप राष्ट्रपति की यात्राओं के संबंध में विदेशी मीडिया प्रतिनिधिमंडलों और भारतीय मीडिया को सहायतार्थ समर्पित था। अन्य उच्च स्तरीय गणमान्य व्यक्तियों के अतिरिक्त विदेश मंत्री स्तर की 26 यात्राओं के लिए भी इसी प्रकार की सहायता दी गई।

प्रभाग द्वारा पत्रकारों द्वारा समाचारों के संचयन, मीडिया ब्रीफिंग और अन्य व्यवस्थाओं के लिए सुविधाओं सहित पूर्णतः सुसज्जित मीडिया केंद्रों के गठन और संचालन सहित सभी संभार-तंत्रीय व्यवस्थाएं की गई थीं जिससे राष्ट्रपति, उप राष्ट्रपति तथा प्रधानमंत्री की विदेश यात्राओं के दौरान साथ जाने वाले भारतीय मीडिया, प्रतिनिधिमंडलों द्वारा समय पर कवरेज हो सके।

प्रभाग ने सितम्बर 2007 में न्यूयार्क में विश्व हिंदी सम्मेलन के आयोजन और न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र महा सभा में प्रथम अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस समारोह में मीडिया भागीदारी की व्यवस्था भी की।

अप्रैल 2007 में सार्क शिखर सम्मेलन के दौरान विज्ञान भवन में एक मीडिया केंद्र स्थापित किया गया। इस शिखर सम्मेलन के कवरेज के लिए भारत और विदेश से लगभग 500 से अधिक मीडिया कर्मियों ने ऑनलाइन पंजीकरण करवाया। इंटरनेट सुविधाओं सहित कम्प्यूटर से युक्त कार्य केंद्र उपलब्ध कराए गए और मीडिया केंद्र में दूरदर्शन के माध्यम से विजुअल कवरेज बाकी भारतीय और विदेशी चैनलों को भी उपलब्ध कराया गया। दिसम्बर 2007 में सार्क मंत्रिपरिषद सम्मलेन के लिए एक मीडिया केंद्र स्थापित किया गया था।

भारत में आस्थानी लगभग 300 से अधिक सशक्त विदेशी मीडिया के प्रतिनिधियों को आवश्यक सुविधाएं प्रदान की गईं ताकि वे रूचि के विभिन्न विषयों पर संगत सूचना प्राप्त करने तथा प्रत्यय दस्तावेजों, वीजा और आवासीय परमिट के मामलों में सहायता प्रदान करने के माध्यम से आसानी से अपना कार्य निष्पादन कर सकें।

भारतीय मीडिया के अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप में वृद्धि के कारण भारतीय मीडिया संगठनों में कार्य करने वाले विदेशियों के लिए एक नई स्थिति उत्पन्न हुई है। इससे इस प्रकार के व्यक्तियों को उचित वीजा प्रदान करने संबंधी प्रश्न उठ खड़े हुए हैं। प्रभाग ने अंतरमंत्रीस्तरीय परामर्श प्रक्रिया के माध्यम से इस विषय का समाधान कर लिया है और इस प्रकार के व्यक्तियों को रोजगार वीजा प्रदान करने की एक समान नीति तैयार की है। इस नीति के बारे मे वीजा जारी करने वाले सभी प्राधिकारियों को सूचित कर दिया गया है और अब उसे समान रूप से लागू किया जा रहा है।

परिचय यात्राएं

भारत में विदेशी पत्रकारों द्वारा की जाने वाली परिचय यात्राएं विदेशी मीडिया के समक्ष भारत की और वास्तविक और समकालीन छवि दर्शाने के लिए प्रभाग द्वारा किया जा रहा एक महत्वपूर्ण प्रयास हैं क्योंकि इससे पत्रकार भारत की राजनीति, विदेश नीति, अर्थव्यवस्था, संस्कृति और विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी में होने वाले घटनाक्रमों की अद्वितीय और वास्तविक छवि की जानकारी प्राप्त करते हैं। प्रभाग ने विदेश स्थित भारतीय मिशनों की सिफारिशों के आधार पर भारत में महत्वपूर्ण संस्थाओं और उत्कृष्टता केंद्रों मे ऐसी अनेक यात्राओं का आयोजन जारी रखा। इस वर्ष के दौरान प्रभाग पहले से बनाई योजना और क्षेत्रीय दलों के आधार पर यात्राओं को व्यवस्थित करने के माध्यम से परिचय यात्राओं को सुव्यवस्थित कर सका। आगन्तुक पत्रकारों के साथ मंत्रियों, वरिष्ठ अधिकारियों, बुद्धिजीवियों, शिक्षाविदों और व्यापारिक प्रतिनिधियों के साथ भी बैठकें आयोजित करवाई गईं। 2007 के दौरान इस प्रकार की यात्राओं पर एक सौ तिरेसठ पत्रकारों की मेजबानी की गई जिसमें भारत के पड़ोसियो, फ्रेंकोफोन अफ्रीका, आसियान और नए यूरोपीय संघ के देशों पर विशेष बल दिया गया। इनमें पूर्वी और दक्षिण अफ्रीका, सार्क, एल ए सी, सर्बिया, इन्डोनेशिया, अफ्रीका, पश्चिम एशिया, चेक गणराज्य , लाओ पी डी आर, नीदरलैंड, कोरिया और हंगरी के वरिष्ठ पत्रकार और सम्पादक शामिल थें।

प्रशिक्षण, कार्यशालाएं और सम्मेलन

विकासशील देशों के लिए अनुसंधान और सूचना तंत्र (आर.आई.एस) के सहयोग से एक्स. पी. प्रभाग ने 3-4 सितम्बर 2007 को नई दिल्ली मेंढ़ वैश्वीकरण, "उभरती हुई शक्तियां और मीडिया" पर भारत, ब्राजील एवं दक्षिण अफ्रीका (आई बी एस ए) के सम्पादकों का दो दिवसीय सम्मेलन आयोजित किया। भाग लेने वाले 30 भारतीय मीडिया कर्मियों के अलावा ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका के 11 व्यक्तियों ने भाग लिया। अक्तूबर 2007 में दक्षिण अफ्रीका में आयोजित आई. बी. एस. ए. शिखर सम्मेलन के साथ-साथ सम्मेलन पर एक रिपोर्ट प्रकाशित और प्रसारित की गई।

विदेश सेवा संस्थान के सहयोग से प्रभाग ने 16-20 जुलाई 2007 के बीच "सार्क देशों के राजनयिक संवाददाताओं के लिए विशेष पाठ्यक्रम" का आयोजन किया। भारत के अनेक भागीदारों के अलावा इसमें पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, भूटान, श्रीलंका और मालदीव से 2-2 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

इस प्रभाग ने भूटान ब्रॉडकास्टिंग सर्विस कॉरपोरेशन के भीतर क्षमता निर्माण के उद्देश्य से अनेक क्रियाकलाप किए। इस प्रयोजनार्थ बी. बी. एस. सी के रेडियो और टी. वी. विभागों से 10-10 के दो दलों ने भारतीय जन संचार संस्थान में इस प्रभाग द्वारा आयोजित 2-2 सप्ताह का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

विदेशी दृश्य-श्रव्य एजेंसियों द्वारा वृत्त चित्र

प्रभाग के मुख्य कार्यों में विदेशी दृश्य-श्रव्य एजेंसियों द्वारा तैयार किए गए वृत-चित्रों को मंजूरी प्रदान करना है। प्रभाग द्वारा अंतरमंत्रीस्तरीय परामर्श के माध्यम से विदेशी निर्माताओं द्वारा भारत में वृत-चित्रों के अनुमोदन की प्रक्रिया को सरल एवं कारगर बनाने हेतु कार्रवाई की गई। इसके परिणाम-स्वरूप प्रक्रियाएं काफी सरल हो गई हैं।

वर्ष के दौरान भारत में विदेशी निर्माताओं द्वारा 430 वृत -चित्र तैयार किए गए जिनमें प्रमुख निर्माता बी. बी. सी., नैशनल ज्योग्राफिक, डिस्कवरी, चैनल, एन. एच. के, इटली का आर.ए.आई इत्यादि रहे। मजेदार बात यह है कि भारत जैसे-जैसे पर्यटन तथा व्यापार और निवेश के लिए विश्व का वांछित गंतव्य स्थान बनता जा रहा है वैसे-वैसे वृत-चित्र बनाने के अनुरोधों की संख्या बढ़ रही है। यद्यपि अधिकांश अनुरोध जापान, फ्रांस, यू. के., जर्मनी, कोरिया और संयुक्त राज्य अमरीका से आ रहे हैं, तथापि हमें चीन, अफगानिस्तान और रियूनियन द्वीपों इत्यादि से भी अनुरोध प्राप्त हुए हैं।

आधिकारिक प्रवक्ता का कार्यालय

आधिकारिक प्रवक्ता के कार्यालय ने भारत की विदेश नीतियों के क्रियान्वयन से संबंधित प्रतिदिन के घटनाक्रमों पर सूचना प्रसार हेतु एक केन्द्र के तौर पर सक्रियता से कार्य किया। कार्यालय में प्रवक्ता द्वारा नियमित मीडिया ब्रीफिंग जारी रहीं जिनमें विधिवत रूप से प्रेस विज्ञप्तियाँ, ब्रीफिंग मदें और वक्तव्य शामिल थे। अप्रैल-नवम्बर 2007 के दौरान अधिकारिक प्रवक्ता द्वारा लगभग 80 प्रेस ब्रीफिंग आयोजित की गई अथवा ब्रीफिंग मदें जारी की गई। इसके अतिरिक्त इस अवधि के दौरान 200 से अधिक प्रेस विज्ञप्तियां और वक्तव्य जारी किए गए। इन्हें ई-मेल और मंत्रालय की वेबसाइट के माध्यम से साथ-साथ परिचालित किया गया। प्रभाग ने वेबसाइट में ब्रीफिंग और अद्यतन सूचनाओं के संबंध में मीडिया को सूचित करने के लिए "एस. एम. एस-एलर्ट" का प्रयोग जारी रखा।

वर्ष के दौरान विदेश मंत्री, विदेश सचिव और मंत्रालय के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने हित चिन्ता के महत्वपूर्ण मुद्दों पर विशेष मीडिया ब्रीफिंग को संबोधित किया। प्रभाग ने 14 वें सार्क शिखर सम्मेलन की अवधि के दौरान विज्ञान भवन में विदेश सचिव की नियमित ब्रीफिंग की व्यवस्था की। शिखर सम्मलेन के अंत में विदेश मंत्री द्वारा विज्ञान भवन के प्लीनरी हॉल में दी गई ब्रीफिंग की व्यवस्था की गई जिसमें 150 से अधिक मीडिया कर्मियों ने हिस्सा लिया।

इसके अतिरिक्त मीडिया कर्मियों को पृष्ठभूमि ब्रीफिंग प्रदान करके विभिन्न महत्वपूर्ण मसलों पर सरकार की स्थिति एवं दृष्टिकोण से अवगत कराने के लगातार प्रयास किए गए। भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय समाचार पत्रों और टी. वी. संगठनों के साथ प्रधान-मंत्री, विदेश मंत्री, विदेश राज्य मंत्री और अन्य गणमान्य व्यक्तियों के साथ साक्षात्कार की व्यवस्था की गई।

प्रभाग ने यह सुनिश्चित किया कि कीनियन एअरवेज विमान दुर्घटना और ओमान में आए चक्रवात जैसी विभिन्न मानवीय आपदाओं के दौरान 24X7 के आधार पर नियमित अद्यतन सूचनाएं मीडिया को प्राप्त हों।

वेबसाइट

विदेश मंत्रालय की वेबसाइट की भूमिका प्रभाग के प्रसार प्रयासों में बहुत महत्वपूर्ण रही। वेबसाइट hppt:/meaindia.nic.in का प्रेस खण्ड को प्रधान मंत्री, मंत्रियों के अधिकारिक प्रवक्ता और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा प्रेस विज्ञप्तियों, ब्रीफिंग को विदेश नीति संबंधी भाषणों/साक्षात्कारों/वक्तव्यों को वास्तविक समय के आधार पर अद्यतन किया गया। प्रत्येक महीने 100 से अधिक दस्तावेजों का समावेश किए जाने वाली यह वेबसाइठ सरकार की सबसे ज्यादा इस्तेमाल की जाने वाली और जल्दी-जल्दी अद्यतन की जाने वाली वेबसाइट में से एक है। इस वेबसाइट पर चौथे सार्क शिखर सम्मेलन के बारे में समाचारों और सूचना के लिए एक पृथक खंड का सृजन किया गया था। प्रधान मंत्री और विदेश मंत्री की यात्राओं तथा अन्य महत्वपूर्ण घटनाक्रमों के लिए अलग से उपखंड तैयार किए गए थे।

प्रभाग ने विदेश मंत्रालय के सूचना-पट्ट का प्रयोग करना जारी रखा ताकि विश्व भर में हमारे मिशनों/केन्द्रों को भारत के विभिन्न पक्षों पर विशेषज्ञों द्वारा लिखित लेख सामग्री उपलब्ध हो सके। इस वर्ष से हमारे मिशनों द्वारा प्रयोग किए जाने के लिए बोर्ड पर नियमित रूप से रूचि की आ. पी. /ई. डी. क्लिपिंग राष्ट्रीय समाचार पत्रों से भी अपलोड किया गया।

पिछले वर्ष आरंभ की गई हिन्दी वेबसाइट को भी प्रभाग द्वारा लगातार अद्यतन किया जाता रहा। भारत में तथा विदेशों में इस वेबसाइट का व्यापक प्रयोग किया जाता रहा।

नई पहल के भाग के तौर पर प्रभाग अब वास्तविक समय के आधार पर वेब-कास्टिंग, प्रेस ब्रीफिंग तैयार करने और उनको वेबसाइट पर दृश्य-श्रव्य फॉरमेट में अपलोड करने की कार्रवाई कर रहा है।

लोक राजनय

लोक राजनय प्रभाग के कार्यों में अन्य बातों के साथ-साथ भारत और विदेश में बाह्य संपर्क क्रिया कलाप और दृश्य-श्रव्य तथा मुद्रण प्रचार शामिल है। अंतर्राष्ट्रीय मामलों में भारत की संवर्धित संलिप्तता और भारतीय अर्थव्यवस्था के विस्तार से यह आवश्यक हो गया है कि मंत्रालय भारत की विदेश नीति प्राथमिकताओं और घरेलू वास्तविकताओं के प्रभावी ढंग से व्यक्त करने हेतु भारत के भीतर और भारत से बाहर दोनो ही जगह दोनों में श्रोताओं की व्यवस्था करे ताकि भारत के भीतर एक राष्ट्रीय और सर्वसम्मत दृष्टिकोण बने और विदेश में और जानकारी से भरपूर एक समझ उत्पन्न हो।

इन उद्देश्यों को पूरा करने में सहायता हेतु यह प्रभाग सामरिक और विदेश नीति के मुद्दों पर सिविल सोसाइटियों, गैर सरकारी संगठनों, विचारकों, अनुसंधान और शैक्षणिक संस्थाओं तथा व्यापार और उद्योग के लिए और उनके सहयोग में विचार गोष्ठियों , सम्मेलनों और ब्रीफिंग का आयोजन करता है। नियमित आधार पर इन कार्यक्रमों के आयोजन हेतु विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के साथ संपर्क स्थापित किए गए हैं। इसके अतिरिक्त भारत के भीतर प्रभाग ने इन अन्योन्य क्रियात्मक और विचार मंथन सत्रों के आयोजन में दिल्ली को केन्द्र में रखने की नीति से हटने के सजग प्रयास किए है।

बाह्य संपर्क संबंधी क्रिया कलाप

प्रभाग ने चर्चा और वाद-विवाद को प्रोत्साहन देने तथा बाहर के और स्वतंत्र विशेषज्ञों के विचारों से लाभान्वित होने के लिए भारत की विदेश नीति के विभिन्न पक्षों को प्रकाश में लाने हेतु अनेक बाह्य संपर्क संबंधी गतिविधियां आयोजित की। इनमें शामिल हैं :

यूरोप और संयुक्त राज्य अमरीका से 14 भारतीय मूल के सांसदों के लिए नई दिल्ली और मुम्बई में 24-29 अक्तूबर 2007 के बीच मुख्य घरेलू और विदेश नीति मुद्दों पर एक प्रमुख ब्रीफिंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उद्घाटन भाषण भारत के उपराष्ट्रपति ने दिया और सांसदों ने प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री से मुलाकात भी की। यह इस कार्यक्रम श्रंखला का पहला कार्यक्रम था जिसमें भारतीय मूल के एवं अन्य सांसदों के लिए प्रभाग द्वारा यह कार्यक्रम आयोजित किया गया था ताकि उन्हें भारत की रूचि और चिंता के विषयों से भलीभांति परिचित कराया जा सके।

भारत की सुरक्षा अवधारणाओं, चीनी-रुसी-भारतीय त्रिपक्षीय संबंधों, भारत -मंगोलिया सहयोग और भारतीय शांति ऑपरेशन पर 18-25 नवम्बर 2007 के बीच मंगोलिया के छह वरिष्ठ शिक्षाविदों के प्रतिनिधिमंडल हेतु एक ब्रीफिंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

सरकार की पूर्वोन्मुखी नीति के उत्तर पूर्व में सिविल समाज, शिक्षाविदों और नीति निर्धारकों के सूचनार्थ प्रभाग के मुख्य अधिकारियों ने गुवाहाटी, इम्फाल, शिलांग ओर ऐजवाल जैसे विभिन्न उत्तर -पूर्वी शहरों में अन्योन्यक्रियात्मक सत्रों में भाग लिया। इसके उपरांत 16 जून 2007 को शिलांग में एक कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें विदेश मंत्री ने "भूगोल एक अवसर के तौर पर" विषय पर मुख्य सम्बोधन दिया।

"भारत की पूर्वान्मुखी नीति : उपक्षेत्रीय सहयोग के लिए चुनौतियां" विषय पर आई. सी. आर. आई ई. आर. और ओमियो कुमार द इंस्टीट्यूट आफ सोशल चेंज एण्ड डेवलेपमेन्ट के सहयोग से एक सम्मलेन का आयोजन किया गया। विदेश मंत्री ने मुख्य अभिभाषण दिया।

वर्ष के आरंभ में सार्क शिखर सम्मेलन की अनुवर्ती कार्रवाई के तौर पर प्रभाग ने 1-2 सितम्बर 2007 को कोलकाता में "सार्कः सम्पर्क के माध्यम से बढ़ता हुआ सहयोग" पर एक राष्ट्रीय विचार गोष्ठी का आयोजन किया। विदेश मंत्री ने उद्घाटन भाषण दिया।

अहिंसा का प्रथम अंतर्राष्ट्रीय दिवस मनाने के लिए प्रभाग ने 2 अक्तूबर 2007 को न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में गोलमेज चर्चा का आयोजन किया जिसमें विदेश मंत्री, प्रणव मुखर्जी, विदेश राज्य मंत्री, आनन्द शर्मा, संयुक्त राष्ट्र के उपमहासचिव डा. आशा रोज मिगिरो, अनेक विदेश मंत्रियों और 2 नोबल पुरस्कार विजेताओं सहति जाने माने विचारकों ने भाग लिया। यह चर्चा वैश्विक समुदाय के समक्ष आने वाली समकालीन चुनौतियों जैसे बढ़ती हुई धार्मिक और सांस्कृतिक असहिष्णुता और भूख और गरीबी से संबंधित मुद्दे पर आयोजित हुई। शाम को भारी संख्या में उपस्थित दर्शकों के समक्ष संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में "महात्मा -महान आत्मा" नामक एक वृत -चित्र दिखाया गया।

"भारत के लोक राजनय की भावी दिशा" पर 29 मई 2007 को नई दिल्ली में विदेश राज्य मंत्री आनन्द शर्मा की अध्यक्षता में एक विचार मंथन सत्र का आयोजन किया गया जिसमें शिक्षाविदों, राजनयिकों, विचारकों और पत्रकारों ने भाग लिया।

16 अगस्त 2007 को भारत में जापान के प्रधान मंत्री की यात्रा की भूमिका स्वरूप भारत और जापान में शैक्षिक, व्यापारिक और निवेश अवसरों पर एक पैनल चर्चा का आयोजन किया गया। "जापान भारत संबंध एक दृष्टि में" विषय पर एक द्विभाषीय दस्तावेज जारी किया गया।

प्रभाग के अधिकारियों ने भारत के भीतर लोगों और एजेंसियों तक पहुँचने के लिए निम्नलिखित विचार गोष्ठियों/सम्मेलनों में

भाग लिया। 4-5 अप्रैल 2007 को जम्मू विश्वविद्यालय में आयोजित "जम्मू व काश्मीर तथा क्षेत्रीय सामरिक अवसर और चुनौतियां" पर विचारगोष्ठी; 17-19 मई 2007 को ऐजवाल में "अमूर्त विरासतः पूर्वोत्तर की सजीव विरासत का संरक्षण" पर विचार गोष्ठी; अगस्त 2007 में पूर्वी भारत का विकास -राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में महत्वपूर्ण विषय पर सम्मलेन ; नवम्बर 2007 में इम्फाल में "जमीन, पहचान और विकास : मणिपुर अनुभव" पर विचार गोष्ठी।

प्रभाग ने 12 दिसम्बर 2007 को नई दिल्ली में में इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ स्ट्रैजिक स्टडीज (आई. आई. एस. एस.) लंदन के साथ वार्षिक "विदेश नीति वार्ता" का आयोजन किया। इस वार्ता का उद्घाटन विदेश सचिव ने किया जिसमें 3 सत्रों का आयोजन हुआ -विश्व का सामरिक स्वरूप अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद और ऊर्जा सुरक्षा। प्रभाग ने 5-6 जनवरी 2008 को भुवनेश्वर में उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर के सहयोग से "भारतीय विदेश नीति के पहलू और सामरिक मुद्दे" पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया। प्रभाग ने 13-20 जनवरी 2008 तक भारत (नई दिल्ली, हैदराबाद और मुम्बई) में प्रो. पॉल वेबले, निदेशक, स्कूल ऑफ ओरिएटल एण्ड अफ्रीकन स्टडीज (एस. ओ. ए. एस.), लंदन की भारत यात्रा का आयोजन किया। प्रो. वेबले ने जाकिर हुसैन शैक्षणिक अध्ययन केंद्र, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्याल, नई दिल्ली, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली, इंडियन स्कूल ऑफ बिजनेस, हैदराबाद और राजीव गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ कन्टेम्पोरेरी स्टडीज, मुम्बई विश्वविद्यालय में वार्त्ता प्रस्तुत की। प्रभाग ने पूर्वी प्रभाग के सहयोग से 13-23 जनवरी 2008 तक भूटान से उच्च स्तरीय व्यापारिक प्रतिनिधिमंडल की यात्रा में सहयोग प्रदान किया। इस प्रतिनिधिमंडल ने 15 जनवरी 2008 को नई दिल्ली में सी. आई. आई के साथ भागीदारी में मंत्रालय द्वारा आयोजित "भूटान में निवेश और व्यापार के अवसर" पर विचार गोष्ठी एवं गोलमेज में भाग लिया। प्रभाग ने 27-31 जनवरी 2008 तक भारत में आदरणीय जैस्सी जैक्सन की यात्रा में सहयोग प्रदान किया।

यह प्रभाग 8-9 फरवरी 2008 को चंडीगढ़ में एशियन एजुकेशन सोसाइटी द्वारा आयोजित किए जा रहे जलवायु परिवर्तन संबंधी सम्मलेन में भाग लिया एवं इसका समर्थन किया। इस प्रभाग ने 11-17 फरवरी 2008 तक यू. के. से भारत के श्रम-मित्रों का प्रतिनिधित्व करने वाले सांसदों के सात सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल के लिए चेन्नई, हैदराबाद और नई दिल्ली में एक गहन ब्रीफिंग कार्यक्रम भी आयोजित कर रहा है।

श्रव्य -दृश्य प्रचार

विगत के समान ही प्रभाग ने विदेश में भारत की छवि के संवर्धन और प्रदर्शन के लिए वृत्त-चित्रों का प्रदर्शन और फीचर फिल्में हासिल करना जारी रखा। प्रभाग द्वारा अन्य दृश्य-श्रव्य प्रचार गतिविधियों के तौर पर विदेश में फिल्मोत्सवों और भारतीय फिल्म सप्ताहों में भाग लिया गया जहाँ सांस्कृतिक और फोटो प्रदर्शिनियों को अयोजन किया गया।

वर्ष के दौरान अनेक वृत्त-चित्र तैयार किए गएः "बिस्मिल्लाह और बनारस"; "इंडिया-म्यांमा-एक टिकाऊ संबंध"; "प्लासी का युद्ध"; "खाड़ी में अनिवासी भारतीय -कुछ सफल कहानियाँ"; "निकितिन के पदचिन्ह"; "भारतीय अवसंरचना - एक अवसर"; "सांग ऑफ द सैंक्चुरी"; "भारत की सार्वभौम संस्कृति"; "म्यूजिकल बाण्ड्स ऑफ इण्डिया"; "मैन्यूफैक्चरिंग सनसाइन -रिन्यूइंग इण्डिया"; "मुम्बई" और "महात्मा -20 वीं शताब्दी की एक महान आत्मा"।

प्रभाग ने 13-15 जुलाई 2007 तक न्यूयॉर्क में आयोजित आठवें विश्व हिन्दी सम्मेलन के लिए "बॉलीवुड में हिन्दी" और मल्टीमीडिया सी. डी. "हिन्दी के स्वर कम्प्यूटर पर" नाम से विशेष तौर पर 2 वृत्त चित्र तैयार किए थे। इसके अतिरिक्त प्रभाग ने फिल्म्स डिवीजन द्वारा तैयार की गई एक डी. वी. डी. हासिल की जिसमें हिन्दी पर फिल्मों और वृत्त -चित्रों के रूचिकर हिस्से निहित हैं और प्रभाग ने दूरदर्शन द्वारा मुन्शी प्रेमचन्द्र की कहानियों वाली एक डी. वी. डी. भी हासिल की। इन्हें सम्मेलन में आए प्रतिभागियों को बांट दिया गया। "बॉलीवुड में हिन्दी" , "संयुक्त राष्ट्र में हिन्दी" और "हिन्दी के स्वर कम्प्यूटर" पर नामक 3 सी. डी. का एक संग्रहकर्त्ता पैक तैयार किया गया है जिन्हें सभी भारतीय सांसदों को उनके सूचनार्थ और विदेश स्थित मिशनों और केंद्रों के माध्यम से भारतीय मूल के लोगों द्वारा देखे जाने के लिए और हिन्दी विद्वानों और इंडोलॉजी केंद्रों को वितरित किया गया है।

हिस्ट्री चैनल के साथ चर्चा के उपरांत उक्त चैनल ने अप्रैल 2007 में "मेरा इंडिया" नामक साप्ताहिक कार्यक्रम आरंभ किया जिसमें विदेश मंत्रालय द्वारा निर्मित वृत्त-चित्रों के माध्यम से भारत को दर्शाया गया है। अप्रैल-मई 2007 की अवधि के बीच चैनल ने मंत्रालय द्वारा निर्मित वृत्त चित्रों में से 8 का प्रसारण किया। भारत की सामासिक संस्कृति पर प्रकाश डालने के लिए मंत्रालय के वृत्त-चित्रों "बिस्मिल्लाह एंड बनारस" और "उर्दू है जिसका नाम" का प्रदर्शन किया गया। 2 अक्तूबर 2007 को अनेक देशों में दस्तक देने वाले हिस्ट्री चैनल द्वारा "महात्मा -20 वीं शताब्दी की एक महान आत्मा" का प्रदर्शन किया गया। प्रभाग द्वारा तैयार किए गए वृत्त चित्रों के प्रसारण की व्यवस्था के लिए लोक सभा टी. वी. से बातचीत की जा रही है। प्रभाग ने 20-29 जुलाई 2007 के बीच नई दिल्ली में अरब और एशियाई सिनेमा के नौवें आसियान सिने फैन फिल्मोत्सव को सहयोग प्रदान किया। मंत्रालय द्वारा हासिल अथवा तैयार किए

गए अनेक वृत्त-चित्रों का प्रसारण विभिन्न विदेशी टी वी चैनलों पर किया गया। प्रभाग ने पुरस्कार विजेता क्षेत्रीय सिनेमा के प्रसारण के बारे में सजग निर्णय लिया है और 5 भाषाओं के उप शीर्षकों वाली 3 पुरस्कार विजेता क्षेत्रीय फिल्मों को हासिल करने हेतु कार्रवाई की है।

अनुकम्पा का मार्ग शीर्षक से एक फोटो प्रदर्शनी कोलम्बो स्थित हमारे मिशन, भारत-तैपे एसोसिएशन और यंगून भेजी गई। गांधी संग्रहालय द्वारा विशेष तौर पर महात्मा गांधी पर 50 फोटोग्राफों की एक प्रदर्शनी 16 भारतीय मिशनों को भेजी गई है। "गोवा के चर्चा" नामक एक प्रदर्शनी ढाका, वाशिंगटन, मिलान और यंगून स्थित हमारे मिशनों को भेजी गई है। जम्मू और कश्मीर संबंधी "पृथ्वी पर एक स्वर्ग" शीर्षक से एक फोटो प्रदर्शनी वॉशिंगटन, मिलान और येरेवान स्थित हमारे मिशनों को भेजी गई थी। प्रभाग ने विदेश में भारतीय फिल्मोत्सवों / सप्ताहों के आयोजन हेतु बाइस भारतीय मिशनों को सहयोग प्रदान किया और फीचर फिल्में भेजीं।

मुद्रण प्रचार

मासिक पत्रिका "इंडिया पर्स्पेक्टिव" मंत्रालय की अग्रणी पत्रिका रही है और वर्ष दर वर्ष इसकी लोकप्रियता बढ़ी है। इस पत्रिका में भारत की तेजी से बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था से लेकर इसकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, साहित्य, नाना प्रकार के वन्य जीवन और इसके जीवंत फिल्म उद्योग तक विभिन्न प्रकार के व्यापक विषयों के साथ-साथ सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में देश का वर्चस्व, स्वास्थ्य और मानव उद्यम से संबंधित अन्य क्षेत्र शामिल होते हैं। 15 भाषाओं में प्रकाशित होने वाली इस पत्रिका का वितरण विदेश स्थित भारतीय मिशनों के माध्यम से विश्व के सभी कोनों के पाठकों को किया जाता है। इंडिया पर्स्टपेक्टिव के सभी अंक मंत्रालय की वेबसाइट पर इसके पाठकों के लिए अंगरेजी और हिन्दी दोनों भाषाओं में इलैक्ट्रॉनिक फॉरमेट में भी उपलब्ध हैं। इंडिया पर्स्पेक्टिव ने महात्मा गांधी पर विशेष अंक के साथ ही प्रकाशन पुनः आरंभ कर दिया है।

पुस्तकों एवं प्रकाशनों के माध्यम से विदेश में भारत की छवि को दर्शाना प्रभाग की प्रचार नीति का एक अभिन्न अंग है। भारतीय अर्थव्यवस्था, विदेश नीति, कला और संस्कृति, इतिहास और विज्ञान और प्रौद्योगिकी इत्यादि पर पुस्तकें विदेश स्थित मिशनों को भेजी गईं ताकि इन पुस्तकों का प्रयोग उनके पुस्तकालयों में हो सके। 2 अक्तूबर 2007 को अहिंसा के प्रथम अंतर्राष्ट्रीय दिवस समारोहों के दौरान प्रयोग हेतु न्यूयॉर्क स्थित भारत के स्थायी मिशन सहित सभी भारतीय मिशनों को महात्मा गांधी पर पुस्तकें भेजी गईं।

रवीन्द्र नाथ टैगोर केंद्र, फैकल्टी ऑफ नेचुरल साईंसेज, गुयाना विश्वविद्यालय, जॉर्जटाउन को उपहारस्वरूप भारत के उच्चायोग, जार्जटाउन को बड़ी संख्या में तकनीकी पुस्तकें भेजीं गईं। साहित्य अकादमी द्वारा तमिल भाषा में प्रकाशित पुस्तकें कोलम्बो, कैण्डी, यंगोन, मांडले और क्वालालम्पुर स्थित भारतीय मिशनों को भेजी गईं। मैथिली भाषा में साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित पुस्तकें बीरगंज स्थित भारत के प्रधान कोंसलावास में भेजी गईं। नेपाली भाषा में साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित पुस्तकें काठमांडू स्थित भारतीय राजदूतावास को भेजी गईं। मराठी भाषा में प्रकाशित पुस्तकें तेल अवीव में हमारे मिशन को भेजी गईं।

प्रभाग ने कैलाश मानसरोवर यात्रा 2007 पर पुस्तिका, विदेश मंत्री के भाषणों तथा राष्ट्रपति और प्रधान मंत्री की आधिकारिक यात्राओं पर विवरणिकाओं का प्रकाशन किया।

प्रभाग ने प्रिटोरिया स्थित भारतीय उच्चायोग को उनके अपने प्रकाशन संबंधी प्रयासों में सहायता के लिए "इंडिया डाइजेस्ट" के प्रकाशन हेतु वित्तीय सहायता प्रदान की। पौलेंड, ताजिकिस्तान, हंगरी और जर्मनी स्थित भारत के मिशनों को प्रसिद्ध भारतीय साहित्यिक कृत्तियों की अनूदित प्रतियां निकालने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की गई। प्रभाग ने स्वतंत्रता के 60 वर्षों पर और गांधीवादी मूल्यों की समकालीन प्रासंगिकता पर भारत की पूर्वोन्मुखी नीति पर विशेष अंक निकालने के लिए "डायलॉग, बिब्लियो" और "बुक रिव्यू" जैसी प्रतिष्ठित भारतीय पत्रिकाओं के साथ समन्वय स्थापित किया।

■■

विदेश सेवा संस्थान 19

विदेश सेवा संस्थान (एफएसआई) के नए भवन का विदेश मंत्री, श्री प्रणब मुखर्जी द्वारा 14 नवंबर 2007 को औपचारिक रूप से उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर उन्होंने विदेश सेवा संस्थान में जवाहरलाल नेहरू की अर्द्धप्रतिमा का अनावरण भी किया।

भारतीय विदेश सेवा (आईएफएस) के परिवीक्षार्थियों को प्रशिक्षण

संस्थान के मुख्य कार्यकलापों में एक भारतीय विदेश सेवा के परिवीक्षाधीन अधिकारियों को प्रशिक्षण प्रदान करना है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य भारतीय विदेश सेवा के प्रशिक्षुओं को विदेश स्थित मिशनों और केन्द्रों के साथ-साथ भारतवर्ष में अपने पेशेवर कैरियर के दौरान सभी कार्यों के लिए तैयार करना है जो उनके लिए आवश्यक है। तदनुसार 2006 बैच के प्रशिक्षुओं को गहन एक वर्षीय प्रशिक्षण प्रदान किया गया जिसमें अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों तथा विदेश नीति, रक्षा तथा सुरक्षा आर्थिक कूटनीति, अन्तर्राष्ट्रीय कानून, संसदीय कार्य, सांस्कृतिक कूटनीति, प्रोटोकॉल तथा कौंसली विषयों के माड्यूल शामिल हैं। इस कार्यक्रम में प्रशासन और लेखा, वार्ता कौशल, प्रतिनिधित्व-कौशल और मीडिया के साथ संबंध बनाना भी शामिल है। प्रशिक्षण माड्यूल्स-व्याख्यानों, वार्ता-सत्रों, सेमिनारों के साथ-साथ विभिन्न प्रमुख संस्थानों के साथ संबद्ध कर कार्यान्वित किए गए। सहभागियों को भारत के पड़ोसियों के बारे में उनकी जानकारी को संवर्धित करने और विदेश स्थित भारतीय मिशनों के कार्यों से उन्हें परिचित कराने के उद्देश्य से प्रशिक्षण कार्यक्रमों में म्यांमा के मई 2007 में मिशन ओरियंटेशन दौरे भी शामिल किए गए हैं। 2006 बैच के भा.वि.से. के प्रशिक्षुओं को पड़ोसी देश के हमारे मिशनों और 30 अक्टूबर-23 नवंबर 2007 तक 4 सप्ताह के मिशन संबद्ध कार्यक्रम के अंतर्गत विस्तारित पड़ोसी देश में भी संबद्ध किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य भा.वि.से. के प्रशिक्षुओं को विदेश स्थित हमारे मिशनों की संरचना और कार्यकरण का आमने-सामने का अनुभव और समझ प्रदान करना था।

अन्य प्रशिक्षण संस्थानों के साथ संबंधों का प्रोन्नयन

राष्ट्रीय लालबहादुर शास्त्री प्रशासन अकादमी, राष्ट्रीय प्रत्यक्ष कर अकादमी, राष्ट्रीय सीमा-शुल्क, उत्पाद एवं स्वापक अकादमी, सचिवालय प्रशिक्षण एवं प्रबंधन संस्थान एवं पुलिस प्रशिक्षण एवं प्रबंधन संस्थान एवं पुलिस प्रशिक्षण एवं अनुसंधान ब्यूरो सरीखे अन्य प्रशिक्षण संस्थान के साथ विदेश सेवा संस्थान ने नियमित संपर्क बनाए रखा है। भारतीय विदेश सेवा तथा अन्य सेवाओं के बीच संबंधों को विकसित करने के उद्देश्य से, जिसे विदेश मंत्रालय द्वारा उच्च प्राथमिकता दी जा रही है, विदेश सेवा संस्थान अन्य प्रशिक्षण संस्थानों के साथ प्रयासरत है। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए विदेश सेवा संस्थान ने मंत्रिमंडल सचिवालय के अधिकारियों के लिए अप्रैल मई और अक्टूबर 2007 में विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए।

कूटनीतिक संवाददाताओं के लिए विशेष कार्यक्रम के अंतर्गत मंत्रालय के विदेश प्रचार प्रभाग के सहयोग से अप्रैल 2007 में कूटनीतिक संवाददाताओं के लिए चतुर्थ कार्यक्रम आयोजित किया गया। एफएसआई ने विदेश प्रचार प्रभाग के सहयोग से सार्क देशों के कूटनीतिक संवादाताओं के लिए भी एक विशेष पाठ्यक्रम 16-20 जुलाई, 2007 तक संचालित किया। इस विशेष पाठ्यक्रम में भारत के 10 संवाददाता और सात सार्क देशों के 14 संवाददाताओं सहित 25 कूटनीतिक संवाददाताओं ने भाग लिया।

मंत्रालय के अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रशिक्षण

विदेश सेवा संस्थान ने नियमित रूप से विदेश मंत्रालय के कर्मचारियों के लिए "मूल व्यावसायिक पाठ्यक्रम" पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया है। यह प्रशिक्षण स्टाफ सदस्यों को कम्प्यूटर में दक्षता बढ़ाने तथा उन्हें प्रशासन, लेखा, कौंसली कार्य, प्रारूपण, कार्यालय प्रक्रिया तथा संचार के स्वरूप के विभिन्न पहलुओं से अद्यतन बनाने से संबंधित है। मंत्रालय की सूचना एवं ई-गवर्नेन्स प्रभाग की सहायता से विदेश सेवा संस्थान ने मंत्रालय के स्टाफ-कर्मियों के लिए विशेष रूप से डिजाइन किए गए साफ्टवेयर पैकेजों पर प्रशिक्षण देना शुरू किया है, जिसे लेखा एवं कांसुली कार्यों में उपयोग में लाया जा सकता है। यह प्रशिक्षण मूल व्यावसायिक पाठ्यक्रम का एक अभिन्न अंग बन गया है। अप्रैल 2007 से विदेश सेवा संस्थान ने दो मूल व्यावसायिक पाठ्यक्रम आयोजित किया।

केंद्रीय अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा संस्थान (सीआईईएफएल),

हैदराबाद के सहयोग से विदेश में तैनाती पर जाने वाले मंत्रालय के सुरक्षा गार्डों के लिए 30 अप्रैल से 11 मई 2007 तक एफएसआई द्वारा "बेसिक स्पोकन इंगलिश" का एक प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। उन लोगों ने "हैंडलिंग ऑफ टेलिफोन्स एंड विजिटर्स" पर एक प्रशिक्षण माड्यूल में भी भाग लिया जो कि एफएसआई द्वारा 24 मई 2007 को सचिवालय प्रशिक्षण एवं प्रबंध संस्थान (आईएसटीएम) के सहयोग से आयोजित किया गया।

विदेशी राजनयिकों के लिए कार्यक्रम

विदेश सेवा संस्थान, विश्व भर के देशों के साथ मैत्री एवं सहयोग के सेतु का निर्माण करने के अपने प्रयासों में विदेशी राजनयिकों के लिए नियमित रूप से पाठ्यक्रम आयोजित कर रहा है। विदेशी राजनयिकों के लिए आयोजित पाठ्यक्रम का व्यापक स्वागत किया गया है और उसे काफी सराहना भी मिली है। 43वां और 44वां विदेशी राजनयिक व्यावसायिक पाठ्यक्रम (पीसीएफडी) क्रमशः 11 जुलाई-17 अगस्त 2007 और 24 अक्टूबर-30 नवंबर 2007 तक आयोजित किया गया। विदेशी राजनयिकों के लिए 43वें व्यावसायिक पाठ्यक्रम में 23 देशों के 24 राजनयिकों ने और 44वें विदेशी राजनयिकों के लिए व्यावसायिक पाठ्यक्रम में 22 देशों के 22 राजनयिकों ने भाग लिया। आसियान देशों के राजनयिकों के लिए एक विशेष पाठ्यक्रम भी 14 अगस्त-14 सितम्बर 2007 तक आयोजित किया गया, जिसमें 10 आसियान देशों के 24 राजनयिकों ने भाग लिया।

विदेश स्थित समकक्ष संस्थानों के साथ संपर्क

वर्ष के दौरान सांस्थानिक संपर्कों के रूप में विदेश सेवा संस्थान तथा किर्गिस्तान, सर्बिया, फिलीपीन्स, ब्राजील, नाईजीरिया और चेक गणराज्य के समकक्ष संस्थानों के बीच सहयोग का सांस्थानिक ढांचा प्रदान करने वाले करार/समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। अप्रैल-नवंबर 2007 के दौरान किर्गिस्तान, दक्षिण अफ्रीका, मालदीव, चेक गणराज्य और सऊदी अरब के समकक्ष संस्थानों के प्रमुखों ने विदेश सेवा संस्थान का दौरा किया। इन दौरों के दौरान विदेश सेवा संस्थान और समकक्ष संस्थानों के बीच सहयोग के विभिन्न आयामों पर चर्चा हुई। एफएसआई के समकक्ष संस्थानों द्वारा दिए गए आमंत्रण के अनुसरण में डीन (एफएसआई) ने राजनयिकों के प्रशिक्षण और संगोष्ठियों एवं व्याख्यान आयोजित करने में अनुभव एवं सहभागिता का आदान-प्रदान करने के क्षेत्रों में संभावित सहयोग पर विचार-विमर्श करने के लिए मेक्सिको, सऊदी अरब और और मोरक्को की क्रमशः अप्रैल जून और नवंबर 2007 में यात्रा की। भारतीय विदेश सेवा संस्थान के संकाय अध्यक्ष (डीन) ने इंस्टीट्यूटों रियो ब्रांको, ब्रासीलिया में 10-12 सितंबर 2007 को आयोजित भारत, ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका (इब्सा) राजनयिक संस्थानो के प्रमुखों की बैठक में भाग लेने के लिए ब्राजील की यात्रा भी की।

प्रख्यात लोगों के व्याख्यान

विदेश सेवा संस्थान ने प्रख्यात एवं विशिष्ट व्यक्तियों के नियमित रूप से व्याख्यान आयोजित किए। "इंडिया ऑफ माई ड्रीम्स" विषय पर एफएसआई द्वारा आयोजित व्याख्यान श्रृंखलाओं में कई प्रख्यात लोगों के व्याख्यान शामिल हैः जैसे कि सुनील भारती मित्तल, अध्यक्ष एवं ग्रुप प्रबंध निदेशक भारती इंटरप्राइजेज द्वारा 10 अप्रैल 2007 को दिया गया व्याख्यान; शिवराज पाटिल, गृह मंत्री द्वारा दिया गया 14 जुलाई 2007 का व्याख्यान; डा. मोंटेक सिंह अहलुवालिया, उपाध्यक्ष, योजना आयोग द्वारा 6 अगस्त 2007 का व्याख्यान; मणिशंकर अय्यर पंचायती राज, युवा कार्य एवं खेलकूद तथा पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्री का 28 अगस्त 2007 का व्याख्यान, डा. शशि थरूर, पूर्व अवर महासचिव, संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा दिया गया 27 अक्टूबर 2007 का व्याख्यान और सुप्रसिद्ध इतिहासकार डा. रामचन्द्र गुहा द्वारा दिया गया 2 नवंबर 2007 का व्याख्यान।

समीक्षाधीन अवधि के दौरान, एफएसआई ने "हिस्टोरिक टर्नअराउंड ऑफ दी इंडियन रेलवे" शीर्षक पर 28 जून 2007 को रेल मंत्री, लालू प्रसाद का व्याख्यान, "इस्लाम, जेहाद और आतंकवाद पर विश्व युद्ध" शीर्षक पर एशियन एज के मुख्य संपादक एम.जे. अकबर का 27 जुलाई, 2007 का व्याख्यान; "इमर्जेन्स ऑफ इंडिया एंड चाइना एज मेजर इकॉनोमिक पावर्स" शीर्षक पर इमेरिटस प्रोफेसर लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स मेघनाद देसाई, का 30 जुलाई, 2007 का व्याख्यान; "नॉलेज फॉर ए मोर जस्ट, इक्विटेबल एंड इनक्लुसिव सोसायटी" शीर्षक पर डा. साम पित्रोदा, अध्यक्ष, नेशनल नॉलेज कमीशन का 12 अक्टूबर 2007 का व्याख्यान; "ब्रांडिंग इंडिया इन ए ग्लोबल कंटेक्स्ट" शीर्षक पर दीपक सी. जैन, डीन, केलॉग स्कूल ऑफ मैनेजमेंट, नार्थवेस्टर्न युनिवर्सिटी, यूएसए का 19 अक्टूबर 2007 का व्याख्यान; "नीड ऑफ ए जस्ट, इक्विटेबल एंड इन्क्लूसिव सोसायटी इन दी ट्वेंटी फर्स्ट सेंचुरी" शीर्षक पर मीरा कुमार, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री का 26 अक्टूबर 2007 का व्याख्यान भी आयोजित की। विदेश सेवा संस्थान ने "इंडिया ऐट सिक्सटी" पर एक हंगामी सत्र भी 29 सितम्बर 2007 को आयोजित किया। इस सत्र की अध्यक्षता भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश और पूर्व अध्यक्ष, राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग, न्यायमूर्ति जे.एस. वर्मा द्वारा की गई। इस हंगामी सत्र के विशिष्ट सहभागियों में डा. सोनल मानसिंह, ले. ज. सतीश नांबियार, सईद नकवी, प्रो. वरूण साहनी, मिथिली भुस्नुरमठ, सादिया देहलवी और राजदूत सुरेन्द्र कुमार शामिल हैं। इन व्याख्यान सत्रों में राजनयिक

समुदाय के प्रतिनिधि, सेवारत एवं सेवानिवृत्त विदेश सेवा के अधिकारी, शिक्षाविदों, भा.वि.से. के प्रशिक्षुओं, विभिन्न पाठ्यक्रमों में भाग लेनेवाले राजनयिकों और मीडिया से जुड़े लोगों ने भाग लिया।

■■

20 राजभाषा नीति का कार्यान्वयन और विदेशों में हिंदी का प्रचार-प्रसार

भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन को विदेश मंत्रालय में उच्च प्राथमिकता प्रदान की जाती है। द्विपक्षीय संधियों, करारों, समझौता ज्ञापनों, मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट जैसे दस्तावेज, संसद प्रश्नों और संसद के समक्ष रखे जाने वाले अन्य दस्तावेजों को द्विभाषी रूप में तैयार कराया जाता है।

हिंदी प्रशिक्षण मंत्रालय के विदेश सेवा संस्थान द्वारा संचालित प्रशिक्षण कार्यक्रमों का एक अभिन्न अंग है। इस प्रकार के दो कार्यक्रम 15 मई 2007 और 9 अगस्त 2007 को आयोजित किए गए। कुल 51 अधिकारियों/कर्मचारियों ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लिया। मंत्रालय के हिंदी अनुभाग द्वारा भी हिंदी प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किए जाते हैं।

विदेशों में हिंदी प्रचार-प्रसार के लिए मंत्रालय की एक सुव्यवस्थित योजना है। इस योजना के तहत हिंदी शिक्षण सामग्री विदेशी संस्थाओं को विदेश स्थित भारतीय मिशनों के माध्यम से भेजी जाती है। इनमें हिंदी पाठ्य पुस्तकें, साहित्यिक और बच्चों की पुस्तकें, हिंदी सीखने की सीडी, कंप्यूटरों पर हिंदी में काम करने के साफ्टवेयर, शब्दावलियां आदि शामिल हैं। हिंदी संबंधी गतिविधियों के लिए मंत्रालय विभिन्न विदेशी विश्वविद्यालयों और अन्य शैक्षिक संस्थाओं को विदेश स्थित मिशनों के माध्यम से सहयोग भी प्रदान करता है। वर्ष 2007-08 के दौरान मंत्रालय ने सूरीनाम में हिंदी पाठ्य पुस्तकों के प्रकाशन के लिए और दक्षिण कोरिया में कोरियाई-हिंदी शब्दकोश के प्रकाशन के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की। मंत्रालय ने कीव राजकीय तारा सेवचन्को विश्वविद्यालय, कीव के सहयोग से हिंदी भाषा और भारतीय साहित्य केंद्र की स्थापना करने में भी मदद की है और इस केंद्र तथा यूक्रेन के अन्य तीन विश्वविद्यालयों में हिंदी शिक्षण सुविधा के लिए कंप्यूटरों, प्रिंटरों और डिश एंटिना भेंट किए गए हैं।

मंत्रालय द्वारा भारतीय विद्या भवन, न्यूयार्क के सहयोग से न्यूयार्क (अमरीका) में 13-15 जुलाई 2007 तक आठवें विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में विभिन्न देशों के 850 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया। विदेश राज्य मंत्री श्री आनन्द शर्मा के नेतृत्व में एक 95 सदस्यीय सरकारी प्रतिनिधिमंडल ने सम्मेलन में भाग लिया। सम्मेलन का उद्घाटन संयुक्त राष्ट्र संघ के मुख्यालय में हुआ। संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव, बान की-मून उद्घाटन सत्र के सम्मानित अतिथि रहे। पहला अकादमिक सत्र "संयुक्त राष्ट्र संघ" में हिंदी का आयोजन भी संयुक्त राष्ट्र संघ में किया गया। सम्मेलन में भारत के 20 तथा विदेशों के 20 कुल 40 विद्वानों को हिंदी भाषा और साहित्य में उनके विशेष योगदान के लिए सम्मानित किया गया।

विदेशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए मंत्रालय द्वारा विभिन्न देशों में क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलनों का आयोजन एक महत्वपूर्ण कदम है। वर्ष 2007-08 के दौरान बुडापेस्ट, हंगरी में 24-26 अक्तूबर, 2007 तथा सियोल, दक्षिण कोरिया में 9-11 नवंबर 2007 को क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलन आयोजित किए गए थे। मंत्रालय के इस पहल का विदेश स्थित हिंदी विद्वानों ने भरपूर स्वागत किया है। विभिन्न देशों, जहां के स्थानीय विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती है, में इस तरह के सम्मेलनों के आयोजन की नियमित आधार पर मांग होती है।

मंत्रालय केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा में हिंदी पढ़ने के लिए विदेशी छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान करने के कार्य का समन्वय करता है। वार्षिक रूप से 100 छात्रवृत्तियां प्रदान की जाती हैं। वर्ष 2007-08 में 32 देशों के 75 विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियां प्रदान की गयीं।

मंत्रालय मारीशस में विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना से संबंधित कार्य का भी सक्रियतापूर्वक समन्वय कर रहा है। सचिवालय के कार्यकारी बोर्ड की पहली बैठक 24-25 मई 2007 को मारीशस में हुई थी और इसके शासी निकाय की पहली बैठक 28 जनवरी 2008 को नई दिल्ली में हुई। विदेश मंत्री प्रणब मुखर्जी ने इस बैठक की अध्यक्षता की। भारत से मानव संसाधन विकास मंत्री अर्जुन सिंह और पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री अंबिका सोनी तथा मारीशस से शिक्षा और मानव संसाधन मंत्री डी गोखुल और विदेश, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार एवं सहयोग मंत्री एम.एम. डुल्लू इस बैठक में भाग लेने वाले अन्य मंत्री थे। परिषद ने यह निर्णय लिया कि सचिवालय 11 फरवरी, 2008 से कार्य करना प्रारंभ कर देगा।

हिंदी दिवस 14 सितंबर 2007 के अवसर पर कई मिशनों ने कवि सम्मेलन, निबंध प्रतियोगिताएं और सांस्कृतिक कार्यकलापों का आयोजन किया।

मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति का पुनर्गठन तत्कालीन

विदेश मंत्री की अध्यक्षता में 8 फरवरी, 2005 को किया गया। इस समिति के वर्तमान अध्यक्ष विदेश राज्य मंत्री श्री आनन्द शर्मा हैं। मंत्रालय तथा विदेश स्थित मिशनों में हिंदी के प्रयोग की स्थिति की समीक्षा करने के लिए विदेश राज्य मंत्री श्री आनन्द शर्मा की अध्यक्षता में समिति की एक बैठक 17 जनवरी 2008 को संपन्न हुई।

विश्व हिंदी दिवस 10 जनवरी 2008 मनाया गया। केंद्रीय हिंदी संस्थान (आगरा और दिल्ली केंद्र) दिल्ली विश्वविद्यालय और जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय में पढ़ाई कर रहे विदेशी विद्यार्थियों के लिए एक निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस दिन आयोजित एक समारोह में मुख्य अतिथि विदेश राज्य मंत्री श्री आनन्द शर्मा ने विजेताओं को नकद पुरस्कार, हिंदी की पुस्तकें और शब्दकोश प्रदान किए।

■■

21 भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद

भारत तथा अन्य देशों के बीच सांस्कृतिक संबंध और पारस्परिक समझ स्थापित और सुदृढ़ करने तथा उन्हें पुनर्जीवित करने के प्राथमिक उद्देश्य के साथ भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद की औपचारिक रूप से वर्ष 1950 में स्थापना की गई थी। इसका लक्ष्य जैसा कि संगम ज्ञापन में उल्लेख किया गया है, निम्नलिखित हैः

- भारत की, विदेश सांस्कृतिक सबंध से संबंधित नीति एवं कार्यक्रम तैयार करना और उसे कार्यान्वित करने में भाग लेगा;
- दूसरे देशों और लोगों के साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देना।
- अन्य देशों और लोगों के साथ सांस्कृतिक संबंध और पारस्परिक समझ को बढ़ावा देना और उसे सुदृढ़ करना;
- संस्कृति के क्षेत्र में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ संबंध स्थापित और विकसित करना।

इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए परिषद लगा हुआ है। परिषद के मुख्य कार्यकलाप निम्नलिखित हैंः भारत सरकार और अन्य अभिकरणों की ओर से विदेशी छात्रों के लिए छात्रवृत्ति योजनाओं का प्रशासन तथा अन्तर्राष्ट्रीय छात्रों का कल्याण; भारतीय नृत्य एवं संगीत सीखने के लिए विदेशी छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान करना; प्रदर्शनियों का आदान-प्रदान; अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों एवं परिसंवादों का आयोजन एवं उनमें भाग लेना; विदेशों में प्रमुख सांस्कृतिक उत्सवों में भाग लेना; विदेशों में "भारत महोत्सव" का आयोजन करना; मंचीय कलाकारों द्वारा व्याख्यान-प्रदर्शन का आयोजन; विशिष्ट अतिथि कार्यक्रम जिसके अन्तर्गत विदेशों के प्रसिद्ध व्यक्तियों को भारत आने के लिए आमंत्रित किया जाता है और आगंतुकों का विदेश कार्यक्रम जिसके अन्तर्गत विदेश स्थित संस्थानों में व्याख्यान देने, पुस्तकों का प्रस्तुतिकरण, श्रव्य-दृश्य सामग्री; कला-वस्तु तथा संगीत-यंत्र देने के लिए विशेषज्ञों को विदेश भेजा जाता है; अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के लिए दिए जाने वाले जवाहरलाल नेहरू पुरस्कार के लिए सचिवालय उपलब्ध कराना; वार्षिक मौलाना आजाद स्मृति व्याख्यान का आयोजन, मौलाना आजाद निबंध प्रतियोगिता का आयोजन; भारत तथा विदेशों में वितरण हेतु पुस्तकों और पत्रिकाओं का प्रकाशन; विदेशों में भारतीय सांस्कृतिक केन्द्रों को बनाए रखना; एक समृद्ध पुस्तकालय और मौलाना अबुल कलाम आजाद की पांडुलिपियों का रख-रखाव; दुर्लभ पांडुलिपियों का अंकीयकरण।

क्षेत्रीय कार्यालय, विदेशों में भारतीय सांस्कृतिक पीठ

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के 11 क्षेत्रीय कार्यालय बंगलौर, चंडीगढ़, चेन्नई, हैदराबाद, जयपुर, कोलकाता, लखनऊ, मुम्बई, तिरुवनन्तपुरम, पूणे और वाराणसी में कार्य कर रहे हैं।

विदेशों में भारत की साझी सांस्कृतिक विरासत के प्रति जागरूकता और समझ बढ़ाने के उद्देश्य से भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद काहिरा (मिस्र), बर्लिन (जर्मनी), पोर्ट लुई (मारीशस), पारामारिबो (सुरीनाम), जार्जटाउन (गुयाना), जकार्ता (इंडोनेशिया), मास्को (रूसी परिसंघ), लंदन (यूके) अल्माटी (कजाख्स्तान), ताशकंद (उजबेकिस्तान), डर्बन और जोहान्सबर्ग (दक्षिण अफ्रीका), पोर्ट ऑफ स्पेन (त्रिनिदाद एवं टोबैगो), कोलंबो (श्रीलंका), दुशांबे (ताजिकिस्तान), क्वालालम्पुर (मलेशिया), सुवा (फिजी), टोकियो (जापान), काठमांडू (नेपाल) और काबुल (अफगानिस्तान) में 20 सांस्कृतिक केन्द्रों और बाली (इंडोनिशिया) और लौटोका (फिजी) में दो उप-केन्द्रों का संचालन कर रहा है। परिषद ढाका (बांग्लादेश) में संगीत एवं नृत्य अकादमी का भी वित्तपोषण कर रहा है और एक नया केन्द्र खोलने के प्रस्ताव पर विचार कर रहा है। काठमांडू और काबुल में दो नए केन्द्रों का उद्घाटन क्रमशः 16 अगस्त 2007 और 14 सितम्बर 2007 को किया गया।

द्विपक्षीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, विदेशों में हिन्दी के प्रचार-प्रसार की योजना और परिषद अपने कार्यक्रमों के अन्तर्गत भारतीय भाषाओं एवं अन्य संबंधित विषयों को सिखाने के लिए भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, विदेशों में भारतीय अध्ययन पीठ बनाए हुए है। वर्तमान में, पारामारिबो (सुरीनाम), बुडापेस्ट (हंगरी), मास्को (रूस), सियोल (दक्षिण कोरिया), वारसा (पोलैंड-दो पद, हिन्दी और तमिल में), पोर्ट ऑफ स्पेन (त्रिनिदाद एवं टोबैगो), सोफिया (बुल्गारिया), बुडापेस्ट (रोमानिया), बीजिंग (चीन), मैड्रिड (स्पेन), बैंकाक (थाईलैंड), पेरिस (फ्रांस), ओश (किर्गीस्तान), ताशकंद (उजबेकिस्तान), ब्रसेल्स (बेल्जियम) और जलालाबाद (अफगानिस्तान) में हिन्दी, संस्कृत, तमिल, आधुनिक भारतीय इतिहास, भारतीय सभ्यता के शिक्षण के लिए 22 पीठ

कार्य कर रहे हैं। इसके अलावा, परिषद अल्पकालिक रोटेटिंग पीठ चला रहा है, जिनमें उलानबटार (मंगोलिया) में संस्कृत एवं बौद्ध अध्ययन पीठ; पेनसिल्वेनिया में भारतीय अध्ययन पीठ; जर्मनी में भारतीय अध्ययन के पांच पीठ और साइंसेस पो, पेरिस में अर्थशास्त्र का एक पीठ शामिल है। अन्य देशों में भी अल्पकालिक पीठ शुरू करने का प्रस्ताव है।

विदेश जाने वाले यात्रियों का कार्यक्रम

भारत तथा अन्य देशों के बीच सांस्कृतिक संबंध और पारस्परिक समझ को बढ़ाने और उसे मजबूत बनाने के अपने प्रयासों के भाग के रूप में, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद. विदेश जाने वाले यात्रियों के कार्यक्रम के अंतर्गत विद्वानों, बुद्धिजीवियों, शिक्षाविदों और कलाकारों के आदान-प्रदान में सहायता करता है। अप्रैल-नवंबर 2007 की अवधि के दौरान परिषद ने विश्व के विभिन्न हिस्सों मे 56 प्रख्यात विद्वानों के दौरों को प्रायोजित किया है।

महोत्सव

भारत और जापान के बीच हस्ताक्षरित संयुक्त वक्तव्य के अनुसरण में वर्ष 2007 में दोनों देशों में एक-दूसरे के महोत्सव आयोजित किए गए। भारत और जापान के प्रधानमंत्रियों द्वारा संयुक्त रूप से 14 दिसंबर, 2006 को उद्घाटन किया गया। भारत महोत्सव 10 दिसंबर, 2007 को संपन्न हुआ। जापान में चल रहे एक वर्षीय भारत महोत्सव में परिषद ने भाग लेने के लिए 24 प्रदर्शन-दलों को प्रायोजित किया।

इसरायल में भारत महोत्सव

भारत और इसरायल के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना के 15वीं वर्षगांठ को मनाने और साथ ही भारत की स्वतंत्रता के 60वीं वर्षगांठ को मनाने के लिए "अतुल्य भारत" महोत्सव इसरायल में 15-23 अगस्त 2007 तक आयोजित किया गया। उपर्युक्त महोत्सव में भाग लेने के लिए परिषद ने एक 9 सदस्यीय मिश्रित दल वहां भेजा।

प्रथम भारत, ब्राजील एवं दक्षिण अफ्रीका नृत्य एवं संगीत (इब्सा) महोत्सव

प्रथम इब्सा नृत्य एवं संगीत महोत्सव 26-29 अक्टूबर 2007 तक ब्राजील में आयोजित किया गया, जिसमें तीनों देशों के प्रदर्शन कला मंडलियों ने भाग लिया। परिषद ने इस कार्यक्रम के लिए एक 14 सदस्यीय समकालीन नृत्य मंडली को प्रायोजित किया।

विदेशी छात्रों को छात्रवृत्तियां एवं कल्याण

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद की महत्वपूर्ण गतिविधियों में से एक है विदेशी छात्रों को डॉक्टोरल, स्नातकोत्तर, स्नातक से नीचे के पाठ्यक्रमों के साथ-साथ इंजीनियरिंग, फार्मेसी, व्यापार प्रबंधन और लेखाविधि जैसे व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के लिए छात्रवृत्ति योजनाओं का संचालन करना है। परिषद द्वारा प्रशासित विभिन्न छात्रवृत्ति योजनाओं के तहत भारत में अभी लगभग 2200 विदेशी छात्र अध्ययन कर रहे हैं। अप्रैल-नवंबर 2007 के दौरान परिषद ने अफगानी छात्रों के लिए 500 छात्रवृत्तियों सहित 1153 नई छात्रवृत्तियां दी है। परिषद विदेशी छात्रों के लिए नियमित रूप से शिविर एवं अध्ययन दौरे आयोजित करता है।

भारत आने वाले सांस्कृतिक शिष्टमंडल

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद भारतवर्ष के विभिन्न शहरों में कार्यक्रम प्रस्तुत करने के लिए विदेशी प्रदर्शन कलाकारों के भारत दौरे का आयोजन करता है। इन मंडलियों की मेजबानी द्विपक्षीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अन्तर्गत और साथ ही विदेश स्थित भारतीय मिशनों की अनुशंसाओं पर और भारत स्थित विदेशी राजनयिक मिशनों और सांस्कृतिक केन्द्रों के अनुरोधों पर की जाती है। अप्रैल-नवंबर 2007 की अवधि के दौरान पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका, नेपाल, अफगानिस्तान, भूटान, मालदीव, इसरायल, अजरबैजान, मैक्सिको, मिस्र, मारीशस, पोलैंड, वियतनाम, ईरान, तुर्की, कजाख्स्तान, स्पेन और दक्षिण कोरिया के बीच विदेशी सांस्कृतिक मंडलियों के दौरों की परिषद ने मेजबानी की। परिषद ने अप्रैल 2007 में नई दिल्ली में हुई सार्क शिखर सम्मेलन की मेजबानी को यादगार बनाने के लिए सभी सार्क सदस्य देशों के कलाकारों को शामिल करते हुए कई सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किया।

भारत में आयोजित अन्य प्रमुख सांस्कृतिक कार्यक्रमों में- श्रीनगर में 27 जून से 7 जुलाई, 2007 तक सूफी उत्सव, नई दिल्ली में 6-8 अगस्त 2007 तक मल्हार उत्सव, ख्याति प्राप्त पाकिस्तानी कलाकारा ताहिरा सईद और प्रख्यात बांग्लादेशी गायिका रूना लैला का 20 अक्टूबर 2007 को नई दिल्ली में प्रदर्शन और नई दिल्ली में ही 27 अक्टूबर 2007 को आयोजित एक अन्य पाकिस्तानी कलाकार आबिदा परवीन का प्रदर्शन शामिल है। परिषद ने जुलाई, 2007 में न्यूयार्क में आयोजित 8वें विश्व हिन्दी सम्मेलन के दौरान भी सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया। परिषद ने 30 नवंबर-9 दिसंबर, 2007 तक नई दिल्ली में आयोजित प्रथम सार्क सांस्कृतिक महोत्सव को यादगार बनाने के लिए एक फ्यूजन संगीत उत्सव, खाद्य उत्सव, फैशन शो, छात्र आदान-प्रदान कार्यक्रम, हस्तशिल्प प्रदर्शनी और लोक कलाओं पर एक संगोष्ठी सहित कई कार्यक्रम आयोजित किए।

प्रकाशन

"8वें विश्व हिन्दी सम्मेलन 2007" के अवसर पर परिषद ने कई प्रकाशन निकाले जिनमें "चेतना का आत्मसंघर्ष" नामक एक

विशेष प्रकाशन, "विश्व हिन्दी निर्देशिका" और अपनी तिमाही प्रकाशन "गगनांचल" का एक विशेष अंक का प्रकाशन शामिल है। इन प्रकाशनों का विमोचन न्यूयार्क स्थित संयुक्त राष्ट्र संघ के मुख्यालय में विदेश राज्य मंत्री श्री आनन्द शर्मा द्वारा 13 जुलाई, 2007 को किया गया। परिषद ने 1-9 सितम्बर 2007 तक 13वें दिल्ली पुस्तक मेला में भी भाग लिया।

सम्मेलन एवं संगोष्ठी

समीक्षाधीन अवधि के दौरान परिषद ने विभिन्न देशों का प्रतिनिधित्व करने वाले बुद्धिजीवियों, मत निर्माताओं और शिक्षाविदों के बीच सामंजस्य स्थापित करने के उद्देश्य से विभिन्न सम्मेलन एवं संगोष्ठियों के आयोजन में सहयोग किया। इनमें 21-22 अप्रैल 2007 तक साउथ एशिया इंटरफेथ हारमोनी कानक्लेव, 20-23 जुलाई तक इंटरनेशनल पोयट्री फेस्टिवल, 25-27 अगस्त 2007 तक मिल्लीनेटी ऑफ मौलाना जलालुद्दीन रूमी और 17-19 सितम्बर 2007 तक स्टोरी टेलिंग पर अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, 1-3 नवंबर 2007 तक "इकॉनामिक्स ऑफ नान-वायलेंस" पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन शामिल है। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद द्वारा दिया गया सहयोग पर्याप्त विदेशी भागीदारी वाले महत्वपूर्ण सम्मेलनों एवं संगोष्ठियों को सहायता देने की उसके नीति के अनुरूप था।

अर्द्ध प्रतिमाएं एवं प्रदर्शनियां

परिषद ने हैम्बर्ग (जर्मनी) और आदिस अबाबा (इथोपिया) में लगाए जाने के लिए महात्मा गाँधी की दो अर्द्ध प्रतिमाएं और विलिंगटन (न्यूजीलैंड) और बर्न (स्विटजरलैंड) में लगाई जाने के लिए महात्मा गाँधी की दो प्रतिमाएं भेजीं। चार बड़ी प्रदर्शनियां विदेशों में लगाई गई। इनमें प्राग और डेनमार्क में "सेलेब्रेटिंग वीमेन-अमृता शेरगिल रिविजिटेड" नामक प्रदर्शनी, पोलैंड में "वीमेन बाई वीमेन" की प्रदर्शनी, अफगानिस्तान में परिषद द्वारा आयोजित एक विशेष शिविर में अग्रणी सार्क कलाकारों द्वारा प्रस्तुत "सार्क पेंटिंग्स एक्जिविशन" और लंदन में "रिलीजन्स ऑफ इंडिया" पर फोटो प्रदर्शनी शामिल है।

सार्क पेंटिंग्स प्रदर्शनी का उद्घाटन श्री प्रणब मुखर्जी विदेश मंत्री ने नई दिल्ली में 2 जून 2007 को आयोजित एक विशेष समारोह में किया। परिषद ने वियतनाम की पारंपरिक वस्त्र सज्जा एवं ज्वैलरी "वियतनाम टूडे" नामक एक फोटो प्रदर्शनी, क्रोशिया के कलाकारों द्वारा समकालीन क्रोशियाई आधुनिक कला की एक प्रदर्शनी, सुविख्यात बंगलादेशी चित्रकार रंजीत दास की एक प्रदर्शनी और जार्डन के शरीफाह हिन्द नासर की चित्रकलाओं पर नई दिल्ली में एक प्रदर्शनी भी आयोजित की।

परिषद ने न्यूयार्क में जुलाई में आयोजित 8वें विश्व हिन्दी सम्मेलन के दौरान हिन्दी भाषा की प्रगति और सूचना प्रौद्योगिकी में उसके प्रयोग पर एक विशेष प्रदर्शनी आयोजित करने का समन्वय किया। संयुक्त राष्ट्र संघ में 2 अक्टूबर 2007 को प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस आयोजित किए जाने के अवसर पर परिषद ने संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में 2-12 अक्टूबर 2007 तक "गाँधी एंड ग्लोबल नन-वायलेंट अवेकनिंग" नामक एक फोटो प्रदर्शनी लगायी। संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन की अध्यक्षा सोनिया गांधी ने 2 अक्टूबर 2007 को प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

विदेश जाने वाले सांस्कृतिक शिष्टमंडल

इस अवधि के दौरान परिषद ने 54 देशों में 48 सांस्कृतिक शिष्टमंडलों को प्रायोजित किया। स्थानीय कलाकारों के साथ कार्यशाला-सह-व्याख्यान के आयोजन पर विशेष बल दिया गया। डीपीआर कोरिया में स्प्रिंग फ्रैंडशिप आर्ट्स महोत्सव क्लीवलैंड में त्यागराज महोत्सव, हरारे अन्तर्राष्ट्रीय महोत्सव, जंजीबार अन्तर्राष्ट्रीय नृत्य एवं संगीत महोत्सव जैसे 20 से अधिक अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों/महोत्सवों में इनमें से कई सांस्कृतिक मंडलियों ने भाग लिया। परिषद ने विदेश स्थित विभिन्न भारतीय मिशनों में आयोजित स्वतंत्रता दिवस समारोहों में भी सांस्कृतिक मंडलियों को प्रायोजित किया।

विशिष्ट अतिथि कार्यक्रम

भारत तथा अन्य देशों के बीच सांस्कृतिक संबंधों एवं पारस्परिक समझ को बढ़ाने और उसे सुदृढ़ करने के अपने विशिष्ट अतिथि कार्यक्रम के अन्तर्गत सार्वजनिक जीवन के प्रख्यात लोगों के साथ-साथ विद्वानों, बुद्धिजीवियों, शिक्षाविदों और कलाकारों के दौरे को सुकर बनाया। इस अवधि के दौरान परिषद ने विभिन्न देशों के 8 विशिष्ट अतिथियों का स्वागत किया।

पुरस्कार

अन्तर्राष्ट्रीय समझ के लिए वर्ष 2006 का जवाहरलाल नेहरू पुरस्कार भारत के राष्ट्रपति द्वारा 4 जून 2007 को आयोजित एक विशेष समारोह में ब्राजील संघवादी गणराज्य के राष्ट्रपति लुइज इनासियो लुला डा सिल्वा को दिया गया।

■■

22 भारतीय विश्व कार्य परिषद

अप्रैल-नवंबर 2007 की अवधि क दौरान भारतीय विश्व कार्य परिषद ने निम्नलिखित कार्यक्रमों का आयोजन कियाः-

i.	व्याख्यान	06
ii.	द्विपक्षीय सामरिक वार्ता	08
iii.	सेमिनार	04
iv.	पृष्ठभूमि परिचय	02
v.	अन्य कार्यक्रम (सीएससीएपी आदि)	07

इसके अतिरिक्त भारतीय विश्व कार्य परिषद ने निम्नलिखित पुस्तक विमोचन/परिचर्चा कार्यक्रमों का भी आयोजन कियाः

1. समकालीन सउदी अरब और उभरते हुए भारत सऊदी संबंधः लेखक प्रो. गुलशन डिटल, प्रो. गिरिजेश पंत, प्रो. ए.के. पाशा और डॉ पी.सी. जैन;
2. एशियाई राजनयः चीन, भारत, जापान, सिंगापुर और थाईलैंड के विदेश मंत्रीः लेखक किशन एस. राणा;
3. विदेश मंत्रालयः मैनेजिंग डिप्लोमेटिक नेटवर्क एंड आप्टिमाइजिंग वैल्यूः लेखक किशन एस. राना और जोवन कुर्वलीजा;
4. गुलाम रसूल- एन अदर माइग्रेशनः लेखक मुनीजा आगा फवाद;
5. राइजिंग इंडियाः फ्रेंड्स एंड फोजः प्रो. एम. एस. सोंढी के सम्मान में निबंधः लेखक प्रकाश नंदा;
6. भारत और संयुक्त राज्य, छठे दशक की राजनीति लेखकः कल्याणी शंकर की पुस्तक पर समूह चर्चा।

व्याख्यान/कार्यक्रमों में लगभग 100 लोग शामिल थे, जबकि पुस्तक विमोचन/सेमिनार कार्यक्रमों में लगभग 50 श्रोता थे। भारतीय विश्व कार्य परिषद द्वारा आयोजित सेमिनारों, सम्मेलनों, व्याख्यानों और बैठकों की पूरी सूची परिशिष्ट XVI में दी गयी है।

भारतीय विश्व कार्य परिषद के आमंत्रितों की मुख्य सूची में वर्ष 2007 के दौरान लोगों के नामों की संख्या 1000 से बढ़कर 1100 से अधिक हो गयी है, जिसमें 254 शिक्षाविद, 230 बुद्धिजीवी वर्ग के लोग और वैचारिक तथा अनुसंधान संगठनों के सदस्य, 135 राजनयिक व्यक्ति, 108 अधिकारी, 112 भूतपूर्व राजनयिक तथा 125 वरिष्ठ पत्रकार और मीडिया के लोग शामिल हैं। यह सूची नियमित रूप से संशोधित की जाती है।

भारतीय विश्व कार्य परिषद ने दो सम्मेलनों का आयोजन कियाः "अंतर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद के सहयोग से 20-21 अप्रैल 2007 को भारत-नेपाल संबंधः भविष्य की दृष्टि" पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन और कोनराड अडेनौर प्रतिष्ठान (के ए एफ) के सहयोग से "सार्कः चौदहवां शिखर सम्मेलन और इसके आगे" विषय पर क्षेत्रीय सम्मेलन।

भारतीय विश्व कार्य परिषद ने एक शोध कार्य शुरू किया है। भारतीय विश्व कार्य परिषद के अधिकारी नियमित रूप से सेमिनारों में भाग लिए और विभिन्न प्रतिष्ठित राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में पत्रों/व्याख्यानों के माध्यम से सहयोग दिए। भारतीय विश्व कार्य परिषद की पत्रिका "इंडिया क्वार्टरली" वर्ष 2007 में जारी रही। इस अवधि के दौरान "इंडिया क्वार्टरली" पत्रिका के तीन अंक अक्तूबर-दिसंबर, 2006, जनवरी-मार्च 2007 और अप्रैल-जून 2007 निकाले गए। भारतीय विश्व कार्य परिषद ने चीन और नाइजीरिया की अपने समकक्ष संगठनों के साथ समझौता ज्ञापन पर भी हस्ताक्षर किया।

भारतीय विश्व कार्य परिषद ने बलाडोलिड, स्पेन में तीसरी भारत स्पेन वार्ता मंच बैठक के लिए 20 सदस्यीय शिष्टमंडल के दौरे का प्रबंध किया। इस शिष्टमंडल में उपकुलपति, प्रोफेसर, बुद्धिजीवी, उच्च स्तर के अधिकारी और गणमान्य व्यक्ति थे। इस शिष्टमंडल का नेतृत्व एस. जे. एस छतवाल, अध्यक्ष प्रोग्राम कमेटी ने किया।

भारतीय विश्व कार्य परिषद ने 13-15 सितंबर 2007 तक गोवा में ऊर्जा सुरक्षा संबंधी एशिया प्रशांत में सुरक्षा सहयोग परिषद के अध्ययन दल की एक बैठक का आयोजन किया। सी.एस.सी.ए.पी. भारत समिति कार्यकलापों की सूची परिशिष्ट XVII पर दी गयी है।

भारतीय विश्व कार्य परिषद वर्ष 2007 में भारत में विदेश कार्य संबंधी वार्ताओं के लिए एक महत्वपूर्ण प्लेटफार्म बना रहा। ■■

23 विकासशील देशों के लिए अनुसंधान और सूचना प्रणाली

विकासशील देशों के लिए अनुसंधान और सूचना प्रणाली (आरआईएस) नई दिल्ली में एक विचार केंद्र है जिसे अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संबंधों और विकास सहयोग के क्षेत्र में विशेषज्ञता प्राप्त है। यह विदेश मंत्रालय का एक स्वायत्त निकाय है। इसका अनिवार्य कार्य है, इसको समय-समय पर भेजे गए क्षेत्रीय तथा उप-क्षेत्रीय सहयोग व्यवस्थाओं के बहुपक्षीय आर्थिक एवं सामाजिक मुद्दों से संबंधित मामलों पर भारत सरकार के सलाहकारी निकाय के रूप में कार्य करना। आरआईएस की संकल्पना अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक मुद्दों पर विकासशील देशों के विचार केंद्रों के बीच प्रभावी नीतिगत संवाद को बढ़ावा देने के लिए की गयी है।

वर्ष 2007-08 के दौरान आरआईएस के कार्य की मुख्य घटनाएं नीचे दी गयी हैंः-

सरकार को उपलब्ध कराए गए अनुसंधान और नीतिगत इनपुट

वर्ष के दौरान आयोजित प्रमुख शिखर सम्मेलन बैठकों तथा अन्य वार्ताओं के लिए तैयारी तथा नीति-निर्माण में सहायता प्रदान करने के लिए आरआईएस ने अनुसंधान अध्ययन किए। इसमें से कुछ महत्वपूर्ण इनपुट इस प्रकार हैंः-

- भारत-आसियान और पूर्व एशिया शिखर सम्मेलनः आरआईएस ने अप्रैल 2007 में आयोजित 11वें भारत-आसियान कार्य समूह के लिए इनपुट प्रदान कर सरकार की सहायता की; 12वां भारत-आसियान कार्य समूह अक्तूबर 2007 में आयोजित किया गया जिसका विषय थाइंडियाज लुक ईस्ट पॉलिसी- भारत-पूर्व एशियाई आर्थिक सहयोग संबंधी उप-क्षेत्रीय सहयोग विषयक चुनौतियां" तथा 21 नवंबर 2007 को आयोजित तृतीय पूर्व एशिया शिखर सम्मेलन।
- सार्क तथा बिमस्टेकः आरआईएस ने सरकार को सार्क और बिमस्टेक की अध्यक्षता के संदर्भ में दक्षिणी एशिया के लिए पड़ोसी को समृद्ध बनाओ नीति के संबंध में नीतिगत इनपुट प्रदान किए; सार्क के अंतर्गत "उप-क्षेत्रीय आर्थिक सहयोग" - ऊर्जा, खाद्य, पर्यावरण और जल पर विशेष फोकस के लिए इनपुट प्रदान किए और नवंबर 2007 में आयोजित सार्क की आर्थिक सहयोग समिति (सीईसी) की तेरहवीं बैठक के लिए भी इनपुट प्रदान किए।
- द्वितीय इबसा (आईबीएसए) शिखर सम्मेलनः आरआईएस ने 15-17 अक्तूबर, 2007 तक जोहांसबर्ग में आयोजित इबसा शिखर सम्मेलन में और इबसा शैक्षणिक मंच में भी भाग लिया और तीन महत्वपूर्ण प्रस्तुतियां कीं।
- डब्ल्यूटीओः आरआईएस ने सरकार के लिए डब्ल्यूटीओ पर दो रिपोर्टें तैयार कीं जिनके शीर्ष थे यूएस- जीएसपी लाभ वापस लेने की संभावना के मद्देनजर अमरीका को भारत से होने वाले निर्यात पर पड़ने वाले व्यापारिक प्रभाव "तथा डब्ल्यूटीओ प्रस्ताव तथा भारतीय कागज और न्यूजप्रिंट उद्योग"।
- भारत-कोरिया वार्ताः आरआईएस ने सरकार के भारत-कोरिया व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौते पर बातचीत के लिए संवेदनशील उत्पादों पर इनपुट प्रदान किया।
- सीईपीईएः महानिदेशक, आरआईएस को भारत सरकार द्वारा पूर्व एशिया की व्यापक आर्थिक साझेदारी पर ट्रैक रूरु अध्ययन समूह के लिए नामित किया गया। नीतिगत दस्तावेजों के रूप में अध्ययन समूह के कार्य में आरआईएस योगदान कर रहा है और 1-2 फरवरी, 2008 को नई दिल्ली में अध्ययन दल की चौथीं बैठक की मेजबानी करेगा।
- मेकांग-गंगा सहयोगः "मेकांग-गंगा सहयोग को और सुदृढ़ बनाने की दिशा की ओर अग्रसरः कुछ प्रस्ताव" विषय पर विदेश मंत्रालय को 26 जुलाई 2007 को एक टिप्पणी उपलब्ध करायी गयी।
- अन्य नीतिगत पत्र तथा इनपुटः आरआईएस ने भारत सरकार को विभिन्न अन्य नीतिगत मामलों पर इनपुट प्रदान किए जो इस प्रकार हैंः- "21वीं सदी में भारत और चीन", "एपेक की भारत के लिए प्रासंगिकता, एपेक का कार्य तथा एपेक सदस्यता और दायित्व" पर इनपुट; "अवसंरचना निवेश के लिए एशिया प्रशांत बैंक" पर टिप्पणी; "सतत विकास के संबंध में भारत की महत्वपूर्ण

चुनौतियां" पर एक रिपोर्ट; "भारत के निर्माण क्षेत्र को निर्यातोन्मुखी बनाने की संभावनाएं" पर एक रिपोर्ट; "भारत और जी सीसी के बीच निवेश सहयोग का व्यवहार्यता अध्ययन" पर एक रिपोर्ट; "रीसर्जेंट चाइनाः इम्पेरेटिव्स ऑन इंडिया पर एक रिपोर्ट; तथा" एशिया में मजबूत होता वित्तीय सहयोग; एक भारतीय परिप्रेक्ष्य पर अध्ययन की एक रिपोर्ट।

नीतिगत संवाद, सम्मेलन और विचार-गोष्ठी

वर्ष 2007-08 के दौरान अनुसंधान और सूचना प्रणाली ने अनेक नीतिगत संवादों, सम्मेलनों और विचार गोष्ठियों का आयोजन किया ताकि विकासशील देशों के बौद्धिक संवाद को बढ़ावा देने के अपने अनिवार्य दायित्व को यह पूर्ण कर सके। इस अवधि के दौरान निम्नलिखित सहित प्रमुख चुनिंदा कार्यक्रमों का आयोजन किया गयाः-

एशिया आर्थिक एकीकरण पर छठा उच्च स्तरीय सम्मेलनः पूर्व एशिया शिखर सम्मेलन के लिए एजेंडाः अनुसंधान और सूचना प्रणाली ने "एशियाई आर्थिक एकीकरणः पूर्व एशिया शिखर सम्मेलन के लिए एजेंडा" पर दक्षिण-पूर्व एशियाई अध्ययन संस्थान (आईएसईएएस) सिंगापुर तथा विकासशील अर्थव्यवस्था संस्थान (आईडीई), टोक्यो; जापान विदेश व्यापार संगठन (जेईटीआरओ), टोक्यो के सहयोग से और सासाकावा पीस फाउंडेशन (एसपीएफ), टोक्यो की सहायता से 12-13 नवंबर 2007 को नई दिल्ली में एक उच्च स्तरीय सम्मेलन का आयोजन किया। लगभग सौ प्रतिनिधियों ने सम्मेलन में भाग लिया, जिनमें ईएएस देशों के नीति-निर्माताओं के अध्यक्ष, नीति-निर्माता, मीडिया तथा नागरिक समाज के सदस्य शामिल थे।

ग्लोबल ट्रेड गवर्नेंस और दक्षिण की भूमिका पर पैनल चर्चाः दोहा वार्ता दौर की विकास-मैत्री को बढ़ानाः अनुसंधान और सूचना प्रणाली (आरआईएस) ने दक्षिण केंद्र के साथ संयुक्त रूप से 5 अक्तूबर, 2007 को जेनेवा में आयोजित डब्ल्यूटीओ पब्लिक फोरम, 2007 में दो भाग वाली एक पैनल चर्चा का आयोजन किया।

अनुसंधान और सूचना प्रणाली विश्व व्यापार और विकास रिपोर्ट 2007 पर संगोष्ठीः राष्ट्रमंडल सचिवालय, लंदन और अनुसंधान और सूचना प्रणाली ने संयुक्त रूप से "विश्व व्यापार और विकास रिपोर्ट, 2007ः एक विकास अनुकूल विश्व व्यापार प्रणाली का निर्माण" पर लंदन में 31 मई 2007 को विचार-विमर्श बैठक का आयोजन किया।

विश्व व्यापार विकास रिपोर्ट 2007 पर विचार-विमर्श बैठकः अनुसंधान और सूचना प्रणाली और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और सतत विकास केंद्र (आईसीटीएसडी), जेनेवा ने "विश्व व्यापार और विकास रिपोर्ट 2007ः एक विकासानुकूल विश्व व्यापार प्रणाली के निर्माण" पर जेनेवा में 5 जून 2007 को एक विचार-विमर्श बैठक का आयोजन किया।

भारत, ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका (आईबीएसए) के संपादकों का सम्मेलनः विदेश मंत्रालय ने अनुसंधान और सूचना प्रणाली के सहयोग से भारत, ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका के संपादकों का "भूमंडलीकरण, उभरती हुई शक्तियां और मीडिया" नामक विषय पर 3-4 सितंबर 2007 को नई दिल्ली में एक दो दिवसीय सम्मेलन का आयोजन किया।

सार्क पर राष्ट्रीय संगोष्ठीः अनुसंधान और सूचना प्रणाली (आरआईएस) ने विदेश मंत्रालय; फेडरेशन आफ इंडियन चैंबर्स आफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (फिक्की) तथा ग्लोबल इंडिया फाउंडेशन (जीआईएफ) के साथ संयुक्त रूप से "सार्कः एक्सेलरेटिंग को-आपरेशन थ्रू कनेक्टिविटी" पर कोलकाता में 1-2 सितंबर 2007 को एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया।

बड़े विकासशील देशों का आविर्भाव तथा अंतर्राष्ट्रीय विकास के निहितार्थों पर अंतर्राष्ट्रीय कार्यशालाः आरआईएस ने राष्ट्रमंडल सचिवालय लंदन की सहायता से उक्त विषय पर एक अध्ययन किया है। अध्ययन के भाग के रूप में आरआईएस तथा राष्ट्रमंडल सचिवालय, लंदन के साथ संयुक्त रूप से विशाल विकासशील देशों (बीआईसीएस) के आविर्भाव तथा अंतर्राष्ट्रीय विकास के निहितार्थों पर नई दिल्ली में 28-29 जून 2007 को एक अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया।

साफ्टा समझौते के अंतर्गत सेवाओं में व्यापार के लिए संभावनाओं के अध्ययनार्थ आरंभिक कार्यशालाः आईआईएस ने सार्क सचिवालय, काठमांडू, नेपाल के साथ संयुक्त रूप से "साफ्टा समझौते के अंतर्गत सेवाओं में व्यापार के लिए संभावनाओं" के अध्ययन के लिए दिल्ली में 10-11 मई 2007 को एक आरंभिक कार्यशाला का आयोजन किया था। सार्क सचिवालय ने आरआईएस को सार्क नेटवर्क आफ रिसर्चर्स ऑन ग्लोबल फाइनेंशियल एंड इकोनामिक इशूज के स्वरूप के साथ अन्य सार्क देशों के अनुसंधानकर्ताओं के परामर्श से यह अध्ययन करवाने का दायित्व सौंपा है।

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार प्रणाली और विकास पर आरआईएस का विशेष अधिवेशनः विश्व व्यापार और विकास रिपोर्ट, 2007 जो आरआईएस द्वारा तैयार की गयी थी, में बहुपक्षीय व्यापार प्रणाली के सुधार का एजेंडा संक्षिप्त रूप में दिया गया है ताकि इसे और अधिक विकासानुकूल बनाया जा सके जिससे वार्ताओं में विकासशील देशों को अपनी बात कहने का अधिक अवसर मिल सके। इसने "वैश्विक शासन में उभरती शक्तियों पर अंतर्राष्ट्रीय

सम्मेलन-नई चुनौतियां और नीतिगत विकल्प" में आरआईएस द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय व्यापार प्रणाली और विकास पर एक विशेष अधिवेशन में पैनल चर्चा के लिए आधार प्रदान किया।

भारतीय कागज और न्यूजप्रिंट उद्योग पर विश्व व्यापार संगठन के प्रस्तावों के प्रभावों पर संगोष्ठीः आरआईएस और सेंट्रल पल्प एंड पेपर रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीपीपीआरआई) ने "भारतीय कागज और न्यूज प्रिंट उद्योग पर डब्ल्यूटीओ प्रस्तावों के प्रभावों, पर 13 सितंबर 2007 को नई दिल्ली में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया था। प्रो. अनवरुल होडा, सदस्य योजना आयोग ने संगोष्ठी की अध्यक्षता की और डॉ राजेश मेहता सीनियर फैलो," आरआईएस ने "डब्ल्यूटीओ प्रस्ताव तथा भारतीय कागज और न्यूजप्रिंट उद्योग" पर अध्ययन संबंधी एक लेख प्रस्तुत किया। विपिन मेनन, वाणिज्य विभाग ने "नामा नेगोशिएशंस इन दोहा राउंडः स्टेट आफ प्ले," पर लेख प्रस्तुत किया।

आउटरीच, सार्वभौमिक उपस्थिति और नेटवर्किंग

आरआईएस ने वैश्विक घटनाओं पर संगोष्ठियां आयोजित करके सांस्थानिक नेटवर्किंग और अपने कार्य की अंतर्राष्ट्रीय पहचान को सुदृढ़ बनाने के लिए कदम उठाए हैं। विगत में अनेक नीतिगत संवाद विश्व के विभिन्न भागों में साझीदार संस्थाओं के साथ संयुक्त रूप से आयोजित किए गए थे। इनमें लंदन, पेरिस और जेनेवा में महत्वपूर्ण घटनाओं के भाग के रूप में आयोजित संगोष्ठियां सम्मिलित थीं जिनका आयोजन इसलिए किया गया था ताकि साउथ सेंटर, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और सतत विकास केंद्र (आईसीटीएसडी), राष्ट्रमंडल सचिवालय जैसी सहयोगी संस्थाओं के साथ मिलकर आरआईएस की अंतर्राष्ट्रीय पहचान प्रभाव को बढ़ाया जा सके। आरआईएस प्रतिनिधिमंडल ने भी भाग लिया था और अक्तूबर, 2007 में द्वितीय इबसा (आईबीएसए) शिखर सम्मेलन के एक भाग के रूप में जोहांसबर्ग में आयोजित इबसा शैक्षणिक मंच में महत्वपूर्ण लेख प्रस्तुत किए। इसके अलावा, आरआईएस ने भी अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं तथा भारत की अन्य सहयोगी संस्थाओं के साथ मिलकर अनेक नीतिगत संवाद आयोजित किए हैं। इन संस्थाओं में यूएनईएससीएपी, साउथ एशिया सेंटर फॉर पॉलिसी स्टडीज (एसएसीईपीएस), सार्क सचिवालय, राष्ट्रमंडल सचिवालय, इंस्टीट्यूट आफ साउथ ईस्ट एशियन स्टडीज-सिंगापुर, इंस्टीट्यूट ऑफ डेवेलपिंग इकोनामीज (आईडीई), जापान आदि शामिल हैं।

आरआईएस ने विभिन्न देशों में अनेक सदृश्य संस्थाओं जैसे चीन राज्य परिषद के विकास अनुसंधान केंद्र (डीआरसी), कोरिया अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक नीति संस्थान (केआईईपी), इंस्टीट्यूट आफ पालिसी स्टडीज ऑफ श्री लंका, दक्षिण पूर्व एशियाई अध्ययन संस्थान, सिंगापुर, इंटीट्यूट आफ डेवेलपिंग इकोनोमीज (आईडीई/जेईटीआरओ), टोक्यो, इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट आफ ट्रेड एंड डेवेलपमेंट, बैंकाक तथा एनएएम सेंटर फार साउथ-साउथ टेक्नीकल को-आपारेशन, जकार्ता के साथ समझौता ज्ञापन निष्पादित किए हैं ताकि संयुक्त कार्यकलापों के लिए एक ढांचा प्रदान किया जा सके।

क्षमता निर्माण और प्रशिक्षण कार्यक्रम

आईटीईसी/एससीएएपी कार्यक्रम के अंतर्गत विदेश मंत्रालय द्वारा प्रायोजित अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक मुद्दे और विकास विकास नीति (आईईआईडीपी) पर एक कार्यक्रम 19 फरवरी से 16 मार्च 2007 तक आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में चौदह सहभागियों ने भाग लिया जिनमें फरीदा मोहम्मद, संसद सदस्य, दक्षिण अफ्रीका भी शामिल थे।

वैश्विक आर्थिक शासन व्यवस्था तथा भारत के क्षेत्रीय आर्थिक कार्यों के संबंध में प्रशिक्षण कार्यक्रम

विदेश मंत्रालय की ओर से आरआईएस ने भारतीय विदेश सेवा (आईएफएस) के प्रोबेशनरों (2006 बैच) के लिए वैश्विक आर्थिक शासन व्यवस्था तथा भारत के क्षेत्रीय आर्थिक कार्यों नामक विषय पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम 27 से 31 अगस्त 2007 तक आयोजित किया था। भा.वि.से. के परिवीक्षार्थियों ने भी प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान आयोजित कार्यशालाओं में विभिन्न विषयों पर लेख प्रस्तुत किया।

आरआईएस प्रकाशन

वर्ष 2007-08 के दौरान आरआईएस ने छह पुस्तकें और रिपोर्टें प्रकाशित कीं, चार पॉलिसी ब्रीफ जारी किए और तेरह विचार-विमर्श पत्र जारी किए। साउथ एशिया इकोनामिक जनरल के दो अंक बायोटेक्नोलाजी एंड डेवलपमेंट रिव्यू के तीन अंक तथा न्यू एशिया मानीटर के चार अंक निकाले गए। आरआईएस मेंकांग-गंगा पालिसी ब्रीफ नाम से एक नया प्रकाशन भी आरंभ किया गया। इसके अलावा, आरआईएस डायरी के चार अंक भी परिशिष्ट XVII में दी गयी सूची के अनुसार प्रकाशित किए गए। आरआईएस प्रकाशनों को इसकी वेबसाइट- http:// www.ris.org.in से डाउनलोड किया जा सकता है।

बजट

आरआईएस को विदेश मंत्रालय से वर्ष 2007-08 के दौरान 175 लाख रुपए की बजटीय सहायता प्राप्त हुई।

■■

पुस्तकालय

24

मंत्रालय के पुस्तकालय में लगभग एक लाख पुस्तकें, समृद्ध स्रोत सामग्री और मानचित्रों का विशाल संग्रहण, माइक्रोफिल्में एवं सरकारी दस्तावेज उपलब्ध हैं। यह नीति नियोजन और शोध की सहायता के लिए आधुनिक उपकरणों से भी सुसज्जित है। पुस्तकालय लगभग 300 पत्रिकाओं, जर्नलों और अखबारों की खरीदारी और रखरखाव करता है जिनमें से 80 आन लाइन पर भी उपलब्ध हैं। पुस्तकालय ने मुख्यालय और विदेश स्थित मिशनों के प्रयोग के लिए डेटाबेस "जे-गेटः सामाजिक विज्ञान और प्रबंध विज्ञानः बहुप्रयोक्ता डेटाबेस का पूर्ण पाठ" भी मंगवाया।

पुस्तकालय के पास एक आंतरिक कंप्यूटर प्रणाली है, जिसमें एक सर्वर और 12 पी सी टर्मिनल हैं। इस प्रणाली में हिंदी में भी डाटा की एंट्री और पुनः प्राप्ति कार्य किया जाता है। पुस्तकालय में विदेशी मामलों एवं वर्तमान मामलों पर सी डी - रोम डाटाबेस है। पुस्तकालय के पी सी में सी डी - राइटर और लेजर प्रिंटर भी लगे हैं। यहां एक रंगीन स्कैनर (ओ सी आर क्षमता के साथ-साथ प्रतिविंबों के संग्रहण एवं पुनः प्राप्ति की सुविधा सहित), एक माइक्रोफिल्म/फिशे रीडर प्रिंटर, प्लेन पेपर फोटोकॉपियर और डेस्क टॉप पब्लिशिंग (डी.टी.पी.) सॉफ्टवेयर के साथ-साथ एक एच पी आफिस-जेट प्रो लेजर प्रिंटर भी है।

पुस्तकालय समिति पुस्तकों के क्रय और जर्नलों/आवधिक पत्रिकाओं को मंगवाने के साथ-साथ पुस्तकालयों के क्रिया-कलापों का प्रबंधन करती है। अगस्त 2007 में विदेश सचिव ने पुस्तकालय समिति का पुनर्गठन किया।

पुस्तकालय के समस्त पहलुओं को शामिल करते हुए एक एकीकृत पुस्तकालय साफ्टवेयर पैकेज लिबसीस का प्रयोग कर समस्त प्रलेखन एवं ग्रंथ सूची संबंधी सेवाओं को कंप्यूटरीकृत कर दिया गया है। लिबसीस में मार्क के साथ-साथ नॉन-मार्क फार्मेट का प्रयोग किया जाता है और यह बूलीयन आपरेटरों के प्रयोग से शब्द-आधारित फ्री टैक्स्ट सर्चिंग की सहायता करता है। यह डाटाबेस को अद्यतन करने से पहले इनपुट डाटा का ऑनलाइन सत्यापन भी करता है। विदेश मंत्रालय के पुस्तकालय के समस्त पी सी में इंटरनेट के माध्यम से समस्त पुस्तकों, मानचित्रों, दस्तावेजों एवं 1986 से पुस्तकालय में प्राप्त होने वाली पत्रिकाओं से चुने गए लेखों, 1986 से पुस्तकालय में प्राप्त हुए प्रकाशनों (और 1986 से पहले के अधिक उपयोग में आने वाले प्रकाशनों) की जानकारी ऑनलाइन उपलब्ध है। पुस्तकालय की जानकारी www.mealib.nic.in नामक विदेश मंत्रालय के पुस्तकालय की बेवसाइट पर भी इंटरनेट के माध्यम से पहुंचा जा सकता है।

पुस्तकालय में प्राप्त समस्त नए दस्तावेजों जैसे पुस्तकों, मानचित्रों, माइक्रोफिल्मों, पत्रिकाओं से चुने गए लेखों- को विदेशी मामले संबंधी डाटाबेस में नियमित रूप से संग्रहित किया जाता है। इस डाटाबेस और सी डी - रोम डाटाबेसों का प्रयोग करके पुस्तकालय वर्तमान जागरूकता सेवा और ग्रंथ सूची एवं निर्देशिका सेवाएं प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त, पुस्तकालय नियमित तौर पर विदेशी मामलों से संबंधित प्रलेखन बुलेटिन (एफएडीबी) जारी करता है जिसमें अंतर्राष्ट्रीय संबंधों और संबंधित विषयों पर चुनिंदा लेख और हाल ही में हुए अद्यतन संशोधन किए होते हैं। इसमें पुस्तकालय में पुस्तकों और प्रकाशनों की विस्तृत सूची शामिल है।

पुस्तकालय नियमित रूप से लेख सतर्कता सेवा प्रदान करता है जिसमें विदेश मंत्रालय के पुस्तकालय द्वारा मंगाए जाने वाले जर्नलों/आवधिक पत्रिकाओं के महत्वपूर्ण लेखों के उद्धरण निहित होते हैं और मंत्रालय तथा विदेश स्थित मिशनों में सभी विदेश सेवा अधिकारियों को ग्रुप ई-मेल आईडी के जरिए इंटरनेट पर उपलब्ध होते हैं।

पुरानी और अप्रयुक्त पुस्तकों और जर्नलों को हटाने का कार्य जो कुछ वर्षों पूर्व आरंभ हुआ था, अभी भी जारी है और इस संबंध में पर्याप्त प्रगति हुई है।

■■

परिशिष्ट

परिशिष्ट I

वर्ष 2007-08 के दौरान मुख्यालय और विदेश स्थित मिशनों में संवर्ग संख्या (इनमें वाणिज्य मंत्रालय बजट से प्रदान किए गए पद और बाह्य-संवर्ग पद इत्यादि शामिल हैं)।

क्रम सं.	काडर/पद	मुख्यालय में पद	मिशनों में पद	कुल
1	ग्रुप I	5	21	26
2	ग्रुप II	3	31	34
3	ग्रुप III	38	140	178
4	ग्रुप IV	35	110	145
5	कनिष्ठ प्रशा. संवर्ग/वरिष्ठ वेतनमान	44	143	187
6	(i) कनिष्ठ वेतनमान	5	30	35
	(ii) परिवीक्षार्थी आरक्षित	62		62
	(iii) छुट्टी आरक्षित	15		15
	(iv) प्रतिनियुक्ति आरक्षित	19		19
	(v) प्रशिक्षण आरक्षित	7		7
	कुल जोड़	**233**	**475**	**708**
भा.वि.से.(ख)				
7	(i) ग्रेड I	65	141	206
	(ii) प्रतिनियुक्ति आरक्षित	6		6
8	(i) एकीकृत ग्रेड II & III	147	234	381
	(ii) अवकाश आरक्षित	30		30
	(iii) प्रतिनियुक्ति आरक्षित	16		16
	(iv) प्रशिक्षण आरक्षित	25		25
9	(i) ग्रेड IV	197	412	609
	(ii) अवकाश आरक्षित	60		60
	(iii) प्रतिनियुक्ति आरक्षित	55		55
10	(i) ग्रेड V/VI	217	99	316
	(ii) अवकाश आरक्षित	60		60
	(iii) प्रतिनियुक्ति आरक्षित	14		14
11	(i) साइफर संवर्ग के ग्रेड II	37	151	188
	(ii) अवकाश आरक्षित	24		24
12	(i) आशुलिपिक संवर्ग	184	476	660
	(ii) अवकाश आरक्षित	47		47
	(iii) प्रशिक्षण आरक्षित (हिन्दी)	10		10
	(iv) प्रतिनियुक्ति आरक्षित	12		12
13	दुभाषिया संवर्ग	7		33
14	एल एंड टी संवर्ग	14	1	15
	योग	**1246**	**1521**	**2767**
	कुल योग	**1479**	**1996**	**3475**

परिशिष्ट II

विदेश मंत्रालय में विविध ग्रुपों में की गई भर्ती और अप्रैल से नवम्बर, 2007 तक अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति/ अन्य पिछड़ी जाति (ओबीसी) वर्गों से भरी गईं आरक्षित रिक्तियाँ।

ग्रुप	पदों की कुल संख्या	पदों की संख्या			
		आरक्षित			अनारक्षित
		अ जा	अ ज जा	ओबीसी	
ग्रुप ए	17	5	-	3	10
ग्रुप बी	36	3	1	1	31
ग्रुप सी	19	6	-	3	10
कुल	**72**	**14**	**1**	**7**	**51**

परिशिष्ट III

30 नवम्बर 2007 को अधिकारियों (भारतीय विदेश सेवा के कनिष्ठ वेतनमान का ग्रेड 1) की भाषावार-तालिका

भाषा	अधिकारियों की संख्या	भाषा	अधिकारियों की संख्या
अरबी	96	नेपाली	3
भाषा इंडोनेशिया	12	पर्सियन	20
भाषा मलय	2	पुर्तगाली	21
बर्मीज	2	रूसी	82
चीनी	61	सर्वो-क्रोएशिया	3
डच	1	सिंहली	1
फ्रेंच	74	स्पेनी	63
जर्मन	33	स्वीडिश	1
हिब्रू	4	थाई	2
इतालवी	4	तिब्बती	1
जापानी	24	तुर्की	7
कजाक	1	उक्रेनी	1
किस्वाहिली	6	वियतनामी	2
कोरियन	3	**कुल (27 भाषाएँ)**	**531**

परिशिष्ट **IV**

पुरुष-महिला आंकड़े

संवर्ग	पदों की कुल संख्या	महिला अधिकारियों की संख्या	कुल संख्या में महिलाओं का प्रतिशत
भारतीय विदेश सेवा	626	89	14.2%
भारतीय विदेश सेवा-ख	2394	327	13.6%
विधि एवं संधि	11	3	27.2%
दुभाषिये	18	5	27.7%
पुस्तकालय	11	2	18.1%

परिशिष्ट V

1 जनवरी से 31 दिसंबर 2007 तक विभिन्न पासपोर्ट कार्यालयों में प्राप्त आवेदन पत्रों और तत्काल सेवा सहित जारी किए गए पासपोर्टों विविध आवेदन पत्रों और प्रदत्त सेवाएं एवं राजस्व (जिनमें तत्काल सेवा योजना के तहत राजस्व भी सम्मिलित है) और पासपोर्ट कार्यालयों के व्यय के आंकड़ों को दर्शाने वाला ब्यौरा

क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय/ पासपोर्ट कार्यालय का नाम	प्राप्त आवेदन पत्रों की संख्या	जारी पासपोर्टों की संख्या	प्राप्त हुए विविध आवेदनों पत्रों की संख्या	दी गई विविध सेवाएं	तत्काल सेवा के तहत जारी पासपोर्टों की संख्या	तत्काल सेवा के तहत प्राप्त राजस्व	कुल राजस्व	कुल व्यय
अहमदाबाद	271278	276396	22156	21715	11645	17265449	290340100	34819227
बंगलौर	270124	279812	46996	46299	33754	59468800	331586905	29427552
बरेली	67906	64280	5194	5164	4314	6885500	77602275	10422984
भोपाल	81127	83826	6455	6405	9580	14434900	96271655	8493251
भुवनेश्वर	39642	44542	3394	3020	8416	12864000	57529440	3771026
चंडीगढ़	283233	278411	45125	43389	12866	27334300	334079988	25917353
चेन्नई	299488	305238	40725	40191	67261	105384000	434038293	34636678
कोचीन	215411	241205	70551	70002	38681	58957500	313620333	29031737
दिल्ली	247712	227330	35707	34337	35016	88557400	334040230	39901383
गाजियाबाद	79784	83250	9075	8007	5801	22372100	80189460	7821721
गुवाहाटी	29870	27254	5688	1088	1768	2629400	43273800	3746951
हैदराबाद	392869	400266	47654	47239	28865	68098800	454552107	44749429
जयपुर	159989	188573	19302	15027	18801	44660200	170548125	22985316
जालंधर	223463	215750	43436	42490	1480	2414000	26714807	29219587
जम्मू	17872	17113	1161	806	136	19400	19609620	2225925
कोलकाता	182224	170306	19890	19509	9919	21373800	199716510	22492144
कोझीकोड	169180	170070	45129	44664	30157	47220500	238071856	25814647
लखनऊ	268647	303118	20574	19265	7900	12241500	293201953	28970532
मदुरई	2965	346	288	280	326	0	4440000	*
मालापुरम	138731	153689	28860	29183	23366	35782000	201082495	11803994
मुम्बई	299028	294019	33277	33196	18744	28460600	310103001	63106916
नागपुर	50174	46701	3041	2998	5048	6484700	57043737	3631253
पणजी	28825	28421	6413	6684	1577	2440000	34989982	4101949
पटना	147395	119206	7039	6998	1446	2113500	151200110	11153772
पुणे	109971	107955	13460	12888	12569	16719000	129721092	9018828
राजपुर	412	46	26	24	46	265500	541700	**
रांची	31757	33409	3629	3261	3366	4791150	29556980	3802899
शिमला	17022	11947	1386	1321	863	2074300	16434713	2486749
श्रीनगर	15616	13897	1729	1508	188	304500	17111427	16017477
सूरत	90773	96980	11544	11181	3047	4835700	95793700	***
थाने	142229	139669	9737	9475	10080	15370600	160222160	****
त्रिची	287862	285627	28819	27379	30948	48652500	361763900	29800288
त्रिवेन्द्रम	151104	149135	47888	46359	19058	29263000	208576847	15635761
विशाखापट्टनम	82172	83773	14761	14167	7165	11124500	105026938	7760797
कुल	**4895855**	**4941560**	**700109**	**675519**	**464157**	**820963099**	**5678596239**	**582768126**

* पासपोर्ट कार्यालय त्रिची द्वारा व्यय किया जाता है।

** पासपोर्ट कार्यालय भोपाल द्वारा व्यय किया जाता है।

*** चूंकि ऋणपत्र क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय मुंबई के साथ जुड़ा है, इसलिए सभी खर्च उनके द्वारा किया गया है।

**** व्यय मिलाजुला है और क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय अहमदाबाद द्वारा इसे प्रति सप्ताह भेजा जा रहा है।

परिशिष्ट **VI**

विदेश मंत्रालय का वर्ष 2007-2008 में वित्त

बजट प्राक्कलन 2007-2008 में विदेश मंत्रालय का बजट आबंटन 4433.60 करोड़ रुपये है। यह वर्ष 2006-07 के बजट प्राक्कलन 3695.05 करोड़ रुपये की तुलना में 738.55 करोड़ रुपये अर्थात 19.99% अधिक है। वर्ष 2007-08 के संशोधित प्राक्कलन में वर्ष 2007-08 के बजट प्राक्कलन की तुलना में 549.40 करोड़ रुपये अर्थात् 12.39% तक की वृद्धि हुई है।

विदेश मंत्रालय का व्यय और बजट (2002-2003 से 2007-2008)

वर्ष	वास्तविक (करोड़ रुपये में)	पिछले वर्ष की तुलना में प्रतिशत अंतर
2002-2003	3253.79	23.98
2003-2004	3344.53	2.79
2004-2005	3756.15	12.31
2005-2006	4089.67	8.88
2006-2007	3695.05	-9.65
2007-2008 (ब.प्रा.)	4433.60	19.99
2007-2008 (सं.प्रा.)	4783.00	29.44

परिशिष्ट **VII**

वर्ष 2007-08 (संशोधित प्राक्कलन) में मुख्य क्षेत्रवार आबंटन

क्षेत्र	आबंटन (करोड़ रुपये में)
विदेश मंत्रालय सचिवालय	158.84
राजदूतावास और मिशन	1044.01
पासपोर्ट और उत्प्रवासन	267.35
विशेष राजनयिक खर्च	655.67
तकनीकी और आर्थिक सहयोग	1656.11
अंतर्राष्ट्रीय संगठनों को योगदान	123.96
भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद को अनुदान	77.00
विदेशी सरकारों को ऋण और अग्रिम	48.00
अन्य	752.06

परिशिष्ट **VIII**

भारत के सहायता कार्यक्रमों के मुख्य गंतव्य

वर्तमान वित्तीय वर्ष में हमारे सहयोग और ऋण कार्यक्रमों के प्रधान लाभार्थी निम्नलिखित हैं- (सं.प्रा.)

देशों को सहयोग और ऋण	**(करोड़ रुपये में)**
भूटान	731.00
बंगलादेश	60.00
नेपाल	100.00
श्रीलंका	28.00
मालदीव	19.50
म्यामां	20.00
अफगानिस्तान	434.00
अफ्रीकी देश	50.00
मध्य एशिया	20.00
लैटिन अमरीकी देश	1.53
अन्य	240.08

1. भूटान के लिए सहयोग भारत द्वारा दिए जा रहे कुल सहयोग और ऋण बजट का 42.90% है। भारतीय सहयोग कार्यक्रमों के लिए अन्य गन्तव्यों में अफगानिस्तान-25.47%, नेपाल-5.87%, बंगलादेश-3.52%, अफ्रीकी देश 2.93%, श्रीलंका-1.64%, म्यामां, 1.17%, मालदीव-1.14% और अन्य 14.09%

2. भारत सरकार भूटान सरकार को ऋण उसकी विकास परियोजनाओं के कार्यान्वयन में सहायता के लिए देती है। वर्ष 2007-2008 के दौरान भूटान सरकार को दिया गया ऋण 48.00 करोड़ रुपये रहा है।

3. विदेश मंत्रालय का बजट अनिवार्यतः गैर-योजनागत बजट है। तथापि 1996-97 से मंत्रिमंडल के अनुमोदन से एक योजनागत शीर्ष स्थापित किया गया है। यह खास तौर से भूटान की कुछ बड़ी विकास परियोजनाओं के लिए है जो भारत द्वारा 'भूटान सहयोग' कार्यक्रम के रूप में भूटान सरकार के अनुरोध पर परियोजना की सहायता के भाग के तौर पर चलाई जा रही हैं। इस कार्यक्रम के अंतर्गत कार्यान्वित ताला जल विद्युत परियोजना को कमीशन किया गया है। भूटान की कुछ अन्य परियोजनाएं जो योजनागत शीर्ष से वित्तपोषित की जा रही हैं, -पुनात्सांगछू हाइड्रोइलेक्ट्रिक परियोजना, और डुंगसुंग सीमेंट प्लांट परियोजना हैं। योजनागत आबंटन से अफगानिस्तान की काबुल-पुल-ए-खुमरी में दोहरी सर्किट ट्रांसमिशन लाइन भी चलाई जा रही हैं।

   इस योजनागत खण्ड के तहत् भूटान सरकार को दिए गए ऋण भी आते हैं जो कि चालू वित्तीय वर्ष के लिए 48 करोड़ रुपये है।

4. विदेश मंत्रालय के मुख्यालय पर चालू वित्तीय वर्ष के दौरान अनुमानित व्यय 158.84 करोड़ रुपये है जो मंत्रालय के कुल अनुमानित राजस्व बजट का लगभग 3.88% है। विदेश स्थित भारतीय राजदूतावासों/मिशनों और पोस्टों पर आने वाला कुल अनुमानित व्यय 1044.01 करोड़ रुपये के लगभग है, जो कि मंत्रालय के कुल राजस्व व्यय का लगभग 25.52% है।

5. पासपोर्ट तथा वीजा शुल्क और अन्य प्राप्तियों के रूप में विदेश मंत्रालय का राजस्व 1780 करोड़ रुपये के लगभग हो सकता है। ऐसा अनुमान है कि पासपोर्ट शुल्क के रूप में 790 करोड़ रुपये और वीजा शुल्क के रूप में 950 करोड़ रुपये तथा अन्य प्राप्तियों के रूप में 40 करोड़ रुपये होंगे।

परिशिष्ट **IX**

व्यय के मुख्य शीर्षों के संबंध में परिणामी बजट(2006-07)

क्र.सं.	योजना/कार्यक्रम का नाम	उद्देश्य	प्रस्तावित परिणाम
1	2	3	4
1.	विज्ञापन और प्रचार	• फीचर फिल्मों की कमीशनिंग और खरीद, वृत्तचित्रों की डबिंग/स्क्रीनिंग फोटोग्राफ्स/प्रदर्शनियों, एएनआई एपीसोड/अंशदान आदि • विभिन्न प्रकाशनों के मुद्रण मिशनों/पोस्टों के पुस्तकालयों के लिए और मिशनों/ पोस्टों के गणमान्य लोगों को भेंट करने के लिए पुस्तकों की पत्रिकाओं और पीरियाडिकल्स की खरीद। • इंडिया पर्सपेक्टिव का प्रकाशन। • प्रेस क्लबों, बुद्धिजीवियों, संस्थाओं, विश्वविद्यालयों के माध्यम से भारत और विदेश में भारतीय विदेश नीति का प्रक्षेपण। • प्रधान अन्तर्राष्ट्रीय अखबारों में विज्ञापन, विदेशी पत्रकारों की और विदेशों में वीवीआईपी दौरों के लिए।	• विदेशों में भारत की छवि, खास तौर से हमारे आधुनिक विकासों और विदेश नीति में नई पहलकदमियों को प्रभावी और ठीक तरह से प्रतिबिंबित करना।
2.	पासपोर्ट और इमीग्रेशन	• पासपोर्ट कार्यालयों की नेटवर्किंग • हार्ड वेयर का उन्नयन • पासपोर्ट फाइलों की स्केनिंग • यात्रा दस्तावेजों का मुद्रण • मशीन से पठनीय प्रिंटरों का उपबन्ध • पासपोर्ट वीजा और काउंसलर सेवाओ का कुछ चुने हुए मिशनों में कंप्यूटरीकण/ पासपोर्ट कार्यालयों का नेशनल इंस्टीट्यूट फार स्मार्ट गवर्नेमेंट (एनआईएसजी)द्वारा कार्य अध्ययन।	• मुख्य पासपोर्ट कार्यालय, पासपोर्ट कार्यालय और मिशनों के बीच संपर्क को बढ़ाना। • पासपोर्ट और वीजा के लिए आवेदन पत्रों का शीघ्र निपटान। • अभिलेखों की ठीक-ठीक रख-रखाव और कोंसलर रिकार्डों को पुनः प्राप्त करने के लिए कार्यकारी उपाय। • आवेदकों के लिए अच्छी सेवाएं।
3.	प्रशिक्षण	• 97 देशों और लीग आफ अरब राज्यों से भाग लेने वालों के लिए 7 कार्यक्रमों का आयोजन • विदेश मंत्रालय और अन्य सरकारी कार्यालयों और मीडिया के लोगों के लिए प्रशिक्षण और पुनश्चर्या प्रशिक्षण कार्यक्रम	• विदेशी/भारतीय भागीदारों को अन्तर्राष्ट्रीय राजनय के विभिन्न पहलुओं से अवगत कराना और भारत की राजनीति, भारत की विदेश नीति, सुरक्षा नीतियों और आर्थिक नीतियों आदि से भी अवगत कराना

परिशिष्ट **IX**

क्र.सं.	योजना/कार्यक्रम का नाम	उद्देश्य	प्रस्तावित परिणाम
1	2	3	4
4.	अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग	• संयुक्त राष्ट्र संघ सहित विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय निकायों में भाग लेना	• भारत के सार्वभौमिक शक्ति के रूप में उभरने के साथ साथ भारत की भूमिका और भारत के लक्ष्य और प्रोफाइल को आगे बढ़ाना।
5.	अन्य खर्च		
	(i) भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद को सहायता अनुदान	• सांस्कृतिक राजनय (मृदु शक्ति) सांस्कृतिक शिष्टमंडलों का आदान-प्रदान, अंतराष्ट्रीय प्रदर्शनियों, सम्मेलनों और सेमिनारों, प्रकाशनों, छात्रवृत्तियों को देना, विदेशों में भारत महोत्सवों को आयोजित करना।	• भारतीय संस्कृति का विदेशों में प्रचार-प्रसार और दूसरे देशों की संस्कृति के लिए मंच प्रदान करना।
	(ii) अन्य विविध मदें	• विभिन्न संस्थाओं को सहायता अनुदान देना, विभिन्न द्विपक्षीय वार्ताओं को निधि प्रदान कराना, सेमिनारों और अध्ययनों का आयोजन, हिंदी का प्रचार-प्रसार आदि।	• द्विपक्षीय वार्ताओं के लिए सामग्री प्राप्त करना जिससे सेमिनारों आदि के माध्यम से नीतिगत रूप देने के लिए मशहूर हस्तियों को सम्मिलित किया जा सके।
6.	अन्य देशों के साथ तकनीकी और आर्थिक सहयोग		
	(i) बंगलादेश	• बाढ़ राहत सहयोग प्रदान करना, आईटी पाठ्यक्रमों के लिए शिक्षकों को प्रशिक्षित करना, कल्याण कार्यों, संस्थाओं ऐतिहासिक स्थलों की मरम्मत और नवीकरण।	• भारत के प्रति बंगलादेश के लोगों के मन में सौहार्द उत्पन्न करना।
	(ii) भूटान	• मेगा जल विद्युत परियोजना, ताला और पुनात्संग्चू-I सामाजिक परियोजनाओं तथा भूटान से ऊर्जा क्रय।	• भूटान से संबंध को मजबूत बनाए रखना, भूटान का सामाजिक, आर्थिक विकास, ऊर्जा की उपलब्धता, व्यापार को बढ़ावा देना।
	(iii) नेपाल	• स्वास्थ्य परियानाएं, अस्पताल निर्माण, शैक्षिक संस्थानों की स्थापना और अन्य विकास परियोजनाएं।	• नेपाल में सामाजिक, आर्थिक विकास, मानव संसाधन विकास, अवसंरचनात्मक विकास तथा नेपाल के लोगों में भारत के प्रति सद्भावना बढ़ाना।
	(iv) श्रीलंका	• छोटी विकास परियोजनाएं • छोटा सामुदायिक विकास परियोजनाओं का निष्पादन • सुनामी राहत परियोजनाएं केकेएस बंदरगाह का पुनर्निर्माण • रक्षा सहयोग	• भारत के प्रति सद्भावना का विकास।
	(v) मालदीव	• रक्षा सहयोग और सिविल अधिकारियों का प्रशिक्षण • भारतीय मेडिकल विशेषज्ञों की प्रतिनियुक्ति • हाइड्रोग्राफिक सर्वेक्षण यूनिट की स्थापना	• भारत के लिए सामान्य सद्भावना और भारत के दीर्घकालीन हितों का विकास।

परिशिष्ट **IX**

क्र.सं.	योजना/कार्यक्रम का नाम	उद्देश्य	प्रस्तावित परिणाम
1	2	3	4
		• हास्पिटलटी और पर्यटन अध्ययन संकायों की स्थापना • इनसेट मेटिरियोलोजिकल डाटा रिसेप्शन का उन्नयन	
	(vi) म्यामां	• अवसंरचना परियोजनाओं का पुनिर्माण/अनुरक्षण	• म्यामां में अवसंरचना विकास, उन्नत सड़क संपर्क, सीमा व्यापार एवं पर्यटन को बढ़ावा साथ ही उग्रवाद, मादक द्रव्यों के गैर-कानूनी व्यापार, हथियारों की तस्करी और अन्य संबंधित समस्याएं। म्यामां के साथ सहयोग संवर्धन और भारत के लिए सद्भावना तथा प्रभाव का सृजन।
		• दूर संवेदन में सहयोग • तमांथी पन बिजली परियोजना • सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी परियोजनाएं • शैक्षिक, सांस्कृतिक और अन्य सहयोग	• सीमा पार सम्पर्क और व्यापार में वृद्धि • भारत को विद्युत आपूर्ति
	(vii) अन्य विकासशील देश	• अफगानिस्तान में बांधों, अवसंरचना विकास परियोजनाओं, विद्युत पारेषण परियोजनाओं और स्वास्थ्य सुविधाओं का पुनर्निर्माण	• अफगानिस्तान में अवसंरचना तथा बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं का विकास और भारत के लिए सद्भावना का सृजन
		• पश्चिमी एशिया और उत्तरी अफ्रीका के देशों को द्विपक्षीय सहायता	• फिलीस्तीन में अवसंरचना विकास, सूडान तथा पश्चिमी एशिया/उत्तरी अफ्रीका के अन्य देशों में विकास
		• ईराक को पुनर्वास और राहत सहायता • दक्षिणपूर्व एशिया के चुनिंदा देशों में सूचना प्रौद्योगिकी केन्द्रों की स्थापना • विभिन्न असैनिक और सैन्य प्रशिक्षण कार्यक्रमों और सार्क कार्यक्रमों में अन्य देशों के उम्मीदवारों का प्रशिक्षण	• 156 आइटेक भागीदार देशों के साथ द्विपक्षीय संबंधों को बढ़ावा
	(viii) अफ्रीकी देशों को सहायता	• पश्चिमी अफ्रीका और पूर्व एवं दक्षिणी अफ्रीका के देशों में कृषि प्रसंस्करण क्षेत्र, सूचना प्रौद्योगिकी केन्द्रों में विकास परियोजनाओं की स्थापना	• पश्चिम अफ्रीका तथा पूर्व और दक्षिणी अफ्रीका के लोगों के बीच भारत के लिए सद्भावना का सृजन सूचना प्रौद्योगिकी के जरिए संवर्धित संपर्क
	(ix) मध्य एशिया को सहायता	• आइटी केन्द्रों की स्थापना • रक्षा सहयोग • मध्य एशिया के देशों को कृषि उपकरण मुहैया कराना	• सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में कौशल विकास, मध्य एशिया के देशों के लोगों के बीच भारत के लिए सद्भावना सृजन

परिशिष्ट **IX**

क्र.सं.	योजना/कार्यक्रम का नाम	उद्देश्य	प्रस्तावित परिणाम
1	2	3	4
7.	लोक कार्य	• विदेश स्थित 20 देशों में चांसरी और आवासीय भवनों का निर्माण। • विदेशों में और भारत में चार स्थानों पर जमीन और बना हुआ परिसर अधिगृहीत करना। • विदेश भवन सहित भारत में कार्यालयी और संस्थागत 4 भवनों का निर्माण कार्य।	• परिसम्पत्ति तैयार करना और भविष्य में भारत सरकार के किराये के दायित्व को कम करना।
8.	आवास	• 9 देशों में आवासीय परिसर का निमाण और भारत में आवासीय तथा हॉस्टल, सूइट का निर्माण। • एक देश में आवासीय उद्देश्य से जमीन प्राप्त करना। • विदेश में भवनों का मरम्मत कार्य।	• परिसम्पत्ति तैयार करना और एक समयावधि में भारत सरकार के किराया दायित्वों को कम करना।

परिशिष्ट **X**

नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक की विदेश मंत्रालय संबंधी रिपोर्ट से उद्धृत अंश

अपर्याप्त आंतरिक नियंत्रण तंत्र	थिम्पू के मंत्रालय/मिशन में प्रभावी आंतरिक नियंत्रण तंत्र की स्थापना न किए जाने से एक विद्युत परियोजना के लिए भूटान की शाही सरकार को 6.57 करोड़ रुपए की अतिरिक्त राशि जारी करनी पड़ी। मंत्रालय ने भी इसी प्रयोजनार्थ हेतु मिशन को 67.99 करोड़ रुपए की दुगुनी रकम प्रेषित की और एक अन्य प्रयोजन हेतु 22.99 करोड़ रुपए की अधिक राशि जारी कर दी। इन घटनाओं से 58.00 लाख रुपए के ब्याज की हानि हुई जिसे संघ सरकार के उधार लेने की दर पर परिकलित किया गया। **(2007 की रिपोर्ट संख्या 2)**
समेकित स्थानांतरण अनुदान का अनियमित भुगतान	भारत सरकार के आदेशों तथा स्वयं अपने नियमों का उल्लंघन करते हुए मंत्रालय ने वार्षिक हज तीर्थ यात्रा के दौरान 2 से 3 माह की अस्थायी प्रतिनियुक्ति पर चुने गए पदाधिकारियों को एक माह के मूल वेतन के बराबर समेकित स्थानांतरण अनुदान का भुगतान किया जिसके फलस्वरूप 2003-05 के दौरान 93.61 लाख रुपए का अनियमित भुगतान किया गया। इसके अलावा मंत्रालय ने अधिक भुगतान की गई राशि की वसूली करने की बजाए इस व्यय को कार्योत्तर मंजूरी प्रदान की जो कि अत्यधिक अनियमित भी था। **(2007 की रिपोर्ट संख्या 2)**
भवनों तथा रिहायशी आवास की खरीद, उन्हें किराए पर लेने, उनकी मरम्मत और अनुरक्षण के लिए मानदंडों का पालन न किया जाना।	शिकागो में मंत्रालय/मिशन द्वारा आवासीय प्रयोजन के लिए संपत्ति अर्जित करने में ढिलाई बरते जाने से अक्तूबर 1999 से फरवरी, 2004 के बीच 2.48 करोड़ रुपए का परिहार्य व्यय हुआ। नियमों की अवहेलना करते हुए बैंकाक, बीजिंग, हो-चि-मिन्ह सिटी, काठमांडू और माहे स्थित मिशनों ने अपने अधिकारियों और स्टाफ के लिए निर्धारित कुर्सी क्षेत्र के मानदंड से कहीं अधिक रिहायशी आवास किराए पर लिए जिसके कारण वर्ष 2001-2005 के दौरान 2.67 करोड़ रुपए का अधिक व्यय हुआ। जोहांसबर्ग और प्रीटोरिया स्थित भारतीय मिशनों ने मंत्रालय के नियमों और प्रत्यायोजित शक्तियों की अनदेखी करते हुए मंत्रालय के अनुमोदन के बिना निर्धारित सीमा से कहीं अधिक रिहायशी आवास के किराए का भुगतान किया जिसके परिणामस्वरूप सितंबर, 2002 से मार्च 2006 तक 31.12 लाख रुपए का अनधिकृत व्यय हुआ। माहे, रियाद और कोलंबो स्थित भारतीय मिशन ने सरकारी स्वामित्व वाले स्टाफ भवनों/आवासों के मरम्मत/जीर्णोद्धार और अनुरक्षण पर वित्तीय शक्तियों के प्रत्यायोजन का अतिक्रमण करते हुए व्यय किया जिसके कारण वर्ष 2002-2006 के दौरान 1.39 करोड़ रुपए का अनाधिकृत व्यय हुआ। **(2007 की रिपोर्ट सं. 2)**
विदेशों में स्थित भारतीय मिशनों/ केंद्रों में व्यावसायिक स्कंधों के कार्यकरण की कार्य निष्पादन लेखा-परीक्षा	बदलते अंतर्राष्ट्रीय व्यापार परिदृश्य को ध्यान में रखते हुए विदेशों में स्थित भारतीय मिशनों/केंद्रों में व्यावसायिक स्कंधों की पुनः संरचना नहीं की गयी। इन स्कंधों की पुनः संरचना करने और इन्हें सुचारू बनाने संबंधी अनेक प्रस्ताव जो इन्हें अपना कार्य अधिक कुशलतापूर्वक और प्रभावी ढंग से करने में समर्थ बनाते, अकार्यान्वित पड़े रहे। कर्मचारियों की संख्या घटाने संबंधी व्यय सुधार आयोग की सिफारिशें भी डीओसी द्वारा लागू नहीं की गयीं। **(पैरा 8.1.1 और 8.1.2)**

	व्यावसायिक प्रतिनिधित्व व्यापार संभावना के अनुरूप नहीं था। अनेक देशों में "फोकस मार्केट" के रूप में अभिचिह्नित केंद्र पर्याप्त व्यावसायिक उपस्थिति के बिना कार्य कर रहे थे जबकि अत्यधिक संख्या में भारत स्थित तथा स्थानीय कर्मचारी अन्य देशों को उपलब्ध कराए गए थे, जिन्हें शीर्ष निर्यात गंतव्य स्थल नहीं माना जाता। **(पैरा 8.3.1)**
	वर्ष 2001-02 तथा 2005-06 के दौरान व्यावसायिक स्कंधों द्वारा "व्यापार संवर्धन" पर 337 करोड़ रुपए के कुल व्यय का केवल 2 प्रतिशत ही व्यय किया गया जबकि आबंटन का अधिकांश भाग (75%) स्थापना लागत को पूरा करने के लिए इस्तेमाल किया गया। स्थापना लागत घटाने और व्यापार संवर्धन गतिविधियां बढ़ाने संबंधी वाणिज्य सचिव का निर्णय (मई 2000) लागू नहीं किया गया। **(पैरा 8.2.1 और 8.2.2)**
	विदेशों में भारतीय मिशनों/केंद्रों में व्यावसायिक स्कंधों ने वार्षिक कार्य योजना तैयार करने, बाजार अनुसंधान/सर्वेक्षण करने, व्यावसायिक कार्यनीति घटकों के विकास, व्यापार विवादों के समाधान, केंद्र वाले देशों में व्यापार तथा निवेश प्रतिनिधिमंडलों को भेजने संबंधी अनुवर्ती कार्रवाई तथा जिन देशों में ये केंद्र स्थित हैं वहां व्यापार मेलों और प्रदर्शनियों से संबंधित रिपोर्टें प्रस्तुत करने का जहां तक संबंध है, अपने अनिवार्य दायित्वों को प्रभावी और कारगर ढंग से नहीं निभाया। **(पैरा8.4.1, 8.4.3, 8.4.4, 8.4.5, 8.4.6 और 8.4.7)**
	डीओसी तथा एमईए द्वारा व्यावसायिक स्कंधों के कार्य-निष्पादन के अनुवीक्षण में ढिलाई बरती गयी। व्यावसायिक स्कंधों ने नियमित रूप से डीओसी और एमईए को मासिक/वार्षिक वाणिज्यिक रिपोर्टें प्रस्तुत नहीं कीं। डीओसी तथा एमईए में प्राप्त हुई रिपोर्टों में इन स्कंधों के कार्यनिष्पादन की माप करने के लिए इनका शायद ही कभी विश्लेषण या पुनरीक्षण किया गया। **(पैरा 8.5.2)** **(2007 की रिपोर्ट संख्या 21 (निष्पादन लेखा परीक्षा))**
पासपोर्ट, वीजा तथा कोंसुली सेवाओं की निष्पादन लेखापरीक्षा	पासपोर्ट जारी करने में अत्यधिक विलंब हुआ। 12 चुनिंदा आरपीओ/पीओ में निर्धारित समय के भीतर केवल 19% पासपोर्ट ही जारी किए जा सके। चुनिंदा 9 आरपीओ/पीओ में पुलिस सत्यापन रिपोर्टों (पीवीआर) के प्राप्त होने के बाद केवल 12 प्रतिशत पासपोर्ट ही जारी किए जा सके। इनमें से 10 आरपीओ/पीओ में पुलिस सत्यापन में भी छूट दे दी गयी थी, यहां निर्धारित समय के उपरांत 38 प्रतिशत पासपोर्ट जारी किए गए। पुलिस महानिदेशक, उत्तर प्रदेश ने कहा कि जब तक कि एक पृथक प्रकोष्ठ का सृजन नहीं किया जाता तब तक 21 दिनों में पुलिस सत्यापन रिपोर्टों का प्रस्तुत किया जाना संभव नहीं है और उन्होंने यह भी कहा कि राज्य पुलिस के लिए पासपोर्ट आवेदनों के लिए पुलिस सत्यापन प्राथमिकता का मद नहीं है। तत्काल योजना के अंतर्गत 80725 मामलों में निर्धारित समय के भीतर पासपोर्ट जारी नहीं किए जा सके यद्यपि इन मामलों में 872.49 लाख रुपए की अतिरिक्त फीस आरपीओ/पीओ कोझीकोड, भोपाल, अहमदाबाद, पुणे, लखनऊ, कोलकाता, बरेली और चंडीगढ़ द्वारा वसूल कर ली गयी थी। **(पैरा 7.1.2)**

अत्यधिक संख्या में जो पासपोर्ट बिना सुपुर्द किए ही लौटाए गए थे उन्हें आरपीओ/पीओ लखनऊ, चंडीगढ़, कोलकाता, कोझीकोड, पुणे, बरेली, दिल्ली, भोपाल, नागपुर, जम्मू और अहमदाबाद द्वारा नष्ट नहीं किया गया था, यद्यपि इन्हें नष्ट करना आवश्यक था। आरपीओ, दिल्ली और जम्मू ने इस श्रेणी के पासपोर्टों का समुचित रिकार्ड नहीं रखा था। समुचित लेखाकरण के अभाव में और इन पासपोर्टों को समय पर नष्ट न किए जाने से इनके संभावित दुरुपयोग सहित गंभीर परिणाम निकल सकते थे।

(पैरा 7.1.3)

आरपीओ/पीओ भोपाल, दिल्ली, पुणे, कोलकाता, लखनऊ में 244 पासपोर्ट रद्द/जब्त कर लिए गए थे क्योंकि इनमें प्रतिकूल पुलिस सत्यापन रिपोर्टों के प्राप्त होने की तारीख से छह माह से लेकर 8 से अधिक वर्षों तक का विलंब हुआ था। प्रतिकूल पुलिस सत्यापन रिपोर्टों की प्राप्ति आरपीओ/पीओ द्वारा पासपोर्ट जब्त/रद्द किए जाने के परिपत्र जारी किए जाने के उपरांत 28 व्यक्ति विदेश यात्रा कर चुके थे। पासपोर्ट रद्द/जब्त करने में होने वाले विलंब से संबंधित व्यक्तियों को अपने पासपोर्टों का दुरुपयोग करते रहने का अवसर मिल जाता है जो राष्ट्र की सुरक्षा हित के विरुद्ध है।

(पैरा 7.1.4)

पासपोर्ट जारी करने की जांच में पर्याप्त नियंत्रण के अभाव से आरपीओ, दिल्ली ने विभिन्न ऐसे व्यक्तियों को जाली पासपोर्ट जारी कर दिए जिन्होंने किसी अन्य व्यक्ति का रूप धारण कर लिया था। यह गंभीर चिंता का विषय है क्योंकि राष्ट्रीय सुरक्षा पर इसका प्रतिकूल प्रभावत पड़ सकता है।

(पैरा 7.1.5.1)

आरपीओ, दिल्ली में साफ्टवेयर प्रणाली ने अंतः संबंधित रद्द/जब्त किए गए पासपोर्टों की सही स्थिति नहीं दर्शाई और इस प्रकार रद्द/जब्त के रूप में न दर्शाए गए पासपोर्टों में हेरफेर करने और उनका दुरुपयोग करने की गुंजाइश बनी रही। निरस्त किए गए पासपोर्टों का भी ठीक से हिसाब नहीं रखा गया जिससे उनके दुरुपयोग की संभावना बनी रही।

(पैरा 7.1.5.2)

आरपीओ दिल्ली ने पासपोर्ट खोने के 6683 मामलों की तुलना में 2001-02 से 2004-05 के दौरान 5563 गुमशुदगी परिपत्र जारी किए थे। गुमशुदगी परिपत्रों को जारी न करने/इनके जारी करने में विलंब से गुम हुए पासपोर्टों का दुरुपयोग हो सकता है जिसके प्रतिकूल परिणाम निकल सकते हैं।

(पैरा 7.1.6.1)

स्पष्ट पुलिस सत्यापन रिपोर्टें जारी करने से पूर्व आवेदकों के पूर्ववृत्तों तथा अन्य ब्यौरों के सत्यापन में पर्याप्त सावधानी नहीं बरती गयी थी।

(पैरा 7.1.8.1)

वर्ष 2000-01 से 2004-05 के दौरान पुलिस सत्यापन रिपोर्टें प्राप्त करने के 70 से 82 प्रतिशत मामलों में विलंब हुआ जिससे "पीवीआर ओवरड्यू" आधार पर पासपोर्ट जारी करने पड़े। वास्तविक आवेदनों को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करने के अलावा ऐसे विलंब से अपात्र आवेदकों को पासपोर्ट जारी कर दिए जाने का जोखिम बना रहता है।

(पैरा 7.1.8.2)

तत्काल योजना के अंतर्गत पासपोर्ट, अधिकारियों द्वारा दिए गए सत्यापन प्रमाणपत्रों के आधार पर अधिकांशतः ऐसे अपरिचित लोगों को जारी किए गए थे जिनका संदर्भ उनके मित्रों/संबंधियों आदि ने दिया था। आरपीओ पीओ दिल्ली, बरेली, भोपाल, लखनऊ, अहमदाबाद, नागपुर, पुणे, चंडीगढ़ और कोलकाता में वर्ष 2001-01 से 2004-05 के दौरान बाद में पुलिस सत्यापन के लिए भेजे गए 1,74,177 मामलों में से 1930 मामलों में प्रतिकूल पुलिस सत्यापन रिपोर्टें और 19,672 मामलों में अधूरी पुलिस सत्यापन रिपोर्टें प्राप्त हुई थीं तथा 44,191 मामलों में पुलिस सत्यापन रिपोर्टें प्राप्त ही नहीं हुईं। जहां प्रतिकूल पुलिस सत्यापन रिपोर्टें प्राप्त हुईं वहां सत्यापन प्रमाणपत्र जारी करने वाले प्राधिकारियों के विरुद्ध कार्रवाई करने की कोई प्रक्रिया नहीं थी।

(पैरा 7.1.8.3)

आरपीओ दिल्ली में पासपोर्ट रद्द/जब्त किए जाने के 114 मामलों में उन्हें रद्द/जब्त किए जाने से संबंधित प्रविष्टियां प्रणाली में नहीं की गयीं। ये पासपोर्ट पीआईए, आप्रवासन अधिकारियों तथा अन्य सुरक्षा एजेंसियों से अनदेखे रह सकते थे।

(पैरा 7.1.9.1)

रिक्त यात्रा दस्तावेज (पासपोर्ट पुस्तिकाएं, वीजा स्टिकर आदि) भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नासिक से 16 मिशनों/केंद्रों को आपूर्ति के समय बीच मार्ग से ही गायब हो गए। 10 मिशनों/केंद्रों/आरपीओ द्वारा प्राप्त किए गए रिक्त यात्रा दस्तावेज क्षतिग्रस्त पाए गए। रिक्त यात्रा दस्तावेजों का समुचित हिसाब भी नहीं पाया गया। 13 मिशनों/केंद्रों में रिक्त यात्रा दस्तावेजों की मांग, आपूर्ति और प्राप्ति में भी विसंगतियां पाई गयीं। मिशनों/केंद्रों द्वारा रखे जाने वाले स्टॉक रजिस्टरों में भी कई कमियां पायी गयीं। समुचित रिकार्डों और रिक्त यात्रा दस्तावेजों का खराब रख रखाब एवं लेखाकरण गंभीर सुरक्षा की चिंता का विषय है।

(पैरा 7.3.1 और 7.3.2)

पासपोर्ट मामलों में कारगर पर्यवेक्षण, अनुवीक्षण और आंतरिक नियंत्रण का अभाव पाया गया। इसके परिणामस्वरूप विदेशी नागरिकों को भारतीय पासपोर्ट जारी कर दिए गए, 275 जाली पासपोर्ट जारी किए गए और अपराधियों तथा आतंकवादियों को भी पासपोर्ट जारी किए गए। विदेश मंत्रालय ने कमियों एवं कदाचार के मामलों को ध्यान में लाए जाने के बावजूद अपने आतंरिक नियंत्रण को सुदृढ़ बनाने के लिए सुधारात्मक उपाय आरंभ नहीं किए।

(पैरा 7.6)

(2007 की रिपोर्ट सं 12 (निष्पादन लेखा परीक्षा))

परिशिष्ट **XI**

वर्ष 2007 में भारत द्वारा अन्य देशों के साथ संपन्न अथवा नवीकृत की गयी संधियां/अभिसमय/करार

क्र. सं.	अभिसमय/संधि/करार का शीर्षक	हस्ताक्षर की तारीख	अनुसमर्थन/ अधिमिलन/ स्वीकार्यता संबंधी दस्तावेज जमा करने की तारीख	लागू होने की तारीख
क.	**बहुपक्षीय**			
1.	सभी व्यक्तियों को प्रवर्तित गुमशुदगी से सुरक्षा प्रदान करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय अभिसमय	6.02.07		
2.	निशक्त व्यक्तियों के अधिकारों से संबंधित अभिसमय	30.03.07	24.09.07/ 1.10.07	
3.	ट्रांस एशियाई रेल नेटवर्क के संबंध में अंतरसरकारी समझौता	29.06.07	7.08.07	
4.	6 दिसंबर, 2005 को विश्व व्यापार संगठन की महा परिषद द्वारा जेनेवा में स्वीकृत किए गए ट्रिप्स समझौते को संशोधित करने वाला प्रोतोकोल		9.03.07	
5.	भारत गणराज्य संघीय गणराज्य ब्राजील तथा दक्षिण एशिया गणराज्य तथा दक्षिण एशिया गणराज्य की सरकारों के बीच इंडिया-ब्राजील-दक्षिण अफ्रीका (इबसा) संवाद मंच पहल के अंतर्गत कृषि तथा संबंधित क्षेत्रों में त्रिपक्षीय सहयोग से संबद्ध समझौता ज्ञापन	13.09.06	10.05.07	
6.	अंतर्राष्ट्रीय लोकतंत्र तथा निर्वाचकीय सहायता संविधि संस्थान के संबंध में किए गए संशोधनों को 24 जनवरी, 2006 को अंतर्राष्ट्रीय आईडीईए की असाधारण परिषद बैठक में स्वीकार किया गया।	24.01.06	14.05.07	14.05.07
7.	8 जुलाई, 2005 को आईएईए राजनयिक सम्मेलन द्वारा अपनाए गए नाभिकीय सामग्री की भौतिक सुरक्षा संबंधी अभिसमय में संशोधन।	8.07.05	19.09.07	
8.	खेल में डोपिंग के विरुद्ध अंतर्राष्ट्रीय अभिसमय को पेरिस में यूनेस्को के सामान्य सम्मेलन के तैंतीसवें सत्र में 19 अक्तूबर, 2005 को अपनाया गया।	19.10.05	10.09.07	
9.	भारत-भूटान मैत्री संधि			
10.	**सार्क** सार्क खाद्य बैंक की स्थापना के संबंध में समझौता	4.04.07	17.04.07	
11.	दक्षिण एशियाई विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए समझौता	4.04.07	17.04.07	

परिशिष्ट **XI**

क्र. सं.	अभिसमय/संधि/करार का शीर्षक	हस्ताक्षर की तारीख	अनुसमर्थन/ अधिमिलन/ स्वीकार्यता संबंधी दस्तावेज जमा करने की तारीख	लागू होने की तारीख
ख. त्रिपक्षीय				
1.	**इबसा (आईबीएसए)** भारत गणराज्य, संघीय गणराज्य ब्राजील तथा दक्षिण अफ्रीका गणराज्य की सरकारों के बीच स्वास्थ्य और दवाओं के क्षेत्र में सहयोग पर समझौता ज्ञापन	17.04.07		17.04.07
2.	भारत गणराज्य, संघीय गणराज्य ब्राजील तथा दक्षिण अफ्रीका गणराज्य की सरकारों के बीच सीमा शुल्क तथा कर-प्रशासन में सहयोग पर समझौता ज्ञापन।	17.10.07		
3.	भारत गणराज्य संघीय गणराज्य ब्राजील तथा दक्षिण अफ्रीका गणराज्य की सरकारों के बीच सांस्कृतिक सहयोग से संबद्ध करार।	17.10.07		
4.	भारत गणराज्य संघीय गणराज्य ब्राजील तथा दक्षिण अफ्रीका गणराज्य की सरकारों के बीच उच्चतर शिक्षा से संबद्ध करार।	17.10.07		
5.	भारत गणराज्य, संघीय गणराज्य ब्राजील तथा दक्षिण अफ्रीका गणराज्य की सरकारों के बीच सामाजिक समझौते से संबद्ध करार।	17.10.07		
6.	भारत गणराज्य, संघीय गणराज्य ब्राजील तथा दक्षिण अफ्रीका गणराज्य की सरकारों के बीच पवन संसाधनों से संबद्ध करार।	17.10.07		
7.	भारत गणराज्य, संघीय गणराज्य ब्राजील तथा दक्षिण अफ्रीका गणराज्य की सरकारों के बीच लोक प्रशासन और शासन से संबद्ध करार।	17.10.07		
ग.	**द्विपक्षीय**			
1.	**आस्ट्रिया** भारत गणतंत्र सरकार और आस्ट्रिया गणराज्य सरकार के मध्य वैज्ञानिक और प्रौद्योगकीय सहयोग से संबद्ध करार।	30.11.07		
2.	**अजरबेजान** भारत सरकार और अजरबेजान गणतंत्र सरकार के मध्य व्यापार, आर्थिक, वैज्ञानिक सहयोग के अंतर-सरकारी आयोग से संबद्ध करार।	11.04.07	16.08.07	
3.	**बेलारूस** भारत गणतंत्र और बेलारूस गणतंत्र के मध्य प्रत्यर्पण संधि।	16.04.07	02.08.07	

परिशिष्ट **XI**

क्र. सं.	अभिसमय/संधि/करार का शीर्षक	हस्ताक्षर की तारीख	अनुसमर्थन/ अधिमिलन/ स्वीकार्यता संबंधी दस्तावेज जमा करने की तारीख	लागू होने की तारीख
4.	भारत गणतंत्र के कृषि मंत्रालय और बेलारूस गणतंत्र के कृषि और खाद्य मंत्रालय के मध्य कृषि के क्षेत्र में सहयोग से संबद्ध करार।	16.04.07		16.04.07
5.	भारत गणतंत्र सरकार और बेलारूस गणतंत्र सरकार के मध्य वर्ष 2007-2009 के लिए संस्कृति, कला, शिक्षा, सार्वजनिक मीडिया और प्रैस के क्षेत्र में सहयोग कार्यक्रम।	16.04.07		
6.	भारत-बेलारूसी का 2007-2010 की अवधि के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सहयोग का कार्यकारी कार्यक्रम।	16.04.07		16.04.07
7.	बेलारूस गणतंत्र और भारत गणतंत्र के मध्य विश्व व्यापार संगठन में बेलारूस के प्रवेश से संबद्ध प्रोटोकोल।	16.04.07		
8.	**बहरीन** प्रसार भारती रेडियो और बहरीन रेडियो और टेलीविजन कारपोरेशन के मध्य सहयोग से संबद्ध करार।	20.03.07		20.03.07
9.	भारत गणतंत्र राज्य और बहरीन राज्य के मध्य वर्ष 2007-2010 के लिए सांस्कृतिक सहयोग का कार्यकारी कार्यक्रम	20.03.07		20.03.07
10.	**भूटान** राष्ट्रीय इन्फार्मेटिक्स सेंटर सर्विसेस इनकार्पोरेटिड (एनआईसीएसआर) भारत सरकार और सूचना प्रौद्योगिकी विभाग, संचार एवं प्रसारण मंत्रालय, भूटान की शाही सरकार के मध्य ग्राहक अनुरूपता/विकास के क्षेत्र और ई-गवर्नेंस अनुप्रयोगों में सहयोग।	28.06.07		28.06.07
11.	भारत सरकार और भूटान की शाही सरकार के मध्य पुनात्सांगछू- आई पनबिजली परियोजना के सबंध में करार।	28.07.07		28.07.07
12.	नियंत्रक और महालेखापरीक्षक, भारत (सी एंड ए जी) और भूटान राज्य के रायल लेखा-परीक्षा प्राधिकरण के मध्य सहयोग का समझौता ज्ञापन।	15.10.07		15.10.07
13.	**ब्राजील** भारत गणतंत्र ओर ब्राजील के संघीय गणतंत्र के मध्य वैज्ञानिक सहयोग से संबद्ध करार।	12.09.06	07.08.07	
14.	भारत गणतंत्र सरकार और ब्राजील की संघीय गणतंत्र सरकार के मध्य राजनयिक अकादमियों के मध्य आपसी सहयोग से संबद्ध समझौता ज्ञापन।	12.09.07		

परिशिष्ट **XI**

क्र. सं.	अभिसमय/संधि/करार का शीर्षक	हस्ताक्षर की तारीख	अनुसमर्थन/ अधिमिलन/ स्वीकार्यता संबंधी दस्तावेज जमा करने की तारीख	लागू होने की तारीख
15.	भारत गणतंत्र राज्य और ब्राजील की संघीय गणतंत्र सरकार के मध्य सीमा शुल्क मामलों मे आपसी सहयोग पर करार	04.06.07		
16.	**बुल्गारिया** भारत गणतंत्र सरकार और बुल्गारिया गणतंत्र सरकार के मध्य आर्थिक सहयोग से संबद्ध करार।	12.09.07		
17.	भारत गणतंत्र के श्रम और रोजगार मंत्रालय और बुल्गारिया गणतंत्र सरकार के श्रम और सामाजिक नीति के मध्य श्रम संबंध, रोजगार और सामाजिक सुरक्षा के क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने के अभिप्राय का प्रोतोकोल।	12.09.07		
18.	भारत गणतंत्र और बुल्गारिया गणतंत्र के मध्य सिविल और व्यावसायिक मामलों में आपसी विधिक सहायता से संबद्ध संधि।	12.09.07	24.09.07	
19.	भारत गणतंत्र राज्य और बुल्गारिया गणतंत्र की सरकार के मध्य निवेश के संवर्धन और संरक्षण के लिए नई दिल्ली में 26 अक्तूबर, 1998 को हुए करार को संशोधित करते हुए भारत गणतंत्र और बुल्गारिया की गणतंत्र सरकार के मध्य प्रोतोकोल गणतंत्र और बुल्गारिया की गणतंत्र सरकार के मध्य प्रोतोकोल।	12.09.07		
20.	भारत गणतंत्र और बुल्गारिया गणतंत्र के मध्य अपराधिक मामलों में आपसी विधिक सहायता पर संधि।	12.09.07	24.09.07	
21.	राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम लि., भारत गणतंत्र और बुल्गारियन लघु एवं मध्यम उपक्रम संवर्धन एजेन्सी के मध्य समझौता ज्ञापन।	12.09.07		12.09.07
22.	भारत गणतंत्र के मध्य दंडदर्शित व्यक्तियों के स्थानांतरण से संबद्ध संधि।	12.09.07		
23.	**कंबोडिया** भारत गणतंत्र सरकार और कंबोडिया की शाही सरकार के मध्य फ्नाम पेन्ह, कंबोडिया में अंग्रेजी भाषा के प्रशिक्षण के लिए एक केंद्र की स्थापना करने हेतु एक समझौता ज्ञापन।	18.05.07		
24.	भारत की ओएनजीसी विदेश लि. और कंबोडिया राज्य की कंबोडिया राष्ट्रीय पेट्रोलियम प्राधिकरण के मध्य सहयोग और तकनीकी सहायता से संबद्ध समझौता ज्ञापन।	08.12.07		

परिशिष्ट **XI**

क्र. सं.	अभिसमय/संधि/करार का शीर्षक	हस्ताक्षर की तारीख	अनुसमर्थन/ अधिमिलन/ स्वीकार्यता संबंधी दस्तावेज जमा करने की तारीख	लागू होने की तारीख
25.	कंबोडिया राज्य की सरकार और भारत के निर्यात-आयात बैंक के मध्य दिनांक 8 दिसंबर, 2007 का क्रेडिट लाइन एग्रीमेंट।	08.12.07		
26.	भारत गणतंत्र सरकार और कंबोडिया की रायल सरकार के मध्य वर्ष 2007 और 2008 के लिए कृषिपर समझौता ज्ञापन के अंतर्गत कार्य-योजना।	08.12.07		
27.	भारत गणतंत्र सरकार और कंबोडिया राज्य सरकार के मध्य रक्षा सहयोग पर करार।	08.12.07		
28.	भारत गणतंत्र सरकार और कंबोडिया की शाही सरकार के मध्य जल संसाधन प्रबंधन के क्षेत्र में सहयोग से संबद्ध समझौता ज्ञापन।	08.12.07		
29.	भारत के विदेश मंत्रालय और कंबोडिया राज के विदेश और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग मंत्रालय के मध्य विदेशी मामलों पर विचार-विमर्श से संबद्ध समझौता ज्ञापन।	08.12.07		
30.	भारत गणतंत्र सरकार और कंबोडिया की शाही सरकार के मध्य दंडोदेशित व्यक्तियों के स्थानांतरण से संबद्ध करार।	08.12.07		
31.	**चीन** चीन और भारत के मध्य वर्ष 2007-09 के लिए सांस्कृतिक आदान-प्रदान का कार्यक्रम।	20.06.07		
32.	**संघ डाक संघ गठन (चीन)** वर्ष 1999 में सितंबर की 15 तारीख को बीजिंग (पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना) में यूनिवसल पोस्टल यूनियन के गठन का छठा अतिरिक्त प्रोतोकोल लागू किया गया।	12.12.06		1.03.07
33.	**साइप्रस** भारत सरकार और साइप्रस गणतंत्र सरकार के मध्य अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद संगठित अपराध और अवैध मादक द्रव्यों के व्यापार से संबद्ध करार।	25.05.07		
34.	भारत गणतंत्र सरकार और साइप्रस गणतंत्र सरकार के मध्य राजनयिक और सरकारी/सेवा पासपोर्ट धारकों के लिए वीजा की आवश्यकता समाप्त करने से संबद्ध करार।	25.05.07		

परिशिष्ट **XI**

क्र. सं.	अभिसमय/संधि/करार का शीर्षक	हस्ताक्षर की तारीख	अनुसमर्थन/ अधिमिलन/ स्वीकार्यता संबंधी दस्तावेज जमा करने की तारीख	लागू होने की तारीख
35.	भारत गणतंत्र सरकार और साइप्रस गणतंत्र सरकार के मध्य वर्ष 2007-2010 के लिए सांस्कृतिक, शैक्षिक और वैज्ञानिक सहयोग पर कार्यकारी कार्यक्रम।	25.05.07		25.05.07
36.	**कोलंबिया** भारत सरकार और कोलंबिया सरकार के मध्यम शहरी सार्वजनिक परिवहन प्रणाली और शहरी परिवहन योजना के क्षेत्र में सहयोग से संबद्ध समझौता ज्ञापन।	31.05.07		31.05.07
37.	**क्रोएशिया** भारत और क्रोएशिया के मध्य राजनयिक और सरकारी पासपोर्ट धारकों के लिए वीजा छूट से संबद्ध करार।	19.09.07		
38.	**चेक** भारत गणतंत्र के विदेश मंत्रालय के विदेश सेवा संस्थान और चेक गणतंत्र के विदेश मंत्रालय की राजनयिक अकादमी के मध्य सहयोग पर ज्ञापन।	19.11.07		
39.	**इथोपिया** भारत गणतंत्र के विदेश मंत्रालय और संघीय लोकतंत्र गणतंत्र इथोपिया के मध्य विचार-विमर्श का प्रोतोकोल।	5.07.07		5.07.07
40.	भारत गणतंत्र सरकार और संघीय लोकतांत्रिक गणतंत्र इथोपिया के मध्य संयुक्त मंत्रिस्तरीय आयोग की स्थापना से संबद्ध करार।	5.07.07		
41.	भारत गणतंत्र और संघीय लोकतांत्रिक गणतंत्र इथोपिया के मध्य निवेशप के आपसी संवर्धन और संरक्षण से संबद्ध करार।	5.07.07		3.09.07
42.	भारत गणतंत्र सरकार और संघीय लोकतांत्रिक गणतंत्र इथोपिया के मध्य विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में करार।	5.07.07		
43.	भारत गणतंत्र सरकार और संघीय लोकतांत्रिक गणतंत्र इथोपिया के मध्य शिक्षा के क्षेत्र में विनिमय कार्यक्रम।	5.07.07		5.07.07
44.	**यूरोपियन समुदाय** भारत गणतंत्र सरकार और यूरोपियन समुदाय के मध्य वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकीय सहयोग से संबद्ध करार।	30.10.07		

परिशिष्ट **XI**

क्र. सं.	अभिसमय/संधि/करार का शीर्षक	हस्ताक्षर की तारीख	अनुसमर्थन/ अधिमिलन/ स्वीकार्यता संबंधी दस्तावेज जमा करने की तारीख	लागू होने की तारीख
45.	**जर्मनी** संचार और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत गणतंत्र सरकार और ढांचे पोस्ट ए जी, जर्मनी के मध्य समझौता ज्ञापन।	30.10.07		
46.	**हैलेनिक गणतंत्र** भारत गणतंत्र सरकार और हैलेनिक गणतंत्र सरकार के मध्य वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकी सहयोग से संबद्ध करार।	26.04.07	18.07.07	
47.	भारत गणतंत्र सरकार और हैलेनिक गणतंत्र सरकार के मध्य निवेश के संवर्धन और परस्पर सुरक्षा से संबद्ध करार।	26.04.07		26.04.07
48.	**आइसलैंड** कृषिमंत्रालय, पशुपालन विभाग, डेयरी मात्सियिकी भारत सरकार और आइसलैंड के विदेश मंत्रालय के मध्य दीर्घकालिक मात्सियिकी विकास पर समझौता ज्ञापन।	30.07.07		30.07.07
49.	भारत और आइसलैंड के मध्य भूकंप पूर्वानुमान अनुसंधान के क्षेत्र में सहयोग पर समझौता ज्ञापन	5.04.07		
50.	नवीन और नवीकरण ऊर्जा, भारत गणतंत्र सरकार और आइसलैंड गणतंत्र के उद्योग मंत्रालय के मध्य भारत-आइसलैंड नवीकरण ऊर्जा सहयोग पर समझौता ज्ञापन।	9.10.07		9.10.07
51.	भारत गणतंत्र सरकार और आइसलैंड सरकार के मध्य आय पर करों के संबंध में दोहरे कराधान से बचने और वित्तीय चोरी के निवारण के लिए करार और प्रोतोकोल।	23.11.07		
52.	**इराक** 22-25 मई, 2007 को नई दिल्ली में आयोजित आर्थिक और तकनीकी सहयोग के भारत-इराक संयुक्त आयोग के 16वें सत्र के कार्यवृत्तों पर सहमति।	25.05.07		
53.	**जापान** शहरी विकास मंत्रालय, भारत सरकार और भू, अवसंरचना और परिवहन मंत्रालय, जापान सरकार के मध्य शहरी विकास के क्षेत्र में सहयोग पर समझौता ज्ञापन।	1.05.07		
54.	भारत गणतंत्र और जापान द्वारा पर्यावरण संरक्षण और ऊर्जा सुरक्षा पर सहयोग के विस्तार के संबंध में संयुक्त वक्तव्य।	22.08.07		

परिशिष्ट **XI**

क्र. सं.	अभिसमय/संधि/करार का शीर्षक	हस्ताक्षर की तारीख	अनुसमर्थन/ अधिमिलन/ स्वीकार्यता संबंधी दस्तावेज जमा करने की तारीख	लागू होने की तारीख
55.	भारत और जापान के मध्य सामरिक और सार्वभौमिक सहयोग के प्रति नए आयामों की रूपरेखा पर संयुक्त वक्तव्य।	22.08.07		
56.	**कोरिया** 17 सितंबर, 2007 को सियोल में हस्ताक्षरित भारत-कोरिया गणतंत्र संयुक्त आयोग का पांचवा सत्र।	17.09.07		
57.	**कुवैत** भारत गणतंत्र सरकार और कुवैत देश की सरकार के मध्य दोहरने कराधान से बचने और आय पर करों के संबंध में वित्तीय चोरी के निवारण के लिए करार।	15.06.07		
58.	**किर्गिस्तान** विदेश सेवा संस्थान, विदेश मंत्रालय, भारत गणतंत्र और क्रिगिस्तान गणतंत्र के विदेश मंत्रालय की राजनयिक अकादमी के मध्य आपसी सहयोग से संबद्ध समझौता ज्ञापन।	24.04.07		
59.	**लाओ पीडीआर** भारत गणराज्य की सरकार और लॉओ पीपुल्स डेमोक्रेटिव रिपब्लिक के मध्य वियनतायने, लाओ पी.डी.आर. में अंग्रेजी भाषा प्रशिक्षण केंद्र की स्थापना से संबद्ध समझौता ज्ञापन।	12.06.07		
60.	भारत गणतंत्र और लॉओ पीपुल्स डेमोक्रेटिव रिपब्लिक के मध्य "बॉत फो" में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल के संरक्षण और पुनर्निमाण से संबद्ध समझौता ज्ञापन	30.05.07		
61.	**लीबिया** ग्रेटर सोशलिस्ट पीपुल्स लीबियन अरब जमाहीरिया और भारत गणराज्य के मध्य सांस्कृतिक एवं सूचना करार।	26.05.07		26.05.07
62.	भारत गणतंत्र और ग्रेट सोशलिस्ट पीपुल्स लीबियन अरब जमाहीरिया के मध्य निवेश के संवर्धन और सुरक्षा के लिए करार।	26.05.07		
63.	**मलेशिया** 16 फरवरी, 2007 को नई दिल्ली में आयोजित चौथी भारत-मलेशिया संयुक्त आयोग की बैठक के कार्यवृत्तों पर सहमति।	16.02.07		

परिशिष्ट **XI**

क्र. सं.	अभिसमय/संधि/करार का शीर्षक	हस्ताक्षर की तारीख	अनुसमर्थन/ अधिमिलन/ स्वीकार्यता संबंधी दस्तावेज जमा करने की तारीख	लागू होने की तारीख
64.	**मारीशस** भारत गणतंत्र के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय और मॉरीशस गणतंत्र के सामाजिक सुरक्षा, राष्ट्रीय एकता और वरिष्ठ नागरिक कल्याण और सुधार संस्था मंत्रालय के मध्य वृद्ध व्यक्तियों के कल्याण, मादक द्रव्य मांग में कटौती, निशशक्तता सहित सामाजिक सुरक्षा और सामाजिक सुरक्षा के सामान्य क्षेत्रों में अन्य क्षेत्रों में समझौता ज्ञापन।	3.11.07		
65.	**मैक्सिको** भारत गणतंत्र सरकार और यूनाइटेड मैक्सिकन राज्य सरकार के मध्य अपराधिक मामलों में आपसी विधिक सहायता पर संधि।	10.09.07	28.09.07	
66.	भारत गणतंत्र और यूनाइटेड मैक्सिकन राज्य सरकार के मध्य निवेश के संवर्धन से संबद्ध करार।	21.05.07	2.07.07	
67.	भारत गणतंत्र और यूनाइटेड मैक्सिकन के मध्य प्रत्यर्पण संधि।	10.09.07		
68.	**म्यांमा** भरत गणतंत्र सरकार और म्यांमा संघ के मध्य यांगो में सूचना प्रौद्योगिकी कौशल बढ़ाने के लिए भारतीय म्यांमा केंद्र की स्थापना हेतु समझौता ज्ञापन।	12.12.07		
69.	**नाइजीरिया** भारतीय विश्व कार्य परिद, भारत गणतंत्र और नाइजीरियन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडरनेशनल अफेयर्स, संघीय गणतंत्र नाइजीरिया के मध्य समझौता ज्ञापन।	15.10.07		15.10.07
70.	विदेश सेवा संस्थान, विदेश मंत्रालय, भारत गणतंत्र और विदेश सेवा अकादमी, संघीय गणतंत्र नाइजीरिया के विदेश मंत्रालय के मध्य आपसी सहयोग पर समझौता ज्ञापन।	15.10.07		15.10.07
71.	भारत गणतंत्र के विदेश मंत्रालय और संघीय गणतंत्र नाइजीरिया के विदेश मंत्रालय के मध्य विचार-विमर्श का प्रोतोकोल।	15.10.07		15.10.07
72.	भारत गणतंत्र के रक्षा मंत्रालय और संघीय गणतंत्र नाइजीरिया में रक्षा मंत्रालय के मध्य रक्षा सहयोग के संबंध में समझौता ज्ञापन।	15.10.07		

परिशिष्ट **XI**

क्र. सं.	अभिसमय/संधि/करार का शीर्षक	हस्ताक्षर की तारीख	अनुसमर्थन/ अधिमिलन/ स्वीकार्यता संबंधी दस्तावेज जमा करने की तारीख	लागू होने की तारीख
73.	**सैंट क्रिस्टोफर और नेवीस** भारत गणतंत्र के विदेश मंत्रालय और सैंट क्रिस्टोफर और नेवीस के विदेश मामलों, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, उद्योग और वाणिज्यिक के मध्य विचार-विमर्श पर समझौता ज्ञापन।	23.07.07		23.07.07
74.	**पाकिस्तान** भारत गणतंत्र और इस्लामिक गणतंत्र पाकिस्तान के मध्य नाभिकीय शस्त्रों से संबंधित दुर्घटनाओं के जोखिम को कम करने से संबद्ध करार।	21.02.07		
75.	**फिलीपींस** फिलीपींस के ऊर्जा गणतंत्र विभाग और भारत गणतंत्र के नवीन एवं नवीकरण ऊर्जा मंत्रालय के मध्य नवीकरण ऊर्जा के क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने पर समझौता ज्ञापन।	5.10.07		5.10.07
76.	द्विपक्षीय सहयोग की रूपरेखा पर घोषणा।	5.10.07		
77.	अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद से निपटने के लिए संयुक्त घोषणा।	5.10.07		
78.	संयुक्त आयोग की स्थापना पर करार।	5.10.07		
79.	विदेश सेवा संस्थानों के मध्य सहयोग पर समझौता ज्ञापन।	5.10.07		5.10.07
80.	राजनयिक और सरकारी पासपोर्टों के लिए वीजा की छूट देने से संबद्ध करार।	5.10.07		
81.	स्वास्थ्य और चिकित्सा के क्षेत्र में समझौता ज्ञापन।	5.10.07		5.10.07
82.	**रवांडा** भारत गणतंत्र सरकार और रवांडा गणतंत्र के मध्य कृषि और पशु संसाधन के क्षेत्र में सहयोग पर समझौता ज्ञापन।	31.05.07		31.05.07
83.	विदेश मंत्रालय, भारत सरकार और होल- इन- द- वाल एजुकेशन लि. (एच. आई. डब्ल्यू. ई. एल) के मध्य 9 अप्रैल 2007 को रवांडा में होल-इन-द-वाल मार्गदर्शी परियोजना की स्थापना से संबद्ध करार।	9.04.07		
84.	**रूसी परिसंघ** भारत गणतंत्र सरकार और रूसी परिसंघ के मध्य वर्ष 2007-2009 के लिए सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम।	25.01.07		25.01.07

परिशिष्ट **XI**

क्र. सं.	अभिसमय/संधि/करार का शीर्षक	हस्ताक्षर की तारीख	अनुसमर्थन/ अधिमिलन/ स्वीकार्यता संबंधी दस्तावेज जमा करने की तारीख	लागू होने की तारीख
85.	भारत गणतंत्र सरकार और रूसी संध सरकार के मध्य वर्ष 2008 में "रूस में भारत वर्ष" का आयोजन करने के लिए प्रोतोकोल।	25.01.07		25.01.07
86.	रूसी-भारतीय कार्यकारी दल की ऊर्जा पर हुई तेरहवीं बैठक के कार्यवृत्त।	11.10.07		
87.	व्यापार, आर्थिक, वैज्ञानिक, तकनीकी और सांस्कृतिक सहयोग के रूसी-भारतीय अंतर- सरकारी आयोग की धातु-विज्ञान और खानों पर बने रूसी-भारतीय कार्यकारी दल की तीसरी बैठक का प्रोतोकोल।	12.09.07		
88.	प्रौद्योगिकी का रूसी-भारतीय कायकारी दल। तीसरी बैठक के कार्यवृत्त।	8.10.07		
89.	व्यापार, आर्थिक, वैज्ञानिक, तकनीकी और सांस्कृतिक सहयोग पर भारत-रूसी अंतर सरकारी आयोग के तेरहवें सत्र का प्रोतोकोल।	12.10.07		
90.	व्यापार, आर्थिक, वैज्ञानिक-तकनीकी और सांस्कृतिक सहयोग पर भारतीय-रूसी अंतर सरकारी आयोग के पर्यटन एवं संस्कृति पर बने भारतीय रूसी कार्यकारी दल की 13वीं बैठक का प्रोतोकोल।	13.09.07		
91.	व्यापार, आर्थिक, वैज्ञानिक, प्रौद्योगिकी एवं सांस्कृतिक सहयोग पर भारत-रूसी अंतर-सरकारी आयोग के व्यापार, आर्थिक सहयोग पर रूसी-भारतीय कार्य दल के 13वें सत्र का प्रोतोकोल।	31.08.07		
92.	भारत गणतंत्र सरकार और रूसी गणतंत्र सरकार के मध्य संभावित मल्टी रोल फाइटर के विकास और निर्माण में सहयोग से संबद्ध करार	18.10.07		
93.	भारत गणतंत्र सरकार और रूसी गणतंत्र सरकार के मध्य रूसी ग्लोबल नेनीशेशन सैटेलाइट सिस्टम "ग्लोनास" रेडियो फ्रीक्वेंसी स्पैस्ट्रम के एक हिस्से में भारतीय दल के प्रवेश के संबंध में करार।	25.01.07		
94.	भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन संघीय अंतरिक्ष एजेंसी के मध्य संयुक्त उपग्रह परियोजना "यूथसेट" में सहयोग से संबद्ध करार।	25.01.07		25.01.07

परिशिष्ट **XI**

क्र. सं.	अभिसमय/संधि/करार का शीर्षक	हस्ताक्षर की तारीख	अनुसमर्थन/ अधिमिलन/ स्वीकार्यता संबंधी दस्तावेज जमा करने की तारीख	लागू होने की तारीख
95.	भारत गणराज्य की सरकार और रूसी संघीय सरकार के मध्य रूसी ग्लोबल नेवीगेशन सैटलाइट सिस्टम ग्लोनॉस के नेवीगेशन सिग्नल पर शांतिपूर्ण प्रयोजनों के लिए भारतीय दल की पहुंच से संबद्ध करार।	25.01.07		
96.	भारत गणतंत्र और रूसी गणतंत्र के मध्य काल और वाहनों के आने-जाने को लेकर सूचना के विनिमय के संबध में केंद्रीय उत्पाद एवं सीमा-शुल्क बोर्ड, राजस्व विभाग, वित्त मंत्रालय (भारत गणतंत्र) और संघीय सीमा-शुल्क सेवा (रूसी संघ) के मध्य प्रोतोकोल।	25.01.07		25.01.07
97.	रूसी संध के राट्रपति एच.ई. श्री ब्लादिमीर वी. पुतिन के भारत गणतंत्र के सरकारी दौरे के परिणाम पर संयुक्त वक्तव्य।	25.01.07		25.01.07
98.	परमाणु ऊर्जा विभाग, भारत गणतंत्र सरकार और संघीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी, रूसी संघ के मध्य कुंडाकुलम स्थित अतिरिक्त परमाणु विद्युत संयंत्र इकाइयों के निर्माण एवं साथ ही भारत गणतंत्र में नए कार्य-स्थलों पर रूसी डिजाइन के परमाणु ऊर्जा संयंत्रों के निर्माण में साभिप्राय ज्ञापन।	25.01.07		25.01.07
99.	भारत गणतंत्र सरकार और रूसी संघ सरकार के मध्य संभावित मल्टी रोल वाले फाइटर के विकास और निर्माण में सहयोग का करार।	18.10.7		
100.	भारत गणतंत्र सरकार और रूसी संघ सरकार के मध्य स्वापक, साइकोट्रॉपिक मादक द्रव्यों और उनके प्रीकर्सर्स से निपटने के सहयोग से संबद्ध करार।	12.11.07		12.11.07
101.	भारत गणराज्य की सरकार और रूसी परिसंघ के मध्य मल्टी रोल ट्रांसपोर्ट एयरक्राफ्ट के विकास और निर्माण में सहयोग से संबद्ध करार।	12.11.07		12.11.07
102.	विनिमय पत्र (भारत में रूसी निवेश के लिए रुपए ऋण निधियों का उपयोग)	12.11.07		12.11.07
103.	भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन और संघीय अंतरिक्ष एजेंसी के मध्य संयुक्त चांद अन्वेषण के क्षेत्र में सहयोग पर करार।	12.11.07		12.11.07

परिशिष्ट **XI**

क्र. सं.	अभिसमय/संधि/करार का शीर्षक	हस्ताक्षर की तारीख	अनुसमर्थन/ अधिमिलन/ स्वीकार्यता संबंधी दस्तावेज जमा करने की तारीख	लागू होने की तारीख
104.	**सिंगापुर** भारत गणतंत्र सरकार और सिंगापुर गणतंत्र सरकार के मध्य द्विपक्षीय सहयोग के लिए संयुक्त मंत्रीस्तरीय समिति की स्थापना से संबद्ध करार।	19.06.07		19.06.07
105.	**स्पेन** भारत गणतंत्र के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय और शिक्षा एवं विज्ञान मंत्रालय और उद्योग, पर्यटन एवं व्यापार मंत्रालय के मध्य विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सहयोग का समझौता ज्ञापन।	12.06.07		12.06.07
106.	**सर्बिया** भारत और सर्बिया के मध्य राजनयिक और सरकारी पासपोर्ट धारकों के लिए वीजा छूट से संबद्ध करार।	17.09.07		
107.	भारत के विदेश सेवा संस्थान और सर्बिया की राजनयिक अकादमी के मध्य सहयोग का समझौता ज्ञापन।	17.09.07		17.09.07
108.	भारत गणतंत्र और सर्बिया गणतंत्र के मध्य निवेश के आपसी संवर्धन और संरक्षण से संबद्ध करार।	31.01.03	18.12.07	
109.	भारत गणतंत्र सरकार और सर्बिया गणतंत्र सरकार के मध्य व्यपार एवं आर्थिक सहयोग से संबद्ध करार।	07.02.06	18.12.07	
110.	भारत गणतंत्र सरकार और सर्बिया गणंत्रत सरकार के मध्य संस्कृति, शिक्षा और खेल के क्षेत्र में करार।	20.09.02	18.12.07	
111.	**स्लावेनिया** भारत गणतंत्र के सी.स.आई.आर और स्लोवेनिया के आई. सी. जी. ई. द्वारा ओर उनके मध्य समझौता ज्ञापन।	19.11.07		
112.	**ट्यूनीशिया** भारत गणतंत्र सरकार और ट्यूनीशिया गणतंत्र सरकार के मध्य (वर्ष 2007-2009 के लिए) सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम।	8.02.07		
113.	भारत गणतंत्र और ट्यूनीशिया गणतंत्र सरकार के मध्य लघु और मध्यम आकार के उपक्रमों के क्षेत्र में सहयोग से संबद्ध करार।	8.02.07		

क्र. सं.	अभिसमय/संधि/करार का शीर्षक	हस्ताक्षर की तारीख	अनुसमर्थन/ अधिमिलन/ स्वीकार्यता संबंधी दस्तावेज जमा करने की तारीख	लागू होने की तारीख
114.	भारत सरकार और ट्यूनीशिया गणतंत्र के मध्य एयर सर्विस से संबद्ध करार।	8.02.07		
115.	**थाईलैंड** भारत गणराज्य की सरकार और थाइलैंड राज्य सरकार के मध्य वर्ष 2007-2009 के लिए सांस्कृतिक विनिमय का कार्यकारी कार्यक्रम।	26.06.07		26.06.07
116.	नवीन और नवीकरण मंत्रालय, भारत सरकार और थाईलैंड राज्य सरकार के ऊर्जा मंत्रालय के मध्य नवीकरण ऊर्जा उपक्रम के क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने पर समझौता ज्ञापन	26.06.07		26.06.07
117.	**त्रिनीडाड और टोबागो** भारत गणतंत्र सरकार और त्रिनीडाड एवं टोबागो गणतंत्र सरकार के मध्य निवेश के संवर्धन और सुरक्षा के लिए करार।	12.03.07	20.04.07	
118.	**यू.ए.ई.** भारत-यू.ए.ई. आर्थिक एवं तकनीकी सहयोग के संयुक्त आयोग के नौवें सत्र के कार्यवृत्तों पर सहमति।	06.06.07		
119.	भारतीय मानक ब्यूरो और अमीरात प्राधिकरण के मध्य मानकीकरण और माप-पद्धति के लिए तकनीकी सहयोग का समझौता ज्ञापन।	26.03.07		
120.	भारत गणतंत्र सरकार और संयुक्त अरब अमीरात के मध्य औद्योगिक संबंधों के विकास के लिए रूपरेखा से संबद्ध करार।	26.03.07		26.03.07
121.	भारत गणतंत्र सरकार और संयुक्त अरब अमीरात के मध्य भारत में 29 अप्रैल, 1992 को कराधान के संबंध में हुए दोहरे कराधान और वित्तीय चोरी को रोकने के हुए करार को संशोधित करने का प्रोतोकोल।	26.03.07		
122.	भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) और अमीरात प्रतिभूति और पदार्थ प्राधिकरण (ईएससीए) के मध्य सूचना के आदान-प्रदान के लिए सहायता और आपसी सहयोग के संबंध में समझौता ज्ञापन।	26.03.07		26.03.07
123.	राष्ट्रीय परीश्रम एवं मूल्यांकन प्रत्यापन बोर्ड (एनएबीएल) और अमीरात मानकीकरण एवं माप-पद्धति प्राधिकरण (ईएसएमए) के मध्य प्रत्यायन कार्यकलापों में तकनीकी सहयोग का समझौता ज्ञापन।	26.03.07		26.03.07

परिशिष्ट **XI**

क्र. सं.	अभिसमय/संधि/करार का शीर्षक	हस्ताक्षर की तारीख	अनुसमर्थन/ अधिमिलन/ स्वीकार्यता संबंधी दस्तावेज जमा करने की तारीख	लागू होने की तारीख
124.	**यूगांडा** भारत गणतंत्र सरकार और उगांडा गणतंत्र के मध्य कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों में सहयोग पर समझौता ज्ञापन	30.05.07		30.05.07
125.	विदेश मंत्रालय, भारत सरकार और होल-इन-द-वाल एजुकेशन लि. (एचआईडब्ल्यूईएल) के मध्य यूगांडा में होल-इन-द-वाल मार्गदर्शी परियोजना की स्थापना से संबद्ध करार।	21.05.07		
126.	**संयुक्त राज्य अमरीका** शहरी विकास मंत्रालय, भारत गणतंत्र सरकार और संयुक्त राज्य अमरीका के परिवहन विभाग के मध्य सार्वजनिक यातायात विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी पर सहयोग का ज्ञापन।	19.09.07		
127.	**वियतनाम** भारत और वियतनाम के मध्य सामरिक साझेदारी पर संयुक्त घोषणा।	6.07.07		6.07.07
128.	भारत गणतंत्र और समाजवादी गणतंत्र वियतनाम सरकार के मध्य शिक्षा के क्षेत्र में विनिमय कार्यक्रम।	6.07.07		6.07.07
129.	भारत गणतंत्र सरकार और सोशलिस्ट गणतंत्र वियतनाम के मध्य अपने-अपने राजनयिक मिशनों के लिए संपत्तियों और भूमि के विनिमय पर समझौता ज्ञापन।	6.07.07		
130.	भारत गणतंत्र के कृषि मंत्रालय और सोशलिस्ट गणतंत्र वियतनाम के मात्सियिकी मंत्रालय के मध्य मात्सियिकी और के क्षेत्र में द्विपक्षीय सहयोग पर समझौता ज्ञापन।	6.07.07		6.07.07
131.	भारत गणतंत्र सरकार और सोशलिस्ट गणतंत्र वियतनाम के मध्य दनांग शहर-वियतनाम में अंग्रेजी भाषा प्रशिक्षण केंद्र की स्थापना के लिए समझौता ज्ञापन।	6.07.07		
132.	भारत गणतंत्र सरकार और सोशलिस्ट गणतंत्र वियतनाम के मध्य वर्ष 2007-2010 के लिए सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम।	6.07.07		6.07.07
133.	भारत गणतंत्र सरकार के परमाणु ऊर्जा विभाग (डीएई) और सोशलिस्ट गणतंत्र वियतनाम सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय (एमओएसटी) के मध्य समझौता ज्ञापन।	6.07.07		6.07.07

परिशिष्ट **XI**

क्र. सं.	अभिसमय/संधि/करार का शीर्षक	हस्ताक्षर की तारीख	अनुसमर्थन/ अधिमिलन/ स्वीकार्यता संबंधी दस्तावेज जमा करने की तारीख	लागू होने की तारीख
134.	27 फरवरी, 2007 को नई दिल्ली में आयोजित व्यापार, आर्थिक, वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकीय सहयोग पर भारत-वियतनाम संयुक्त आयोग की 13वीं बैठक के कार्यवृत्तों पर सहमति।	27.02.07		
135.	भारत-वियतनाम समझौता ज्ञापन के अंतर्गत कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा के लिए वर्ष 2007-2009 की कार्य-योजना।	6.07.07		6.07.07
136.	भारत गणराज्य और सोशलिस्ट रिपब्लिक ऑफ वियतनाम के मध्य आपराधिक मामलों में परस्पर विधिक सहायता पर संधि।	8.10.07	19.10.07	
137.	**यमन** 10-11 अप्रैल, 2007 को नई दिल्ली, भारत गणराज्य में आयोजित आर्थिक, वैज्ञानिक और तकनीकी सहयोग की भारत-यमन संयुक्त समिति के छठे सत्र के कार्यवृत्तों पर सहमति।	11.04.07		
138.	यमन गणराज्य के तेल और खनिज मंत्रालय और भारत गणराज्य के पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय के मध्य तेल एवं गैस उद्योग के क्षेत्र में द्विपक्षीय सहयोग का प्रोतोकोल।	3.02.07		

परिशिष्ट **XII**

1 जनवरी से दिसम्बर, 2007 तक की अवधि के दौरान जारी किए गए पूर्ण अधिकार के दस्तावेज

क्रम सं	अभिसमय/संधि	पूर्ण अधिकार की तिथि
1	राज्यों और उनकी सम्पत्ति के कार्यक्षेत्राधिकार उन्मुक्तियों से संबंधित अभिसमय पर हस्ताक्षर करने के लिए संयुक्त राष्ट्र में भारत की स्थायी प्रतिनिधि श्री निरुपम सेन के पक्ष में ।	08-01-07
2	आर डी-33 इंजीन एसईआर 3, इसके समूह, केएसए-2 विमान गियर बॉक्स और जीटीडीई -117 गैस टरबाईन इंजीन-पावर यूनिट (टरबाईन स्टार्टर) तथा उनके उत्पादन के संगठन में तकनीकी सहायता संबंधी उत्पादन के लिए लाइसेंसों और तकनीकी दस्तावेजों के भारत गणराज्य को स्थानांतरण संबंधी रुसी परिसंघ सरकार की और भारत गणराज्य की सरकार के बीच करार पर हस्ताक्षर करने के लिए श्री के. पी. सिंह, सचिव (रक्षा उत्पादन) के पक्ष में ।	23-01-07
3	प्रवर्त्तित गुमशुदगी से सभी व्यक्तियों के संरक्षण के लिए अन्तरराष्ट्रीय अभिसमय पर हस्ताक्षर करने के लिए फ्रांस, लंदन में भारत गणराज्य के अस्थायी प्रभारी राजदूत श्री के. वी. भागीरथ के पक्ष में ।	05-02-07
4	ट्रिपस करार को संशोधित करने वाला प्रोतोकोल ।	09-03-07
5	विकलांग व्यक्तियों के अधिकारों से सम्बंधित अभिसमय पर हस्ताक्षर करने के लिए भारत गणराज्य की सरकार के संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी प्रतिनिधि श्री निरुपम सेन के पक्ष में	29-03-07
6	कृषि और पशु संसाधनों के क्षेत्रों में सहयोग पर भारत गणराज्य की सरकार और स्वाण्डा गणराज्य के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने के लिए कृषि राज्यमंत्री श्री कांति लाल भूरिया के पक्ष में ।	16-04-07
7	कृषि और सम्बंद्ध क्षेत्रों में सहयोग पर भारत गणराज्य की सरकार और यूगाण्डा गणराज्य के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने के लिए कृषि राज्यमंत्री श्री कांति लाल भूरिया के पक्ष में ।	16-04-07
8	कृषि के क्षेत्र में सहयोग पर भारत गणराज्य के कृषि मंत्रालय और बेलारुस गणराज्य के कृषि एवं खाद्य मंत्रालय के बीच करार पर हस्ताक्षर करने के लिए कृषि राज्यमंत्री श्री कांति लाल भूरिया के पक्ष में ।	16-04-07
9	निवेशों के संवर्धन और संरक्षण पर भारत गणराज्य की सरकार और संयुक्त मेक्सिको राज्य की सरकार के बीच करार पर हस्ताक्षर करने के लिए वित्त मंत्री श्री पी. चिदम्बरम के पक्ष में ।	19-05-07
10	श्रवण-दृश्य सह-उत्पादनों पर भारत गणराज्य की सरकार और ब्राजील संघीय गणराज्य की सरकार के बीच करार पर हस्ताक्षर करने के लिए सूचना और प्रसारण मंत्री श्री पी. आर. दासमुंशी के पक्ष में ।	04-06-07
11	विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सहयोग करने के लिए भारत गणराज्य के विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय और स्पेन के शिक्षा और विज्ञान मंत्रालय तथा उद्योग, पर्यटन एवं व्यापार मंत्रालय के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री श्री कपिल सिब्बल के पक्ष में	07-06-07
12	ट्रांस-एशियन रेलवे नेटवर्क संबंधी अन्तरसरकारी करार पर हस्ताक्षर करने के लिए श्री जे. पी. बतरा, अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड के पक्ष में ।	18-06-07

क्रम सं	अभिसमय/संधि	पूर्ण अधिकार की तिथि
13	कृषि मंत्रालय, पशुपालन, डेयरी एवं मत्स्य पालन विभाग, भारत सरकार और आईसलैण्ड विदेश मंत्रालय के बीच सतत मत्स्य पालन विकास संबंधी समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने के लिए सुश्री चारूशीला सोहोनी, सचिव, पशुपालन, डेयरी एवं मत्स्य पालन विभाग के पक्ष में ।	18-06-07
14	निवेशों के संवर्धन और संरक्षण के लिए भारत गणराज्य की सरकार और आईसलैण्ड गणराज्य की सरकार के बीच करार पर हस्ताक्षर करने के लिए वित्त मंत्री श्री पी. चिदम्बरम के पक्ष में ।	25-06-07
15	श्रवण-दृश्य सह-उत्पादन पर भारत गणराज्य की सरकार और जर्मनी की संघीय गणराज्य की सरकार के बीच करार पर हस्ताक्षर करने के लिए सूचना और प्रसारण तथा संसदीय कार्य मंत्री श्री प्रियरंजन दासमुंशी के पक्ष में ।	19-07-07
16	निवेशों के संवर्धन और संरक्षण के लिए भारत गणराज्य की सरकार और सेनेगल गणराज्य की सरकार के बीच करार पर हस्ताक्षर करने के लिए सेनेगल में भारत के तत्कालीन राजदूत श्री बालाकृष्ण शेट्टी के पक्ष में ।	02-08-07
17	वर्ष उन्नीस सौ पच्चासी में अप्रैल के ग्यारहवे दिन हस्ताक्षरित जनशक्ति रोजगार के नियमन पर कतर राज्य और भारत गणराज्य के बीच करार के अतिरिक्त प्रोतोकोल पर हस्ताक्षर करने के लिए भारतीय प्रवासी मामले मंत्री श्री वयालार रवि के पक्ष में ।	24-08-07
18	नवीन और नवीकरणीय उर्जा मंत्रालय, भारत गणराज्य की सरकार और आईसलैंड गणराज्य के उद्योग एवं वाणिज्य मंत्रालय के बीच भारत-आईसलैण्ड नवीकरणीय उर्जा सहयोग संबंधी समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने के लिए श्री वी. सुब्रहमन्यम, सचिव, नवीन और नवीकरणीय उर्जा मंत्रालय के पक्ष में ।	03-09-07
19	भावी मल्टी-रोल फाईटर के विकास और उत्पादन में सहयोग संबंधी भारत गणराज्य की सरकार और रुसी संघ की सरकार के बीच करार पर हस्ताक्षर करने के लिए श्री के. पी. सिंह, सचिव (रक्षा उत्पादन) के पक्ष में ।	25-10-07
20	विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सहयोग संबंधी भारत गणराज्य की सरकार और मालदीव गणराज्य की सरकार के बीच करार पर हस्ताक्षर करने के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी एवं पृथ्वी विज्ञान मंत्री श्री कपिल सिब्बल के पक्ष में ।	25-10-07
21	भारत गणराज्य के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय और मॉरीशस गणराज्य के सामाजिक सुरक्षा, राष्ट्रीय एकता और वरिष्ठ नागरिक कल्याण एवं सुधार संस्था मंत्रालय के बीच वयोवृद्धों के कल्याण, औषधि मांग में कटौती कार्यक्रम, विकलांगता, और सामाजिक रक्षा के समान्य क्षेत्र में अन्य क्षेत्रों सहित सामाजिक रक्षा के क्षेत्र में समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने के लिए माननीया सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री श्रीमती मीरा कुमार के पक्ष में ।	30-10-07
22	राजनयिक पासपोर्ट धारकों के लिए वीजाओं की पारस्परिक समाप्ति से संबंधित भारत गणराज्य की सरकार और तुर्की गणराज्य की सरकार के बीच करार पर हस्ताक्षर करने के लिए श्री नलिन सूरी, सचिव (पश्चिम), विदेश मंत्रालय के पक्ष में ।	15-11-07
23	आयकर पर करों से संबंधित दोहरे कराधान से बचने एवं राजकोषीय अपवंचन की रोकथाम के लिए भारत गणराज्य की सरकार और आईसलैण्ड गणराज्य की सरकार के बीच करार और प्रोतोकोल पर हस्ताक्षर करने के लिए वित्त मंत्री श्री पी. चिदम्बरम के पक्ष में ।	21-11-07
24	विज्ञान और प्रौद्योगिकी सहयोग पर भारत गणराज्य की सरकार और आस्ट्रिया गणराज्य के सरकार के बीच करार पर हस्ताक्षर करने के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी एवं पृथ्वी विज्ञान मंत्री श्री कपिल सिब्बल के पक्ष में ।	23-11-07

क्रम सं	अभिसमय/संधि	पूर्ण अधिकार की तिथि
25	विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवीन आविष्कार के क्षेत्रों में सहयोग संबंधी भारत गणराज्य के विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय और नीदरलैण्ड के आर्थिक कार्य मंत्रालय के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी एवं पृथ्वी विज्ञान मंत्री श्री कपिल सिब्बल के पक्ष में ।	23-11-07
26	रुस में उत्पन्न सू-30-एम के-टाइप विमान के संबंध में सू-30 एम के एयरफ्रेम और उसके संस्थापन के लिए एमपेनेज समूहों के उत्पादन में रुस-भारत सहयोग संबधी रुसी परिसंघ की सरकार और भारत गणराज्य की सरकार के बीच करार पर हस्ताक्षर करने के लिए रुसी परिसंघ में भारत के राजदूत श्री पी. पी. शुक्ला के पक्ष में ।	29-11-07
27	भारत गणराज्य की सरकार और यूरोपीय समुदाय के बीच वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकी सहयोग हेतु करार पर हस्ताक्षर करने के लिए वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान मंत्री श्री कपिल सिब्बल के पक्ष में ।	29-11-07
28	यान्गून में सूचना प्रौद्योगिकी कौशल को बढ़ाने के लिए भारत-म्यांमार केन्द्र (आई एम सी ई आई टी एस) स्थापित करने हेतु भारत गणराज्य की सरकार और म्यांमार की संघ सरकार के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने के लिए विदेश सचिव, श्री शिवशंकर मेनन के पक्ष में ।	10-12-07
29	अन्तरराष्ट्रीय ट्रॉपिकल टिम्बर एग्रीमेंट, 2006 पर हस्ताक्षर करने के लिए संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी प्रतिनिधि श्री निरुपम सेन के पक्ष में ।	20-12-07

परिशिष्ट **XIII**

1 जनवरी से दिसम्बर, 2007 तक की अवधि के दौरान जारी अनुसमर्थन/अधिमिलन दस्तावेज

क्र.सं.	अनुसमर्थन/अधिमिलन दस्तावेज	अनुसमर्थन जारी करने की तारीख
1	सिविल अथवा वाणिज्यक मामलों में विदेश में साक्ष्य लेनें संबंधी अभिसमय ।	10-01-2007
2	भारत गणराज्य और वेनेजुएला के बोलिवियाई गणराज्य के बीच हाइड्रोकार्बन क्षेत्र में सहयोग संबंधी करार ।	09-02-2007
3	आई टी ई आर परियोजना के संयुक्त कार्यान्वयन के लिए आई टी ई आर अंतर्राष्ट्रीय फ्यूजन ऊर्जा संगठन की स्थापना संबंधी करार ।	19-02-2007
4	आई टी ई आर परियोजना के संयुक्त कार्यान्वयन के लिए आई टी ई आर अंतर्राष्ट्रीय फ्यूजन ऊर्जा संगठन के विशेषाधिकार और उन्मुक्तियों संबंधी करार ।	19-02-2007
5	भारत भूटान मैत्री संधि ।	19-02-2007
6	भारत गणराज्य की सरकार और फिलिपिन्स गणराज्य की सरकार के बीच पर्यटन के क्षेत्र में सहयोग संबंधी करार ।	21-03-2007
7	भारत गणराज्य की सरकार और हैशेमाइट जार्डन अधिराज्य के बीच निवेश के संर्वद्धन और संरक्षण संबंधी करार ।	26-03-2007
8	सार्क खाद्य बैंक की स्थापना संबंधी करार ।	17-04-2007
9	दक्षिण एशियाई विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए करार ।	17-04-2007
10	अंतर्राष्ट्रीय लोकतंत्र तथा निर्वाचक सहायता संविधि संस्थान ।	19-04-2007
11	भारत गणराज्य की सरकार और चीन के लोक गणराज्य की सरकार के बीच निवेशों के संवर्द्धन और संरक्षण के लिए करार ।	20-04-2007
12	भारत गणराज्य की सरकार और त्रिनिडाड व टोबैगो गणराज्य की सरकार क बीच निवेशों के संबर्द्धन और संरक्षण के लिए करार ।	20-04-2007
13	भारत गणराज्य की सरकार, ब्राजील के संघीय गणराज्य और दक्षिण अफ्रीका गणराज्य के बीच भारत-ब्राजील-दक्षिण अफ्रीका(आई बी एस ए) वार्ता मंच पहल के अंतर्गत कृषि और संबंद्ध क्षेत्रों में त्रिपक्षीय सहयोग संबंधी समझौता ज्ञापन ।	10-05-2007
14	भारत गणराज्य की सरकार और संयुक्त मैक्सिकन राज्य की सरकार के बीच निवेशों के संवर्द्धन और संरक्षण संबंधी करार ।	
	02-07-2007	
15	भारत गणराज्य की सरकार और हेलेनिक गणराज्य की सरकार के बीच वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी सहयोग संबंधी करार ।	18-07-2007
16	भारत गणराज्य और बेलारुस गणराज्य के बीच प्रत्यर्पण संधि ।	02-08-2007
17	भारत गणराज्य और ब्राजील के संघीय गणराज्य के बीच वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी सहयोग संबंधी करार ।	07-08-2007
18	ट्रांस-एशियाई रेलवे तंत्र संबंधी अंतर-सरकारी करार ।	07-08-2007
19	परमाणु सामग्री की भौतिक सुरक्षा संबंधी अभिसमय का संशोधन ।	09-08-2007

परिशिष्ट **XIII**

क्र.सं.	अनुसमर्थन/अधिमिलन दस्तावेज	अनुसमर्थन जारी करने की तारीख
20	व्यापार, अर्थव्यवस्था, वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकीय सहयोग संबंधी अंतरसरकारी आयोग पर भारत गणराज्य की सरकार और अजरबैजान गणराज्य की सरकार के बीच करार ।	16-08-2007
21	भारत गणराज्य और मॉरिशस गणराज्य के बीच प्रत्यर्पण संधि ।	21-08-2007
22	भारत गणराज्य की सरकार और हेलेनिक गणराज्य की सरकार के बीच निवेशों के संवर्द्धन और पारस्परिक संरक्षण संबंधी करार ।	21-08-2007
23	भारत गणराज्य और इथियोपिया के संघीय लोकतांत्रिक गणराज्य के बीच निवेशों के पारस्परिक संबर्द्धन और संरक्षण संबंधी करार ।	03-09-2007
24	खेलों में नशीली दवाओं के विरुद्ध अंतरर्राष्ट्रीय अभिसमय	10-09-2007
25	भारत गणराज्य और बुल्गारिया गणराज्य के बीच आपराधिक मामलों मे पारस्परिक कानूनी सहायता संबंधी करार ।	24-09-2007
26	विकलांग व्यक्तियों के अधिकारों संबंधी अभिसमय ।	24-09-2007
27	भारत गणराज्य की सरकार और संयुक्त मैक्सिकन राज्य की सरकार के बीच आपराधिक मामलों मे पारस्परिक कानूनी सहायता संबंधी संधि।	28-09-2007
28	भारत गणराज्य की सरकार और आइसलैंड गणराज्य की सरकार के बीच निवेशों के संवर्द्धन और संरक्षण संबंधी करार ।	19-10-2007
29	भारत गणराज्य की सरकार और वियतनाम सरकार के बीच आपराधिक मामलों में पारस्परिक कानूनी सहायता संबंधी संधि ।	19-10-2007
30	भारत गणराज्य और पुर्तगाल गणराज्य के बीच प्रत्यर्पण संबंधी करार ।	25-10-2007
31	भारत गणराज्य और ग्रेट सोशलिस्ट पीपुल्स लिबियन अरब जमाहिरिया के बीच निवेशों के संवर्द्धन और संरक्षण संबंधी करार ।	08-11-2007
32	भारत गणराज्य की सरकार और बुल्गारिया गणराज्य की सरकार के बीच वर्ष उन्नीस सौ अठठानवे के अक्तूबर माह के छब्बीसवें दिन नई दिल्ली में सम्पन्न निवेश के संवर्द्धन और संरक्षण संबंधी भारत गणराज्य की सरकार और बुलगारिया गणराज्य की सरकार के बीच करार में संशोधन करने संबंधी प्रोतोकोल ।	08-11-2007
33	भारत गणराज्य की सरकार और इटली गणराज्य की सरकार के बीच श्रव्य-दृश्य सह-निर्माण करार ।	20-11-2007
34	भारत गणराज्य की सरकार और सउदी अरब अधिराज्य की सरकार के बीच निवेशों को प्रोत्साहित करने और पारस्परिक संरक्षण संबंधी करार ।	21-11-2007
35	भारत गणराज्य की सरकार और संयुक्त मैक्सिकन राज्य की सरकार के बीच प्रत्यर्पण संधि ।	21-11-2007
36	भारत गणराज्य की सरकार और सर्बिया गणराज्य की सरकार के बीच निवेशों के पारस्परिक संवर्द्धन और संरक्षण के लिए करार ।	18-12-2007
37	भारत गणराज्य की सरकार और सर्बिया गणराज्य की सरकार के बीच व्यापार और आर्थिक सहयोग संबंधी करार ।	18-12-2007

परिशिष्ट **XIII**

क्र.सं.	अनुसमर्थन/अधिमिलन दस्तावेज	अनुसमर्थन जारी करने की तारीख
38	भारत गणराज्य की सरकार और सर्बिया गणराज्य की सरकार के बीच संस्कृति, शिक्षा और खेल के क्षेत्र में सहयोग संबंधी करार ।	18-12-2007

परिशिष्ट **XIV**

जनवरी, 2008 तक नीति नियोजन तथा अनुसंधान प्रभाग द्वारा आंशिक अथवा पूर्ण रु प से वित्त पोषित की गई संस्थाओं /गैर सरकारी संगठनों द्वारा संचालित/आयोजित सम्मेलन/संगोष्ठियां/अध्ययन परियोजनाएं

क्र.सं.	कार्यक्रम	संस्थान/लाभाथा
1	05-06 मार्च 2007 को गंगटोक में "भारत-चीन सीमा व्यापार-सीमा विकास के लिए कार्यनीति" पर सगोष्ठी	भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (आई सी एस एस आर) उत्तर पूर्वी क्षेत्रीय केंद्र, शिलांग (मेघालय)
2	29 -31 मार्च 2007 तक विशाखापटनम में "एक नए दक्षिण एशिया की कल्पना" पर अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी	सार्क अध्ययन केन्द्र, आन्ध्र विश्वविद्यालय, विशाखापटनम (आन्ध्र प्रदेश)
3	प्रोफेसर महेन्द्र पी लामा द्वारा "भारत की नेपाल नीति के नए आयाम : चुनौतियां, विकल्प एवं आगामी मार्ग" पर अध्ययन	लोक कार्य केन्द्र (सी पी ए) , नोयडा (उ.प्र.)
4	निम्नलिखित पर अनुसंधान परियोजनाएं : 1. भारत-म्यांमार भौगोलिक -राजनीतिक तथा सुरक्षा संबंध : -व्यापार एवं आर्थिक संबंधों को सुधारने के उपाय । 2. भारतवर्ष की "पूर्व की तरफ से देखो" की नीति में अड़चनें: सुझाए गए उपाय । 3. नई विश्व व्यवस्था में भारत-रूस सामरिक संबंध : अवसर/चुनौतियाँ । 4 भारतीय महासागर क्षेत्र में नई वास्तविकताएं : भारतवर्ष उनसे कैसे लाभांवित हो सकता है ?	एशिया केन्द्र, बंगलौर
5	"राष्ट्रीय हित परियोजना" पर अध्ययन ।	अंतरराष्ट्रीय आर्थिक संबंधो पर भारतीय अनुसंधान परिषद (आई सी आर आई ई आर), नई दिल्ली ।
6	विदेश मंत्रालय द्वारा गठित निःशस्त्रीकरण व परमाणु अप्रसार संबंधी कार्यबल जिसमें डा. के सुब्रमनियम, अरूधंति घोष, श्याम शरण और अन्य शामिल हैं, द्वारा अध्ययन ।	विदेश मंत्रालय
7	भारत के अन्नत अध्ययन के लिए केन्द्र (सी ए एस आई) को वित्तीय सहायता ।	पेनसिल्वेनिया विश्वविद्यालय (यू.एस. ए)
8	अक्तूबर 2007 में सिओल (कोरिया) में 7 वीं भारत-कोरिया वार्ता ।	अंतरराष्ट्रीय आर्थिक संबंधो पर भारतीय अनुसंधान परिषद (आई सी आर आई ई आर), नई दिल्ली ।
9	23-25 नवंबर, 2007 तक नई दिल्ली में "एशियाई राजनीतिक एवं अंतरराष्ट्रीय अध्ययन संघ की तृतीय अंतरराष्ट्रीय कांग्रेस" ।	विकासशील देश अनुसंधान केन्द्र (डी सी आर सी), दिल्ली विश्वविद्यालय ।
10	"भारत एवं खाड़ी" पर संगोष्ठी ।	भारतीय राजनयिक संघ (ए आई डी), नई दिल्ली ।
11	"विदेशी मामलों की पत्रिका" का प्रकाशन ।	भारतीय राजनयिक संघ (ए आई डी), नई दिल्ली ।
12	"समकालीन म्यांमार: अलगाव से सक्रिय संलग्नता" संबंधी डॉ के. यौमे की अनुसंधान परियोजना ।	प्रेक्षक अनुसंधान प्रतिष्ठान (ओ आर एफ), नई दिल्ली ।
13	ढाका में क्षेत्रीय आर्थिक सहयोग - बांग्लादेश, चीन, भारतवर्ष तथा म्यांमार (बी सी आई एम) पर सातवाँ अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन ।	चीनी अध्ययन संस्थान (आई सी एस), नई दिल्ली ।

परिशिष्ट **XIV**

क्र.सं.	कार्यक्रम	संस्थान/लाभाथा
14	08-09 दिसंबंर, 2007 को "पर्यावरणीय कानून के अंतरराष्ट्रीय आयाम" पर 5 वाँ सम्मेलन ।	भारतीय अंतरराष्ट्रीय कानून सोसाइटी (आई सी आई एल)
15	10-12 दिसंबंर, 2007 को "प्रजातंत्र, राष्ट्रीय निर्माण एवं दक्षिण एशिया में शांति : चुनौतियां एवं संभावनाएं" विषय पर अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी ।	समकालीन अध्ययन संबंधी राजीव गाँधी पीठ, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद ।
16	11-12 दिसंबंर, 2007 को आयोजित द्वितीय सततता शिखर सम्मेलन : एशिया ।	भारतीय उद्योग परिसंघ (सी आई आई एल), नई दिल्ली
17	"दक्षिण एवं दक्षिण पूर्व एशिया में बुनियादी संकट-बांग्लादेश, इंडोनेशिया, एवं मलेशिया का एक अध्ययन" -पर डॉ अबू नसर सईद अहमद द्वारा अनुसंधान अध्ययन ।	ओमियो कुमार दास सामाजिक परिवर्तन एवं विकास संस्थान (ओ के डी आई एस सी डी) , गुवाहाटी
18	प्रोफेसर के वारिको, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली की "केन्द्रीय एशिया -चीन संबंध, 1991-2006" पर अनुसंधान परियोजना	दक्षिण, केन्द्रीय एवं दक्षिण पूर्व एशिययाई अध्ययन केन्द्र (सी एस सी एस ई ए एस) , जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली ।
19	03-05 जनवरी, 2008 को "भारत एवं दक्षिण-एशिया : 21 वीं शताब्दी में सामरिक समरूपण" पर अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी ।	सार्क अध्ययन केन्द्र (सी एस एस) आंध्रा विश्वविद्यालय, विशाखापतनम (आंध्र प्रदेश)
20	11-12 जनवरी, 2008 को "क्षेत्रीय एकीकरण की रूपरेखा पर सम्मलेन" ।	एसोसिएशन ऑफ एशिया स्कालर (ए ए एस), नई दिल्ली
21	"अफगानिस्तान" पर अंतरर्राष्ट्रीय सम्मलेन -फरवरी 2008।	सेन्टर फॉर साऊथ , सेन्ट्रल साऊथ ईस्ट एशिया एन्ड साउथवेस्ट पैसिफिक स्टडीज, स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज, नई दिल्ली ।
22	"पाकिस्तान में राज्य एवं समाज" तथा "भारत-पाकिस्तान संबंधों" पर संगोष्ठी ।	इंडिया-पाकिस्तान मैत्री सोसाइटी (आई पी एफ एस), नई दिल्ली ।
23	इस्लामाबाद में पाकिस्तान के साथ ट्रैक-2 वार्ता के 28 वें दौर की बातचीत ।	इंडिया-पाकिस्तान मैत्री नीमराना पहल (आई पी एन आई), नई दिल्ली ।
24	"केन्द्रीय एशिया में सहयोग विकास एवं शांति : भारतीय परिदृश्य" पर संगोष्ठी	ग्रामीण एवं औद्योगिंक विकास अनुसंधान केन्द्र (सी आर आर आई डी) , चंडीगढ़
25	"भारत को लिए वैकल्पिक पाठयक्रम का विश्लेषणः क्योतो समझौते के बाद" पर अध्ययन परियोजना	विकास के लिए एकीकृत अनुसंधान एवं कार्रवाई (आई आर एडी), नई दिल्ली ।

परिशिष्ट **XV**

आई टी ई सी/एस सी ए ए पी भागीदार देशों की सूची

क्र.सं.	देश	क्र.सं.	देश
1	अफगानिस्तान	39	क्यूबा
2	अलबानिया	40	चेक गणराज्य
3	अलजीरिया	41	कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य
4	अंगोला	42	दीजीबोती
5	अंग्यूला	43	डोमिनिकन गणराज्य
6	एंटिगुआ और बारबुडा	44	पूर्व तिमोर
7	अर्जेंटीना	45	इक्वाडोर
8	आर्मेनिया	46	मिश्र
9	अजरबैजान	47	एल-सल्वाडोर
10	बहामास	48	भूमध्यवर्ती गिनी
11	बहरीन	49	इरिट्रिया
12	बांग्लादेश	50	इस्टोनिया
13	बारबाडोस	51	इथिओपिया
14	बेलारुस	52	फिजी
15	बेलीज	53	गैबोन
16	बेनिन	54	गाम्बिया
17	भूटान	55	जॉर्जिया
18	बोलिविया	56	घाना
19	बोस्निया-हर्जेगोविना	57	ग्रेनेडा
20	बोत्सवाना	58	ग्वाटेमाला
21	ब्राजील	59	गिनी
22	ब्रुनई दारूसलम	60	गिनी बिस्साउ
23	बुलगारिया	61	गुयाना
24	बुरकिना फासो	62	हैती
25	बुरुंडी	63	होंडुरास
26	कम्बोडिया	64	हंगरी
27	कैमेरुन	65	इंडोनेशिया
28	केप वरडे द्वीप	66	ईरान
29	कैमेन द्वीप	67	ईराक
30	मध्य अफ्रीकी गणराज्य	68	आइवरी कोस्ट
31	चाड	69	जमैका
32	चिली	70	जॉर्डन
33	कोलम्बिया	71	कजाखस्तान
34	डोमिनिका राष्ट्रमण्डल	72	केन्या
35	कॉमोरोस	73	किरीबाती
36	कांगो	74	कोरिया (डी पी आर के)
37	कोस्टा रिका	75	किर्गिस्तान
38	क्रोसिया	76	लॉओस

परिशिष्ट **XV**

क्र.सं.	देश	क्र.सं.	देश
77	लातविया	117	रोमानिया
78	लेबनान	118	रुस
79	लेसेथो	119	रवान्डा
80	लाईबेरिया	120	समोआ
81	लिबिया	121	सेनेगल
82	लिथुआनिया	122	सेशल्स
83	मैसिडोनिया	123	सिगापुर
84	मैडागास्कर	124	सियरा लियोन
85	मलेशिया	125	स्लोवाक गणराज्य
86	मलावी	126	सोलोमान द्वीप
87	मालदीव	127	दक्षिण अफ्रीका
88	माली	128	श्रीलंका
89	मार्शल द्वीप	129	सेंट किटस तथा नेविस
90	मॉरीशस	130	सेंट लुसिया
91	मॉरीतानिया	131	सेंट विंसेंट तथा ग्रेनाडाइन्स
92	मैक्सिको	132	सूडान
93	माइक्रोनेशिया	133	सूरीनाम
94	मोलडोवा	134	सिरिया
95	मंगोलिया	135	स्वाजीलैंड
96	मांटसेराट	136	तंजानिया
97	मोरक्को	137	ताजिकिस्तान
98	मोजाम्बिक	138	थाइलैंड
99	म्यानमार	139	टोगो
100	नामिबिया	140	टोंगा
101	नारु	141	ट्रिनिडाड एवं टोबैगो
102	नेपाल	142	टयूनीसिया
103	निकारागुआ	143	तुर्की
104	नाइजर	144	तुर्कमेनिस्तान
105	नाइजेरिया	145	तुर्क एवं कैकोस द्वीप
106	ओमान	146	तुवालु
107	पलावु	147	यूगांडा
108	फिलीस्तीन	148	यूक्रेन
109	पनामा	149	उरुग्वे
110	पापुआ न्यू गिनी	150	उज्बेकिस्तान
111	परागुवे	151	वानुआतू
112	पेरु	152	वेनेजुएला
113	फिलीपीन्स	153	वियतनाम
114	पोलैंड	154	यमन
115	कतर	155	जाम्बिया
116	साओ तोमे गणराज्य	156	जिम्बाब्वे

परिशिष्ट **XVI**

आई सी डब्ल्यू ए द्वारा आयोजित सेमिनार/सम्मेलन/व्याख्यान/बैठक

क्रम सं	दिनांक	कार्यक्रम
1	2 अप्रैल 2007	एशिया में रुस की सामरिक भागीदारी विषय पर मॉस्को के इंस्टीटयूट ऑफ फार इस्टर्न स्टडीज, रशियन अकेडमी ऑफ सांइसेस के निदेशक मिखाइल तितारेन्को द्वारा व्याख्यान (इंस्टीटयूट ऑफ चाइनीज स्टडीज (आई सी एस) के सहयोग से) ।
2	09-10 अप्रैल 2007	मलेशिया के विदेश मंत्री सईद हमीद अल्वर द्वारा 10 अप्रैल 2007 को लंचीयन मुख्य संबोधन सहित भारत-मलेशिया सामरिक भागीदारी वार्ता जिसकी अध्यक्षता विदेश राज्य मंत्री आनन्द शर्मा ने की ।
3	15-17 अप्रैल 2007	वेलिंगटन, न्यूजीलैंड में ओयोजित महासागर संबंधी सी एस सी ए पी अध्ययन दल की पहली बैठक जिसमें डॉ. संजय चतुर्वेदी ने भाग लिया ।
4	19 अप्रैल 2007	डॉ फ्रेडरिक गरारे, निदेशक, कारनेगी इन्डाउमेन्ट फार इन्टरनेशनल पीस, वाशिंगटन डी सी द्वारा अफगानिस्तान में हाल के घटनाक्रमों और अफगानिस्तान-पाकिस्तान संबंध : क्षेत्र के लिए जटिलताएं विषय पर वार्ता ।
5	20-21 अप्रैल 2007	भारत-नेपाल संबंध : भविष्य की ओर दृष्टि -नेपाली प्रतिनिधिमंडल का दौरा विषय पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन । एम. के. रसगोत्रा द्वारा उदघाटन भाषण (अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद के सहयोग से) ।
6	23-24 अप्रैल 2007	सिंगापुर में आयोजित ऊर्जा सुरक्षा के लिए एशिया प्रशान्त सहयोग संबंधी सी एस सी ए पी के अध्ययन दल की प्रथम बैठक जिसमें तल्मीज अहमद और डॉ बी. मोहन्ती ने भाग लिया।
7	1 मई 2007	खाड़ी अध्ययन कार्यक्रम, जवाहरलाल नेहरु विश्विद्यालय के सहयोग से इशरत अजीज द्वारा समकालीन सउदी अरब और उभरते हुए भारत -सउदी संबंध नामक पुस्तक का विमोचन ।
8	01-02 जून 2007	सार्क : चौदहवां शिखर सम्मलेन और उससे आगे विषय पर क्षेत्रीय सम्मलेलन (कोनराड एडेनाउएर फाउंडेशन (के ए एफ) के सहयोग से) ।
9	03 जून 2007	क्वालालम्पुर, मलेशिया में आयोजित 27 वीं संचालन समिति की बैठक जिसमें के. के. एस. राणा और प्रो. राधा कुमार ने भाग लिया ।
10	04-08 जून 2007	क्वालालम्पुर, मलेशिया में आयोजित 21 वीं एशिया प्रशान्त गोल मेज बैठक जिसमें प्रो. राधा कुमार ने भाग लिया ।
11	12 जून 2007	क्षेत्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण में ताइवान की अर्थव्यवस्था की भूमिका विषय पर विदेश संबंधी मामलों पर चर्चा । शीर्ष वक्ता : ताइवान से मा. यिंग-जियो ।
12	18-20 जून 2007	भारत और वियतनाम के बीच पूर्ण राजनयिक संबंधों की स्थापना की 35 वीं वर्षगांठ मनाने के लिए स्मृति संगोष्ठी में श्री पी. के. कपूर, उप महानिदेशक, भारतीय विश्व कार्य परिषद की अध्यक्षता में भारतीय विश्व कार्य परिषद के प्रतिनिधिमंडल की हनोई यात्रा ।
13	22 जून 2007	फिलिस्तीन : 1967 ओर इसके बाद विषय पर संगोष्ठी (अरब राज्य मिशन लीग के सहयोग से) ।

परिशिष्ट **XVI**

क्रम सं	दिनांक	कार्यक्रम
14	07 जुलाई 2007	शिव शंकर मेनन, सचिव, विदेश मंत्रालय द्वारा एशियन डिप्लोमेसी : द फॉरेन मिनिस्ट्रीज ऑफ चायना, इंडिया, जापान, सिंगापुर तथा थाईलैंड (किशन एस. राणा द्वारा लिखित) तथा फॉरेन मिनिस्ट्रीज : मैनेजिंग डिप्लोमेटिक नेटवर्क एंड ऑप्टीमाइजिंग वैल्यू (किशन. एस. राणा और जोवन कुर्बालिजा, निदेशक डिप्लो फाउंडेशन द्वारा संपादित) : दो पुस्तकों का विमोचन ।
15	20जुलाई 2007	21 वीं सदी के भारत में राजनीति पर महेश रंगाराजन, अतिथि प्रोफेसर, इतिहास विभाग, जादवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता और योगेन्द्र यादव, लोकनीति के सह निदेशक और सीनियर फैलो, सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ डवलपिंग सोसाइटीज के नेतृत्व में वार्ता ।
16	23जुलाई 2007	भारत में जर्मन संघीय गणराज्य के राजदूत, बर्नड मुएत्जल्बर्ग द्वारा भारत तथा जर्मनी पार्टनर्स ऑफ चॉइस इन ग्लोबलाजिंग वर्ल्ड विषय पर व्याख्यान (भारत मे फेडरेशन ऑफ भारत -जर्मन सोसाइटीज के सहयोग से)
17	26जुलाई 2007	सतीश गुजराल द्वारा मुनिजा आगा फवद की पुस्तक गुलाम रसूल -एनदर माइग्रेशन का विमोचन और गुलाम रसूल द्वारा चित्र प्रदर्शनी ।
18	31जुलाई 2007	विदेश ओर सुरक्षा नीति मसले पर फेडरल पार्लियामेंट ऑफ जर्मनी के विदेश मामलों संबंधी स्थायी समिति के प्रतिनिधिमंडल के साथ बैठक ।
19	06-09 सितम्बर 2007	जर्काता, इंडोनेशिया में आयोजित मलक्का और सिंगापुर जलडमरुमध्य पर सी एस सी ए पी अध्ययन दल की दूसरी बैठक जिसमें कमाडोर उदय सी भास्कर (सेवानिवृत)ने भाग लिया ।
20	11 सितम्बर 2007	यूरोपीय संघ में बुल्गारिया : बुल्गारिया -भारत की भागीदारी को सुदृढ़ करना विषय पर बुल्गारिया गणराज्य के प्रधानमंत्री सर्गई स्टानिशेव द्वारा व्याख्यान ।
21	13-15 सितम्बर 2007	सी एस सी ए पी भारत द्वारा गोवा में आयोजित ऊर्जा सुरक्षा संबंधी अध्ययन दल की द्वितीय बैठक की मेजबानी ।
22	24 सितम्बर 2007	प्रधानमंत्री कार्यालय में विशेष दूत सतीन्दर. के. लाम्बा द्वारा राइजिंग इंडिया : फ्रैंडस एंड फोज : एस्सेज इन ऑनर ऑफ प्रोफेसर एम एल सोन्धी पुस्तक का लोकार्पण (प्रोफेसर एम एल सोन्धी स्मारक समिति (एम एल सोन्धी स्मारक न्यास की सहायक) के सहयोग से)।
23	09 अक्तूबर 2007	भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका की साठ के दशक की राजनीति नामक पुस्तक पर सामूहिक चर्चा ।
24	10 अक्तूबर 2007	इटली, यूरोप और भारत : बहुपक्षीय प्रणाली को और मजबूत बनाना विषय पर इटली के उप प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री मसीमो डी अलेमा द्वारा व्याख्यान ।
25	15 अक्तूबर 2007	भारतीय विश्व कार्य परिषद और नाइजीरियन इंस्टीटयूट ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स के बीच समझौता ज्ञापन ।
26	16-17 अक्तूबर 2007	तृतीय भारत-स्पेन वार्ता मंच
27	18-20 अक्तूबर 2007	पोलैंड के साथ तृतीय वार्ता

परिशिष्ट **XVI**

क्रम सं	दिनांक	कार्यक्रम
28	24 अक्तूबर 2007	मध्य एशिया में प्रवृत्तियां और चुनौतियां और इसके आगे विषय पर इजराइल के राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के प्रमुख इलान मिजराही का व्याख्यान
29	30-31 अक्तूबर 2007	ब्रुनई में आयोजित निवारक कूटनीति पर सीएससीएपी अध्ययन दल की बैठक, जिसमें के. के. एस. राणा, प्रो. पुष्पेश पंत, जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय, डॉ रंजन कुमार , जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय ने भाग लिया ।
30	13 नवम्बर 2007	ऑस्ट्रेलियन इंस्टीटयूट ऑफ द इंटरनेशनल अफेयर्स (ए आई आई ए), कैनबरा से आए अध्ययन दल के साथ बातचीत ।
31	14 नवम्बर 2007	जैव हथियार का प्रसार : एशियाई देशों के लिए चुनौती विषय पर संगोष्ठी (एसोसिएशन ऑफ एशिया स्कॉलर्स (ए ए एस) के सहयोग से)
32	23 नवम्बर 2007	मिस्र के शिष्टमंडल के साथ बैठक

परिशिष्ट **XVII**

आरआईएस द्वारा आयोजित संगोष्ठिया

- 27 दिसंबर, 2007 को नई दिल्ली में शासन संबंधी मामलोंः निजी निवेश के लिए संगत शासन के आयामों की जांच विषय पर संगोष्ठी।
- 18 दिसंबर, 2007 को नई दिल्ली में तृतीय पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन और भविय की संभावनाओं पर संगोष्ठी।
- 5 दिसंबर, 2007 को नई दिल्ली में क्षेत्रीय सहयोग और एशिया में एकीकरण की संभावनाओं पर संगोष्ठी।
- 16 नवंबर, 2007 को नई दिल्ली में एशिया में क्षेत्रीय सहयोगः नार्डिक सहयोग से सीख पर संगोष्ठी।
- 21-22 मार्च, 2007 को नई दिल्ली में अवसंरचना विकास और वित्त पोषण के लिए क्षेत्रीय सहयोग हेतु आरआईएस- यूएनईएससीएपी उच्च स्तरीय नीतिगत वार्ता।
- 19 मार्च, 2007 को नई दिल्ली में सार्क में आर्थिक सहयोग पर क्षेत्रीय सम्मेलन।
- 10 अगस्त, 2007 को नई दिल्ली में अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं में शासन तथा मत (विचार) पर संगोष्ठी।

आरआईएस प्रकाशन

पुस्तकें एवं रिपोर्ट

- विश्व व्यापार एवं विकास रिपोर्ट 2007ः विकास हितैषी विश्व व्यापार पद्धति का निर्माण, आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय प्रेस- 2007।
- दक्षिण का त्रिगुटः भारत-ब्राजील-दक्षिण अफ्रीका (आईबीएसए) भागीदारी की संभाव्यता, आरआईएसएन इन एशोसिएशन विद एकेडेमिक फाउंडेशन, नई दिल्ली- 2007।
- भारत में अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगितात्मकता एवं ज्ञान आधारित उद्योग, संपादकः नागेश कुमार एवं के जे जोसफ, आरआईएस और ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय प्रेस- 2007।
- एशिया का नया क्षेत्रवाद एवं विश्वव्यापी भूमिकाः पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन के लिए कार्यसूची, संपादकः नागेश कुमार, के. केशवपाणी एवं याओ चाओ चंग, आरआईएस और आईएसईएएस, सिंगापुर इन एसोसिएशन विद बुकवेल, नई दिल्ली- 2007।
- पर्यावरणीय जोखिम निर्धारण, सामाजिक-आर्थिक विचार एवं भारत में एलएमओ के लिए निर्णय लेने में समर्थन, अंतर्राष्ट्रीय आनुवांशिक अभियांत्रिकी एवं जैव प्रौद्योगिकी केंद्र, (आईसीजीईबी), पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, जीईएफ एवं विश्व बैंक।
- भारत में जैव सुरक्षा एवं जैव प्रौद्योगिकी के आर्थिक विचार, आरआईएस एवं अंतर्राष्ट्रीय खाद्य नीति अनुसंधान संस्थान तथा दक्षिण एशिया जैव- सुरक्षा कार्यक्रम, 2007

नीति पक्षसार

#30 अफगानिस्तान-पाकिस्तान-भारत-बांग्लादेश-म्यांमार (एपीआईबीएम) गलियारे का पुनः स्थापनः एशिया में नई रेशम सड़क की ओर।

#31 अतिरिक्त विदेशी विनिमय भंडार, आधारभूत घाटे और विश्वव्यापी असंतुलनों पर ध्यान देने के लिए एशियाई क्षेत्रीय तंत्र की ओर।

#32 ज्ञान-आधारित उद्योग में अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगात्मकता को सुदृढ़ करनाः एक सामरिक दृष्टिकोण।

#33 एशिया में बृहत क्षेत्रीय आर्थिक एकीकरणः एशियाई आर्थिक एकीकरण पर आरआईएस- आईएसईएएस-आईडी ई छठें उच्च स्तरीय सम्मेलन के पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन रिपोर्ट की कार्यसूची।

विचार-विमर्श संबंधी कागजात

#118 दक्षिण एशियाई एफटीए में व्यापार सुविधा उपायः पहल एवं नीतिगत दृष्टिकोण का विहंगावलोकन द्वारा सचिन चतुर्वेदी।

#119 भारत-श्री लंका द्विपक्षीय मुक्त व्यापार करारः छह वर्ष एवं उससे अधिक का कार्य निपादन द्वारा इंद्र नाथ मुखर्जी ।

#120 विकास के लिए "पालिसी स्पेस" की प्रासंगिकताः बहुपक्षीय व्यापार समझौतों की विवक्षाएं द्वारा नागेश कुमार एवं केविन पी. गलाघर।

#121 एशिया में भारतवर्ष की बढ़ती हुई भूमिका द्वारा मुकुल जी. अशर।

#122 समुदाय आधारित अधिकार एवं आईपीआर व्यवस्थाः रिविजिटिंग द डिबेट द्वारा श्रीविध्या राघवन एवं जेमी मेयर।

#123 क्षेत्रीय आर्थिक एकीकरण, विदेशी प्रत्यक्ष निवेश एवं दक्षता- एशिया में अपेक्षित औद्योगिक पुनर्गठनः भारत का मामला द्वारा नागेश कुमार।

#124 भारतीय बायोफार्मास्यूटिकल क्षेत्र का उदयः मुद्दे एवं संभावनाएं द्वारा सचिन चतुर्वेदी।

#125 एशिया में क्षेत्रीय व्यापार प्रबंधों में निवेश उपबंधः प्रासंगिकता, इमरजिंग ट्रेंड्स एंड पॉलिसी इम्पलीकेशन द्वारा नागेश कुमार।

#126 एशिया में क्षेत्रीय आर्थिक एकीकरण से कल्याण लाभः एशियन ३ 3 अथवा ईएएस द्वारा एस.के. मोंहती एवं संजीव पोहित।

#127 ब्राजील की अर्थव्यवस्थाः दक्षिण-दक्षिण सहयोग के लिए हाल के उद्विकास एवं नए परिप्रेक्ष्य द्वारा मारिया लुसिया एल. एम. पदुआ लिमा।

#128 इलेक्ट्रानिकली डिलिवर्ड सॉफ्टवेयर (ईडीएस) में विश्व व्यापार संगठन और व्यापार- उभरती हुई चुनौतियां और नीतिगत विकल्प- एक भारतीय दृष्टिकोण द्वारा सचिन चतुर्वेदी।

#129 इंटेल्कचुअल प्रापर्टी रिजीम, इंडिजिनस नालेज एंड एक्सेस एंड बेनिफिट शेयरिंगः ड्राइंग लेसन फ्राम कनि केश द्वारा सचिन चतुर्वेदी।

#130 बढ़ता हुआ भारत-बांग्लादेश आर्थिक सहयोगः चुनौतियां एवं अवसर द्वारा प्रबीर डे और बिस्वा एन भट्टाचार्य।

#131 एशिया में क्षेत्रीय सहयोग तथा एकीकरण की संभावनाएं द्वारा रजत नाग

पत्रिकाएं

1. साउथ एशिया इकानोमिक जरनल (खंड 8 सं. 1) जनवरी-जून, 2007
2. साउथ एशिया इकानोमिक जरनल (खंड 8 सं. 1) जुलाई-दिसंबर, 2007
3. एशियन बायोटेकनोलाजी एंड डेवलपमेंट रिव्यू, खंड 9(2) मार्च, 2007
4. एशियन बायोटेकनोलाजी एंड डेवलपमेंट रिव्यू, खंड 9(3) जुलाई, 2007
5. एशियन बायोटेकनोलाजी एंड डेवलपमेंट रिव्यू, खंड 10(1) नवंबर, 2007
6. न्यू एशिया मानीटर, खंड 4 सं. 2, अप्रैल, 2007
7. न्यू एशिया मानीटर, खंड 4 सं. 3, जुलाई, 2007
8. न्यू एशिया मानीटर, खंड 4 सं. 4, अक्तूबर, 2007
9. मेकांग-गंगा पॉलिसी ब्रीफ, सं. 1, मार्च, 2007
10. मेकांग-गंगा पॉलिसी ब्रीफ, सं. 2, अक्तूबर, 2007

समाचार-पत्र

आर आई एस डायरी, खंड 5 सं. 2, अप्रैल, 2007

आर आई एस डायरी, खंड 5 सं. 3, जुलाई, 2007

आर आई एस डायरी, खंड 5 सं. 4, अक्तूबर, 2007

आर आई एस डायरी, खंड 6 सं. 1, जनवरी, 2008

संक्षिप्तियाँ

आल्को	एशियाई अफ्रीकी विधिक परामर्शी संगठन
एएमएम	आसियान मंत्रिस्तरीय बैठक
एआरएफ	आसियान क्षेत्रीय मंच
आसियान	दक्षिण पूर्व एशियाई राष्ट्र संगठन
एएसईएम	एशिया यूरोप बैठक
एसोचैम	एसोसिएट्स चैम्बर्स ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्री
एयू	अफ्रीकी संघ
आयुष	आयुर्वेद, योगा एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा एवं होम्योपैथिक
बिमस्टेक	बहु-क्षेत्रीय तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग के लिए बंगाल की खाड़ी पहल
सीका	व्यापक आर्थिक सहयोग करार
सीईपी	सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम
चोगम	राष्ट्रमण्डल शासनाध्यक्षों की बैठक
सीआईसी	केन्द्रीय सूचना आयोग
सीआईआई	भारतीय उद्योग परिसंघ
सीआईएस	स्वतंत्र राज्यों का राष्ट्रकुल
कोमेसा	पूर्वी एवं दक्षिणी अफ्रीका के लिए साझा बाजार
कॉरपट	समन्वित गश्ती
सीओएससी	चीफ ऑफ स्टाफ कमेटी
सीपीआईओ	केन्द्रीय लोक सूचना अधिकार
सीपीवी	कोंसुलर, पासपोर्ट एवं वीजा
सीएससीएपी	एशिया प्रशांत सुरक्षा सहयोग परिषद
सीएसडी	व्यापक सुरक्षा वार्ता
डीआईपीपी	औद्योगिक नीति एवं संवर्धन विभाग
डीएसएससी	रक्षा सेवा स्टाफ कॉलेज
डीटीएसी	दोहरा कराधान परिहार अभिसमय
ईएसी	पूर्व अफ्रीकी समुदाय
ईएएस	पूर्व एशिया शिखर सम्मेलन
इकोवास	पश्चिम अफ्रीकी राज्य आर्थिक समुदाय
ईआईएल	इंजीनियर्स इण्डिया लिमिटेड
ईएमएम	पूर्व एशिया मंत्री बैठक
ईयू	यूरोपीय संघ
एक्जिम	भारतीय निर्यात-आयात बैंक
फिक्की	भारतीय वाणिज्य एवं उद्योग परिसंघ
एफआईपीबी	विदेशी निवेश संवर्धन बोर्ड
एफओसी	विदेश कार्यालय परामर्श
एफटीए	मुक्त व्यापार करार
गेल	भारतीय गैस प्राधिकरण लिमिटेड
जीसीसी	खाड़ी सहयोग परिषद
जीएसटी	सामान एवं सेवा कर
एचएएल	हिन्दुस्तान एरोनॉटिक लिमिटेड
एचआईवी/एड्स	ह्यूमन ईम्यूनो वायरस/एक्वायर्ड इम्यूनो डिफिसिएंसी सिण्ड्रोम
आईएईए	अन्तर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी
आईबीएफ	भारतीय व्यवसाय मंच
आईसीसीआर	भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद
आईसीआरआईईआर	भारतीय अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक संबंध अनुसंधान परिषद
आईसीटी	सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी
आईसीडब्ल्यूए	भारतीय मामलों की विश्व परिषद
आईडीएसए	रक्षा अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान
आईएफएस	भारतीय विदेश सेवा

संक्षिप्तियाँ

आईआईबीएफ	भारतीय बैंकिंग एवं विश्व संस्थान
आईआईटी	भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान
आईएलओ	अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन
आईएनएस	भारतीय नौसैनिक पोत
आईएनएसटीसी	अन्तर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारा
आईओआर-एआरसी	हिन्द महासागर परिधि क्षेत्रीय सहयोग संघ
आईएससीएस	अन्तरराज्य परिषद सचिवालय
आईटेक	भारतीय तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग
जेडब्ल्यूजी	संयुक्त कार्यकारी दल
एलएनजी	तरल प्राकृतिक गैस
मर्कोसुर	दक्षिणी शंकु देश बाजार
एमएफएन	अत्यंत अनुकूल राष्ट्र
एमओयू	समझौता ज्ञापन
नाबार्ड	राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक
नेफेड	भारतीय राष्ट्रीय कृषि सहयोग विपणन परिसंघ लिमिटेड
नैम	गुट-निरपेक्ष आन्दोलन
नास्कोम	राष्ट्रीय साफ्टवेयर एवं सेवा कंपनी संघ
नाटो	उत्तर अटलांटिक संधि संगठन
एनईएलपी	नई दोहन लाइसेंसिंग नीति
नेपाड	अफ्रीकी विकास के लिए नई भागीदारी
एनआईसी	राष्ट्रीय सूचना केन्द्र
एनपीटी	नाभिकीय अप्रसार संधि
एनएससी	राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद
एनएसजी	नाभिकीय आपूर्तिकर्ता समूह
ओसीआई	भारतीय समुद्रपारीय नागरिकता
ओईसीडी	आर्थिक सहयोग एवं विकास संगठन
ओएनजीसी	तेल एवं प्राकृतिक गैस निगम
पीआईओ	भारतीय मूल के व्यक्ति
आरबीआई	भारतीय रिजर्व बैंक
राइट्स	रेल इंडिया टेक्निकल इकोनॉमिक सर्विस
आरटीआई	सूचना का अधिकार
सार्क	दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संघ
एसएडीसी	दक्षिण अफ्रीकी विकास समुदाय
साफ्टा	दक्षिण एशिया मुक्त व्यापार करार
एसबीआई	भारतीय स्टेट बैंक
एस्कैप	अफ्रीकी कार्यक्रम के लिए विशेष राष्ट्रमण्डल सहायता
एससीओ	शंघाई सहयोग संगठन
सेबी	भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड
सेवा	स्व-नियोजित महिला संघ
एसईजेड	विशेष आर्थिक सत्र
एसएमई	लघु एवं मझोले उद्यम
एसटीपीआई	भारतीय साफ्टवेयर प्रौद्योगिकी पार्क
टीम-9	टेक्नो-इकोनॉमिक अप्रोच फार अफ्रीका इण्डिया मेवमेंट
अंकटाड	व्यापार और विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन
यूनेस्को	संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन
यूएनजीए	संयुक्त राष्ट्र महासभा
यूएनएससी	संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद
यूपीए	संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन
वीएसएनएल	विदेश संचार निगम लिमिटेड
डब्ल्यूटीओ	विश्व व्यापार संगठन